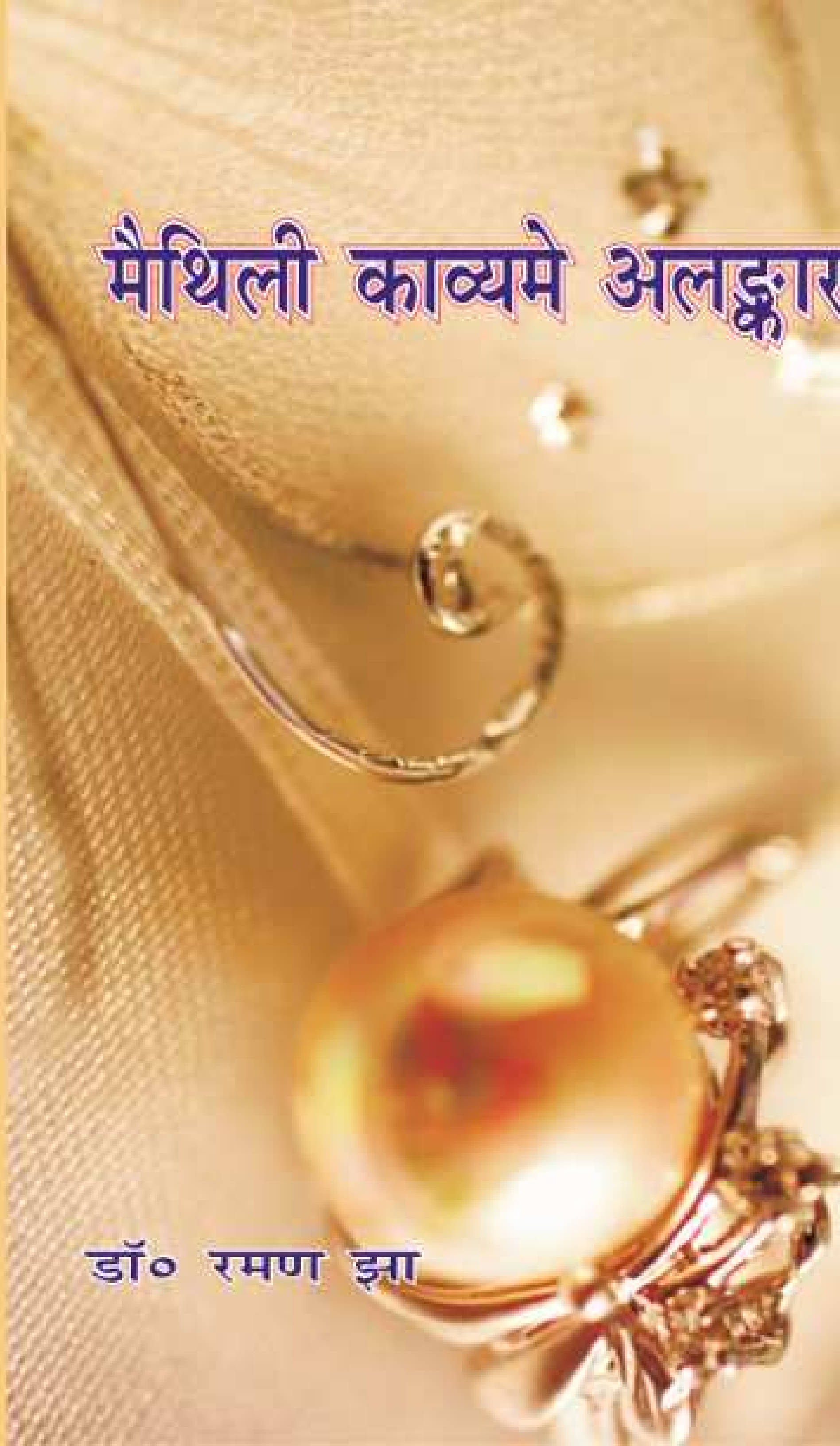
मैथिली काव्यमे अलङ्कार

डॉ० रमण झा

मैथिली काव्यमे अलङ्कार

डॉ० रमण झा



मैथिली काव्यमे अलङ्कार

डॉ० रमण झा

डी.लिट्.

प्राचार्य

विश्वविद्यालय मैथिली विभाग

ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

प्रकाशक : **श्रीमती माला झा**
ग्राम+पोस्ट- हटाढ़ रुपौली
भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी-847404

प्रथम संस्करण : 2012

प्राप्तिस्थान :

l **श्री राम प्रकाश अग्रवाल**
श्री शंकर आभूषणालय
टावर चौक, दरभंगा- 846004
दूरभाष : 06272-252525
मोबाइल : 09431219972

l **श्री सुमित आनन्द**
ल.ना.मि.वि. टीचर्स क्वार्टर नं. 101
श्यामा मन्दिरसँ उत्तर-पूर्व, दरभंगा- 846004
दूरभाष : 06272-247701
मोबाइल : 09006496364

मुद्रक :

मूल्य : **पाँच सय टका**

MAITHILI KAVYA ME ALANKAR **Rs. 500.00**

Literary Criticism

By **DR. RAMAN JHA**

समर्पण

अलङ्कार के नाम सुनि, मूनथि दूनू कान ।
भागथि लग्गा सात जनि, राम राम कहि राम !!

अलङ्कार-झंकार जनिक मनमे नहि भावए ।
छन्दक गति-यति महाबन्ध कंटक सम लागए ।।
रस-ध्वनि गुण दोषहु केँ जे व्यर्थहि सन बूझथि ।
अभिधा-लक्षण-व्य□जनाक जे मर्म न जानथि ।।

निज अधमहु कविताकेँ जे सर्वोपरि मानथि ।
पर श्रेष्ठहु कविकृति पर हसि जे दोष बखानथि ।।
पर निन्दा हित करथि अपन जे प्रतिभा अर्पण ।
तनिके कर-कमलहि ई पोथी करी समर्पण ।।

रमण

~~सादा~~

लेखकीय

अलङ्कार विषयक ई हमर दोसर पोथी थिक । एहिसँ पूर्व **अलङ्कार-भास्कर** प्रकाशित भेल छल । वस्तुत: ओ पुस्तक हम एम.ए.क परीक्षा देलाक बाद अर्थात् 1980 ई.मे लिखने छलहुँ जकर प्रकाशनक सम्बन्धमे ओहि पोथीक लेखकीयमे कहल गेल अछि । ओही पोथीकेँ पूर्ण करैत-करैत अलङ्कार विषयक अनेक ग्रंथि सभ हमर समक्षमे आबय लागल आ हम ओ समस्या सभ अपन गुरुदेव डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाजी लग रखैत रहलियनि । प्राय: हमर एहने जिज्ञासाकेँ देखैत डॉक्टर साहेब हमर शोध-निर्देशक बनबाक स्वीकृति देलनि आ संगहि हमरा **आधुनिक मैथिली काव्यमे अलङ्कार विधान** विषयपर शोधकार्य करबाक हेतु कहलनि । शोधप्रबन्ध 1985 ई.मे विश्वविद्यालयमे मूल्यांकन हेतु समर्पित कयल गेल । छात्रक उपयोगिताकेँ ध्यानमे रखैत **अलङ्कार-भास्कर** 2003 ई.मे छपि सकल जे 1981 ई.सँ प्रकाशनक प्रक्रियामे छल ।

अलङ्कार-भास्कर अनेक विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रममे अछि आ भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर द्वारा Bulk Purchase Scheme क अन्तर्गत 150 प्रति क्रय कयल गेल तेँ आइ ओ पोथी अनुपलब्ध अछि । ओहि पोथीक सी.डी. एखनहु हमरा लग उपलब्ध अछि आ हम पहिने ओकरे पुनर्प्रकाशन करयबाक विचारमे छलहुँ मुदा ओकरा पछुआए अलङ्कार विषयक दोसर पोथीकेँ प्रकाशमे आनल । प्रस्तुत पोथी यद्यपि समीक्षात्मक थिक तथापि हमर विश्वास अछि जे अलङ्कार विषयक सामान्यहु जिज्ञासु लोकनिक जिज्ञासाकेँ शान्त अवश्य करत आ जँ ताहिमे हम सफल भए सकलहुँ तऽ हमर श्रम सार्थक होयत ।

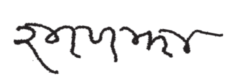
मैथिली काव्यमे अलङ्कार विषयक एहि पोथीमे प्रयुक्त संस्कृतक शब्दावली

एवं श्लोककेँ मूलसँ मिलाय संशोधित करैत पं.डा० शशिनाथ झा (प्राचार्य एवं अध्यक्ष, व्याकरण विभाग, का.सिं.द. संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभङ्गा) जतेक जल्दी घुराय देलनि से हुनकहिसँ सम्भव अछि । डॉ. भीमनाथ झा सेहो एकरा आद्योपान्त पढ़ि, संशोधित करैत, अपन गूढ़ विचारक संग अत्यल्प समयमे वापस कए देलनि । हम दुनू मर्मज्ञ विद्वानक प्रति आभार प्रकट करैत छियनि। नतमस्तक छियनि ।

प्रो० (डा०) वीणा ठाकुरक मूल्यवान परामर्श एवं सहयोग अविस्मरणीय रहत । ओ कुशल गार्जियन जकाँ सतत हमर समस्याकेँ अपन माथपर लैत हमर मोनकेँ हल्लुक बनबैत रहलीह । अत: हुनका प्रति मात्र आभारेटा व्यक्त कय हम □णमुक्त नहि भए सकैत छी ।

अंतमे सुधी पाठकसँ हमर निवेदन जे ओ लोकनि गुणेँटाकेँ ग्रहण करथि आ दोषक परित्याग करथि ।

वसन्त प□चमी
28 जनवरी, 2012



भूमिका

गुरुवर डा० शैलेन्द्र मोहन झा हमरा **आधुनिक मैथिली-काव्यमे अलंकार-विधान**पर शोधकार्य करबाक हेतु कहलनि तँ हमरा मोनमे यैह धारणा रहय जे सभ अलंकारक भेदोपभेदक उदाहरण आधुनिक मैथिली काव्यमे भेटब सम्भव नहि होयत, किन्तु थोड़बे दिनक बाद ई विश्वास भए गेल जे आधुनिक मैथिली काव्य एकटा अथाह सागर थिक जाहिमे जे जतेक डुबकी लगाओत से ततेक बेसी रत्न प्राप्त करत ।

हमरा तँ विश्वास भए गेल जे हम अत्यन्त व्यापक विषयक चयन कए लेलहुँ अछि कारण जे आधुनिक मैथिली काव्यमे कोनो एकहुटा अलंकारकेँ लए कए शोधकार्य कयल जा सकैत छल । 'आधुनिक मैथिली काव्यमे शब्दालंकार', 'आधुनिक मैथिली काव्यमे उपमालंकार', 'आधुनिक मैथिली काव्यमे उत्प्रेक्षालंकार' आदि विषयपर सेहो पी-एच.डी.क कोन कथा जे डी.लिट्.क गम्भीरसँ गम्भीर शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कयल जा सकैत अछि । एतबे नहि, आधुनिक मैथिली काव्यक अन्तर्गत कतोक काव्य-ग्रन्थ एहन अछि जाहिपर स्वतन्त्र रूपसँ अलंकार विषयक शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कयल जा सकैत अछि । आधुनिक मैथिली काव्यक विस्तार एवं अलंकार साहित्यक नवीनतम आविष्कारसँ किछुओ परिचय रखनिहार व्यक्तिकेँ हमर ई गप्प आश्चर्यजनक नहि बुझि पड़तनि ।

पारिणामतः एहि विषयक अति विस्तार भए जयबाक भयसँ हम कतोक स्थलपर अलंकारक सूक्ष्म भेद सभक उपेक्षा करैत मात्र स्थूले भेदक आधारपर विवेचन प्रस्तुत कयलहुँ अछि । आधुनिक मैथिली काव्य ततेक ने व्यापक अछि जे प्रत्येक काव्यग्रन्थक नीक जकाँ अध्ययन एवं अनुशीलन कए ओहिसँ उदाहरण प्रस्तुत करब अत्यन्त दुरूह ओ समयसापेक्ष कार्य अछि, संगहि एतेक छोट प्रबन्धमे किन्हु समाविष्ट नहि भए सकैत अछि । हमर तँ दावा अछि जे हजारो पृष्ठक शोध-प्रबन्धमे उचित रूपक मूल्यांकन नहि भए सकैत अछि । तेँ हेतु कतोक कविक काव्यक उदाहरण एहिमे नहि समाविष्ट करबाक हेतु हमरा दुःख अछि । हँ, एतबा धरि अवश्य जे आधुनिक मैथिली काव्यमे सभ समयक एवं सभ कोटिक कवितासँ उदाहरण प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

आधुनिक मैथिली काव्यक जनक कवीश्वर चन्दा झा मानल जाइत छथि, किन्तु प्राचीन परम्पराकेँ त्यागि नव परम्परामे काव्य सृजन करबाक सूत्रपात कयनिहार थिकाह महाकवि मनबोध । ओ **कृष्णजन्म** लिखि लोककेँ विश्वास दिआ देलथिन जे विद्यापतिक परम्परासँ भिन्न काव्यक रचना सेहो भए सकैत अछि । हमरा जनैत पहिल कवि मनबोधे भेलाह जे विद्यापति ओ हुनक परवर्त्ती कविगण द्वारा शृंगारक पाँकमे फँसाओल गेल मैथिली काव्यकेँ खीचि कए भक्तिक चौबट्टी पर अनलनि । अतः महाकवि मनबोधसँ लए कए अत्याधुनिक कविक रचना धरिसँ अलंकारक उदाहरण प्रस्तुत करबाक प्रयास कयलहुँ अछि ।

एहि कार्यक सम्पादनमे जाहि प्रकारक कठिनता हमरा समक्ष अबैत रहल अछि से एतय कहब ने सम्भव अछि आ ने उपयुक्ते, किन्तु एकाधटा उदाहरण प्रस्तुत करब अप्रासंगिक नहि होयत । सर्वप्रथम तँ अलंकारक वर्गीकरण एक जटिल समस्या छल, कारण जे भिन्न-भिन्न आलंकारिक लोकनि भिन्न-भिन्न ढंगेँ एकरा वर्गीकृत कयलनि अछि । तहिना अलंकारक संख्या आ भेदक प्रसंग सेहो आलंकारिक लोकनिक मतैक्य नहि अछि । असंगति, निदर्शना, प्रतीप, अतिशयोक्ति, अप्रस्तुत-प्रशंसा, आक्षेप आदि अलंकारक भेदोपभेद एवं परिभाषामे विद्वान लोकनिक पर्याप्त मतभिन्नता देखना जाइत अछि । एहन-एहन संदिग्ध स्थल सभमे कोनो एक विद्वानकेँ आधार मानि अन्यकेँ छोड़ि देबए पड़ल अछि ।

'आधुनिक मैथिली काव्यमे अलंकार-विधान' नामक हमर एहि शोध-प्रबन्धमे विषय-प्रवेशकेँ छोड़ि दस अध्याय अछि । विषय-प्रवेशक अन्तर्गत अलंकारक स्वरूप, विकास, वर्गीकरण एवं काव्यमे ओकर स्थान अबैत अछि । प्रथम अध्यायमे मैथिलीमे अलंकार विषयक मान्यताक विवेचन कयल गेल अछि । द्वितीय अध्यायमे शब्दालंकार, तृतीयमे साधर्म्यमूलक, चतुर्थमे विरोधमूलक, पंचममे शृंखलामूलक, षष्ठमे गूढ़ार्थप्रतीतिमूलक, सप्तममे गोपनमूलक, अष्टममे न्यायमूलक, नवममे अतिशयोक्तिमूलक एवं दशममे उभयालंकार विवेचित अछि । एतदतिरिक्त भूमिका ओ उपसंहार अछि ।

एहि शोध-प्रबन्धमे यथासम्भव प्राप्य सभ तरहक काव्यसँ उदाहरण प्रस्तुत कयल गेल अछि । एक दिस जँ **एकावली-परिणय** एवं **राधा-विरह** सन महाकाव्यसँ उदाहरण देल गेल अछि तँ दोसर दिस **चित्रा, मेरुप्रभा** आ **कथा-यूथिका** सन पोथीसँ सेहो । हँ, एतबा अवश्य जे अलंकारक विलक्षणता ओ प्राचुर्यसँ विमोहित भए अधिकाधिक उदाहरण **एकावली-परिणय, राधा-विरह** ओ **मिथिलाभाषा रामायण** सन पोथीसँ देल गेल अछि । यथासम्भव अलंकारक भेदोपभेदक उदाहरण प्रस्तुत कयल गेल अछि किन्तु कतोक स्थलपर विस्तारक भयसँ अत्यन्त सूक्ष्म भेद सभकेँ छोड़य सेहो पड़ल अछि ।

एहि शोध-प्रबन्धक रूपरेखा तैयार करबासँ अन्तधरि प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' जाहि मनोयोगसँ हमर मार्ग प्रशस्त करैत रहलाह से अवर्णनीय अछि। गुरुवर डा० शैलेन्द्र मोहन झा अपन बहुमूल्य समय दए जाहि रूपेँ हमरा निर्देशन दैत रहलाह से थोड़ शब्दमे कहब कठिन ! हुनक प्रोत्साहन आ आशीर्वाद हमर मोनमे विपुल शक्ति भरि दैत छल आ हम तीव्र गतिएँ कार्य आगू बढ़बैत छलहुँ। अतः हुनका प्रति मात्र आभारेटा व्यक्त करब हमर कृतघ्नता होयत। हमर रोम-रोम हुनक सहायतासँ □णी अछि।

डा० अमरनाथ झाक मूल्यवान सहायता सेहो हमरा हेतु कम महत्त्वक नहि रहल। एहि शोध-प्रबन्धकेँ आद्योपान्त पढ़ि जतेक शीघ्र हमरा अपन गूढ़ विचारक संग ओ घुराए देलनि से हुनकहिसँ सम्भव अछि। डा० नवीनचन्द्र मिश्र एवं डा० रामदेव झा समय-समयपर अपन गूढ़ विचारसँ जे उपकृत कयलनि ताहिसँ हमर अन्तर्बल बढ़ैत रहल आ हम अपन कार्यमे आगू बढ़ैत रहलहुँ। अतः हुनका लोकनिक प्रति आभार सेहो कम नहि। हमर काव्यशास्त्रक गुरु डा० लक्ष्मण चौधरी 'ललित' तँ आदिसँ अन्त धरि अपन बहुमूल्य समय दए हमर मार्ग प्रशस्त करितहि रहलाह।

हमर आचार्य गुरु पण्डित अमरनाथ झा (व्याकरण-साहित्याचार्य, प्रधानाध्यापक, संस्कृत हाइ स्कूल, इसहपुर) तँ बाल्यकालहिसँ हमर पठन-पाठनमे मुख्य सहायक रहलाह। संस्कृतसँ सम्ब□ विषय हम निर्धोष रूपेँ हुनका पुछैत रहलियनि आ ओ संतोषजनक उत्तर दैत रहलाह। एहि शोधकार्यक सम्पादनमे हुनक कतेक योगदान अछि से कहब कठिन ! हुनक कृपा ओ आशीर्वाद हमर सफलताक मुख्य कारण थिक।

अन्तमे शोध-प्रबन्धक प्रसंग हमरा एक आओर शब्द कहय पड़ैत अछि। बहुतो सतर्कता रखैत कतोक स्थलपर त्रुटि भए जेबाक सम्भावना, तेँ सुधीजनसँ निवेदन जे ओ लोकनि मात्र गुणेटाकेँ ग्रहण करथि आ अवगुणकेँ छोड़ि देथि। हमर विश्वास अछि जे सहृदय पाठककेँ हमर ई कृति अवश्य आकृष्ट करतनि, पुनः पुनः पढ़बाक इच्छा होयतनि—

क्षणेः क्षणेः यन्नवतामुपैति तदैव रूपं रमणीयतायाः।

05.05.1985



सादा

विषय-क्रम

सादा

विषय-प्रवेश

अलंकारक स्वरूप, विकास, वर्गीकरण एवं काव्यमे ओकर स्थान

अलंकारक स्वरूप

'अलंकार' शब्द दू शब्दक मेलसँ बनल अछि— अलम् एवं कार । अलम् केर अर्थ होइछ आभूषण एवं कार केर करयवला । एहि तरहेँ अलंकारक अर्थ भेल ओ साधन जाहिसँ कोनहुँ वस्तुकेँ अलंकृत कयल जाय ।

व्याकरणमे एकर मात्र दू प्रकारक व्युत्पत्ति देखबामे अबैत अछि— 'अलंकरोतीत्यलंकार:' एवं 'अलंकृयतेनेनेत्यलंकार:' । एहि दुनू व्युत्पत्तिमे मुख्य अन्तर ई अछि जे प्रथम व्युत्पत्तिक अनुसार अलंकार कर्त्ता थिक एवं दोसर व्युत्पत्तिक अनुसार करण । ई दुनू व्युत्पत्ति पर्याप्त महत्त्वपूर्ण अछि आ एहि व्युत्पत्तिसँ स्पष्ट अछि जे अलंकार शोभाव□क तत्त्व थिक ।

संस्कृत काव्यशास्त्रक आचार्य भरतमुनि अलंकारक (उपमा दीपकं चैव रूपकं यमकं तथा) विवेचन काव्यलक्षणक प्रसंगमे कयलनि अछि ।[1] किन्तु हिनक अलंकार विषयक मान्यता ओहि मान्यतासँ भिन्न अछि जे परवर्त्ती आचार्य द्वारा गृहीत अछि । अर्थात् ई अलंकारक प्रयोग सामान्य अर्थमे कयलनि अछि, शास्त्रीय अर्थमे नहि ।[2] अलंकारक शास्त्रीय विवेचन भरतमुनिक पश्चात् आ भामहसँ पूर्व आरम्भ आ विकसित भेल जकर उल्लेख करैत भामह कहैत छथि जे रूपक आदि जे काव्यालंकार अछि तकर उल्लेख किछु आलंकारिक लोकनि भिन्न प्रकारसँ कयलनि । कान्ताक मुह सुन्दर होइतहुँ बिनु अलंकारक शोभा नहि पबैत अछि ।[3] दण्डी काव्यक शोभाधायक धर्महिकेँ अलंकार मानैत छथि ।[4] अग्निपुराणकार अलंकार-रहित काव्यकेँ विधवा सदृश कहैत छथि ।[5] वाग्भट,[6] नरेन्द्रप्रभसूरि,[7] आदि अलंकारकेँ काव्यक अनिवार्य तत्त्व मानलनि अछि । जयदेवक मान्यता तँ एहन अछि जे अलंकार विहीन काव्यक कल्पना करब उष्णता रहित अग्निक कल्पना करब सदृशे हास्यास्पद थिक ।[8]

मम्मट रस सम्प्रदायक प्रमुख आचार्य थिकाह । हिनक मान्यता अछि जे अनुप्रास आदि शब्दालंकार एवं उपमा आदि अर्थालंकार ओही तरहेँ रसक उपकार करैत अछि जेना हार इत्यादि आभूषण शरीरक शोभामे वृ□ करैत अछि ।[9] मम्मटक परवर्त्ती संस्कृतक आचार्य लोकनिमेसँ बेसी हिनके मतक अनुयायी छथि । एहिमे प्रमुख छथि— हेमचन्द्र,[10] विद्याधर,[11] विद्यानाथ,[12] वाग्भट (द्वितीय),[13] विश्वनाथ,[14] केशव मिश्र[15] आदि ।

एहि तरहेँ अन्यान्यो भाषाक विद्वान लोकनि अलंकारकेँ परिभाषित करबाक प्रयास कयलनि अछि । शिल्पेक अनुसार अलंकार वाणीक आभूषण थिक । अभिव्यक्तिमे स्पष्टता, भावमे प्रभावोत्पादनक शक्ति, भाषामे सौन्दर्य तथा श्रोताक मनोविनोद आदि एकर फल थिक ।[16] आचार्य रामचन्द्र शुक्लक कहब अछि जे भावक उत्कर्ष देखायब तथा वस्तुक रूप-गुण एवं क्रियाक अधिक तीव्र अनुभव करयबामे कखनहुँकेँ सहायक होमयवला युक्ति अलंकार थिक ।[17]

उपर्युक्त परिभाषाक आधारपर अलंकार सम्बन्धी कतोक धारणाक विकास भेल । अलंकार काव्यक शोभेटा नहि बढ़बैत अछि अपितु अलम् अर्थात् पूर्ण कय दैत अछि । अलंकारकेँ काव्यक संग अन्योन्याश्रय सम्बंध छैक । काव्य अलंकारक संगहि ग्रहण करबाक थिक ।[18] ई काव्यक बाह्यधर्म नहि अपितु अन्त:धर्म थिक । भावावेगक तीव्रतामे अलंकार स्वयमेव 'अहंपूर्विकया'[19] आबि जाइत अछि । एहन अलंकारकेँ बहिरंग मानब उचित नहि । तेँ आनन्दव□न कहैत छथि— 'तस्मान्न तेषां बहिरंगत्वं रसाभिव्यक्तो' । एहन अलंकारकेँ भरतक 'समानाभिनय प्रकरण'मे उक्त कामिनीक हावभावालंकारे मानबाक चाही ।[20]

एहि अलंकारकेँ कोनो तरहेँ वृक्षक छाल जकाँ फराक नहि कय सकैत छी । केवल उक्ति काव्य नहि थिक । सालंकृत, चमत्कृत उक्तियेकेँ काव्यक गरिमा प्राप्त अछि । काव्यक उक्ति लोक-व्यवहारक उक्तिसँ सर्वथा भिन्न होइत अछि । काव्योक्तिमे लोकोत्तर चमत्कार अपेक्षित रहैत अछि । लोकव्यवहारमे प्रयुक्त अनलंकृत शब्द एवं अर्थ अलंकृत भए कए अर्थात् चमत्कारपूर्ण भंगी विशेषसँ कथित भेलापर काव्य-पदवी प्राप्त कय लैत अछि ।[21]

अलंकार विहीन काव्य भए सकैत अछि किन्तु अलंकारकेँ कटक-कुण्डल मानब उचित नहि बुझना जाइत अछि । कोनो सुन्दरी स्वेच्छासँ आभूषण पहिरैत अछि आ उतारि लैत अछि, किन्तु काव्यक अलंकार से नहि थिक । एहनो नहि होइत अछि जे कवि कविता लिखि ओहिमे उपमा, रूपक, दीपक आदि अलंकार ऊपरसँ लटका देलनि । आचार्य अभिनवगुप्त कहैत छथि जे यद्यपि अलंकार कटक-केयूरवते अछि किन्तु जखन ओ रसाक्षिप्त, अपृथग्यत्न-निवर्त्य एवं सुश्लिष्ट होअए तँ ओकरा नायिकाक अंगपर

आलेपित कुंकुमसँ उपमित कए सकैत छी । अलंकार जखन संकेतित रहैत अछि तँ ओ आत्माक प्रवृत्ति ग्रहण कए लैत अछि ।[22]

आचार्य भोजराज अलंकारकेँ कटक-केयूरसँ उपमित करब नीक नहि बुझलनि । ओ एकर त्रिधा विभाजन कयलनि— शब्दालंकार, अर्थालंकार एवं उभयालंकार । ओ शब्दालंकारकेँ बाह्य मानलनि— वस्त्र-माला, कटक-केयूरवत् । अर्थालंकारकेँ आभ्यन्तर मानलनि— दन्त-परिष्कार, नखच्छेदन तथा अलक-मण्डन जकाँ तथा उभयालंकारकेँ बाह्याभ्यन्तर मानलनि— स्नानोपरि केशकेँ सुगन्धित ओ सजयबाक भाँति ।[23]

किन्तु भोजक एहि सादृश्यसँ अलंकारक वास्तविक महत्त्वक पता नहि चलैत अछि । आचार्य राजशेखर कहैत छथि जे रूपहीन व्यक्ति अलंकारसँ अपन शोभा बढ़बैत अछि आ जकरामे नैसर्गिक सौन्दर्य छैक ओ अलंकारसँ अपन शेभामे वृ□ अनैत अछि ।[24] राजशेखर अलंकारक विशेष महत्त्व नहि देलनि अछि । हुनका दृष्टिएँ जकरामे नैसर्गिक सौन्दर्य छैक तकरा हेतु भूषण दूषणे थिक । ओ कहैत छथि जे जाहि ललनाक दृष्टि स्वयं तरल ओ धवलित छैक तकरा काजरक की प्रयोजन ? जकर स्तन स्वयं विशाल छैक ओकरा हारक कोन काज ? जकर नितम्ब चक्राकार छैक तकरा हेतु डँरकसक की उपयोगिता ? एहन रमणीक हेतु तँ भूषण दूषणे थिक ।[25]

वस्तुतः मधुर आकृतिकेँ मण्डनक आवश्यकता नहि छैक ।[26] किन्तु मधुर एवं आकर्षक काव्य अधिकांशतः सालंकृत होयबे करत । कविताक हेतु ई स्वीकार कयल गेल अछि जे अलंकार, गुण आदि सब एकमे मिलिकय रासायनिक प्रतिक्रियाक फलस्वरूप सुन्दर काव्यक निर्माण करैत अछि । पाश्चात्य आचार्य क्रोचे सेहो अलंकार एवं अलंकार्यक पार्थक्यकेँ स्वीकार नहि कयलनि अछि ।[27]

वस्तुतः एहन अलंकार काव्यजगतक अक्षय-निधि थिक । महाकवि लोकनिक काव्यमे स्वतःस्फूर्त्त एवं अनायास प्रयुक्त अलंकार सर्वत्र दृष्टिगोचर होइत अछि ।

अलंकार : उद्‌भव एवं विकास

1. **वेद**— आब ई बात स्पष्ट भए गेल जे वाणीक प्रपंच थिक अलंकार । किन्तु एकर उत्पत्ति कहिया भेल से कहब कठिन अवश्य । काव्यशास्त्रक तँ सबसँ प्रथम रचयिता छथि भरत, किन्तु हुनकासँ पूर्वहु वेद, पुराण, उपनिषद्, रामायण आदि महान ग्रन्थहुमे पर्याप्त अलंकारक प्रयोग भेल अछि, भलहि लोककेँ ओकरासँ परिचय-पात नहि रहल होइक । हमरालोकनिक बीच सर्वप्रथम लिखित ग्रन्थ थिक □ग्वेद— जे आलंकारिक उक्तिसँ भरल अछि । किछु उरदाहरण द्रष्टव्य थिक—

1. उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुतत्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम् ।
   उतो त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः ।। —□०, 10-71-4

अर्थात् एहि वाणीकेँ क्यो देखितो नहि देखैत अछि, क्यो सुनितो नहि सुनैत अछि एवं दोसर (विद्वान्)क सामने ओ अपन शरीर पसारि दैत अछि ।

2. सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ।
   अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि ।।
   —□०, 10-71-2

अर्थात् धीर व्यक्ति अपन सज्ञान मनक द्वारा वाणीकेँ अपशब्दसँ हीन कए दैत छथि, जेना चालनिसँ चालिकय सातुकेँ स्वच्छ कयल जाइछ ।

3. द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
   तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति अनश्नन्यो अभिचाकशीति ।। —□०, 1-164-20

अर्थात् दूटा सुन्दर पाँखिबला संग रहयबला मित्ररूप पक्षी एकहि वृक्षपर स्थित अछि जाहिमेसँ एकटा पीपर खाइत अछि आ दोसर नहि खाइत अपन प्रकाश दैत अछि ।

उपर्युक्त तीनू उदाहरणमेसँ प्रथममे विरोधाभास एवं उपमा, दोसरमे उपमा तथा तेसरमे रूपक, विभावना, विशेषोक्ति तथा वृत्यनुप्रासक सुन्दर सामंजस्य अछि ।

2. **निरुक्त**— ई तँ सर्वविदित अछि जे लक्ष्य ग्रन्थक पश्चात् लक्षण ग्रन्थक निर्माण होइत अछि, भाषाक बाद ओकर व्याकरण बनैत अछि । अतः वेदमे अलंकारक प्रचुर प्रयोग देखि यास्काचार्य अपन पोथी निरुक्तमे ओकर सम्यक् विश्लेषण कयलनि । लिखित रूपसँ अलंकार विषयपर सर्वप्रथम कलम उठौनिहार व्यक्ति यास्काचार्य छलाह । ओ उपमाक लक्षणक प्रसंग कहैत छथि जे गार्ग्यक कथन अछि जे जखन एक वस्तु दोसर वस्तुसँ भिन्न रहय किन्तु दुनूमे किछु सादृश्य रहय तँ उपमा होइत अछि ।[28] एकर तुलना यदि साहित्यदर्पणकार विश्वनाथक परिभाषा[29] एवं जे०सी० नेसफिल्डक परिभाषासँ[30] कयल जाए तँ गप्प पूर्णतः स्पष्ट भए जाइत अछि ।

एहि काव्यशास्त्रीय लोकनिसँ सैकड़ो वर्ष पूर्व आचार्य यास्क उपमाक परिभाषा देने छलाह । उपमान एवं उपमेयक प्रसंग आलंकारिक लोकनिक कथन अछि जे उपमान सतत उपमेयसँ अधिक गुणवला होअए । कारण जे आँखिसँ कमल यदि विशेष गुणवला नहि होयत तँ आँखिक उपमान कमलकेँ बनेबाक प्रयोजन की ? यास्काचार्य एहि बातकेँ स्पष्ट रूपसँ कहने छथि—

तदासां कर्म ज्यायसा वा गुणेन प्रख्याततमेन वा,
कनीयांसं वा अप्रख्यातं वा उपमिमीते ।।

अर्थात् कोनो महत् वा प्रसि□ गुणक द्वारा कोनो लघु वा अप्रसि□ वस्तुक उपमा देल जाय ।

यास्क उपमाक स्वरूपेटा निर्धारण नहि कयलनि, अपितु ओकर चारि भेद कहलनि— कर्मोपमा,[31] भूतोपमा,[32] रूपोपमा,[33] तथा सि□ोपमा[34] । एहि विवेचनसँ स्पष्ट अछि जे ओहि समयमे वैदिक मन्त्रक सुस्पष्ट ज्ञानक हेतु उपमाक व्याख्याक प्रयोजन छल ।

3. **व्याकरण**— व्याकरण सेहो वेदक एकटा अंग थिक । वेदक छटा अंग अछि जाहिमे व्याकरणकेँ ओकर मुँह मानल जाइत अछि— 'मुखं व्याकरणं स्मृतम्' । हमरा लोकनिक बीच आद्य ओ प्रामाणिक व्याकरणक उपलब्ध ग्रन्थ अछि पाणिनीय अष्टाध्यायी । यद्यपि एकर अवलोकनसँ ई बात स्पष्ट भए जाइत अछि जे एहिसँ पूर्व अनेक उत्तम व्याकरण-ग्रन्थक निर्माण भेल छल, किन्तु ओ सभ आइ अनुपलब्ध अछि । महावैयाकरण पाणिनि अपन व्याकरणमे उपमाक चारि तत्त्वक उल्लेख कयलनि अछि, जे थिक— उपमेय, उपमान, वाचक एवं साधारण धर्म ।

1. तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् । —पाणिनि : अष्टाध्यायी, 2-3-72
2. उपमानानि सामान्यवचनैः । —तत्रैव, 2-1-55
3. उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे । —तत्रैव, 2-1-55

एतदतिरिक्त उपमाक श्रौती, आर्थी भेद व्याकरणक आधारपर कयल गेल ।

महावैयाकरण पाणिनिक पश्चात् कात्यायन तथा पतंजलिक महाभाष्यमे सेहो उपमावाचक शब्दक चर्चा अछि ।[35]

4. **भरत : नाट्यशास्त्र (ईसापूर्व दोसर शताब्दी)**— भारतमे काव्यशास्त्रीय चिन्तन परम्पराक मूल ग्रंथ आचार्य भरतक नाट्यशास्त्र अछि । ओ अपन नाट्यशास्त्रक सोलहम अध्यायमे 43 सँ 80 श्लोक धरि अलंकार-विवेचन कयलनि अछि । एहिमे मात्र चारि गोट अलंकारक चर्चा अछि— उपमा, दीपक, रूपक तथा यमक ।[36] हँ, एतबा धरि अवश्य जे एहि अलंकार सभक पर्याप्त विस्तारमे चर्चा कयल गेल अछि । यद्यपि आचार्य भरत लिखलनि नाट्यशास्त्र किन्तु ई अलंकार सभ श्रव्य एवं दृश्य दुनू काव्यक हेतु मानलनि । ओ उपमाक लक्षण दैत कहैत छथि जे काव्यात्मक उक्तिमे जतय सादृश्यक आधारपर एक वस्तुक उपमा दोसर वस्तुसँ देल जाय ओतय उपमा नामक अलंकार होइत अछि ।[37] आचार्य भरत उपमाक पाँच प्रकारक चर्चा कयलनि, जे थिक—

1. प्रशंसा, 2. निन्दा, 3. कल्पिता, 4. सदृशी, एवं 5. किंचन सदृशी ।

यमकक दस प्रकार कहलनि, जे थिक— 1. पदान्त-यमक, 2. कांची-यमक,

3. समुद्ग-यमक, 4. विक्रान्त-यमक, 5. चक्रवाल-यमक, 6. सन्दष्ट-यमक, 7. पादादि-यमक, 8. आम्रेडित-यमक, 9. चतुर्व्यवसित-यमक, एवं 10. माला-यमक ।

रूपक एवं दीपकक संक्षेपमे चर्चा कए गेलाह ।

5. **भामह : काव्यालंकार (सन् 500-600 ई०)**— भरतक बाद भामहक रचना काव्यालंकारमे अर्थालंकारक संख्या दसगुनोसँ अधिक बढ़ि गेल । ई अपन ग्रन्थमे बेरि-बेरि— अन्यैः, कैश्चिद्, अपरे, केचिद् इत्यादि शब्द सभक प्रयोग कयलनि अछि । एतदतिरिक्त रामशर्माच्युत, राजमित्र, तथा मेधाविन आदि व्यक्तिक सेहो नामोल्लेख कयलनि अछि । यद्यपि एहि ग्रन्थमे मेधाविन[38] नामक आचार्यक नामोल्लेख अछि किन्तु मेधाविनक कोनो कृति आइ धरि उपलब्ध नहि अछि । हमरालोकनिक बीच भरतक बाद भामहेक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ अछि । एहि ग्रंथक दोसरसँ पाँचम परिच्छेद धरि अलंकारक निरूपण अछि । भरत द्वारा वर्णित मात्र चारि गोट अलंकारक बाद भामह द्वारा वर्णित 38 गोट अलंकार देखि शंका होइत अछि जे अवश्य एहि बीचमे अनेक काव्यशास्त्रीय रहल होयताह । किन्तु एहि बीचक कोनो लिखित आधार नहि रहने अलंकारक वृ□क पूर्ण श्रेय भामहेकेँ छनि । काव्यालंकारमे उल्लिखित अलंकार निम्नलिखित अछि—

शब्दालंकार— 1. अनुप्रास, एवं 2. यमक ।

अर्थालंकार— 1. रूपक, 2. दीपक, 3. उपमा, 4. आक्षेप, 5. अर्थान्तरन्यास, 6. व्यतिरेक, 7. विभावना, 8. समासोक्ति, 9. अतिशयोक्ति, 10. यथासंख्य, 11. उत्प्रेक्षा, 12. स्वभावोक्ति, 13. प्रेय, 14. रसवत्, 15. ऊर्जस्वी, 16. पर्यायोक्ति, 17. समाहित, 18. उदात्त, 19. श्लिष्ट, 20. अपह्नुति, 21. विशेषोक्ति, 22. विरोध, 23. तुल्ययोगिता, 24. अप्रस्तुतप्रशंसा, 25. व्याजस्तुति, 26. निदर्शना, 27. उपमारूपक, 28. उपमेयोपमा, 29. सहोक्ति, 30. परिवृत्ति, 31. ससंदेह, 32. अनन्वय, 33. उत्प्रेक्षावयव, 34. संसृष्टि, 35. भाविकत्व एवं 36. आशीः । — 2+ 36 □ 38 अलंकार ।

वैशिष्ट्य—

1. ऊर्जस्वी, प्रेय तथा समाहितक केवल उदाहरणक संग नामोल्लेख अछि, लक्षण नहि ।
2. हेतु, सूक्ष्म तथा लेशक अलंकारत्वक खण्डन कयल गेल अछि कारण जे एहिमे वक्रोक्ति नहि होइछ, जे अलंकारक मूलाधार थिक ।[39]
3. भामह अन्यो आचार्यक मतक उल्लेख कयलनि अछि, यथा— आशीः केँ क्यो-क्यो अलंकार मानैत छथि ।[40]
4. स्वभावोक्तिक अलंकारत्व हुनका स्वीकार्य नहि छनि ।[41]

5. शब्दालंकार ओ अर्थालंकारक सीमा निर्धारण नहि कयलनि ।

6. अलंकारक चारि भागमे वर्गीकरण कयलनि, जाहिमे प्रथम वर्ग दोसरक अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण छल ।

7. प्रथम वर्गमे आचार्य भरत द्वारा उल्लिखित चारू अलंकार तथा अनुप्रासकेँ स्थान देलनि ।[42]

8. हिनक परवर्त्ती आचार्य हिनका द्वारा उल्लिखित सभ अलंकार (उत्प्रेक्षावयव एवं उपमारूपककेँ छोड़ि) स्वीकार कए लेलनि ।[43]

9. स्वभावोक्ति एवं आशीः केँ एहि चारू वर्गसँ पृथक् रखलनि, कारण जे एकरा क्यो-क्यो अलंकार नहि मानैत छथि ।[44]

6. दण्डी : काव्यादर्श (छठम शताब्दी)— भामहक पश्चात् आचार्य दण्डीक काव्यादर्शमे काव्यालंकारक विशद विवेचन भेटैत अछि । भामहक 38 अलंकारक स्थानमे दण्डी 35 अलंकार मानलनि । एहि पुस्तकमे तीन परिच्छेद अछि जाहिमे श्लोक संख्या (105+368+187) 660 अछि । एकर अधिकांश भागमे अलंकारेक विवेचन अछि । आचार्य दण्डी एकटा उपमालंकार मात्रक निम्नलिखित भेदक सोदाहरण उल्लेख कयलनि— 1. धर्मोपमा, 2. वस्तूपमा, 3. विपर्यायोपमा, 4. अन्योन्योपमा, 5. नियमोपमा, 6. अनियमोपमा, 7. समुच्चयोपमा, 8. अतिशयोपमा, 9. उत्प्रेक्षितोपमा, 10. अद्भुतोपमा, 11. मोहोपमा, 12. संशयोपमा, 13. निर्णयोपमा, 14. श्लेषोपमा, 15. समानोपमा, 16. निन्दोपमा, 17. प्रशंसोपमा, 18. आचिरव्यासोपमा, 19. विरोधोपमा, 20. प्रतिषेधोपमा, 21. चटूपमा, 22. तत्त्वाख्यानोपमा, 23. असाधारणोपमा, 24. अभूतोपमा, 25. असम्भावितोपमा, 26. बहूपमा, 27. विक्रियोपमा, 28. मालोपमा, 29. वाक्यार्थोपमा, 30. प्रतिवस्तूपमा, 31. तुल्ययोगोपमा एवं 32. हेतूपमा ।[45]

एहि विभाजनसँ स्पष्ट भए जाइत अछि जे दण्डी अलंकारक कोन प्रकारक भेदोपभेद कयलनि । हिनका द्वारा मान्य अलंकारक संख्या 35 गोट अछि, जे थिक—

1. स्वभावोक्ति, 2. उपमा, 3. रूपक, 4. दीपक, 5. आवृत्ति, 6. आक्षेप, 7. अर्थान्तरन्यास, 8. व्यतिरेक, 9. विभावना, 10. समासोक्ति, 11. अतिशयोक्ति, 12. उत्प्रेक्षा, 13. हेतु, 14. सूक्ष्म, 15. लेश, 16. यथासंख्य, 17. प्रेय, 18. रसवत्, 19. ऊर्जस्वि, 20. पर्यायोक्ति, 21. समाहित, 22. उदात्त, 23. अपह्नुति, 24. श्लेष, 25. विशेषोक्ति, 26. तुल्ययोगिता, 27. विरोध, 28. अप्रस्तुतप्रशंसा, 29. व्याजोक्ति, 30. निदर्शना, 31. सहोक्ति, 32. परिवृत्ति, 33. आशीः, 34. संकीर्ण एवं 35. भाविक ।

वैशिष्ट्य—

1. भामह द्वारा तिरस्कृत स्वभावोक्ति अलंकारकेँ ओ मुख्य अलंकार मानि लेलनि आ एकर दोसर नाम जाति रखलनि ।[46]

2. भामह द्वारा परित्यक्त हेतु, सूक्ष्म एवं लेश अलंकारकेँ उत्तम अलंकार मानलनि ।[47]

3. उपमालंकारक 32 भेद कयलनि तथा उपमेयोपमा, प्रतिवस्तूपमा, अतिश्योक्ति एवं भ्रान्तिमानकेँ एकरे अन्तर्गत रखलनि ।[48]

4. रूपकक सोलह, आक्षेपक चौबीस तथा यमकक असंख्य भेद कयलनि ।

5. दीपकावृत्ति नामक दीपकक भेदक कल्पना कयलनि, जकरा परवर्त्ती आलंकारिक लोकनि स्वतंत्र अलंकार मानि लेलनि ।[49]

6. प्रेय, रसवत् एवं ऊर्जस्विकेँ लक्षण-ब□ कयलनि, जकरा भामह उदाहरण मात्र दए कए बढ़ि गेल छलाह ।[50]

7. दण्डी अलंकारक व्याख्या कयलनि, किन्तु ओकर बीज पूर्ववर्त्तीये आचार्यक कृतिमे छल ।[51]

7. उद्भट : काव्यालंकार-सार-संग्रह (800 ई.)— ई पोथी 6 अध्यायमे विभक्त अछि, जाहिमे 79 कारिका अछि । एहिमे 41 अलंकारक लक्षण एवं उदाहरण प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

काव्यालंकार-सार-संग्रहमे विवेचित अलंकारक, पूर्ववर्त्ती आचार्यक अलंकारसँ भेदाभेदक दृष्टिएँ, निम्नलिखित 8 वर्ग मानल गेल अछि—[52]

1. प्रथम वर्ग— एहिमे सर्वथा नवीन अलंकार राखल गेल अछि, यथा— पुनरुक्तवदाभास, काव्यलिंग एवं दृष्टान्त ।

2. द्वितीय वर्ग— एहि वर्गमे पूर्ववर्त्ती आचार्य द्वारा संकेतित अलंकारक विकसित रूपमे कल्पना भेल अछि, यथा— संकर एवं छेकानुप्रास ।

3. तृतीय वर्ग— पूर्ववर्त्ती आचार्य द्वारा अपरिभाषित अलंकार, जकर लक्षण उद्भट देलनि, यथा— लाटानुप्रास ।

4. चतुर्थ वर्ग— पूर्ववर्त्ती अलंकारसँ नामतः अभिन्न किन्तु स्वरूपतः भिन्न अलंकार, यथा— प्रेय, रसवत्, ऊर्जस्वि, समाहित, तुल्ययोगिता, विशेषोक्ति, व्याजस्तुति, निदर्शना, परिवृत्ति एवं स्वभावोक्ति ।

5. पंचम वर्ग— प्राचीन अलंकारक सदृश सामान्य स्वरूपक होइतहुँ नवीन भेदोपभेदसँ

युक्त अलंकार, यथा— अर्थान्तरन्यास, उत्प्रेक्षा, ससन्देह, अतिशयोक्ति, उपमा एवं व्यतिरेक ।

6. षष्ठ वर्ग— पूर्ववर्त्ती आचार्यक अलंकारक परिभाषाक आधारपर पारिभाषित किन्तु अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट अलंकार, यथा— पर्यायोक्ति, उदात्त, श्लिष्ट, रूपक तथा दीपक । बनहट्टी उद्भटक रूपक-लक्षणकेँ भामहक रूपक-लक्षणसँ सर्वथा स्वतंत्र मानलनि अछि ।[53]

7. सप्तम वर्ग— शब्दभेदसँ पूर्ववर्त्ती आचार्यक अलंकार-परिभाषाक आधारपर परिभाषित अलंकार— समासोक्ति, उपमेयोपमा, संसृष्टि तथा प्रतिवस्तूपमा ।

8. अष्टम वर्ग— पूर्ववर्त्ती आचार्यक अलंकारसँ अभिन्न अलंकार, यथा— आक्षेप, विभावना, अतिशयोक्ति, यथासंख्य, अपह्नुति, विरोध, अप्रस्तुतप्रशंसा, सहोक्ति, अनन्वय तथा भाविक ।

भाविक अलंकारक मान्यतामे किछु नवीनता अछि, किन्तु लक्षण भामहक लक्षणसँ अभिन्न ।[54]

वैशिष्ट्य—

1. उद्भट छौ टा नवीन अलंकारक प्रयोग कयलनि, जे थिक— 1. पुनरुक्तिवदाभास, 2. लाटानुप्रास, 3. निदर्शना, 4. संकर, 5. काव्यलिंग तथा 6. दृष्टान्त ।
2. दण्डी द्वारा मान्य हेतु, सूक्ष्म एवं लेश अलंकारकेँ छोड़ि देलनि ।
3. किछु अलंकारक परिभाषा भामहेक पुस्तकसँ लेलनि आ किछु अलंकारक परिभाषामे सामान्य अन्तर अनलनि ।
4. भामह द्वारा कथित यमक, उपमारूपक तथा उत्प्रेक्षावयवकेँ पूर्णतः छोड़ि देलनि ।

वामन : काव्यालंकारसूत्र : (850 ई.क पूर्व)— वामनक काव्यालंकारसूत्र पाँच अधिकरण एवं द्वादश अध्यायमे विभक्त अछि, जाहिमे सूत्र संख्या 319 अछि । ओ रीति सम्प्रदायक प्रतिनिधि आचार्य छलाह, तेँ अलंकारक प्रति किछु उपेक्षा भाव छलनि । ओ अर्थालंकारमे केवल ओही अलंकारक सत्ता स्वीकार कयलनि जकर मूलमे सादृश्य होइछ आ तेँ सभ अलंकारकेँ उपमा-प्रपंच सि□ करय चाहलनि ।[55]

वामन एकतीस अलंकारक लक्षण एवं उदाहरण प्रस्तुत कयलनि, जे निम्नलिखित अछि— 1. यमक, 2. अनुप्रास, 3. उपमा, 4. प्रतिवस्तूपमा, 5. समासोक्ति, 6. अप्रस्तुत प्रशंसा, 7. अपह्नुति, 8. रूपक, 9. श्लेष, 10. वक्रोक्ति, 11. उत्प्रेक्षा, 12. अतिशयोक्ति, 13. संदेह, 14. विरोध, 15. विभावना, 16. अनन्वय, 17. उपमेयोपमा, 18. परिवृत्ति,

19. क्रम, 20. दीपक, 21. निदर्शना, 12. अर्थान्तरन्यास, 23. व्यतिरेक, 24. विशेषोक्ति, 25. व्याजस्तुति, 26. व्याजोक्ति, 27. तुल्ययोगिता, 28. आक्षेप, 29. सहोक्ति, 30. समाहित एवं 31. संसृष्टि ।

वैशिष्ट्य—

1. आचार्य भरतसँ उद्भट तकक रचनामे जाहि अलंकारक प्रयोग भेल अछि ताहिसँ कतोक अलंकारकेँ वामन छोड़ि देलनि, यथा— आशीः, आवृत्ति, प्रेय, पर्यायोक्ति, रसवत्, दृष्टान्त, छेकानुप्रास, काव्यलिंग, उपमारूपक एवं उत्प्रेक्षावयव ।
2. भामह एवं उद्भट जकरा ससन्देह कहलनि तकरा ई संदेह संज्ञासँ अभिहित कयलनि । दुनूमे कोनो तत्त्वगत भिन्नता नहि अछि ।[56]
3. पूर्ववर्त्ती ओ परवर्त्ती आचार्य जकरा यथासंख्य कहलनि तकरा ई क्रम संज्ञा देलनि ।[57]
4. वामन वक्रोक्ति एवं व्याजोक्ति दू नव अलंकारक जन्म देलनि । यद्यपि भामह वक्रोक्ति शब्दक प्रयोग अलंकारक प्राण कहि कए चुकल छलाह ।[58]
5. वामनक किछु अलंकारक परिभाषा भामहक परिभाषासँ पूर्णतः अभिन्न अछि, यथा— उपमा[59] एवं विभावना[60] ।
6. वामन एकतीस अलंकारक निरूपण कयलनि । काव्यालंकार-सूत्रक व्याख्याता आचार्य विश्वेश्वरक मतानुसार वामन 30 अर्थालंकार एवं 2 शब्दालंकारक वर्णन कयलनि ।[61] विश्वेश्वर वामनक समाहितक गणना नहि कय संसृष्टिक दू भेदकेँ स्वतंत्र अलंकार मानि लेलनि । हिन्दी साहित्यक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् डा० वचनदेव कुमार अपन शोधप्रबन्धमे वामन द्वारा निरूपित 33 अलंकारक चर्चा कयलनि अछि यद्यपि नाम एकतीसेटाक गनओलनि अछि ।[62]

9. रुद्रट : काव्यालंकार (800-50 ई.)—

रुद्रटक ई पोथी सोलह अध्यायमे विभक्त अछि, जाहिमे कुल पद्यक संख्या 74 अछि । पुस्तकमे 495 कारिका एवं 253 उदाहरण अछि । ग्रन्थक नामकरणक प्रसंग टीकाकार नमिसाधुक मन्तव्य सत्य बुझना जाइत अछि जे काव्यक अलंकार प्रस्तुत ग्रन्थक मुख्य प्रतिपाद्य विषय थिक ।[63]

एहि ग्रन्थक दस अध्यायमे काव्यक शब्दार्थालंकारक विवेचन अछि । उद्भटक एकतालीस अलंकारसँ बढ़ि कए एहिमे तिरसठि अलंकार भए गेल, जाहिमे पाँच शब्दालंकार तथा 58 अर्थालंकार अछि ।

काव्यालंकारमे उल्लिखित शब्दालंकार तथा वर्गानुक्रमसँ निर्दिष्ट अर्थालंकार

निम्नलिखित अछि—

शब्दालंकार— 1. वक्रोक्ति, 2. अनुप्रास, 3. यमक, 4. श्लेष एवं 5. चित्र ।

अर्थालंकार— एकरा चारि वर्गमे प्रस्तुत कयल गेल अछि—

(क) **वास्तव वर्ग**— 1. सहोक्ति, 2. समुच्चय, 3. जाति वा स्वभावोक्ति, 4. यथासंख्य, 5. भाव, 6. पर्याय, 7. विषम, 8. अनुमान, 9. दीपक, 10. परिकर, 11. परिवृत्ति, 12. परिसंख्या, 13. हेतु, 14. कारणमाला, 15. व्यतिरेक, 16. अन्योन्य, 17. उत्तर, 18. सार, 19. सूक्ष्म, 20. लेश, 21. अवसर, 22. मीलित एवं 23. एकावली ।

(ख) **औपम्य वर्ग**— 1. उपमा, 2. उत्प्रेक्षा, 3. रूपक, 4. अपह्नुति, 5. संशय वा संदेह, 6. समासोक्ति, 7. मत, 8. उत्तर, 9. अन्योक्ति वा अप्रस्तुत प्रशंसा 10. प्रतीप, 11. अर्थान्तरन्यास, 12. उभयन्यास, 13. भ्रान्ति, 14. आक्षेप, 15. प्रत्यनीक, 16. दृष्टान्त, 17. पूर्व, 18. सहोक्ति, 19. समुच्चय, 20. साम्य, एवं 21. स्मरण ।

(ग) **अतिशय वर्ग**— 1. पूर्व, 2. विशेष, 3. उत्प्रेक्षा, 4. विभावना, 5. तद्गुण, 6. अधिक, 7. विरोध, 8. विषम, 9. असंगति, 10. पिहित, 11. व्याघात एवं 12. अहेतु ।

(घ) **श्लेष वर्ग**— 1. श्लेष । श्लेष-विवेचनक अन्तर्गत संकरक उल्लेख अछि ।

एहिमेसँ 25 अलंकारक आविष्कर्त्ता रुद्रट छथि । रुद्रट प्रणीत अलंकार-संख्यापर पूर्ण मतभेद अछि । कतोक विद्वानक मतेँ रुद्रट मात्र एकावने अलंकारक विवेचन कयलनि जाहिमे 26 पूर्ववर्त्ती आचार्य द्वारा मान्य अलंकार छल तथा 25 नव अलंकार । पोद्दारजी 58 अलंकारमे 7 टाक आवृत्ति दू बेरि मानैत छथि एवं श्लेषकेँ अर्थश्लेष एवं शब्दश्लेषसँ दू बेरि । तेँ एहि आठकेँ छोड़ि 50 अलंकार भेल ।[64] डा० सत्यदेव चौधरी आर्थालंकारक संख्या 57 मानैत छथि । ओ चारिएटाकेँ दू-दू वर्गमे रखैत छथि, यथा— उत्तर एवं समुच्चय वास्तव एवं औपम्यगत दुनू थिक । तेँ हिनका अनुसारेँ रुद्रट निरूपित अलंकार संख्या 57 भेल ।[65] डा० वचनदेव कुमार एहि सभ मतकेँ भ्रमपूर्ण मानलनि अछि । हिनका अनुसारेँ 57 अलंकारमे 6 अलंकार दू बेरि आयल अछि, संगहिँ श्लेषकेँ दू भिन्न अलंकार मानि लेलनि । अतः हिनका विचारेँ रुद्रट-प्रणीत अलंकारक संख्या 51 भेल[66] आ वस्तुतः यैह तर्कसंगत बुझि पड़ैत अछि ।

वैशिष्ट्य—

1. रुद्रट द्वारा अलंकारक चतुर्धा विभाजन- वास्तव, औपम्य, अतिशय एवं श्लेष हिनक मौलिक एवं ठोस आधारपर अछि ।

2. श्लेषालंकारक ई दस भेद बनओलनि ।
3. अनन्वय एवं उपमेयोपमाकेँ दू स्वतन्त्र अलंकार नहि मानि एकहिटा उपमाक अन्तर्गत रखलनि ।
4. रसवत्, प्रेयस्, ऊर्जस्वि एवं समाहित— एहि चारू अलंकारकेँ पूर्णतः छोड़ि देलनि ।
5. दण्डी, मम्मट जकरा स्वभावोक्ति कहलनि तकरा रुद्रट जाति एवं अतिशयोक्तिकेँ[67] पूर्व[68] अलंकार मानलनि ।

10. कुन्तक : वक्रोक्तिजीवित (दशम शताब्दी)—

आचार्य कुन्तक अपन वक्रोक्तिजीवितमे अलंकारक विवेचन किछु स्वतन्त्र ढंगसँ कयलनि । अलंकारक अनावश्यक भेदोपभेद हिनका पसिन्न नहि, तेँ ओहिमे पर्याप्त काट-छाँट कयलनि ।

हिनका अनुसारेँ अलंकारक निम्नलिखित वर्ग अछि—

1. पूर्ववर्त्ती आचार्यक लक्षणकेँ खण्डित कय कुन्तक द्वारा उद्भावित 9 अलंकार— रसवत्, दीपक, सहोक्ति आदि (एकर नाम प्राचीन एवं स्वरूप नवीन अछि) ।
2. उपमामे अन्तर्भूत अलंकार— प्रतिवस्तूपमा, उपमेयोपमा, तुल्ययोगिता, अनन्वय, परिवृत्ति तथा निदर्शना ।[69]
3. श्लेषमे अन्तर्भूत अलंकार— समासोक्ति ।[70]
4. शब्दभेदसँ प्रस्तुत प्राचीन लक्षणवला अलंकार— पर्यायोक्ति, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, उपमा, श्लेष, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास, आक्षेप, विभावना, संदेह, अपह्नुति, संसृष्टि, रूपक एवं अप्रस्तुत प्रशंसा ।
5. अलंकार्यक रूपमे स्वीकृत प्राचीन अलंकार— स्वभावोक्ति, प्रेय, ऊर्जस्वि, उदात्त, समाहित एवं आशीः ।
6. चमत्काराभावक कारण स्वीकृत अलंकार— यथासंख्य ।

कुन्तक अपन वक्रोक्तिजीवितमे मात्र अट्ठाइस अलंकारक नामोल्लेख कयलनि आ ओकरा परीक्षणीय बुझलनि । एतदतिरिक्त अन्यान्य अलंकार सभ एहीमे अन्तर्भूत अछि वा अलंकार्य थिक । हिनका सतरहे गोट मात्र अलंकारक अस्तित्व स्वीकार छनि, जे थिक— 1. उपमा, 2. रूपक, 3. श्लेष, 4. व्यतिरेक, 5. अप्रस्तुत प्रशंसा, 6. पर्यायोक्ति, 7. उत्प्रेक्षा, 8. अतिशयोक्ति, 9. दृष्टान्त, 10. अर्थान्तरन्यास, 11. आक्षेप, 12. विभावना, 13. संदेह, 14. अपह्नुति, 15. रसवत्, 16. दीपक एवं 17. सहोक्ति ।

वैशिष्ट्य–

1. अलंकार मीमांसाक क्षेत्रमे कुन्तकक महत्त्व पूर्वप्रचलित अलंकारक संख्यामे काट–छाँटक दृष्टिसँ अछि, नव अलंकारक उद्‌भावनाक दृष्टिएँ नहि ।
2. सहोक्ति आदि अलंकारक निरूपणमे हिनक दृष्टि नव अछि ।
3. कुन्तक कोनो नव अलंकारक उद्‌भावना नहि कयलनि, अपितु प्राचीने अलंकारक स्वरूपमे परिवर्त्तन कयलनि ।
4. हिनका द्वारा परीक्षित ओ मान्य अलंकारक संख्या मात्र अट्‌ठाइस अछि ।
5. ई अलंकारकेँ 6 वर्गमे विभाजित कयलनि ।

11. अग्निपुराणकार (सं. 957 क लगभग)–

अग्निपुराणक रचनाक समय एवं लेखकक नाम दुनू विवादास्पद अछि । ई रचना स्वतंत्र नहि अपितु अनेक प्राचीन लेखकक सामग्रीसँ भरल अछि ।[71] एहिमे कुल 383 अध्याय अछि ।

अग्निपुराणमे अलंकारक तीन वर्ग अछि, जे थिक–

(अ) शब्दगत अलंकार, (आ) अर्थगत अलंकार एवं (इ) शब्दार्थगत अलंकार ।

(अ) **शब्दगत अलंकार**– ई आठ शब्दालंकारक विवेचन कयलनि, जे थिक– 1. छाया, 2. मुद्रा, 3. उक्ति, 4. गुम्फन, 5. वाकोवाक्य, 6. युक्ति, 7. अनुप्रास एवं 8 चित्र । चित्रक प्रहेलिका, प्रश्न आदि सात भेद स्वीकृत अछि ।[72]

(आ) **अर्थगत अलंकार**– 1. स्वरूप, स्वभावोक्ति, 2. सादृश्य, 3. उत्प्रेक्षा, 4. अतिशय, 5. विभावना, 6. विरोध, 7. हेतु एवं 8. सम । समान धर्मपर आधारित– उपमा, रूपक तथा अर्थान्तरन्यासकेँ सादृश्यक भेदक रूपमे स्वीकार कयल गेल अछि ।[73]

(इ) **शब्दार्थगत अलंकार**– 1. प्रशस्ति, 2. कान्ति, 3. औचित्य, 4. संक्षेप, 5. यावदर्थता, 6. अभिव्यक्ति ।[74]

वैशिष्ट्य–

1. अग्निपुराणकार अलंकार–विवेचन प्रारम्भ करबासँ पूर्व दण्डीक शब्दमे अलंकारक स्वरूपक उल्लेख कयलनि अछि ।[75]
2. अग्निपुराणक अलंकार–विवेचन बहुत अशक्त एवं अप्रौढ़ अछि । कोनो नव अलंकारक उद्‌भावना तँ ई नहिएँ कयलनि, अपितु पूर्व प्रचलितो अर्थालंकारमेसँ कतोककेँ अकारणहि छोड़ि देलनि ।

3. अग्निपुराणकार जाहि छओ गोट शब्दार्थालंकारक विवेचन कयलनि (प्रशस्ति, कान्ति, औचित्य, संक्षेप, यावदर्थता एवं अभिव्यक्ति) से वस्तुतः विलक्षण अछि । यद्यपि एहिमेसँ एकोटा स्वीकृत नहि भए सकल ।
4. अग्निपुराणकारक अलंकार–विवेचन पर्याप्त अस्पष्ट अछि, जकर मुख्य कारण अछि एहिमे उदाहरणक अभाव ।

12. भोजराज : सरस्वती कण्ठाभरण एवं शृंगारप्रकाश (सन् 1030–1050 ई.)–

शृंगारप्रकाश 26 अध्यायमे विभक्त भीमकाय ग्रंथ अछि । एकर दशम अध्यायमे शब्दालंकार, अर्थालंकार एवं उभयालंकार वर्णित अछि ।

अलंकार निरूपणक हेतु हिनक सरस्वती कण्ठाभरण पर्याप्त महत्त्वपूर्ण अछि । ई पाँच परिच्छेदमे विभक्त अछि । एहिमे मौलिकताक अभाव बुझना जाइत अछि । एहिमे संग्रहक बाहुल्य अछि ।

ई अलंकारक तीन भेद मानलनि अछि– शब्दालंकार, अर्थालंकार एवं शब्दार्थालंकार । एकरा क्रमशः बाह्य, आभ्यन्तर एवं बह्याभ्यन्तर अलंकार[76] सेहो कहलनि अछि ।

एहि ग्रन्थक दोसर परिच्छेदमे 24 शब्दालंकारक विवेचन अछि, जे थिक– 1. जाति, 2. गति, 3. रीति, 4. वृत्ति, 5. छाया, 6. मुद्रा, 7. उक्ति, 8. युक्ति, 9. भणिति, 10. गुम्फना, 11. शैया, 12. पठिति, 13. यमक, 14. श्लेष, 15. अनुप्रास, 16. चित्र, 17. वाकोवाक्य, 18. प्रहेलिका, 19. गूढ़, 20. प्रश्नोत्तर, 21. अध्येय, 22. श्रव्य, 23. प्रेक्ष्य एवं 24. अभिनेय ।

तेसर परिच्छेदमे 24 अलंकारक परिभाषा एवं उदाहरण अछि, जे थिक– 1. जाति, 2. विभावना, 3. हेतु, 4. अहेतु, 5. सूक्ष्म, 6. उत्तर, 7. विरोध, 8. सम्भव, 9. अन्योन्य, 10. परिवृत्ति, 11. निर्दशना, 12. भेद, 13. समाहित, 14. भ्रान्ति, 15. वितर्क, 16. मीलित, 17. स्मृति, 18. भाव, 19. प्रत्यक्ष, 20. अनुभव, 21. उपमान, 22. आगम, 23. अर्थापत्ति एवं 24. अभाव ।

चारिम परिच्छेदमे शब्दार्थालंकार विवेचित अछि, जे थिक– 1. उपमा, 2. रूपक, 3. साम्य, 4. संशय, 5. अपह्नुति, 6. समाधि, 7. समासोक्ति, 8. उत्प्रेक्षा, 9. अप्रस्तुत प्रशंसा, 10. तुल्ययोगिता, 11. लेश, 12. सहोक्ति, 13. समुच्चय, 14. आक्षेप, 15. अर्थान्तरन्यास, 16. विशेषोक्ति, 17. परिकर, 18. दीपक, 19. क्रम, 20. पर्याय, 21. अतिशयोक्ति, 22. श्लेष, 26. भाविक एवं 24. संसृष्टि ।

वैशिष्ट्य—

1. समाधि अलंकारक लक्षण पूर्णतः नवीन अछि ।[77]
2. उभयालंकारमे श्लेष एवं संसृष्टिकेँ छोड़ि उपमा, रूपक आदि 22 अलंकारकेँ रखबाक साहस पहिल बेरि भोजे कयलनि ।
3. आचार्य भोजराज दण्डीक काव्यादर्शसँ दू सय श्लोक उधार लेलनि । एतदतिरिक्त अन्यान्य संस्कृत कविक 1500 सँ अधिक श्लोक उदाहरणस्वरूप ग्रहण कयल गेल अछि ।
4. भोज द्वारा आविष्कृत— अहेतु, अभाव, अर्थापत्ति, आप्तवचन, उपमान, प्रत्यक्ष, वितर्क, संभव, समाधि[78]— एहि नओ अलंकारकेँ सेठ कन्हैयालालजी भोज द्वारा आविष्कृत मानैत छथि, जखन कि एकर उल्लेख रुद्रट[79] अपन काव्यालंकारमे कयने छथि ।
5. शब्दालंकारमे— जाति, गति, रीति, वृत्ति, भणिति, शय्या, पठिति, गूढ़, अध्येय, श्रव्य, प्रेक्ष्य, एवं अभिनय— ई बारहो अलंकार नव अछि, जे परवर्त्ती आचार्यलोकनिकेँ मान्य नहि भेलनि ।
6. शब्दालंकारमे— छाया, मुद्रा, उक्ति, युक्ति, गुम्फना, वाकोवाक्य अनुप्रास, एवं चित्त— ई अग्निपुराणक अनुसार विवेचित अलंकार अछि ।

13. मम्मट : काव्यप्रकाश (1100 ई.क लगभग)—

मम्मटाचार्यक काव्यप्रकाश काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोणसँ बहुत महत्त्वपूर्ण अछि । ई 10 उल्लासमे विभक्त अछि । एकर अन्तिम दुनू उल्लासमे अलंकार मात्रक विवेचन अछि । नवम उल्लासमे 6 शब्दालंकार एवं दशम उल्लासमे 62 अर्थालंकारक वर्णन अछि ।

शब्दालंकार— 1. वक्रोक्ति, 2. अनुप्रास, 3. यमक, 4. श्लेष, 5. चित्र एवं 6. पुनरुक्तवदाभास ।

अर्थालंकार— 1. उपमा, 2. अनन्वय, 3. उपमेयोपमा, 4. उत्प्रेक्षा, 5. ससंदेह, 6. रूपक, 7. अपह्नुति, 8. श्लेष, 9. समासोक्ति, 10. निदर्शना, 11. अप्रस्तुत प्रशंसा 12. प्रतिवस्तूपमा, 13. अतिशयोक्ति, 14. दृष्टान्त, 15. दीपक, 16. माला दीपक, 17. तुल्ययोगिता, 18. व्यतिरेक, 19. आक्षेप, 20. विभावना, 21. विशेषोक्ति, 22. यथासंख्य, 23. अर्थान्तरन्यास, 24. विरोध, 25. स्वाभावोक्ति, 26. व्याजस्तुति, 27. सहोक्ति, 28. विनोक्ति, 29. परिवृत्ति, 30. भाविक, 31. काव्यलिंग, 32. पर्यायोक्ति, 33. उदात्त, 34. समुच्चय, 35. पर्याय, 36. अनुमान, 37. परिकर, 38. व्याजोक्ति, 39. परिसंख्या, 40. कारणमाला, 41. अन्योन्य, 42. उत्तर, 43. सूक्ष्म, 44. सार, 45. असंगति, 46. समाधि,

47. सम, 48. विषम, 49. अधिक, 50. प्रत्यनीक, 51. मीलित, 52. एकावली, 53. स्मरण, 54. भ्रान्तिमान, 55. प्रतीप, 56. सामान्य, 57. विशेष, 58. तद्गुण, 59. अतद्गुण, 60. व्याघात, 61. संसृष्टि एवं 62. संकर ।

वैशिष्ट्य—

1. मम्मट विशेषतः प्राचीने आचार्यक अलंकार विषयक धारणाक विवेचन कयलनि अछि, नव अलंकारक उद्भावना कम ।
2. मम्मट द्वारा अधिकृत मात्र पाँचहिटा अलंकार अछि, जे थिक— अतद्गुण, विनोक्ति, सम, सामान्य एवं मालादीपक ।
3. जाहि पाँच अलंकारक उद्भावना मम्मट कयलनि, तकरहु मूल पूर्ववर्त्ती आचार्यक विभिन्न अलंकारक स्वभावमे देखल जाइछ ।
4. चित्रालंकारकेँ मम्मट कष्टकाव्य मानैत छथि ।[80]
5. पुनरुक्तवदाभासकेँ ई काव्यालंकार मानैत छथि ।[81] एकर सभंग एवं अभंग दू भेद कयलनि अछि ।

14. रुय्यक : अलंकार-सर्वस्व एवं अलंकार-सूत्र (सन् 1135 ई.)—

आचार्य रुय्यकक अलंकार-सूत्र एवं अलंकार-सर्वस्व अलंकार-निरूपणक हेतु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अछि । केवल अलंकारहिटापर लिखनिहार ई दोसरे आचार्य थिकाह । हिनका द्वारा स्वीकृत प्रायः सभ अलंकार परवर्त्ती आचार्यगणकेँ मान्य भेलनि । अलंकार-सर्वस्वमे छओ शब्दालंकार एवं पचहत्तरि अर्थालंकार अछि ।

शब्दालंकार— 1. पुनरुक्तवदाभास, 2. छेकानुप्रास, 3. वृत्यनुप्रास, 4. लाटानुप्रास, 5. यमक, एवं 6. चित्र ।

अर्थालंकार— 1. उपमा, 2. अनन्वय, 3. उपमेयोपमा, 4. स्मरण, 5. अपह्नुति, 6. उत्प्रेक्षा, 7. रूपक, 8. परिणाम, 9. सन्देह, 10. भ्रान्तिमान, 11. उल्लेख, 12. अतिशयोक्ति, 13. तुल्ययोगिता, 14. दीपक, 15. प्रतिवस्तूपमा, 16. दृष्टान्त, 17. निदर्शना, 18. व्यतिरेक, 19. सहोक्ति, 20. विनोक्ति, 21. समासोक्ति, 22. परिकर, 23. श्लेष, 24. अप्रस्तुत प्रशंसा, 25. अर्थान्तरन्यास, 26. पर्यायोक्ति, 27. व्याजस्तुति, 28. आक्षेप, 29. विरोध, 30. विभावना, 31. विशेषोक्ति, 32. अतिशयोक्ति, 33. असंगति, 34. विषम, 35. सम, 36. विचित्र, 37. अधिक, 38. अन्योन्य, 39. विशेष, 40. व्याघात, 41. कारणमाला, 42. एकावली, 43. माला-दीपक, 44. सार, 45. काव्यलिंग, 46. अनुमान, 47. यथासंख्य, 48. पर्याय, 49. परिवृत्ति, 50. परिसंख्या, 51. अर्थापत्ति,

52. विकल्प, 53. समुच्चय, 54. समाधि, 55. प्रत्यनीक, 56. प्रतीप, 57. मीलित, 58. सामान्य, 59. तद्गुण, 60. अतद्गुण, 61. उत्तर, 62. सूक्ष्म, 63. व्याजोक्ति, 64. वक्रोक्ति 65. स्वभावोक्ति, 66. भाविक, 67. रसवत्, 68. प्रेयस्, 69. ऊर्जस्वि, 70. समाहित, 71. भावोदय, 72. भावसन्धि, 73. भावसवलता, 74. संसृष्टि, एवं 75. संकर ।

कन्हैयालाल पोद्दार अपन 'काव्यकल्पद्रुम'क प्राक्कथनमे लिखने छथि जे– 'इस ग्रंथ में (रुय्यकक अलंकारसूत्रमे) चौरासी अलंकार हैं ।[82] किन्तु पोद्दारजीक उक्त कथन प्रमाणपुष्ट नहि अछि । डा० शोभाकान्त मिश्रक अनुसार ग्रन्थमे एकासीटा मात्र अलंकार अछि ।[83] आ यैह ठीक बुझाइत अछि, कारण जे अलंकार सर्वस्वमे सेहो एकासीयेटा अलंकारक विवेचन अछि ।

वैशिष्ट्य–

1. रुय्यक पाँचटा नव अलंकारक उद्भावना कयलनि, जे थिक– 1. उल्लेख, 2. काव्यार्थापत्ति, 3. परिणाम, 4. विचित्र एवं 5. विकल्प । एहिमेसँ उल्लेखक कल्पना दण्डीक हेतु रूपकक आधारपर कयल गेल अछि ।[84]
2. एतेक ठोस आधारपर वर्गीकरण कयनिहार पहिल आचार्य यैह थिकाह ।
3. अलंकारक स्वरूप-विवेचनमे रुय्यक बहुलांशतः मम्मटसँ सहमत छथि ।
4. अलंकार-विश्लेषणमे भेदोपभेदक अधिकाधिक सरलीकरणक प्रयास रुय्यक कयलनि अछि ।
5. अलंकारक लक्षणकेँ सरल सूत्रमे बान्हब हिनक विशेषता थिक ।

15. हेमचन्द्र : काव्यानुशासन (सन् 1150क बाद)–

ई ग्रन्थ 8 अध्यायमे विभक्त अछि जाहिमे संग्रह बेसी अछि आ मौलिकता कम । हिनकामे अलंकारक संख्या कम करबाक प्रवृत्ति देखल जाइत अछि । ई 6टा शब्दालंकार एवं 28टा अर्थालंकारक वर्णन कयलनि अछि, जे निम्नलिखित अछि–

शब्दालंकार– 1. अनुप्रास, 2. यमक, 3. चित्र, 4. श्लेष, 5. वक्रोक्ति, एवं 6. पुनरुक्तवदाभास ।

अर्थालंकार– 1. उपमा, 2. उत्प्रेक्षा, 3. रूपक, 4. निदर्शन, 5. दीपक, 6. अन्योक्ति, 7. पर्यायोक्ति, 8. अतिशयोक्ति, 9. आक्षेप, 10. विरोध, 11. सहोक्ति, 12. समासोक्ति, 13. जाति, 14. व्याजस्तुति, 15. श्लेष, 16. व्यतिरेक, 17. अर्थान्तरन्यास, 18. ससन्देह, 19. अपह्नुति, 20. परिवृत्ति, 21. अनुमान, 22. स्मृति, 23. भ्रान्ति 24. विषम, 25. सम, 26. समुच्चय, 27. परिसंख्या, 28. कारणमाला एवं 29. संकर ।

वैशिष्ट्य–

1. हेमचन्द्रक काव्यानुशासनमे अलंकार विषयक कोनो नव उद्भावना नहि अछि ।
2. हेमचन्द्र संसृष्टिकेँ संकर, तुल्ययोगिताकेँ दीपक, पर्यायकेँ परिवृत्ति, अनन्वय एवं उपमेयोपमाकेँ उपमा, प्रतिवस्तूपमाकेँ दृष्टान्त, एवं निदर्शनाकेँ निदर्शनक अन्तर्गत रखलनि ।[85]
3. रसवत्, प्रेयस, ऊर्जस्वि, आदि रसवत् अलंकारकेँ छोड़ि देलनि ।
4. यथासंख्य, विनोक्ति, भाविक, उदात्त, आशीः एवं प्रयत्नीककेँ पृथक् अलंकारत्व नहि स्वीकार कयलनि ।[86]
5. आचार्य हेमचन्द्र वक्रोक्ति-विवेचनमे मात्र श्लेष वक्रोक्तिटाक अलंकारत्व स्वीकार कयलनि एवं मम्मटक अनुकरणपर एकर लक्षण देलनि ।[87]
6. काकु वक्रोक्तिकेँ ई अलंकार नहि मानैत छथि, कारण जे भरत एवं राजशेखरक अनुसार काकु पाठधर्म थिक ।[88]
7. पुनरुक्तवदाभासकेँ ई पुनरुक्ताभास कहलनि ।[89]
8. सामान्यसँ विशेषक समर्थनकेँ हेमचन्द्र अर्थान्तरन्यास कहैत छथि, किन्तु विशेषसँ विशेष एवं सामान्यक समर्थनकेँ निदर्शना ।[90]

16. वाग्भट : वाग्भटालंकार (12म शताब्दी)–

वाग्भटालंकार पाँच परिच्छेदमे विभक्त अछि । एकर चतुर्थ परिच्छेदमे चारि शब्दालंकार एवं 35 अर्थालंकार अछि ।

शब्दालंकार– 1. चित्र, 2. वक्रोक्ति, 3. अनुप्रास, 4. यमक ।

अर्थालंकार– 1. उपमा, 2. उत्प्रेक्षा, 3. रूपक, 4. दीपक, 5. अप्रस्तुत प्रशंसा, 6. पर्यायोक्ति, 7. अतिशय, 8. आक्षेप, 9. विरोध, 10. सहोक्ति, 11. समासोक्ति, 12. जाति, 13. श्लेष, 14. व्यतिरेक, 15. अर्थान्तरन्यास, 16. संशय, 17. अपह्नुति, 18. परिवृत्ति, 19. अनुमान, 20. भ्रान्तिमान, 21. समुच्चय, 23. परिसंख्या, 24. संकर 25. प्रतिवस्तूपमा, 26. दृष्टान्त, 27. तुल्ययोगिता, 28. विभावना, 29. हेतु, 30. समाहित, 31. यथासंख्य, 32. अवसर, 33. सार, 34. एकावली एवं 35. प्रश्नोत्तर ।

वैशिष्ट्य–

1. वाग्भट उपमेक अन्तर्गत अनन्वय एवं उपमेयोपमाकेँ समाविष्ट कयलनि ।
2. वाग्भटक अनुसार चित्र, वक्रोक्ति, अनुप्रास एवं यमक 'ध्वन्यलंक्रिया' अर्थात् ध्वनिक अलंकार थिक ।[91]

3. वाग्भटालंकारमे कोनो नव अलंकारक उद्भावना नहि कयल गेल अछि ।
4. ई पूववर्त्ती आचार्य द्वारा प्रतिपादित अलंकारमेसँ किछुकेँ असुन्दर एवं अन्यमे अन्तर्भूत बुझि छोड़ि देलनि ।[92]
5. श्लेष एवं पुनरुक्तवदाभास अलंकारक अस्तित्व अकारणहि अस्वीकार कए देल गेल अछि ।
6. वाग्भट कोनो एक आचार्यकेँ आधार नहि मानि समस्त पूर्ववर्त्ती आचार्यक अलंकार विषयक मान्यताकेँ ग्रहण कयलनि अछि ।

17. शोभाकर मित्र : अलंकार-रत्नाकर (11म-13म शताब्दी)–

अलंकार-रत्नाकर अलंकार मात्रहिपर आश्रित अछि । ई पूर्ववर्त्ती आचार्यक अन्धानुकरण नहि कय अनेक नव अलंकारक उद्भावना कयलनि । हिनक अलंकार-रत्नाकरक परवर्त्ती संस्कृत कवि एवं आलंकारिकपर अत्यधिक प्रभाव पड़ल । किंवदन्ती अछि जे 'यशस्कर' नामक कवि अलंकार-रत्नाकरक विभिन्न अलंकार-लक्षणक उदाहरणक रूपमे देवीशतकक रचना कयलनि ।[93]

आचार्य शोभाकर मित्र अलंकारक संख्यामे वृ□ कयलनि । हिनका द्वारा वर्णित अलंकार निम्नलिखित अछि–

शब्दालंकार– 1. पुनरुक्तवदाभास, 2. यमक, 3. छेकानुप्रास, 4. वृत्यनुप्रास, 5. लाटानुप्रास, एवं 6. चित्र ।

अर्थालंकार– 1. उपमा, 2. कल्पितोपमा, 3. अनन्वय, 4. असम, 5. उपमेयोपमा, 6. उदाहरण, 7. प्रतिमा, 8. तुल्ययोगिता, 9. दीपक, 10. प्रतिवस्तूपमा, 11. दृष्टान्त, 12. निदर्शना, 13. स्मृति, 14. विनोद, 15. व्यासंग, 16. व्यतिरेक, 17. प्रतीप, 18. वैधर्म्य, 19. रूपक, 20. परिणाम, 21. अपह्नुति, 22. संदेह, 23. वितर्क 24. उत्प्रेक्षा, 25. भ्रान्तिमान, 26. उल्लेख, 27. प्रतिभा, 28. क्रियातपत्ति, 29. अतिशयोक्ति, 30. अप्रस्तुत प्रशंसा, 31. व्याजस्तुति, 32. प्रत्यनीक, 33. विनोक्ति, 34. सहोक्ति, 35. समासोक्ति, 36. श्लेष, 37. परिकर, 38. पर्यायोक्ति, 39. निश्चय, 40. आक्षेप, 41. विद्याभास, 42. संदेहाभास, 43. विकल्पाभास, 44. विरोध, 45. विभावना, 46. विशेषोक्ति, 47. असंगति, 48. अन्योन्य, 49. विपर्यय, 50. अचिन्त्यम्, 51. विषम, 52. सम, 53. विचित्र, 54. विशेष, 55. व्याघात, 56. शक्य, 57. व्यत्यास, 58. समता, 59. उद्रेक, 60. तुल्य, 61. अनादर, 62. आदर, 63. अनुकृति, 64. प्रत्यूह, 65. प्रत्यादेश, 66. समाधि, 67. अर्थान्तरन्यास, 68. व्याल्ति, 69. अनुमान, 70. हेतु, 71. आपत्ति, 72. विधि, 73. नियम, 74. परिसंख्या, 75. प्रतिप्रसव, 76. तन्त्र, 77. प्रसंग, 78. विकल्प, 79. समुच्चय,

80. परिवृत्ति, 81. पर्याय, 2. क्रम, 83. व□मानक, 84. अवरोह, 85. अतिशय, 86. शृंखला, 87. तद्गुण, 88. मीलित, 89. विवेक, 90. परभाग, 91. उद्भेद, 92. गूढ़, 93. सूक्ष्म, 94. व्याजोक्ति, 95. वक्रोक्ति, 96. स्वभावोक्ति, 97. भाविक, 98. उदात्त, 99. रसवत्प्रेयऊर्जस्वित तथा 100. संकर ।

डा० ओमप्रकाश शर्मा शोभाकर मित्र द्वारा उद्भावित 41 अलंकार माननलि अछि,[94] जे थिक– 1. असम, 2. उदाहरण, 3. प्रतिमा, 4. विनोद, 5. व्यासंग, 6. वैधर्म्य, 7. अभेद, 8. वितर्क, 9. प्रतिभा, 10. क्रियातिपत्ति, 11. निश्चय, 12. विद्याभास, 13. संदेहाभास, 14. विकल्पाभास, 15. विपर्यय, 16. अचिन्त्य, 17. अशक्य, 18. व्यत्यास, 19. समता, 20. उद्रेक, 21. तुल्य, 22. अनादर, 23. आदर, 24. अनुकृति, 25. प्रत्यूह, 26. प्रत्यादेश, 27. व्याति, 28. आपत्ति, 29. विधि, 30. नियम, 31. प्रतिप्रसव, 32. तन्त्र, 33. प्रसंग, 34. व□मानक, 35. अवरोध, 36. अतिशय, 37. शृंखला, 38. विवेक, 39. परभाग, 40. उद्भेद एवं 41. गूढ़ ।

वैशिष्ट्य–

1. डा० ओमप्रकाश शर्मा शोभाकर मित्र द्वारा उद्भावित 41 अलंकार माननलि अछि,[95] जखन कि सेठ कन्हैयालाल पोद्दार अपन अलंकार-रत्नाकरमे मात्र सत्ताइस गोट अलंकार नवीन मानैत छथि ।[96] किन्तु सेठजीक उक्त मत भ्रामक बुझना जाइत अछि ।[97]
2. एहिमे सभ मिलाकय 106 गोट अलंकारक विवेचन भेल अछि ।
3. रुय्यक जाहि पुनरुक्तवदाभासकेँ अर्थालंकार मानने छलाह, तकरा शोभाकर मित्रजी शब्दालंकार सि□ कए देलनि ।[98]

18. जयदेव : चन्द्रालोक (सन् 1200-1300)–

आचार्य जयदेवक चन्द्रालोक काव्यशास्त्रक विभिन्न विधाकेँ अपन अन्तर्गत रखने अछि, किन्तु अलंकार विवेचनक कारण एकर महत्त्व एतेक अधिक अछि । ई ग्रंथ दस मयूखमे विभक्त अछि ।

एहि ग्रंथमे विवेचित अलंकारक सम्बंधमे विद्वान लोकनिक मतैक्य नहि अछि । डा० सुशील कुमार डेक अनुसार जयदेव 8 शब्दालंकार एवं 100 अर्थालंकारक स्वरूप निरूपण कयलनि ।[99] अप्पय दीक्षित सेहो चन्द्रालोकमे विवेचित शब्दालंकारक संख्या 8 एवं अर्थालंकारक संख्या 100 माननलि अछि ।[100] सेठ कन्हैयालाल पोद्दारक अनुसार एहि ग्रंथमे 8 शब्दालंकार एवं 82 अर्थालंकारक विवेचन भेल अछि ।[101] ई मतभेद चन्द्रालोकक पाठ-भिन्नताक कारण अछि । डा० डे चन्द्रालोकक अनेक पाठक चर्चा कयलनि अछि ।[102]

हमरा जनैत चन्द्रालोकक अलंकार-संख्याक सम्बन्धमे अप्पय दीक्षितक मत सर्वाधिक प्रामाणिक अछि । ओ स्वयं एहि बातकेँ स्वीकार करैत छथि जे चन्द्रालोकमे जाहि अलंकारक लक्षण-उदाहरण देल गेल अछि ओकर लक्षण-उदाहरण ओ ओतहिसँ लेलनि अछि ।[103]

अतः चन्द्रालोकमे विवेचित शब्दालंकार 8 एवं अर्थालंकार 100 मान्य अछि । एहि अलंकार सभक अनुक्रमणिका निम्नलिखित अछि—

शब्दालंकार— 1. छेकानुप्रास, 2. वृत्यनुप्रास, 3. लाटानुप्रास, 4. स्फुटानुप्रास, 5. अर्थान्तरन्यास, 6. पुनरुक्तप्रतीकाश, 7. यमक, एवं 8. चित्र ।

अर्थालंकार— 1. उपमा, 2. अनन्वय, 3. उपमेयोपमा, 4. प्रतीप, 5. रूपक, 6. परिणाम, 7. उल्लेख, 8. स्मृति, 9. भ्रान्तिमान, 10. संदेह, 11. अपह्नुति, 12. उत्प्रेक्षा, 13. अतिशयोक्ति, 14. तुल्ययोगिता, 15. दीपक, 16. आवृत्तिदीपक, 17. प्रतिवस्तूपमा, 18. दृष्टान्त, 19. निदर्शना, 20. व्यतिरेक, 21. सहोक्ति, 22. विनोक्ति, 23. समासोक्ति, 24. परिकर, 25. परिकरांकुर, 26. श्लेष, 27. अप्रस्तुतप्रशंसा, 28. प्रस्तुतांकुर, 29. पर्यायोक्त, 30. व्याजस्तुति, 31. व्याजनिन्दा, 32. विषम, 33. विरोधाभास, 34. विभावना, 35. विशेषोक्ति, 36. असम्भव, 37. असंगति, 38. विषम, 39. सम, 40. विचित्र, 41. अधिक, 42. अल्प, 43. अन्योन्य, 44. विशेष, 45. व्याघात, 46. कारणमाला, 47. एकावली, 4. मालादीपक, 49. सार, 50. यथासंख्य, 51. पर्याय, 52. परिवृत्ति, 53. परिसंख्या, 54. विकल्प, 55. समुच्चय, 56. कारक दीपक, 57. समाधि, 58. प्रत्यनीक, 59. अर्थापत्ति, 60. काव्यलिंग, 61. अर्थान्तरन्यास, 62. विकस्वर, 63. प्रौढ़ोक्ति, 64. सम्भावना, 65. मिथ्याध्यवसिति, 66. ललित, 67. प्रहर्षण, 68. विषादन, 69. उल्लास, 70. अवज्ञा, 71. अनुज्ञा, 72. लेश, 73. मुद्रा, 74. रत्नावली, 75. तद्गुण, 76. पूर्वरूप, 77. अतद्गुण, 78. अनुगुण, 79. मीलित, 80. सामान्य, 81. उन्मीलित, 82. निमीलित, 83. उत्तर, 84. सूक्ष्म, 85. पिहित, 86. व्याजोक्ति, 87. गूढ़ोक्ति, 88. विवृतोक्ति, 89. युक्ति, 90. लोकोक्ति, 91. छेकोक्ति, 92. वक्रोक्ति, 93. स्वभावोक्ति, 94. भाविक, 95. उदात्त, 96. अत्युक्ति, 97. निरुक्ति, 98. प्रतिषेध, 99. विधि, एवं 100. हेतु ।

वैशिष्ट्य—

1. एकर सभसँ पैघ वैशिष्ट्य ई थिक जे एकहि श्लोकक पूर्वा□मे अलंकार-लक्षण-निरूपण तथा उत्तरा□मे उदाहरण देल गेल अछि ।
2. एहि ग्रन्थमे निम्नलिखित नव अर्थालंकारक उल्लेख भेल अछि— 1. उन्मीलित, 2. परिकरांकुर, 3. प्रौढ़ोक्ति, 4. सम्भावना, 5. प्रहर्षण, 6. विषादन, 7. विकस्वर, 8. असम्भव, 9. उल्लास, 10. पूर्वरूप, 11. अनुगुण, 12. अवज्ञा, 13. भाविकच्छवि तथा 14. अत्युक्ति ।

3. चन्द्रालोककार किछु प्राचीन अलंकारक विपरीत स्वभाववला अलंकारक सेहो कल्पना कयलनि अछि । मीलितक विपर्ययात्मक उन्मीलितक कल्पना एकर प्रमाण अछि ।
4. किछु एहनो स्वतन्त्र अलंकारक कल्पना चन्द्रालोकमे अछि जे प्राचीन आलंकारिकक अलंकारविशेषसँ पर्याप्त साम्य रखैत अछि, यथा— प्रोढ़ोक्तिक स्वरूप अतिशयोक्तिसँ बहुत अंशमे मिलैत अछि ।

19. विद्याधर : एकावली (सन् 1282-1327)—

एकावली मात्र अलंकारेटाक ग्रंथ नहि अपितु सम्पूर्ण काव्यशास्त्रक ग्रंथ थिक । ई ग्रंथ आठ उन्मेषमे विभक्त अछि । एहि ग्रंथपर आनन्दव□न, मम्मट तथा रुय्यकक पर्याप्त प्रभाव अछि । सातम उन्मेषमे शब्दालंकार तथा आठममे अर्थालंकार वर्णित अछि ।

एहि ग्रंथक विवेचनपर रुय्यकक गम्भीर प्रभाव देखना जाइछ । ई यमक एवं चित्रालंकारकेँ हेय मानलनि अछि । हिनक कथन अछि जे यमक एवं चित्रालंकारमे रसपुष्टि नहि होइत अछि । अतः दुष्कर एवं असाधु होयबाक कारणेँ एकरा काव्यक अलंकार नहि मानि काव्यक दोष मानैत छथि ।[104] रुय्यकहि जकाँ विद्याधर सेहो चित्रकेँ शब्दालंकार मानलनि अछि ।[105]

एहि ग्रंथमे स्वनिर्मित उदाहरण प्रस्तुत कयल गेल अछि । संक्षिप्त भेलहुपर विद्याधरक विवेचन पर्याप्त मौलिक अछि ।

20. विद्यानाथ : प्रतापरुद्र-यशोभूषण (14म शताब्दी)—

विद्यानाथ विरचित **प्रताप-रुद्र-यशोभूषण**मे तीन खण्ड अछि— कारिका, वृत्ति एवं उदाहरण । एहि ग्रंथमे 9 प्रकरण अछि— 1. नायक, 2. काव्य, 3. नाटक, 4. रस, 5. दोष, 6. गुण, 7. शब्दालंकार, 8. अर्थालंकार, 9. मिश्रालंकार ।

आचार्य विद्यानाथ निम्नलिखित अलंकारक विवेचन कयलनि—

शब्दालंकार— 1. छेकानुप्रास, 2. वृत्यनुप्रास, 3. यमक, 4. पुनरुक्तवदाभास, 5. लाटानुप्रास, एवं 6. चित्र ।

अर्थालंकार— 1. उपमा, 2. अनन्वय, 3. उपमेयोपमा, 4. स्मरण, 5. रूपक, 6. परिणाम, 7. संदेह, 8. भ्रान्तिमान, 9. अपह्नुति, 10. उल्लेख, 11. उत्प्रेक्षा, 12. अतिशयोक्ति, 13. सहोक्ति, 14. विनोक्ति, 15. समासोक्ति, 16. वक्रोक्ति, 17. स्वभावोक्ति, 18. व्याजोक्ति, 19. मीलन, 20. सामान्य, 21. तद्गुण, 22. अतद्गुण, 23. विरोध, 24. विशेष, 25. अधिक, 26. विभावना, 27. विशेषोक्ति, 28. असंगति, 29. विचित्र, 30. अन्योन्य, 31.

विषम, 32. सम, 33. तुल्ययोगिता, 34. दीपक, 35. प्रतिवस्तूपमा, 36. दृष्टान्त, 37. निदर्शना, 38. व्यतिरेक, 39. श्लेष, 40. परिकर, 41. आक्षेप, 42. व्याजस्तुति, 43. अप्रस्तुत प्रशंसा, 44. पर्यायोक्ति, 45. प्रतीप, 46. अनुमान, 47. काव्यलिंग, 48. अर्थान्तरन्यास, 49. यथासंख्य, 50. अर्थापत्ति, 51. परिसंख्या, 52. उत्तर, 53. विकल्प, 54. समुच्चय, 55. समाधि, 56. भाविक, 57. प्रत्यनीक, 58. व्याघात, 59. पर्याय, 60. सूक्ष्म, 61. उदात्त, 62. परिवृत्ति, 63. कारणमाला, 64. एकावली, 65. मालादीपक, एवं 66. सार ।

मिश्रालंकार— 1. संकर एवं 2. संसृष्टि ।

वैशिष्ट्य—

1. विद्यानाथक रचनामे कोनो नव अलंकारक उद्भावना नहि कयल गेल अछि ।
2. सहोक्तिक लक्षणमे विद्यानाथ ओकर अतिशयोक्तिमूलकतापर जोर देलनि अछि ।[106]

21. वत्सलांछन : काव्य-परीक्षा (1380-1437 वि०सं०)—

एहि ग्रन्थमे काव्यक अनेक अंग अछि, संगहि अलंकार-निरूपण सेहो अछि । एहिमे 5 शब्दालंकार एवं 56 अर्थालंकार वर्णित अछि ।

22. भानुदत्त : अलंकार-तिलक (14म शताब्दी)—

प्रस्तुत ग्रंथ पाँच परिच्छेदमे विभक्त अछि । चारिम परिच्छेदमे काव्यप्रकाशक अनुसार वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष, चित्र, पुनरुक्तवदाभास एवं सरस्वतीकण्ठाभरणक अनुसार गति, रीति, वृत्ति एवं छाया आदि शब्दालंकार वर्णित अछि । पाँचम परिच्छेदमे 71 अर्थालंकार वर्णित अछि ।

23. वाग्भट (द्वितीय) : काव्यानुशासन (1450 वि०सं०)—

प्रस्तुत ग्रन्थ पाँच अध्यायमे विभक्त अछि । एहिमे सूत्रशैलीमे अलंकारक निरूपण कयल गेल अछि । एहि ग्रन्थक तृतीय अध्यायमे 62 अर्थालंकार एवं चतुर्थ अध्यायमे चित्र, श्लेष, अनुप्रास, वक्रोक्ति, यमक एवं पुनरुक्तवदाभास ई छओ अलंकार वर्णित अछि । एहिमे अन्य एवं अपर दू नव अलंकार बुझि पड़ैछ ।

24. विश्वनाथ : साहित्यदर्पण (1300-1384 ई०)—

प्रस्तुत ग्रंथ दस परिच्छेदमे विभक्त अछि, जकर प्रथम परिच्छेदमे अलंकार-विवेचन अछि । एहिमे सरल एवं बोधगम्य शैलीक प्रयोग कयल गेल अछि । हिनक ख्यातिक मुख्य कारण थिक— शैलीक प्रांजलता, विवेचनक विशदता एवं विषयक व्यापकता । विश्वनाथ नव अलंकारक उद्भावनापर जोर नहि देलनि ।

विश्वनाथ अपन साहित्यदर्पणमे निम्नलिखित शब्दालंकारक स्वरूप विवेचन कयने छथि—

शब्दालंकार— 1. पुनरुक्तवदाभास, 2. अनुप्रास, 3. यमक, 4. वक्रोक्ति, 5. भाषासमक, 6. श्लेष, एवं 7. चित्र ।

अर्थालंकार— 1. उपमा, 2. अनन्वय, 3. उपमेयोपमा, 4. स्मरण, 5. रूपक, 6. परिणाम, 7. संदेह, 8. भ्रान्तिमान, 9. उल्लेख, 10. अपह्नुति, 11. निश्चय, 12. उत्प्रेक्षा, 13. अतिशयोक्ति, 14. तुल्ययोगिता, 15. दीपक, 16. प्रतिवस्तूपमा, 17. दृष्टान्त, 18. निदर्शना, 19. व्यतिरेक, 20. सहोक्ति, 21. विनोक्ति, 22. समासोक्ति, 23. परिकर, 24. श्लेष, 25. अप्रस्तुत प्रशंसा, 26. व्याजस्तुति, 27. पर्यायोक्ति, 28. अर्थान्तरन्यास, 29. काव्यलिंग, 30. अनुमान, 31. हेतु, 32. अनुकूल, 33. आक्षेप, 34. विभावना, 35. विशेषोक्ति, 36. विरोध, 37. असंगति, 38. विषम, 39. सम, 40. विचित्र, 41. अधिक, 42. अन्योन्य, 43. विशेष, 44. व्याघात, 45. कारणमाला, 46. मालादीपक, 47. एकावली, 48. सार, 49. यथासंख्य, 50. पर्याय, 51. परिवृत्ति, 52. परिसंख्या, 53. उत्तर, 54. अर्थावृत्ति, 55. विकल्प, 56. समुच्चय, 57. समाधि, 58. प्रत्यनीक, 59. प्रतीप, 60. मीलित, 61. सामान्य, 62. तद्गुण, 63. अतद्गुण, 64. सूक्ष्म, 65. व्याजोक्ति, 66. स्वभावोक्ति, 67. भाविक, 68. उदात्त, 69. रसवत्, 70. प्रेय, 71. ऊर्जस्वि, 72. समाहित, 73. भावोदय, 74. भावसन्धि, 75. भावशवलता, 76. संसृष्टि एवं 77. संकर ।

वैशिष्ट्य—

1. डा० वचनदेव कुमारक अनुसार साहित्यदर्पणमे 6 शब्दालंकार एवं 72 अर्थालंकार अछि,[107] किन्तु डा० शोभाकान्त मिश्र विश्वनाथ निरूपित 7 शब्दालंकार एवं 77 अर्थालंकारक नाम उद्धृत कयलनि अछि ।[108] डा० देशराजसिंह भाटिया 9 शब्दालंकारक नाम गनओलनि अछि ।[109]
2. विश्वनाथ अनुकूलकेँ छोड़ि कोनो नव अलंकारक उद्भावना नहि कयलनि ।
3. पूर्ववर्त्ती आचार्य द्वारा मान्य प्रहेलिकाक अलंकारत्वक खण्डन कयलनि ।[110]
4. विश्वनाथ भाषासम नामक स्वतंत्र शब्दालंकारक अस्तित्व स्वीकार कयलनि ।

25. केशव मिश्र : अलंकारशेखर (16म शताब्दी)—

प्रस्तुत पोथी 8 रत्न एवं 22 मरीचिमे विभक्त अछि । चारिम रत्नक प्रथम मरीचिमे 8 शब्दालंकार वर्णित अछि, जे थिक— 1. चित्र, 2. वक्रोक्ति, 3. अनुप्रास, 4. सूढ़, 5. श्लेष, 6. प्रश्नोत्तर, 7. यमक ।[111] चतुर्थ रत्नक द्वितीय मरीचिमे— 1. उपमा, 2. रूपक, 3. उत्प्रेक्षा, 4. समासोक्ति, 5. अपह्नुति, 6. विशेषोक्ति एवं 14. विभावना—

यैह चौदह अलंकार परिभाषित अछि । मिश्रजी एहि चौदहक अतिरिक्त अन्य अलंकारक अस्तित्व स्वीकार नहि करैत छथि ।[112]

26. कर्णपूर : अलंकार-कौस्तुभ (16म शताब्दी)–

अलंकार-कौस्तुभ 10 किरणमे विभक्त अछि जकर सातम एवं आठम किरणमे अलंकार-विवेचन अछि । एहिमे राधाकृष्णक उदाहरण देल गेल अछि । कोनो नव अलंकारक उद्भावना नहि दृष्टिगोचर होइछ ।

27. अप्पय दीक्षित : चित्रमीमांसा एवं कुवलयानन्द (सत्रहम शताब्दी)–

अप्पय दीक्षित अलंकारक क्षेत्रमे जतबा ख्याति पओलनि ओतबा कोनो आन आचार्य नहि । हिनक कुवलयानन्द एवं चित्रमीमांसा दुनू प्रौढ़ ग्रंथ अछि ।

चित्रमीमांसामे दीक्षितजी मात्र बारह गोट अलंकारक वर्णन कयलनि अछि, जे थिक– 1. उपमा, 2. रूपक, 3. अनन्वय, 4. स्मरण, 5. रूपक, 6. परिणाम, 7. ससन्देह, 8. भ्रान्तिमान, 9. उल्लेख, 10. अपह्नुति, 11. उत्प्रेक्षा, एवं 12. अतिशयोक्ति ।

अलंकारक क्षेत्रमे हिनक कुवलयानन्दक पर्याप्त ख्याति भेल । ई ग्रन्थ जयदेवक चन्द्रालोकक पंचम मयूखमे वर्णित अलंकार प्रकरणक आधारपर लिखल गेल अछि । दीक्षितजी स्वयं एहि बातकेँ स्वीकार करैत छथि जे जयदेवक चन्द्रालोकक लक्षण उदाहरणकेँ ग्रहण कय अपनामे मिला लेलनि ।[113] तथापि दीक्षितजी अलंकारक क्षेत्रकेँ पर्याप्त आगू बढ़ौलनि । ई प्रत्यक्षादि दस प्रमाणहुकेँ अलंकारत्व प्रदान कयलनि । एतदतिरिक्त 17 टा नव अलंकारक उल्लेख कयलनि, जे थिक– 1. प्रस्तुतांकुर, 2. अल्प, 3. कारक दीपक, 4. मिथ्याध्यवसिति, 5. ललित, 6. अनुज्ञा, 7. मुद्रा, 8. रत्नावली, 9. विशेषोक्ति, 10. गूढ़ोक्ति, 11. विवृतोक्ति, 12. युक्ति, 13. लोकोक्ति, 14. छेकोक्ति, 15. निरुक्ति, 16. प्रतिषेध एवं 17. विधि ।

वैशिष्ट्य–

1. जयदेव जाहि सात रसवदादि अलंकारक संकेत कयलनि अछि[114] तकरा दीक्षित अलंकार माननलि अछि ।
2. किछु अलंकार प्राचीन आचार्यक लक्षणक आधारपर कल्पित अछि, यथा– मिथ्याध्यवसिति, निरुक्ति इत्यादि ।
3. किछु अलंकारक स्वरूप प्राचीन अलंकारक स्वरूपक विपर्ययक आधारपर कल्पित अछि ।
4. किछु अलंकारक कल्पना संदिग्ध अछि, यथा– लोकोक्ति ।

28. पण्डितराज जगन्नाथ : रसगंगाधर (सत्रहम शताब्दी)–

रसगंगाधर पण्डितराज जगन्नाथक गम्भीर चिन्तनक परिचायक थिक । एकर द्वितीय आननमे निम्नलिखित अलंकारक स्वरूप-विवेचन कयल गेल अछि– 1. उपमा, 2. उपमेयोपमा, 3. अनन्वय, 4. असम, 5. उदाहरण, 6. स्मरण, 7. रूपक, 8. परिणाम, 9. सन्देह, 10. भ्रान्तिमान, 11. उल्लेख, 12. अपह्नुति, 13. उत्प्रेक्षा, 14. अतिशयोक्ति, 15. तुल्ययोगिता, 16. दीपक, 17. प्रतिवस्तूपमा, 18. दृष्टान्त, 19. निदर्शना, 20. व्यतिरेक, 21. सहोक्ति, 22. विनोक्ति, 23. समासोक्ति, 24. परिकर, 25. श्लेष, 26. अप्रस्तुत प्रशंसा, 27. पर्यायोक्ति, 28. व्याजस्तुति, 29. आक्षेप, 30. विरोध, 31. विभावना, 32. विशेषोक्ति, 33. असंगति, 34. विषम, 35. सम, 36. विचित्र, 37. अधिक, 38. अन्योन्य, 39. विशेष, 40. व्याघात, 41. कारणमाला, 42. एकावली, 43. सार, 44. काव्यलिंग, 45. अर्थान्तरन्यास, 46. अनुमान, 47. यथासंख्य, 4. परिवृत्ति, 50. परिसंख्या, 51. अर्थापत्ति, 52. विकल्प, 53. समुच्चय, 54. समाधि, 55. प्रत्यनीक, 56. प्रतीप, 57. प्रौढ़ोक्ति, 58. ललित, 59. प्रहर्षण, 60. विषादन, 61. उल्लास, 62. अवज्ञा, 63. अनुज्ञा, 64. तिरस्कार, 65. लेश, 66. तद्‌गुण, 67. अतद्‌गुण, 68. सामान्य, एवं 70. उत्तर ।

वैशिष्ट्य–

1. रस-गंगाधरमे मात्र एकहिटा नव अलंकारक उद्‌भावना भेल अछि । जे थिक — तिरस्कार ।[115]
2. एहिमे प्राचीन अलंकारक स्वरूपक विशदीकरण कयल गेल अछि ।

29. विश्वेश्वर पण्डित : अलंकार-कौस्तुभ, अलंकार-मुक्तावली एवं अलंकार-प्रदीप (अठारहम शताब्दी)–

आचार्य विश्वेश्वर पण्डित विभिन्न स्तरक पाठककेँ ध्यानमे रखैत उक्त तीनू पुस्तकक रचना कयलनि । अलंकार मुक्तावली अलंकार शास्त्रमे प्रवेश कयनिहार पाठकक हेतु लिखल गेल, अलंकार-कौस्तुभमे एकसठि अलंकारक विशद विवेचन कयल गेल अछि तथा अलंकार-प्रदीपमे एक सय उन्नैस अलंकारक विवेचन कयल गेल अछि ।

ई किछु अलंकारक स्वतंत्र अस्तित्वक खण्डन कए देलनि जे समुचित नहि बुझना जाइत अछि । अलंकार-कौस्तुभमे निम्नलिखित पचीस अलंकारक अलंकारत्वकेँ खण्डन कए देलनि– 1. अनुगुण, 2. अल्प, 3. असम्भव, 4. अनुकूल्य, 5. उन्मीलित, 6. उल्लेख, 7. निमीलित, 8. निश्चय, 9. परिकरांकुर, 10. परिणाम, 11. पूर्वरूप, 12. प्रस्तुतांकुर, 13. प्रहर्षण, 14. प्रौढ़ोक्ति, 15. मिथ्याध्यवसिति, 16. युक्ति, 17. ललित,

18. लेश, 19. विकस्वर, 20. विचित्र, 21. वितर्क, 22. विशेष, 23. विषाद, 24. सम्भावना, एवं 25. हेतु ।

अलंकार-प्रदीपमे सूत्रशैलीमे कुवलयानन्दक मुद्राकेँ छोड़ि शेष सभ अलंकारक निरूपण कयल गेल अछि । निष्कर्षतः अलंकार-विषयक ग्रंथमे कोनो मौलिक उद्भावना नहि दृष्टि गोचर होइत अछि ।

30. अच्युत राय : साहित्यसार (अठारहम शताब्दी)—

साहित्यसारमे पाँच शब्दालंकार एवं एक सय अर्थालंकारक विवेचन भेल अछि। अलंकारक लक्षण अधिकतर कुवलयानन्दक आधारपर देल गेल अछि । अलंकारक भेदीकरण करबाक सेहो पूर्ण प्रयास कयल गेल अछि ।

अलंकार-धारणाक विकासमे जाहि आलंकारिक लोकनिक मौलिक योगदान नहि अछि तनिका लोकनिकेँ छोड़ि देल गेल अछि ।

अलंकार-वर्गीकरण—

आचार्य भरतक समयसँ अद्यावधि अलंकारक संख्यामे ततबा वृ□ भए गेल जे एकर अध्ययनक हेतु वर्गीकरणक आवश्यकता पड़लैक । काव्यक आश्रयभूत शब्द एवं अर्थक आधारपर अलंकारक दू स्थूल विभाग तँ बहुत पहिनहि दृष्टिगोचर भए चुकल, किन्तु अनेकानेक नव अलंकारक उद्भावनाक संग अर्थालंकारक वर्ग विभाजन सेहो आवश्यक बुझि पड़लैक । किछु आचार्य तँ शब्दालंकारक अतिरिक्त उभयालंकारक सेहो कल्पना कयलनि । एकाधिक अलंकारक एकत्र उद्भावनामे मिश्रालंकार सेहो स्वीकृत अछि । किछु एहनो अलंकार अछि जकर वर्गीकरण विवादास्पद अछि । उभयालंकार मानबाक प्रश्नपर सेहो आचार्य लोकनिक मतैक्य नहि अछि ।

एतय प्रमुख आचार्य लोकनिक वर्गीकरण प्रस्तुत कयल जा रहल अछि—

1. उद्भट—

अर्थालंकारक सर्वप्रथम वर्गीकरण आचार्य उद्भट अपन ग्रंथ काव्यालंकार-सार-संग्रहमे कयलनि अछि । ओ अलंकारकेँ छओ वर्गमे विभक्त कयलनि—

1. प्रथम वर्ग— 1. पुनरुक्तवदाभास, 2. छेकानुप्रास, 3. वृत्यनुप्रास, 4. लाटानुप्रास, 5. दीपक, 6. उपमा, 7. रूपक, 8. प्रतिवस्तूपमा— कुल 8 अलंकार।
2. द्वितीय वर्ग—1. आक्षेप, 2. अर्थान्तरन्यास, 3. व्यतिरेक, 4. विभावना, 5. समासोक्ति, 6. अतिशयोक्ति — कुल 6 अलंकार ।

3. तृतीय वर्ग— 1. यथासंख्य, 2. उत्प्रेक्षा एवं 3. स्वभावोक्ति — कुल 3 अलंकार ।
4. चतुर्थ वर्ग— 1. प्रेयस्वत, 2. रसवत्, 3. ऊर्जस्वि, 4. पर्यायोक्ति, 5. समाहित, 6. उदात्त, 7. श्लिष्ट — कुल 7 अलंकार ।
5. पंचम वर्ग— 1. अपह्नुति, 2. विशेषोक्ति, 3. विरोध, 4. तुल्ययोगिता, 5. अप्रस्तुत प्रशंसा, 6. व्याजस्तुति, 7. निदर्शना, 8. संकर, 9. उपमेयोपमा, 10. सहोक्ति एवं 11. परिवृत्ति — कुल 11 अलंकार ।
6. षष्ठ वर्ग— 1. सन्देह, 2. अनन्वय, 3. संसृष्टि, 4. भाविक, 5. काव्यलिंग एवं 6. दृष्टान्त — कुल 6 अलंकार ।

2. रुद्रट—

आचार्य रुद्रटक वर्गीकरण पूर्ण प्रामाणिक एवं व्यवस्थित अछि । ओ अपन काव्यालंकारमे विवेचित अलंकार आश्रयक आधारपर शब्दालंकार एवं अर्थालंकारमे विभाजित कयलनि । पुनः अर्थालंकारमे मूल तत्त्वक आधारपर चारि विभाग कयलनि, जे थिक— 1. वास्तव वर्ग, 2. औपम्य वर्ग, 3. अतिशय वर्ग एवं 4. श्लेष वर्ग ।

1. वास्तव वर्ग— 1. सहोक्ति, 2. समुच्चय, 3. जाति, 4. यथासंख्य, 5. भाव, 6. पर्याय, 7. विषम, 8. अनुमान, 9. दीपक, 10. परिकर, 11. परिवृत्ति, 12. परिसंख्या, 13. हेतु, 14. कारणमाला, 15. व्यतिरेक, 16. अन्योन्य, 17. उत्तर, 18. सम, 19. सूक्ष्म, 20. लेश, 21. अवसर, 22. मीलित, एवं 23. एकावली — कुल 23 अलंकार ।

2. औपम्य वर्ग— 1. उपमा, 2. उप्रेक्षा, 3. रूपक, 4. अपह्नुति, 5. संशय, 6. मत, 7. समासोक्ति, 8. उत्तर, 9. अन्योन्य, 10. प्रतीप, 11. अर्थान्तरन्यास, 12. उभयन्यास, 13. भ्रान्तिमान, 14. आक्षेप, 15. प्रत्यनीक, 16. दृष्टान्त, 17. पूर्व, 18. सहोक्ति, 19. समुच्चय, 20. सामान्य एवं 21. स्मरण — कुल 21 अलंकार ।

3. अतिशय वर्ग— 1. पूर्व, 2. विशेष, 3. उत्प्रेक्षा, 4. विभावना, 5. तद्गुण, 6. अधिक, 7. विरोध, 8. विषम, 9. असंगति, 10. पिहित, 11. व्याघात, एवं 12. अहेतु — कुल 12 अलंकार ।

4. श्लेष वर्ग— अविशेष, 2. विरोध, 3. अधिक 4. वक्र, 5. व्याज, 6. उक्ति, 7. असंभव, 8. अवयव, 9. तत्त्व, एवं 10. विरोधाभास — कुल 10 अलंकार ।

रुद्रट अपन चारू वर्गमे अलंकारक विभाजनक सि□ांत स्पष्ट कए देने छथि । हुनका अनुसारेँ जाहि अलंकारमे सादृश्य, अतिशय एवं श्लेषकेँ छोड़ि केवल वस्तुक स्वरूपक स्पष्ट वर्णन होइत अछि ओ वास्तव मूलक अलंकार थिक ।[116] जाहि अलंकारमे

वस्तुविशेषक अन्य वस्तुक संग सादृश्यसँ तुलनाक प्रतिपादन कयल जाय तकरा औपम्य वर्ग कहल जाइत अछि ।[117] जाहि अलंकारमे अतिलौकिक वर्णन कयल जाइत अछि तकरा अतिशय मूलक अलंकार कहल जाइत अछि ।[118] जाहि अलंकारमे अनेकार्थक पदसँ वाक्य योजना कयल जाइत अछि तकरा श्लेषमूलक अलंकार कहल जाइत अछि ।[119]

हिनक औपम्य वर्ग एवं अतिशय वर्ग परवर्त्ती आचार्य द्वारा गृहीत भेल, किन्तु शेष दुनू वर्ग उपेक्षिते रहल ।

3. भोजराज–

भोजराज विशेष वर्गीकरण करबाक झंझटमे नहि पड़य चाहलाह । ओ एतबे जनौलनि जे– ओ अलंकार जे शब्दक अलंकरण करय शब्दालंकार तथा दोसर जे अर्थक अलंकरण करय अर्थालंकार भेल ।[120]

4. रुय्यक–

अलंकारक वर्गीकरणक क्षेत्रमे रुय्यकक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । रुय्यक स्वनिरूपित अलंकारकेँ प्रथमतः पाँच भेद कयलनि–

1. सादृश्य गर्भ, 2. विरोध गर्भ, 3. श्रृंखलाब□, 4. न्यायमूलक एवं 5. गूढ़ार्थ प्रतीतिमूलक ।

1. सादृश्य गर्भ–

एहि वर्गमे सर्वाधिक अलंकार अबैत अछि । एकर मूल तत्त्व अछि साधर्म्य । एकर पुनः तीन भेद अछि ।[121]

(क) भेदाभेदतुल्य प्रधान (ख) अभेद-प्रधान एवं (ग) गम्यमानोपम्य

(क) भेदाभेदतुल्य-प्रधान सादृश्यगर्भ अलंकार– 1. उपमा, 2. उपमेयोपमा, 3. अनन्वय एवं 4. स्मरण – कुल 4 अलंकार ।

(ख) अभेदप्रधान सादृश्यगर्भ अलंकार–

1. आरोपमूलक– 1. रूपक, 2. परिणाम, 3. संदेह, 4. भ्रांति, 5. उल्लेख एवं 6. अपह्नुति – कुल 6 अलंकार ।

2. अध्यवसायमूलक– 1. उत्प्रेक्षा, एवं 2. अतिशयोक्ति – कुल 2 अलंकार ।

(ग) गम्यमानोपम्य– सादृश्यगर्भ अलंकार–

1. तुल्ययोगिक, 2. दीपक, 3. प्रतिवस्तूपमा, 4. दृष्टान्त, 5. निदर्शना, 6. व्यतिरेक, 7. सहोक्ति, 8. विनोक्ति, 9. समासोक्ति, 10. परिकर, 11. श्लेष, 12. अप्रस्तुत प्रशंसा,

13. पर्यायोक्ति, 14. अर्थान्तरन्यास, 15. व्याजस्तुति एवं 16. आक्षेप – 16 अलंकार । सब मिलाए कुल 28 अलंकार ।

2. विरोधगर्भ –

एहि वर्गमे ओहि बारह अलंकारक गणना कयल गेल अछि जकर मूलमे विरोधक भावना निहित रहैत अछि । ओ अलंकार थिक–

1. विरोध, 2. विभावना, 3. विशेषोक्ति, 4. सम, 5. विषम, 6. विचित्र, 7. अधिक, 8. अन्योन्य, 9. विशेष, 10. व्याघात, 11. कार्य-कारण पौर्वापर्य-रूप अतिशयोक्ति एवं 12. असंगति – कुल 12 अलंकार ।

3. श्रृंखलामूलक–

एहि वर्गमे राखल गेल अलंकारमे पद वा वाक्य अन्य पद वा वाक्यक संग श्रृखलाक रूपमे सम्ब□ रहैत अछि । एहि वर्गमे चारिटा अलंकार राखल गेल अछि– 1. कारणमाला, 2. एकावली, 3. मालादीपक एवं 4. सार – कुल 4 अलंकार ।

4. न्यायमूलक–

शास्त्रीय एवं लौकिक न्यायसँ सम्ब□ अलंकारकेँ तीन वर्गमे विभक्त कयल गेल अछि– (क) तर्कन्यायमूलक, (ख) वाक्यन्यायमूलक एवं (ग) लोकन्यायमूलक ।

(क) तर्कन्यायमूलक– 1. काव्यलिंग एवं 2. अनुशासन –2 अलंकार ।

(ख) वाक्यन्यायमूलक– 1. यथासंख्य, 2. पर्याय, 3. परिवृत्ति, 4. अर्थापत्ति, 5. विकल्प, 6. परिसंख्या 7. समुच्चय एवं 8. समाधि –8 अलंकार ।

(ग) लोकन्यायमूलक– 1. प्रत्यनीक, 2. प्रतीप, 3. मीलित, 4. सामान्य, 5. तद्‌गुण, 6. अतद्‌गुण एवं 7. उत्तर –7 अलंकार । कुल 17 अलंकार ।

5. गूढ़ार्थप्रतीतिमूलक–

एहि वर्गमे ओ अलंकार सभ राखल गेल अछि जाहिसँ गूढ़ अर्थक प्रतीति होअए– 1. सूक्ष्म, 2. व्याजोक्ति, एवं 3. वक्रोक्ति – कुल 3 अलंकार ।

एहि तरहेँ रुय्यक अपन चौसठि अलंकारक वर्गविभाजन कयलनि । हुनक अनेक अलंकार अवर्गीकृत रहि गेल । यथा– 1. स्वभावोक्ति, 2. भाविक, 3. उदात्त, 4. संसृष्टि, 5. संकर, 6. रसवत्, 7. प्रेय, 8. ऊर्जस्वि, 9. समाहित इत्यादि । एतदतिरिक्त अनेक अलंकार अवर्गीकृत रहि गेल, जकरा ओ कोनो कोटिमे नहि राखि सकलाह ।

5. विद्याधर—

विद्याधरक एकावलीमे अलंकारक वर्गीकरण बहुलांशत: आचार्य रुय्यकक वर्गीकरण सि□ान्तपर आधारित अछि ।

प्रथमत: आश्रयक आधारपर शब्द एवं अर्थ वर्गमे अलंकारक विभाजन कय विद्याधर अलंकारक वर्गानुक्रमकेँ एहि रूपेँ प्रस्तुत कयलनि—

1. भेदप्रधानवर्ग— 1. उपमा, 2. उपमेयोपमा, 3. अनन्वय, एवं 4. स्मरण —कुल 4 अलंकार ।

2. अभेदप्रधानवर्ग—

(क) आरोपमूलक— 1. रूपक, 2. परिणाम, 3. संदेह, 4. भ्रान्तिमान, 5. उल्लेख, एवं 6. अपह्नुति ।

(ख) अध्यवसायमूलक : 1. उत्प्रेक्षा, एवं 2. अतिशयोक्ति — कुल 8 अलंकार ।

3. गम्यौपम्याश्रयी वर्ग— 1. तुल्ययोगिता 2. दीपक, 3. प्रतिवस्तूपमा, 4. दृष्टान्त, 5. निदर्शना, 6. व्यतिरेक, 7. सहोक्ति, 8. विनोक्ति, 9. समासोक्ति, 10. परिकर, 11. परिकरांकुर, 12. श्लेष, 13. अप्रस्तुत प्रशंसा, 14. अर्थान्तरन्यास, 15. पर्यायोक्ति एवं 16. आक्षेप — कुल 16 अलंकार ।

4. विरोधगर्भ— 1. विरोध, 2. विभावना, 3. विशेषोक्ति 4. अतिशयोक्ति, 5.असंगति, 6. विषम, 7. सम, 8. विचित्र, 9. अधिक, 10. अन्योन्य, 11. विशेष एवं 12. व्याघात — कुल 12 अलंकार ।

5. शृंखलाकार— 1. कारणमाला, 2. एकावली, 3. मालादीपक, 4. सार, 5. काव्यलिंग, 6. अनुमान, 7. यथासंख्य, 8. पर्याय, 9. परिवृत्ति, 10. परिसंख्या, 11. अर्थापत्ति, 12. समुच्चय एवं 13. समाधि — कुल 13 अलंकार ।

एकरा तर्कन्यायमूलक सेहो कहलनि अछि ।

6. लोकन्यायश्रयी— 1. प्रत्यनीक, 2. प्रतीप, 3. मीलित, 4. सामान्य, 5. तद्गुण, 6. अतद्गुण, 7. उत्तर, 8. प्रश्नोत्तर — कुल 8 अलंकार ।

7. बलादगूढ़ार्थप्रतीतिमूलक— 1. सूक्ष्म, 2. व्याजोक्ति, 3. वक्रोक्ति, 4. स्वभावोक्ति, 5. भाविक एवं 6. उदात्त — कुल 6 अलंकार ।

8. अन्योन्याश्लेषपेशल— 1. संसृष्टि, एवं 2. संकर — कुल 2 अलंकार ।

शब्दालंकार वर्ग— 1. पुनरुक्तवदाभास, 2. अनुप्रास, 3. यमक, 4. चित्र, 5. छेकानुप्रास 6. वृत्यनुप्रास एवं 7. लाटानुप्रास ।

6. विद्यानाथ—

विद्यानाथ अपन प्रदापरुद्रयशोभूषणमे अलंकारक चारि वर्ग बनओलनि अछि, जे थिक[122]—

1. प्रतीयमान वास्तववर्ग—

1. समासोक्ति, 2. पर्यायोक्ति, 3. आक्षेप, 4. व्याजस्तुति, 5. उपमेयोपमा, 6. अनन्वय, 7. अतिशयोक्ति, 8. परिकर, 9. अप्रस्तुत प्रशंसा, एवं 10. विशेषोक्ति — कुल 10 अलंकार ।

2. प्रतीयमानौपम्य वर्ग—

1. रूपक, 2. परिणाम, 3. संदेह, 4. भ्रान्तिमान 5. उल्लेख, 6. उत्प्रेक्षा, 7. स्मरण, 8. तुल्ययोगिता 9. दीपक, 10. प्रतिवस्तूपमा, 11. दृष्टान्त, 12. सहोक्ति, 13. व्यतिरेक, 14. निदर्शना, 15. एवं श्लेष — कुल 15 अलंकार ।

3. प्रतीयमानरसभावादि वर्ग—

1. रसवत्, 2. प्रेय, 3. ऊर्जस्वि, 4. समाहित, 5. भावोदय, 6. भावसन्धि एवं 7. भावशवलता — कुल 7 अलंकार ।

4. अस्फुट प्रतीयमान—

1. उपमा, 2. विनोक्ति, 3. अर्थान्तरन्यास, 4. विरोध, 5. विभावना, 6. विशेषोक्ति, 7. विषम, 8. सम, 9. चित्र, 10. अधिक, 11. अन्योन्य, 12. कारणमाला, 13. एकावली, 14. व्याघात, 15. मालादीपक, 16. काव्यलिंग, 17. अनुमान, 1. सार, 19. यथासंख्य, 20. अर्थापत्ति, 21. पर्याय, 22. परिवृत्ति, 23. परिसंख्या 24. विकल्प, 25. समुच्चय, 26. समाधि, 27. प्रत्यनीक, 28. प्रतीप, 29. विशेष, 30. मीलित, 31. सामान्य, 32. असंगति, 33. तद्गुण, 34. अतद्गुण, 35. व्याजोक्ति, 36. वक्रोक्ति, 37. स्वभावोक्ति, 38. भाविक, एवं 39. उदात्त —कुल 39 अलंकार ।

विद्यानाथ उपरिलिखित अलंकार वर्गक अतिरिक्त अलंकारक आओरो नओ विभाग कयलनि, जे थिक—

1. साधर्म्यमूलक— (क) भेदप्रधान, (ख) अभेदप्रधान, एवं (ग) भेदाभेदप्रधान, 2. विरोधमूलक, 3. वाक्यन्यायमूलक, 4. लोकन्यायमूलक, 5. तर्कन्यायमूलक, 6. शृंखलामूलक, 7. अपह्नवमूलक, 8. विशेषणवैचित्र्यमूलक, 9. अध्यवसायमूलक ।[123]

राघवन महोदय अपन प्रसि□ ग्रंथ ‘‘Some Concepts of Alankar Shastra’’मे अलंकारकेँ तीन भागमे विभाजित कयलनि अछि, जे थिक— 1. साम्य, 2. विरोध एवं 3. सान्निध्य ।[124]

एहि वर्गीकरण सभक आधारपर एतबा धरि अवश्य कहल जा सकैत अछि जे कोनो एक आचार्यक वर्गीकरण पूर्ण नहि अछि । रुय्यकक अलंकार वर्गक संग रुद्रटक श्लेष वर्ग एवं विद्यानाथक प्रतीयमान-रसभावादि वर्गकेँ मिलाकय अलंकार-शास्त्रक सब स्वीकृत अलंकारक वर्गीकरण कयल जा सकैत अछि ।

काव्यमे अलंकारक स्थान–

अलंकार विषयक अध्ययन करबासँ पूर्व हमरा लोकनिकेँ एहि बातपर विचार कय लेबाक चाही जे काव्यमे एकर केहन स्थान अछि । एहि प्रसंग विभिन्न विद्वानक भिन्न-भिन्न मत अछि ।

भामह, उद्भट आदि आचार्यगण अलंकारकेँ काव्य सौन्दर्यक अनिवार्य धर्म मानैत छथि । भामह काव्यक अलंकारकेँ नारी आभूषण सदृश मानिकय ई कहलनि अछि जे जेना रमणीक सुन्दरो मुँह आभूषणक अभावमे सुशोभित नहि होइत अछि, तहिना अलंकारविहीन काव्य सुशोभित नहि होइत अछि ।[125]

आचार्य राजशेखर कहैत छथि जे जकर नेत्र चंचल एवं चमकैत छैक तकरा काजरक की प्रयोजन ? जकर स्तन कलश सदृश उन्नत छैक तकरा हारक की आवश्यकता ? चक्राकार जकर नितम्ब छैक तकरा डरकसक कोन प्रयोजन ? एहन लोकक हेतु तँ भूषण दूषणे थिक ।[126]

पुनः राजशेखर इहो कहैत छथि जे जे स्त्री सुन्दर नहि छथि ओ अलंकारसँ अपनाकेँ सजबैत छथि आ जनिकामे नैसर्गिक सौन्दर्य छनि तनिका अलंकारक कोनो प्रयोजन नहि होइत छनि, किन्तु अलंकार हुनक सौन्दर्यकेँ आओर उत्कृष्ट बना दैत अछि ।[127]

राजशेखरक उक्त दुनू उक्ति एक दोसराक विरोधी अछि । प्रथममे तँ ओ अलंकारकेँ दूषण कहैत छथि अर्थात् ओकरा पूर्णतः निरर्थक बुझैत छथि आ दोसरमे ओकरा सौन्दर्यव□क युक्ति मानैत छथि । विश्वविख्यात महाकवि कालिदासक कहब तँ ई अछि जे जकरामे सहज सौन्दर्य छैक तकरा हेतु कोनो आभूषणक प्रयोजन नहि ।[128] भामहक कथन अछि जे आश्रयक सौन्दर्यसँ असुन्दरो वस्तु सुन्दर बनि जाइत अछि । सुन्दर आँखिमे कारी अंजन सेहो नीक लगैत छैक ।[129]

आचार्य दण्डी व्यापक अर्थमे अलंकारकेँ काव्यसौन्दर्यक हेतु मानलनि अछि ।[130] वामन अलंकारकेँ काव्यसौन्दर्यक पर्याय मानिकय काव्यकेँ अलंकारक सद्भावेसँ स्वीकार कयलनि ।[131] ओ अलंकारविहीन काव्यकेँ अग्राह्य कहलनि । काव्यमे अलंकारक सापेक्ष महत्त्वसँ वामन एवं दण्डीक मत प्रायः मिलैत अछि ।

आचार्य उद्भट अलंकार एवं गुण दुनूक समान पक्षपाती छथि । ओ गुण एवं अलंकार दुनूकेँ समवाय-वृत्तिसँ सम्ब□ कहैत छथि । हुनका अनुसारेँ गुण एवं अलंकारमे एतबे भेद अछि जे गुण संघटनाश्रित होइत अछि अर्थात् ओकर आश्रय रीति छैक जखन कि अलंकार शब्दार्थपर आश्रित रहैत अछि ।[132] निष्कर्षतः उद्भटक अनुसार अलंकार शब्द तथा अर्थकेँ सौन्दर्य प्रदान कयनिहार नित्य एवं अंतरंग धर्म थिक ।

जयदेव काव्य-लक्षणक प्रसंग अलंकारक अनिवार्यता स्वीकार कयलनि अछि ।[133] ओ तेँ एतबा धरि कहलनि जे अलंकारविहीन शब्दार्थकेँ काव्य मानब उष्णतारहित अग्निक कल्पना करबाक समान थिक ।[134]

वक्रोक्ति सम्प्रदायक प्रतिष्ठाता आचार्य कुन्तक वक्रोक्तिकेँ काव्यक सर्वस्व स्वीकार कयलनि अछि । अतः वक्रोक्ति सेहो अलंकार थिक ।[135] वक्रोक्तिसँ मात्र वक्रोक्ति अलंकारेटा नहि बुझबाक थिक, अपितु उक्ति-वैचित्र्यकेँ कुन्तक वक्रोक्ति कहलनि । भामह सेहो वक्रोक्तिकेँ अलंकारक प्राण कहलनि ।[136]

आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्यकेँ काव्यक प्राण कहिकय समीक्षाशास्त्रमे एक नव प्रस्थान स्थापित करबाक प्रयास कयलनि अछि । औचित्यक अर्थ थिक उचित भाव । जाहि वस्तुक जे अनुरूप अछि तकरे संग ओकर संघटना उचित मानल जाइत अछि ।[137] अतः काव्यमे औचित्यक अर्थ भेल काव्यांगक अनुरूप घटनाक होयब । एहि तरहेँ अलंकार अपनहिमे काव्य-सौन्दर्यक हेतु नहि अछि, अपितु ओकर उचित विन्यास भेलेपर ओ अलंकार कहल जायत एवं श्रीवृ□ करत ।[138] अनुचित विन्याससँ अलंकार काव्य-शोभाक बाधके बनि जाइत अछि । जँ बबाजीकेँ गहना पहिरा देल जाय तँ ओहिसँ ओकर सौन्दर्य नहि बढ़तैक । जँ डाँरक डरकस गरदनिमे आ हार डाँरमे पहिरि लेल जाय तँ एहिसँ सौन्दर्य बढ़बाक बदला बिगड़िये जायत ।[139]

ध्वनि सम्प्रदायक प्रवर्त्तक आचार्य आनन्दव□नसँ पूर्व अलंकारकेँ बाह्य एवं अंतरंग काव्य-धर्म मानयवला दू मत प्रचलित छल । आनन्दव□न ओहि मतमे समन्वय स्थापित करैत रसोत्कर्षमे उपादेयताक दृष्टिसँ अलंकारक मूल्यांकन कयलनि । अलंकारक सम्बन्धमे हुनक सामान्य धारणा अछि जे रसकेँ प्रकाशित करयवला वाच्य-विशेष रूपक आदि अलंकार थिक ।[140] एतबे नहि, एहि बातकेँ स्पष्ट करैत कहैत छथि जे रससि□ कविक भावाद्वेलित हृदयक उद्गार जखन अनायास अध्यात्मक स्वरूप धारण कए लैत अछि ततए ओहि अभिव्यक्तिमे स्थान पयबाक हेतु अलंकार स्वयं जुटि पड़ैत अछि ।[141]

आचार्य मम्मट अपन काव्य-लक्षणमे शब्दार्थकेँ निर्दोष तथा गुणयुक्त होयब आवश्यक मानलनि, किन्तु अलंकारकेँ अनिवार्य नहि मानैत कहलनि जे कतहु-कतहु अनलंकृत शब्दार्थ सेहो काव्य भए जाइत अछि ।[142]

अलंकारक सम्बन्धमे मम्मटक दृष्टिकेँ आओर स्पष्ट रूपसँ बुझबा लेल हुनक अलंकार–लक्षणपर विचार करब आवश्यक बुझना जाइत अछि । ओ काव्य–पुरुषक सम्पूर्ण व्यक्तित्वक कल्पना कय ओहिमे अलंकारक स्थान निरूपित करबाक चेष्टा कयलनि अछि । शब्द एवं अर्थ काव्य–पुरुषक शरीर थिक । रस ओकर आत्मा भेल । माधुर्य आदि रसक धर्म, काव्यगुण मानवक शौर्य आदि गुण जकाँ ओकर गुण थिक । अलंकार काव्यपुरुषक शरीरकेँ शब्द एवं अर्थकेँ विभूषित करैत अछि । अतः ओ मानव शरीरमे हार आदि आभूषण जकाँ ओकर अलंकार थिक । अतः काव्यालंकारसँ काव्यक शब्दार्थ रूप शरीर अलंकृत भए कए ओकर आत्मा रसकेँ उपकृत करैत अछि ।[143]

मम्मट काव्यालंकारक हेतु हार आदि आभूषणकेँ उपमान बनओलनि । हुनकासँ पूर्वहुँ मानव–शरीरक बाह्य अलंकारक संग काव्यालंकारक उपमा देल गेल अछि । लौकिक आभूषणक संग तुलना करैत विश्वनाथ सेहो अलंकारकेँ काव्यक बहिरंग एवं अनित्य धर्म कहलनि ।[144]

निष्कर्षतः अलंकार काव्यक सहजात धर्म थिक । लौकिक आभूषण मानव शरीरक संग नहि उत्पन्न होइत अछि, किन्तु काव्यक शब्दार्थ शरीर अलंकृत भेलाक बादे अवतरित होइत अछि । अतः हारादि लौकिक आभूषणसँ काव्यालंकारक उपमा सटीक नहि बुझाइत अछि । काव्यालंकार लौकिक आभूषण जकाँ ऊपरसँ लटकाओल नहि जाइत अछि, आ ने हटाओले जाइत अछि ।

संदर्भ :

1. अलंकारैर्गुणैश्चैव बहुभिः समलंकृताम् ।
   भूषणैरिव विन्यस्तैस्तद्भूषणमिति स्मृतम् ।। —नाट्यशास्त्र, 16–5
2. डा० ओम प्रकाश : हिन्दी अलंकार साहित्य, पृ.– 6
3. रूपकादिरलंकारस्तस्यान्यैर्बहुधोदितः ।
   न कान्तामपि निर्भूषं विभाति वनिताननम् ।। —काव्यालंकार, 1–13
4. काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान्प्रचक्षते ।। —काव्यादर्श, 2–1
5. अर्थालंकाररहिता विधवैव सरस्वती ।। —अग्निपुराण, 342–2
6. दोषैर्मुक्तं गुणैर्युक्तमपि येनोज्झितं वचः ।
   स्त्रीरूपमिव नो भाति तं ब्रुवेऽलंक्रियोद्यमम् ।। —वाग्भटालंकार, 4–1
7. शब्दालंकृतिभिः कामं सरस्वत्येककुण्डला ।
   द्वितीयकुण्डलार्थं तद् ब्रूमोऽर्थालंकृतीरिमाः ।। —अलंकारमहोदधि, 8–1
8. अंगीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृती ।
   असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलंकृती ।। —चन्द्रालोक, 1–8

9. उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽर्थद्वारेण जातुचित् ।
   हारादिवलंकारास्तेऽनुप्रासोपमादयः ।। —काव्यप्रकाश, 8–2
10. अंगाश्रिता अलंकाराः ।। —काव्यानुशासन, 1–13
11. अलंकारास्तु हारादय इव कण्ठादीनां संयोगवृत्त्या वाच्य–
    वाचकचारुधराणामंगानामतिशयपमादधाना रसमुपकुर्वन्ति ।। —एकावली, 5–1 (वृत्ति)
12. यथाकरचरणाद्यवयवगतैर्वलयनूपुरादिभिस्तदलंकारतया प्रसि□रवयवी एवालंक्रियते तथा शब्दार्थावयवगतैरनुप्रासोपमादिभिस्तत् तदलंकारतया प्रसि□रवयवीभूतं काव्यमुपस्क्रियते ।।
    — प्रतापरुद्रीय यशोभूषण, पृ.– 336
13. अलंकारभूषितं शब्दार्थरूपं काव्यशरीरम्..... । —काव्यानुशासन, पृ.– 53
14. शब्दार्थयोरस्थिता ये धर्माः शोभातिशायिनः ।
    रसादीनुपकुर्वन्तोऽलंकारस्तेऽङ्गदादिवत् ।। —साहित्यदर्पण, 10–1
15. अलंकारास्तु शोभायै ।। —अलंकारशेखर, पृ. 27
16. Dictionary of World Literature- Figure of Speech. — Joseph T. Shipley, P. 159
17. गोस्वामी तुलसीदास —आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 147
18. काव्यं ग्राह्यमलंकारात् —वामन : काव्यालंकार सूत्रवृत्ति, 1–1–1
19. अलंकारांतराणि हि निरूप्यमाणदुर्घटान्यपि रससमाहितचेतसः प्रतिभावतः कवेः अहंपूर्विकया परापतन्ति । —ध्वन्यालोक : आनन्दव□न–2–16
20. Some Concepts of Alankar Shastra. — Raghwan, P. 51
21. यानेव शब्दान्वयमालपामो यानेव चार्थान्वयमुल्लिखामः ।
    तैरेव विन्यासविशेषभव्यैः संमोहयन्ते कवयो जगन्ति ।।
    —नीलकण्ठ दीक्षित, शिवलीलार्णव, 1–13
22. एतदुक्तं भवति–सुकविः दिग्धपुरन्ध्रीवत् भूषणं यद्यपि श्लिष्टं योजयति, तथपि शरीरतापत्तिरेवास्य कष्टसम्पाद्या, कुंकुमपीतिकायी इव । आत्मतायास्तु का सम्भावना । एवंभूता येयं व्यंग्यता, यशःप्रधानभूतापि वाच्यमत्रालंकारेभ्यः उत्कर्षमलंकाराणां वितरन्ति । बालक्रीड़ायामपि राजत्वमिवेत्युपमार्थं मनसि कृत्वाह तत्रेति ।। —अभिनव गुप्त : ध्वन्यालोक लोचन
23. अलंकाराश्च त्रिधा–बाह्याः, आभ्यन्तराः, बाह्याभ्यन्तराश्च । तेषु बाह्याः—वस्त्र–माल्य–विभूषणादयः । आभ्यन्तरा— दन्तपरिष्कर्म–नखच्छेदन–अलककल्पनादयः । बाह्याभ्यन्तराः–स्नान–धूप–विलेपनादयः । —भोजराज : श्रृंगार प्रकाश ।
24. जे रूउमुक्काबि बिहूसयन्ति ताणं अलंकारबसेण सोहा ।
    णिसग्गचंगस्स बि माणुसस्स सोहा समुम्मीलदि भूसणेहिं ।।
    —कर्पूरमंजरीः प्रथम जवनिकान्तर– 31

25. जेसा दिट्ठी तरलघवला कज्जलं तीअ जोग्गं ?
जा वित्थिण्णत्थणकलसिणी सोहए तीअ हारो ?
चक्काआरे रमणफलए कोवि कंचीमरट्ठो ।
जिस्सा तिस्सा उणवि भणिमो भूषणं दूषणं अ ।।

—कर्पूरमंजरी : द्वितीय जवनिकान्तर— 23

26. किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ।। —अभिज्ञान शाकुन्तलम्, 1-19

27. One can ask oneself how an ornament can be joined to expression. Externally ? In that case it must always remain separate. Internally ? In that case either it does not assist expression and mars it, or it does from part of it and is not an ornament but a constituent element of expression indistinguishable from the whole.

–Aesthetic : Chapter - IX, P. 69

28. अथात: उपमा: । यत् अतत् तत्सदृशम् इति गार्ग्य: । —निरुक्त : 3-3

29. साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयो: । —साहित्यदर्पण : 10-14

30. A simili consists in giving formal expression to the likeness said to the exist between two different objects.

–J.C. Nesfield : Eng. Grammar, P. 393

31. निरुक्त, 3-15

32. तत्रैव, 3-16

33. तत्रैव

34. तत्रैव

35. भारतीय साहित्यशास्त्र, पृ.- 6

36. उपमा, दीपकं चैव रूपकं यमकं तथा ।
काव्यस्येते ह्यलंकाराश्चत्वार: परिकीर्त्तिता: ।। —नाट्यशास्त्र, 16-40

37. यत्किंचित्काव्यबन्धेषु सादृश्येनोपमीयते ।
उपमा नाम सा ज्ञेया गुणाकृतिसमाश्रया ।। —ऐजन, 16-41

38. काव्यालंकार- 2-19, 39, 40, 88

39. सैषा सर्वत्र वक्रोक्तिरनयार्थो विभाव्यते ।
यत्नोस्यां कविना कार्य: कोऽलंकारोऽनया विना ।। —काव्यालंकार, 2-85

40. आशीरपि च केषांचिदलंकारतया मता । — एजेन, 3-55

41. स्वभावोक्तिरलंकार इति केचित्प्रचक्षते । —ऐजन, 2-93

42. अनुप्रास: सयमको रूपकं दीपकोपमे ।
इति वाचामलंकारा: पंचैवान्यैरुदाहृता: ।। —काव्यालंकार, 2-4

43. भामह विरचित काव्यालंकार : भाष्यकार— प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्मा, भूमिका-भाग- 1

44. काव्यालंकार- 2-93, 3-55

45. काव्यादर्श, 2-14

46. नानावस्थं पदार्थानां रूपं साक्षाद् विवृण्वती ।
स्वभावोक्तिश्च जातिश्चेत्याद्या सालंकृतिर्यथा । —काव्यादर्श, 2-8

47. हेतुश्च सूक्ष्मलेशौ च वाचामुत्तमभूषणम् । —ऐजन, 2-235

48. काव्यादर्श, 2, 15-50

49. अर्थावृत्ति: पदावृत्तिरुभयावृत्तिरेव च ।
दीपकस्थान एवेष्टमलंकारमयं यथा ।। —ऐजन, 2-116

50. प्रेय: प्रियतरख्यान-रसवद्रसपेशलम् ।
ऊर्जस्वि रूढ़ालंकारयुक्तोत्कर्षं च तत्त्रयम् ।। —ऐजन, 2-275

51. किन्तु बीजं विकल्पानां पूर्वाचार्यप्रदर्शितम् ।
तदैव परिसंस्कर्त्तुमयमस्मत्परिश्रम: ।। —दण्डी : काव्यादर्श, 2-2

52. अलंकार धारणा : विकास और विश्लेषण -डा० शोभाकान्त मिश्र, पृ. 96

53. His (Udbhata's) definitions of the alankara and the varieties must have been, however, of his own invention for he is not to Bhamaha in that respect. —काव्यालंकार-सार-संग्रह पर बनहट्टीक नोट्स, पृ. 25

54. तुलनीय : काव्यालंकार-सार-संग्रह, 6-12 तथा काव्यालंकार, 3-53-54

55. प्रतिवस्तुप्रभृतिरुपमाप्रपंच: । —वामन : काव्यालंकार सूत्र- 4, 3, 1
तथा................शब्दवैचित्र्यगर्भेयमुपमैव प्रपंचिता ।।

— ऐजन, वृत्ति, पृ. 280 हिन्दी काव्यालंकार सूत्र

56. काव्यालंकार सूत्र : 4-3-11 तथा काव्यालंकार- 3-43

57. उपमेयोपमानानां क्रमसम्बन्ध: क्रम: । —काव्यालंकार सूत्र, 4-3-17

58. सैषा सर्वैव वक्रोक्तिरनयार्थो विभाव्यते ।
यत्नोस्यां कविना कार्य कोलंकारोनया विना ।। —काव्यालंकार, 2-84

59. (क) विरु□नोपमानेन देशकालक्रियादिभि: ।
उपमेयस्य यत्साम्यं गुणलेशेन सोपमा ।। —काव्यालंकार, 2-30
(ख) उपमानोपमेयस्य गुणलेशत: साम्यमुपमा । —काव्यालंकारसूत्र, 4-2-1

60. (क) क्रियाया: प्रतिषेधे या तत्फलस्य विभावना ।
ज्ञेया विभावनैवासौ समाधौ सुलभे सति ।। —काव्यालंकार, 2-77
(ख) क्रिययैव स्वतदर्थान्वयख्यापनं निदर्शनम् । —काव्यालंकार सूत्र, 4-3-20

61. हिन्दी काव्यालंकार सूत्र, पृ. 231

62. रामचरितमानस में अलंकार योजना, पृ. 27

63. तत्र काव्यालंकारा वक्रोक्तिवास्तवादयोस्य ग्रन्थस्य प्राधान्यतो भिधेयाः ।
— काव्यालंकार, 1-2 पर नमिसाधुकृत टीका, पृ. 2

64. काव्यकल्पद्रुम, अलंकारमंजरी, पृ. 28

65. रुद्रट प्रणीत काव्यालंकार की भूमिका : डा० सत्यदेव चौधरी, पृ. 9

66. रामचरितमानस में अलंकार योजना : डा० वचनदेव कुमार, पृ. 28

67. कार्यकारणयोर्यश्च पौर्वापर्यविपर्ययः । —काव्यप्रकाश, 10-100

68. यत्रातिप्रबलतया विवक्ष्यते पूर्वमेव जनस्य ।
प्रादुर्भावः पश्चाज्जनकस्य तु तद्भवेत्पूर्वम् ।। —काव्यालंकार : अध्याय- 9, कारिका- 3

69. कुन्तक : वक्रोक्तिजीवित, पृ. 439-49

70. वैह, पृ. 449-53

71. हिस्ट्री ऑफ संस्कृत पोएटिक्स : डा० सुशील कुमार डे, पृ. 97

72. अग्निपुराण, अध्याय- 343

73. वैह, -344

74. वैह, -345

75. काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान्प्रचक्षते : अग्निपुराण, 342-17

76. शब्दार्थोभयसंज्ञाभिरलंकारान्कवीश्वराः ।
बाह्यानाभ्यन्तरान्बाह्याभ्यन्तरांश्चानुशासति ।। —सरस्वती कण्ठाभरण, 2-1

77. रीतिकालीन अलंकार-साहित्य का शास्त्रीय विवेचन : डा० ओमप्रकाश शर्मा, पृ. 42

78. अलंकार-मंजरी (भूमिका भाग) : सेठ कन्हैयालाल पोद्दार, पृ. 32

79. बलवति विकारहेतौ सत्यपि नैवोपगच्छति विकारम् ।
यस्मिन्नर्थः स्थैर्यान्मन्तव्यो सावहेतुरिति ।। —रुद्रट : काव्यालंकार, 9-54

80. कष्टं काव्यमेतदिति दिङ्मात्रं प्रदर्श्यते । —काव्यप्रकाश, 9-82 (वृत्ति)

81. पुनरुक्तवदाभासो विभिन्नाकारशब्दगा ।
एकार्थतेव शब्दस्य तथा शब्दार्थयोरयम् ।। —वैह, 9-86 (वृत्ति)

82. काव्यकल्पद्रुम : कन्हैयालाल पोद्दार, द्वितीय भाग- प्राक्कथन, पृ. 20

83. अलंकार-धारणा : विकास और विश्लेषण : डा० शोभाकान्त मिश्र, पृ. 216

84. दण्डी : काव्यादर्श, 2, 85-86
काव्यादर्शक कुसुमप्रतिमा टीकामे कहल गेल अछि जे दण्डीक उक्त हेतुरूपकक उदाहरणमे विश्वनाथ आदि परवर्त्ती आचार्य उल्लेख अलंकार मानैत छथि । —द्रष्टव्य पृ. 118
एकस्यापि निमित्तवशादनेकधा ग्रहणमुल्लेखः । —रुय्यक : अलंकारसूत्र, 19

85. देखू- काव्यानुशासन ।

86. हिस्ट्री ऑफ संस्कृत पोएटिक्स : पी.बी. काणे, पृ. 291

87. उक्तस्यान्येनान्यथा श्लेषादुक्तिर्वक्रोक्तिः । —काव्यानुशासन, 5-7 (वृत्ति)

88. काव्यानुशासन, 5-7 (वृत्ति)

89. भिन्नकृतेः शब्दस्यैकार्थतेव पुनरुक्ताभासः । —तथैव, 5-8

90. यत्र सामान्यस्य विशेषस्य वा विशेषेण समर्थनं तन्निदर्शनम् । यत्र तु विशेषस्य सामान्येन समर्थनं सोऽर्थान्तरन्यासः ....। —तथैव, व्याख्या, पृ. 303

91. चित्रं वक्रोक्त्यनुप्रासो यमकं ध्वन्यलंक्रियाः । —वाग्भटालंकार, 4-2

92. मम्मट : काव्यप्रकाश, पृ. 289

93. ....Yasaskar, a Kashmirian poet, thought it fit to compose a Devisataka in which each verse, besides being a panegyric of the Godess also serves as an illustration of Ratnakar's Alankarsutras.
—देवघर : अलंकार-रत्नाकर की भूमिका, पृ. 6

94. रीतिकालीन अलंकार-साहित्यक शास्त्रीय विवेचन : डा० ओमप्रकाश शर्मा, पृ. 46

95. ऐजन, पृ. 46

96. काव्य-कल्पद्रुम-अलंकारमंजरी, भूमिका : सेठ कन्हैयालाल पोद्दार, पृ. 23

97. रामचरितमानस में अलंकार योजना : डा० वचनदेव कुमार, पृ. 34

98. आमुखतुल्यार्थत्वस्य च शब्दधर्मत्वेन शब्दाश्रयात्वाच्छब्दालंकारोयम् ।
न त्वर्थधर्मः पौनरुक्त्यमलंकार इत्यर्थालंकारता वाच्या ।।
—अलंकार-रत्नाकर, सूत्र 1 (वृत्ति)

99. हिस्ट्री ऑफ संस्कृत पोएटिक्स : डा० सुशील कुमार डे— वोल्यूम-1, पृ. 201

100. कुवलयानन्दक आरम्भमे उद्धृत चन्द्रालोकक अलंकारानुक्रमणिका, पंचम मयूख

101. काव्यकल्पद्रुम : कन्हैयालाल पोद्दार- खण्ड-2, प्राक्कथन, पृ. 21

102. हिस्ट्री ऑफ संस्कृत पोएटिक्स : डा० सुशील कुमार डे, वोल्यूम-1, पृ. 202-04

103. येषां चन्द्रलोके दृश्यन्ते लक्ष्यलक्षणश्लोकाः ।
प्रायस्त एव तेषां... ।। —अप्पय दीक्षित, कुवलयानन्द, वृत्ति, पृ. 2

104. प्रायशो यमके चित्रे रसपुष्टिर्न दृश्यते ।
दुष्करत्वादसाधुत्वमेकमेवात्र दूषणम् ।। —एकावली, 7-5

105. वैह, 7-7 (वृत्ति)

106. सहार्थेनान्वयो यत्र भवेदतिशयोक्तितः कल्पितौपम्यपर्यन्ता सा सहोक्तिरितीष्यते ।।
—विद्यानाथ : प्रतापरुद्र-यशोभूषण, अर्थालंकार प्रकरण, पृ. 400

107. रामचरितमानस में अलंकार-योजना : डा० वचनदेव कुमार, पृ० 37

108. अलंकार धारणा : विकास और विश्लेषण- डा० शोभाकान्त मिश्र, पृ. 274-75

109. हिन्दीमे शब्दालंकार विवेचन : डा० देशराजसिंह भाटिया, पृ. 80

110. रसस्य परिपन्थित्वान्नालंकारः प्रहेलिका ।
उक्तिवैचित्र्यमात्रं सा च्युतदत्ताक्षरादिका ॥ —विश्वनाथ : साहित्यदर्पण, 10-16

111. चित्रवक्रोत्यनुप्रासगूढ़श्लेषप्रहेलिकाः । प्रश्नोत्तरं च यमकमष्टालंकृतयो ध्वनौ ॥ 4, 1-1

112. उपमारूपकोत्प्रेक्षा समासोक्तिपह्नुतिः । समाहितं स्वभावश्च विरोधः सारदीपकौ ॥ 1 ॥
सहोक्तिरन्यदेशत्वं विशेषोक्तिविभावने । एवं स्युरर्थालंकाराश्चतुर्दश न चापरे ॥ 2 ॥
—अलंकारशेखर, पृ. 32

113. येषां चन्द्रलोके दृश्यन्ते लक्ष्यलक्षणश्लोकाः ।
प्रायस्त एव तेषामितरेषां त्वभिन्नवा विचरच्यन्ते ॥ —अप्पय दीक्षित : कुवलयानन्द, पृ. 2

114. रसवत्प्रेयऊर्जस्वित्समाहितमयाभिधाः । भावानामुदयः सन्धिः शबलत्वमिति त्रयः ॥
अलंकारानिमान् सप्त केचिदाहुर्मणीषिणः ॥ —चन्द्रालोक, पृ. 118

115. एवं दोषविशेषानुबन्धाद्गुणत्वेन प्रसि□स्यापि द्वेषस्तिरस्कारः ।
—जगन्नाथ : रसगंगाधर, पृ. 807

116. वास्तवमिति तज्ज्ञेयं क्रियते वस्तुस्वरूपकथनं यत् ।
पुष्टार्थमविपरीतनिरुपममनतिशयमश्लेषम् ॥ —रुद्रट : काव्यालंकार, 7-10

117. सम्यक् प्रतिपादयितुं स्वरूपतो वस्तु तत्समानमिति ।
वस्त्वन्तरमभिदध्याद्वक्ता यस्मिंस्तदौपम्यम् ॥ —रुद्रट : काव्यालंकार, 7-10

118. यत्रार्थधर्मनियमः प्रसि□बाधाद्विपर्ययं याति ।
कश्चितवाचिदातलोकं स स्यादित्यतिशयस्तस्य ॥ —तथैव, 9-1

119. यत्रैकमनेकार्थैर्वाक्यं रचितं पदैरनेकस्मिन् ।
अर्थे कुरुते निश्चयमर्थश्लेषः स विज्ञेयः ॥ —तथैव, 10-1

120. भोजराज : सरस्वती कण्ठाभरण, पृ. 140

121. साधर्म्ये त्रयः प्रकाराः भेदप्राधान्यं व्यतिरेकादिवत् ।
अभेदप्राधान्यं रूपकादिवत् द्वयोस्तुल्यत्वं यथा स्यात् ॥ —अलंकार-सर्वस्व, पृ. 40

122. अर्थालंकाराणां चतुर्विधत्वम् । केचित् प्रतीयमानवस्तवः । केचित् प्रतीयमानौपम्याः । केचित् प्रतीयमानरसभावादयः केचिदस्फुटप्रतीयमानाः ।
—प्रतापरुद्रीये रत्नापणसमन्वितशब्दालंकार प्रकरण, पृ. 337 ।

123. प्रतापरुद्रयशोभूषण

124. Figures can be classified into three main classes - (i) those based on similarity, Upma and all other figures involving Upma; (ii) those based on difference, virodh, and those based on other mental activities like association, contiquity etc. In the third class can be brought all the figures other than those based on Aupmya and Virodh".
– Some Concepts of Alankar Shastra, Raghvan, P. 66.

125. न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम् । —भामह, काव्यालंकार, 1-13

126. जेस्सा दिद्ठी तरल धवला कज्जलं तीअ जोग्गं ?
जा वित्थिण्णथणकलसिणी सोहए तीअ हारो ?
चक्काआरे रमणफलए कोवि कंचीमरट्ठो
जिस्सा तिस्सा उण वि भणिमो भूसणं दूसणं अ ॥
—राजशेखर, कर्पूरमंजरी, द्वितीय यवनिकान्तर- 23

127. जे रूअमुक्काबि विहूसयन्ति ताणं अलंकारबसेण सोहा ।
णिसग्गचंग्गस्स बि माणुसस्स सोहा समुम्मीलदि भूषणेहिं ॥
—तथैव, प्रथम जवनिकान्तर- 31

128. किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥ —कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तलम्

129. किंचिद्राश्रय सौन्दर्याद्धत्ते शोभामसाध्वपि ।
कान्ताविलोचनन्यस्तमलीमसमिवांजनम् ॥ —भामह : काव्यालंकार, 1-55

130. काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान्प्रचक्षते ॥ —दण्डी : काव्यादर्श, 2-1

131. काव्यं ग्राह्यमलंकारत् एवं सौन्दर्यमलंकारः
—वामन : काव्यालंकार सूत्र, वृत्ति, 1-1-1 एवं 1-1-2

132. उद्भटादिभिस्तु गुणालंकाराणां प्रायशः साम्यमेव सूचितम् । विषयमात्रेण भेदप्रतिपादनात् । संघटनाधर्मत्वेन शब्दार्थधर्मत्वेन चेष्टेः । —रुय्यक—अलंकार सर्वस्व, पृ. 7

133. निर्दोषा लक्षणवती सरीतिर्गुणभूषिता ।
सालंकार रसानेकवृत्तिर्वाक् काव्यनामभाक् ॥ —जयदेव : चन्द्रालोक, 1-7

134. अंगीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृती ।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलंकृती ॥ —ऐजन, 1-8

135. उभावेतावलंकार्यौ तयोः पुनरलंकृतिः ।
वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्यभंगीभणितिरुच्यते । —कुन्तक : वक्रोक्तिजीवित, 1-10

136. सैषा सर्वैव वक्रोक्तिरनयार्थो विभाव्यते ।
यत्नोऽस्यां कविना कार्यः कोलंकारोनया विना ॥ —भामह : काव्यालंकार, 2-85

137. उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य यत् । — क्षेमेन्द्र : औचित्यविचार चर्चा, 7

138. अलंकारास्त्वलंकारा गुणा एव गुणाः सदा ।
उचित स्थानविन्यासादलंकृतिरलंकृतिः ॥ —एजेन, 6, एवं
औचित्येन विना रुचिं प्रतनुते नालंकृतिर्नो गुणाः ॥ —ऐजन, पृ. 186

139. कण्ठे मेखलया नितम्बफलके तारेण हारेण वा
पाणौ नूपुरबन्धनेन चरणे केयूरपाशेन वा ।
शौर्येण प्रणते रिपौ करुणया नायान्ति के हास्यताम्
औचित्येन विना रुचिं प्रतनुते नालंकृतिर्नो गुणाः ।।

—क्षेमेन्द्र : औचित्यविचारचर्चा, पृ. 186

140. ....तत् (रस)प्रकाशिनो वाच्यविशेषा एव रूपकादयोलंकाराः ।

—आनन्दव□न : ध्वन्यालोक-2, पृ. 132

141. ....अलंकारान्तराणि हि निरूप्यमाण दुर्घटनान्यपि रससमाहितचेतसः प्रतिभावतः कवेरहम्पूर्विकया परापतन्ति ।

—आनन्दव□न : ध्वन्यालोक, 2, पृ. 131

142. तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनःक्वापि ।

—मम्मट : काव्यप्रकाश-1, कारिका-1, पृ. 4

143. उपकुर्वन्ति तं सन्तं येंगद्वारेण जातुचित् ।
हारादिवदलंकारास्तेनुप्रासोपमादयः ।। —मम्मट : काव्यप्रकाश, 8-67, पृ. 189

144. शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः ।
रसादीनुपकुर्वन्तो लंकारास्तेङ्गदादिवत् ।।

—विश्वनाथ : साहित्यदर्पण- 10-1, पृ. 557

प्रथम अध्याय

मैथिलीमे अलंकार-विषयक मान्यता

अलंकार एक व्यापक शब्द थिक, जे मिथिलामे कहियासँ प्रयुक्त ओ चर्चित होइत रहल अछि से कहब कठिन । जहियेसँ भाषा अभिव्यक्तिक माध्यम बनल होयत, लोक ओहिमे उक्ति-वैचित्र्य अनने होयत । आ वैह उक्ति-वैचित्र्य वा सौन्दर्य तँ थिक अलंकार ।[1] सौन्दर्य ककरा नीक नहि लगैत छैक ? अंगरेजीक सौन्दर्योपासक कवि कीट्सक मान्यता अछि जे सौन्दर्य सतत आनन्द देनिहार वस्तु थिक । ई सत्य एवं शाश्वत थिक, संगहि कल्याणकारक सेहो ।[2] एहि विषयपर भने काव्यशास्त्रीय लोकनिक ध्यान बादमे गेल होनि, अलंकार नामसँ सेहो कालान्तरमे अभिहित भेल हो, किन्तु मिथिलामे आ विशेषतः मैथिलीमे तँ एकटा अनपढ़ो लोकक मुँहसँ अलंकारक धारा प्रवाहित होइत रहैत अछि । बुढ़ियो स्त्रीगण सभकेँ देखैत रहैत छिऐक जे बच्चा सभकेँ तेल लगा, जाँति-पीचि, हाथ-पैर मोड़ैत कहैत रहैत छैक— ईल सन, कील सन, धोबियाक पाट सन, कुम्हराक चाक सन... इत्यादि । तँ की एहिमे अलंकार नहि छैक ? एहि तरहेँ अलंकारक स्थापना लोकभाषामे कहियासँ भेल से कहब कठिन अछि ।

सर्वप्रथम अलंकारक स्वरूपकेँ स्वीकार कयनिहार संस्कृतक आचार्य लोकनि छथि, किन्तु हुनको लोकनिमे मतैक्य नहि छनि । तेँ ने आचार्य जयदेव व्यंग्य करैत लिखैत छथि जे अनलंकृत शब्दार्थकेँ काव्य माननिहार अगियोकेँ अनुष्ण किऐक ने मानि लैत छथि ?[3] जयदेवक उक्त गर्वोक्तिसँ बुझना जाइत अछि जे अलंकाररहित काव्य भइये नहि सकैत अछि । जे हो, एतबा धरि अवश्य जे संस्कृत साहित्यक प्रथम आचार्य भामहसँ लए कए अद्यावधि प्रायः सभ आचार्य अलंकारकेँ विवेच्य माननि अछि ।

मैथिली साहित्यपर संस्कृतक पूर्ण छाप पड़ल छैक । कविशेखर बदरीनाथ झाक विचारे तँ मैथिलीमे संस्कृतसँ भावसाम्य रहनहि ओहिमे चमत्कार आबि सकैत छैक ।[4] आ

चमत्कारे तँ थिक अलंकार । आदिकालहिसँ मैथिलीमे जतेक विद्वान लोकनि भेलाह अछि ओ लोकनि स्वतंत्र रूपेँ अलंकारक विवेचन कयने होथि वा नहि, किन्तु एतबा तँ अवश्य जे अलंकारकेँ स्वीकार करबे कयलनि अछि ।

सर्वप्रथम हमरालोकनि मैथिलीक आद्य उपलब्ध ग्रन्थ कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरमे अलंकारक जे गुम्फन देखैत छी ताहिसँ एतबा धरि स्पष्ट भए जाइत अछि जे मैथिलीमे कोन प्रकारक अलंकार विन्यास रहैत अछि । किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

''पूर्णिमाक चान्द अमृत पूरल अइसन मुह । श्वेत पंकजकाँ दल भ्रमर बयिसल अइसन आँखि । काजरक कल्लोल अइसन भ□ाुह । गथले फुले नर्म्मदाक शलाका पूजल अइसन षोम्पा । परवाक पल्लव अइसन अधर । कनिअराक कर अइसन नाक । सीन्दुर मोति लोटाएल अइसन दान्त । वेतक साट अइसन बाँहि । पारिजातक पल्लव अइसन हाथ । छोलंग छोलल अइसन पयोधर ।.....'[5] —उपमालंकार (धर्मलुप्ता लुप्तोपमा) ।

पुनश्च—

''मुखक शोभा देखि पद्मे जल प्रवेश कएल । आँखिक शोभा देखि हरिण वन गेल । केशक शोभा देखि चमरी पलायन कएल । दाँतक शोभा देखि तालिवेँ हृदय वीदीर्ण कएल । अधरक शोभा देखि प्रवाल द्वीपान्तर गेल । कानक शोभा देखि बौ□ ध्यानस्थित भेल । कण्ठक शोभा देखि चक्रवाक उच्छन्न भेल.... इत्यादि ।''[6] (प्रतीप) ।

एहि महान आचार्यक वर्णनचारुता ओ अलंकारक वैलक्षण्य प्रयोगकेँ डाक्टर सुनीति कुमार चटर्जी सेहो स्वीकार कयलनि अछि ।[7]

कविकोकिल विद्यापति तँ सौन्दर्योपासकक नामसँ विख्याते छथि । हिनक गीत सभमे विलक्षण रूपेँ अलंकारक समावेश भेल अछि । तहिना हिनक परवर्त्तीयो कवि लोकनिक गीत सभमे अलंकारक चारुता दृष्टिगोचर होइत अछि । किन्तु ई लोकनि स्वतन्त्र रूपसँ अलंकारपर विचार नहि कयलनि अछि ।

मैथिलीमे स्वतंत्र रूपसँ अलंकारपर विचार कयनिहार आलंकारिक लोकनि छथि— महावैयाकरण प० दीनबन्धु झा (अलंकार-सागर), प० रामचन्द्र मिश्र (चन्द्राभरण), प० सीताराम झा (अलंकार-दर्पण), पं० वेदानन्द झा (अलंकृत बोध), प० दामोदर झा (अलंकार-कमलाकर), प० रमानाथ झा (अलंकार-प्रवेश), प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' (अलंकार-मालिका), डा० जयधारी सिंह (काव्यमीमांसा), डा० दिनेश कुमार झा (मैथिली काव्यशास्त्र) एवं डा० रमण झा (अलंकार-भास्कर) आदि ।

अलंकार-सागरक भूमिकामे प० रमानाथ झा उक्तिक विच्छित्तिकेँ अलंकार कहैत छथि । संगहि अलंकार रहित काव्यकेँ साधारण वाणी मानैत छथि ।[8] प० झाक

अनुसार महावैयाकरणजी विशु□ अलंकारवादी छथि, संगहि इहो स्पष्टतः जना दैत छथि जे अलंकार अनुभव भेदेँ भिन्न-भिन्न रूपेँ देखल जा सकैत अछि ।[9] अतः स्पष्ट अछि जे अनुभव रहित व्यक्ति अलंकारकेँ नहि बुझि सकैत अछि ।

प० सीताराम झा कविक हेतु छन्द, अलंकार, गुण, दोष आदिक ज्ञान राखब आवश्यक मानलनि अछि ।[10] हिनका अनुसारेँ संसारमे सभ जीवक बीच विष्णु भगवानक जे अस्तित्व अछि, सैह भूषण मध्य उपमालंकारक ।[11]

प० दामोदर झा तँ साहित्यक सभ अंगमे प्रधान अलंकारकेँ मानैत छथि । एहि हेतु ओ अपन तर्क देलनि अछि जे सभसँ प्राचीन थिक वैदिक साहित्य, जाहिमे यत्र-तत्र अलंकारक उदाहरण प्राप्त होइत अछि । तत्पश्चात् ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वाल्मीकि रामायण, पुराणवर्ग इत्यादि सभमे अलंकारक विश्लेषण भेल अछि ।[12]

प० रमानाथ झा प्राचीन गीतक भूमिकामे लिखने छथि जे प्राचीन गीत अलंकारसँ लादल अछि आओर तेँ ओ सरसकवि ईशनाथ झा द्वारा गोविन्ददासक पदक अलंकार निर्देशपूर्वक व्याख्या सेहो लिखबाय ओहि पुस्तकमे प्रकाशित करबओने रहथि । किन्तु नवुयगक गीतक सन्दर्भमे वैह कहने छथि जे— ''भाषा-जे संस्कृत बाहुल्य ओ अलंकारसँ लादल छल— आब पूर्ण स्वतन्त्र भए गेल ।''[13]

स्वर्गीय भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' 'आषाढ़'क भूमिकामे लिखैत छथि जे आइ-काल्हि नव्य प्रवाह चलल अछि जाहिमे छन्दक बन्धन टूटि गेल ओ अलंकार भार भए गेल ।[14]

सरसकवि ईशनाथ झा एक दिस जँ छन्द-अलंकार युक्त सरस रचनासँ विद्वद्वर्गक मोनकेँ आकृष्ट करैत छथि तँ दोसर दिस जनसामान्योक हेतु कहि उठैत छथि जे आब छन्द तालक कोनो बन्धन नहि रहल ।[15]

प्रो० हरिमोहन झा तँ अलंकार-शिक्षा लिखि कए ई सि□ कए देलनि जे मिथिलामे अनपढ़ो लोक, झगड़ो करैत काल अलंकारमे गप्प करैत अछि, भलहि ओ स्वयं एकर भेदोपभेदसँ परिचित रहओ वा नहि । प्रो० झा स्त्रीगणलोकनिक झगड़ाक जे दृश्य उपस्थित कयने छथि से सहृदय वर्गक अन्तस्थलकेँ अवश्ये स्पर्श करतनि । किछु झगड़ाक झलकी प्रस्तुत करब अप्रासंगिक नहि होयत—

एक जनी बजलीह— ऐ, ओल सन कबकब बोल किऐक बजै छी ? (अनुप्रास एवं पूर्णोपमा)

दोसर जनी— अहूँक बात तँ विषे सन होइ अछि । (लुप्तोपमा)

तेसर जनी— जेहन ओ छथि तेहने अहाँ छी और जेहने अहाँ छी तेहने ओ छथि । (उपमेयोपमा)

चारिम टिपलनि— अहाँ सन अहीं छी । (अनन्वय)

अन्य— बाप रे बाप, राति दिन गदहकिच्चनि । ई घर तऽ मछहट्टोसँ बढ़ि गेल । (व्यतिरेक)

दोसर जनी— अहाँ लोकनिक मुहमे लगाम नहि अछि ? जीभ अछि की चरखी ? (सन्देह)

अन्य— एहि घरमे कम्मे के ? लंकामे बहुत छोट से उनचास हाथ । (लोकोक्ति)[16]

प्रो० आनन्द मिश्र कविता-संग्रहक भूमिकामे लिखैत छथि जे विद्यापतिक परवर्त्ती कविलोकनि अलंकार-योजनापर विशेष ध्यान देलनि जाहिसँ ओ भाषा जनसामान्यक हेतु दुरूह भए गेल ।[17]

कविचूड़ामणि प. काशीकान्त मिश्र 'मधुप' तँ अलंकारक पूर्ण समर्थक छथि । तेँ ने प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' राधा-विरहक भूमिकामे लिखने छथि—

''कोनो पाँती उठाउ, यमकक झमक, उत्प्रेक्षाक चमक ओ ध्वनिक गमक चमकैत, झमकैत ।''[18]

पुनः सुमनजी 'मधुप'क झांकारक भूमिकामे लिखैत छथि जे हिनक काव्यमे अलंकारक छटा पूर्ण रूपेँ प्रस्फुटित भेल अछि । उपमा, दृष्टान्त, रूपक ओ उत्प्रेक्षाक अन्वेषणमे हिनका सि□हस्त मानैत छथि ।[19]

डा० जयकान्त मिश्रक तँ एहन कथन अछि जे अत्यधिक अलंकार गुम्फनक कारण हिनक काव्य सामान्य पाठकक हेतु दुरूह अछि, संगहि कतोक स्थलपर कृत्रिमताक भान होमय लगैत अछि ।[20]

मधुपजीक परिचय दैत प० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' सेहो हिनका श्लेष, यमक एवं उत्प्रेक्षालंकारक विशेषाधिकारी कहि कए सम्मान कयने छथि ।[21] कवि स्वयं कहै छथि—

सरसा, सालंकाराकृति-सार्थक-कवि-कृति-गुण-गुम्फित रूप ।
पदन्यास-विन्यास-प्रशंसित, सद्वृत्तिक साक्षात् सरूप ।
सर्जन-रत-कवि-रचित-सुवर्ण खचित आर्यादिक वन्दित नाम,
भावमयी ध्वनि-मोहित-सहृदय-हृदया कत कविता अभिराम ॥[22]

डा० जयधारी सिंह तँ संस्कृत साहित्यक परम्परानुसार सम्पूर्ण काव्यशास्त्रकेँ अलंकार-शास्त्रक अन्तर्गत राखि दैत छथि । तदनुसार काव्यशास्त्रक अन्यान्य विषय सभ, यथा— काव्यक लक्षण-हेतु-प्रयोजन, शब्दशक्ति, ध्वनि, रस, गुण, दोष इत्यादि एकर अंग बनि जाइत अछि ।[23]

प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[24] अलंकारकेँ दशाधिक नामसँ अभिहित करैत एकरा सौन्दर्यव□क तत्त्वेटा नहि मानैत छथि अपितु अनिवार्य तत्त्व सेहो । एतबे नहि, हिनक तँ ई गर्वोक्ति छनि जे अलंकारकेँ मुख्य-गौण जे किछु बुझल जाय, सभकेँ एकर महत्त्वकेँ स्वीकार करहि पड़ल छनि ।[25]

वास्तवमे काव्यशास्त्रक परम्पराक निर्वाह करबामे, छन्द-अलंकारक नियोजन करबामे बहुमुखी प्रतिभाक प्रयोजन छैक जे आधुनिक अधिकांश कविक काव्यमे नहि देखल जाइत अछि । किन्तु बाजए के ? संख्या तँ ओकरे बेसी छैक । कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' एहन कविकेँ 'कपि' कहैत छथि । ओ हिनक रचनाकेँ बलात्कारसँ भेल गर्भाधानक अवैध सन्तान तुल्य मानैत छथि ।[26] एतबे नहि, दोसर स्थलपर कवि पुनः कहैत छथि जे लोक आइ-काल्हि नव कविता दिस झुकल अछि, जाहिमे भारतीय मूल तत्त्व कम भेटत ।[27]

पण्डित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' सेहो अलंकारक मान्यताकेँ स्वीकार करैत छथि । तेँ ने कहि उठैत छथि—

स्वयं शंकराचार्य जतय भारती संग कयलनि शास्त्रार्थ
भेल अनन्वय उपमालंकारो जनिका लगमे चरितार्थ ।
मण्डन-प्रिया-मण्डिता मिथिला सन दोसर नहि हो अनुमान
शंकर सन शंकरे तथा भारती सदृश नहि विदुषी आन ॥[28]

डा० श्रीकृष्ण मिश्रक कथन अछि जे सुकविक द्वारा प्रयुक्त रसानुभूतिजन्य व्यंजन शब्दे अलंकार थिक । एहि हेतु कोनो प्रयासक योजना नहि होइत अछि । जतय अलंकार योजनाक हेतु कविकेँ प्रयास करय पड़ैत छनि ओतय डाक्टर साहेबहिक शब्दमे अलंकार नहि अलंकाराभास थिक ।[29]

डा० शिवशंकर झा 'कान्त' अपन मैथिली महाकाव्यक उद्भव ओ विकासमे स्पष्ट शब्देँ कहने छथि जे महाकाव्यमे अलंकारक प्रयोजन, आकर्षक रूप देबाक हेतु आ अर्थक दुरूहताकेँ हटाय सहज बनयबाक हेतु तथा अर्थमे प्रेषणीयता अनबाक हेतु भेल करैत अछि ।[30]

एक दिस कतोक कवि लोकनि अलंकार-प्रयोगकेँ एकटा भार मात्र बुझैत छथि, अर्थक्लिष्टत्वक कारण बुझैत छथि तँ दोसर दिस कान्तजी एकरा अर्थक स्पष्टीकरणक माध्यम बुझैत छथि । मैथिलीमे महाकाव्य जतेक अछि से आधुनिके काव्यक अन्तर्गत अबैत अछि । एहि सभमे अलंकारक प्रचुर प्रयोग भेल अछि ।[31]

डा० दिनेशकुमार झा काव्यमे अलंकारक अनिवार्यताकेँ नहि स्वीकार करैत छथि, संगहि एकरा त्याज्य सेहो नहि कहैत छथि । हिनका विचारेँ अलंकार रहित काव्य

सेहो विद्वद्वर्गकें ओहिना आकृष्ट करत जेना अलंकार सहित काव्य । अन्तर एतबे जे अलंकारयुक्त काव्य सामान्यो पाठककें आनन्दित करत । डा० झा अलंकारकें नारीक बाह्य आडम्बर तुल्य मानैत छथि आ तें ओकर स्वाभाविक गुण–हृदयक कोमलता, लज्जाशीलता, प्रेम, सेवा, दया, ममता आदिकें ओहिसँ पृथक् कए दैत छथि ।[32]

जिजीविषाक भूमिकामे प्रो० जगदीश मिश्र कहैत छथि जे आइ युग बदलल अछि, तें प्राचीन परम्पराक कविता विरले लिखल जाइत अछि । हिनका विचारें साहित्यक क्षेत्रमे आमूल परिवर्त्तन भए गेल अछि । एकर माध्यम, शैली, प्रकार, छन्द आदि सभमे परिवर्त्तन भए गेल । अलंकार तऽ चर्चोक विषय नहि बुझयलनि ।[33]

उक्त विवेचनाक आधारपर अलंकार विषयपर विचार कयनिहार विद्वान्क तीन वर्ग भए जाइत अछि–

प्रथम वर्ग– एहि वर्गक विद्वान् लोकनि अलंकारकें अनिवार्य माननलि अछि । एकर अन्तर्गत महावैयाकरण दीनबन्धु झा, प० सीताराम झा, प० दामोदर झा, प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन', कविचूड़ामणि 'मधुप', उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', डा० जयधारी सिंह, डा० रमण झा आदिक नाम उल्लेखनीय अछि ।

द्वितीय वर्ग– एहि वर्गक विद्वान् लोकनि काव्यक हेतु अलंकारकें ने आवश्यके माननलि अछि ओ ने एकरा भारे बुझैत छथि । प्रो० रमानाथ झा, डा० दिनेश कुमार झा आदिक नाम एहि वर्गक अन्तर्गत उल्लेखनीय अछि ।

तृतीय वर्ग– एहि वर्गक विद्वान लोकनि काव्यक हेतु अलंकारकें भारे बुझैत छथि । एकर अन्तर्गत स्वर्गीय भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', सरसकवि ईशनाथ झा, प्रो० जगदीश मिश्र इत्यादिक नाम उल्लेखनीय अछि ।

संदर्भ :

1. सौन्दर्यमलंकारः । काव्यालंकारसूत्र वृत्ति : वामन, 1-1-2
2. (i) A thing of beauty is joy for ever.
   (ii) Beauty is truth and truth is beauty; that is all ye know on earth and all ye need to knwo. —Keats.
3. अंगी करोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृती ।
   असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलंकृती ।। —जयदेव : चन्द्रालोक, प्रथम मयूख, श्लोक-8
4. जँ जाइन्हि भावक साम्य सूझि, संस्कृत-काव्यक प्रतिबिम्ब बूझि ।
   तँ करथु सुधीजन समाधान, भाषा-सौन्दर्यक गति न आन ।।
   —एकावली-परिणय, 1-12

5. वर्णरत्नाकर, द्वितीय कल्लोल, पृ. 5
6. वैह, पृ. 6
7. It is a sort of lexicon of vernacular and Sanskrit terms, a repository of literary similies and conventions dealing with the various things in the world and ideas which are usually treated in poetry. We have in it either bare lists of terms, or the similies and conventions are set in the frame-work of a number of descriptions." – Varnaratnakar : Preface, page 21
8. अलंकार-सागर, पृ. 4
9. वैह, पृ. 6
10. काव्यक सरसतामे कविकें छन्द, अलंकार, गुण, दोषक ज्ञान राखब आवश्यक जानि हम संस्कृतक.... । —अलंकार-दर्पण, भूमिका
11. जगत जीवमे विष्णु छथि, व्याप्त जाहि परकार ।
    सब भूषणमे ताहि विधि, अछि उपमालंकार ।। —अलंकार-दर्पण, पृ. 1
12. अलंकार-कमलाकर, भूमिका, पृ. झ
13. प्राचीन-गीत, भूमिका, पृ. 135
14. ''आइ-काल्हि नव्य प्रवाह । छन्दक बन्धन उठि गेल । अलंकार भार भेल । रस तऽ बरबस सर्वत्र व्याप्ते जकाँ । लक्षणा विलक्षणा भेलि, ध्वनि अन्तर्ध्वनित । रीति अनरीति, गुण अवगुण । सभठाम स्वच्छन्दताक ताण्डव । सर्वत्र स्वान्तःसुखायक घन घोष । कविता सभ तरहें विविध वादग्रस्त । दू अक्षर शु□ लिखबामे जे समर्थ, तनिके कवि बनबाक स्पृहा ।''
    —भुवन, आषाढ़क भूमिका ।
15. छन्द ताल केवल थिक बन्धन, नहि सम्प्रति अछि तकर प्रयोजन,
    रुचिर पवित्र भावमय गायन, पंचम स्वरसँ गाउ । —गायकसँ : माला : ईशनाथ झा
16. एकादशी : प्रो० हरिमोहन झा, पृ. 89
17. भाषा परुष होयबाक कारणें जनताक हेतु दुरूह भए गेलैक, पदयोजना, अलंकार आदि विषयपर विशेष जोर पड़लासँ ओकर चित्रात्मकता साधारण पाठकक हेतु नष्ट भए गेलैक ।
    — कविता-संग्रह : मैथिली अकादमी, भूमिका, पृ. ङ
18. राधा-विरह : भूमिका, पृ. घ
19. हिनक कवितामे पदलालित्य, अलंकारक छटा, ओ भावावेश पूर्ण रूपें प्रस्फुटित भेल अछि ।
    □ □ □ □
    अलंकार सम्पुटित होयबाक संग सामयिकताक पुट हिनक रचनामे पूर्ण भेटैछ । उपमा, दृष्टान्त, रूपक ओ उत्प्रेक्षाक अन्वेषणमे हिनक दृष्टि ने केवल काव्य प्रचलित कवि-समयपर निर्भर रहैछ, प्रत्युत प्रस्तुत वातावरणहुसँ ग्रहण करैछ, जे यत्र-तत्र प्रकट अछि ।
    —झांकार : 'मधुप', भूमिका- पृ. ग

20. Madhup's weakness is an excessive ornamentation.

—History of Maithili Literature, Vol. ii, page- 298

21. राधा-विरह : कवि-परिचय ।
22. राधा-विरह : कविचूड़ामणि 'मधुप', 4-16
23. काव्य-मीमांसा : डा० जयधारी सिंह, प्रथम भाग, भूमिका- पृ. क
24. अलंकार-मालिका : प्रास्ताविकी, पृ. 7
25. ऐजन, पृ. 7
26. एकटा तेसरो प्रकार अछि, विकलांग सृष्टिक- जतए ने प्रतिभा रहतैक आ ने विद्या-बुि□, ओतए बलात् पद-योजनासँ काव्य बनिते छैक । एहन कवि निश्चयतः कपि-कोटिक । एहन कविता बलात्कारसँ भेल गर्भाधानक अवैध सन्तान तुल्य थिक ।

—बाजि उठल मुरली, भूमिका, पृ. 4

27. आब नव कविताक बाजार गरम छैक, सभ ओही दिस लपकल अछि । एहिमे भारतीय मूल तत्त्व (रस, छन्द, अलंकार इत्यादि) ताकब तँ बड़ कम भेटत, बेसी विदेशी माल, भारतीय आवरण । —बाजि उठल मुरली, भूमिका, पृ. 13
28. आशा-दिशा : श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', पृ. 12
29. कवि व्यंजक शब्द वा अलंकारक प्रयोग करैत छथि । रसानुभूतिजन्ये अलंकार रसानुभूतिमे सहायक होइछ । एहन अलंकारक प्रयोग लेल कोनो पृथक् प्रयत्न नहि करए पड़ैछ । जाहि अलंकारक प्रयोग लेल कविकेँ पृथक् प्रयत्न करए पड़ैन्हि ओ रसानुभूति जन्य नहि, प्रभावोत्पादक नहि । ओ वास्तवमे अलंकार नहि, अलंकाराभास ।

—मेरुप्रभा : डा० श्रीकृष्ण मिश्र, भूमिका, पृ. 13-14

30. मैथिली महाकाव्यक उद्‌भव ओ विकास : डॉ० शिवशंकर झा 'कान्त'- पृ. 161
31. मैथिली महाकाव्यक अलंकारक विशद विन्यास, कवीश्वरक मिथिलाभाषा रामायण, कविवरक रमेश्वर चरित मिथिला रामायण, सीताराम झाक अम्बचरित, बदरीनाथ झाक एकावली परिणय, तथा दीनानाथ पाठक 'बंधु'क चाणक्यमे देखैत छी । ओना रावण वध, कीचक वध, सुभद्राहरण आदियहुमे अलंकारक योजना छैक, आ से बेसी स्पष्ट तथा युक्तियुक्त, मुदा परिमाणमे एकावली-परिणय आ अम्बचरितमे अलंकारक बेसी प्रयोग भेल अछि ।

—कान्त : मैथिली महाकाव्यक उद्‌भव ओ विकास, पृ. 161

32. मैथिली काव्यशास्त्र : डॉ० दिनेश कुमार झा, पृ. 251
33. जिजीविषा : प्रो० जगदीश मिश्र, भूमिका- पृ. 3

l

द्वितीय अध्याय

मैथिली काव्यमे शब्दालंकार

शब्द एवं अर्थ एही दुनूसँ काव्यक बाह्य शरीरक रचना होइत अछि । कविकुलगुरु कालिदासक अनुसार एहि शब्द एवं अर्थक सम्बन्ध शिव-पार्वतीक अर्धनारीश्वर सम्बन्धहि जकाँ नित्य अछि ।[1] महाकवि माघ कहैत छथि जे विद्वान सत्कवि सदृशहि दुनूक अपेक्षा करैत छथि ।[2]

किछु विद्वान शब्दालंकारकेँ हेय मानैत छथि से उचित नहि बुझना जाइत अछि कारण जे शब्दालंकारसँ काव्य अत्यन्त रमणीय एवं आकर्षक बनि जाइत अछि । मूर्खसँ विद्वान धरि सभकेँ ई आकृष्ट कए लैत अछि । प्राचीन मैथिली साहित्यमे कविकोकिल विद्यापति एवं गोविन्ददास प्रचुर शब्दालंकारक प्रयोग करैत छलाह । विद्यापतिक यमक एवं गोविन्ददासक अनुप्रास ककर मोनकेँ हरण नहि करैत अछि ? अर्वाचीन कविगण मध्य कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप', प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' एवं प० उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' पर्याप्त शब्दालंकारक प्रयोग कयलनि अछि ।

1. अनुप्रास

अनुप्रास 'अनु-प्र-आस'क योगसँ बनल अछि । अनुक अर्थ होइत अछि बारम्बार प्रक अर्थ लग एवं आसक अर्थ राखब । अतः अनेक बेरि व्यंजनक आवृत्ति भेलासँ अनुप्रास अलंकार होइत अछि । काव्यप्रकाशकार एकर लक्षण दैत कहलनि जे वर्णसाम्य अनुप्रास थिक ।[3] साहित्य-दर्पणकार कहैत छथि जे स्वरमे विषमतो रहलासँ वर्णसाम्य अनुप्रास अलंकार थिक ।[4] प० दामोदर झा[5] एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[6] विश्वनाथेक अनुगमन कयलनि अछि । ई लोकनि एहि अलंकारक पाँच भेद कयलनि अछि, जे थिक—

(क) छेकानुप्रास, (ख) वृत्यनुप्रास, (ग) श्रुत्यनुप्रास, (घ) अन्त्यानुप्रास एवं (ङ) लाटानुप्रास ।

(क) छेकानुप्रास—

छेकानुप्रासमे अनेक व्यंजनक एकहि बेरि स्वरूपतः आ क्रमतः साम्य रहैत छैक ।[7] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' पृथक्-पृथक् व्यंजन-युग्मक आवृत्तिकेँ छेकानुप्रास कहैत छथि ।[8] कहल जाइत अछि जे ई अलंकार विदग्धकेँ विशेष प्रिय लगैत छनि । आधुनिक मैथिली काव्यमे एकर पुष्कल प्रयोग भेटैत अछि । किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

1. **संच-मंच बक-मण्डल शावक सहित ककरदनि करइछ ध्यान,**
   अधिक भक्ति आसक्ति थीक चोरक लक्षण, कहइछ सज्ञान ।[9]

एतय संच-मंचमे 'च' तथा भक्ति-आसक्तिमे 'क्ति' केर स्वरूपतः एवं क्रमतः आवृत्ति भेल अछि, तेँ छेकानुप्रास भेल ।

2. **ऊषा मगन गगन-तरुवरसँ तोड़ि तरेगन चानक फूल,**
   वर-अम्बरसँ झाँपि अरुण-वर-दत्त ओढ़ि पुनि अरुण-दुकूल ॥[10]

3. **परम पुरातन, भगीरथक श्रमसँ संचालित ।**
   विश्व-अविद्या हरण हेतु हरि-पद उद्घाटित ॥[11]

4. **भरि रैनि केलिसँ विकलित, तरुणी-तरुणक कामानल ।**
   प्रातक वातक लगितहिँ पुनि, प्रज्चलित द्विगुण भए जागल ॥[12]

(ख) वृत्यनुप्रास—

यदि एक व्यंजनक एक बेरि वा अनेक बेरि, अनेक व्यंजनक एक बेरि वा अनेक बेरि स्वरूपतः, वा अनेक व्यंजनक अनेक बेरि स्वरूपतः-क्रमतः आवृत्ति होअए तँ वृत्यनुप्रास कहबैत अछि ।[13] रसानुवृत्ति वर्णविन्यास सेहो वृत्यनुप्रास कहबैत अछि ।[14] एहि तरहेँ वृत्यनुप्रासक पाँच विभेद भए जाइत अछि—

1. एक व्यंजनक एक बेरि आवृत्ति ।
2. एक व्यंजनक अनेक बेरि आवृत्ति ।
3. अनेक व्यंजनक एक बेरि स्वरूपतः आवृत्ति ।
4. अनेक व्यंजनक अनेक बेरि स्वरूपतः आवृत्ति ।
5. अनेक व्यंजनक अनेक बेरि स्वरूपतः क्रमतः आवृत्ति ।

एहि सभ विभेदक उदाहरणसँ आधुनिक मैथिली काव्य भरल-पुरल अछि । एतय किछुए उदाहरण प्रस्तुत कयल जाइत अछि—

1. एक व्यंजनक एक बेरि आवृत्ति—

सुनि लक्ष्मण कहलनि सुनु मित्र, कर्म कठिन गति बहुत विचित्र ।
सुख दुख कारण होथि न आन, दुख दाता पर लघुमति जान ॥[15] (स-स, द-द)

पुनश्च—

एम्हर ओम्हर पड़ल पाँउर
कोनो अगिमुत्तूक निर्मम निठुरताक प्रतीक ।[16] (र-र-, प-प, न-न)

2. एक व्यंजनक अनेक बेरि आवृत्ति—

कला-कोविद कोकिल-कलकल केर काकलीक-कान्त विमान-
उपर चढ़ि विकसित-सित-शतपत्र छलेँ विहँसैत अरुण परिधान ॥[17]

पुनश्च—

सुर-समुदाय-सुसेवित-सृष्टिक-सुधाधार सौन्दर्य-शरीर,
शान्ति-सदन श्रुति-सम्मानित, सारस्वत-पद- शृंगारक हीर ।
सदृश समुज्चल सुमन-सुमनसँ क' सुरभित-सुखद-रसपान,
सरस-सुमन-सौजन्य-सुहृद्-श्री मधुप करै स्वान्तः सुख गान ॥[18]

पुनश्च—

की कहु, कवि, प्राण बचाउ ॥
कामिनीक कोमल कपोल कुच, क्रीड़ा कौतुक कान्ति-कलित कच-
कल्पनाक कलुषित न कुंजमे , काँटहि काँट घुमाउ ॥[19]

3. अनेक व्यंजनक एक बेरि स्वरूपतः आवृत्ति—

सुखाकेँ फूल खसल, कए कोप, फोलि आँचर फलकेँ छिटि देल ।[20]

(स एवं ख केर एक बेरि स्वरूपतः आवृत्ति भेल अछि)

4. अनेक व्यंजनक अनेक बेरि स्वरूपतः आवृत्ति—

स्वर्गंगा-तरंग शीकरसँ शीतल-शृंग हिमाद्रि ।
स्फुरित रत्न दक्षिण रत्नाकर तीर अवधि-मलयाद्रि ॥[21]

(तर-रत-रत-रत-तर) —अनेक व्यंजनक अनेक बेरि स्वरूपतः आवृत्ति भेल अछि ।

5. अनेक व्यंजनक अनेक बेरि स्वरूपतः क्रमतः आवृत्ति—

सुन्दरि, रस-लोलुप अलि-कुल जनि, लखि नव-सुमन-विकास ।
हरखि लुबुधि नव-कुसुमक मधु-रस, पीबए भरि अभिलाष ॥
तहिना अहँक अधर बिनु-चूमल, कोमल-कुसुम समान ।
करब स्नेहसँ तृष्णाकुल हम, जखन तकर रसपान ॥[22]

(स म केर अनेक बेरि स्वरूपतः क्रमतः आवृत्ति अछि)

ई अनुप्रास वृत्तिसँ सम्बन्धित अछि । वृत्ति तीन प्रकारक होइत अछि—

1. उपनागरिका वृत्ति, 2. परुषा वृत्ति एवं 3. कोमला वृत्ति ।

1. उपनागरिका वृत्ति—

एहि वृत्तिक प्रयोग शृंगार, करुण एवं शान्त रसक वर्णनमे होइत अछि । एहिमे कोमल एवं माधुर्य गुण-व्यंजक वर्णक प्रयोग होइत अछि । एहिमे सानुनासिक वर्णक अधिक प्रयोग भेटैत अछि एवं कठोर वर्णक प्रयोग निषेध मानल जाइत अछि । उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

शुक-पंखी-दल परिधान भार
मृदु मंजु मंजारक हेम-हार
रचि वृन्त-थार कुंकुम अपार
सजलनि वनदेवी छवि अनन्त ।[23]

पुनश्च—

गगन-गंग जल-तरंग धरती पर लहरल
व्योम-कुंज कुसुम-पुंज तारागण छिटकल ।[24]

2. परुषा वृत्ति—

एहिमे ओजगुण-व्यंजक-वर्णक प्रयोग होइत अछि । कठोर वर्ण, द्वित्व वर्ण, संयुक्त वर्ण, पैघ-पैघ समास, रेफ आदिक प्रयोग होइत अछि । ई वीर, रौद्र एवं भयानक रसमे दृष्टिगोचर होइत अछि । उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

इत मर्क्कटाधीश कय अर्व्व अक्षौहिणी, क्षोणिधर क्षोणि संक्षोभसँ काँप ।
तह दिग्गजो दण्ड महिशुण्ड सम्पातकर, चण्डरव दाँत महि कष्ट सँ थाप ॥[25]

3. कोमला वृत्ति—

एहिमे प्रसादगुण-व्यंजक-वर्णक प्रयोग होइत अछि तथा एकर प्रयोग शान्त, अद्भुत एवं वीभत्स रसमे बहुधा होइत अछि, यथा—

रामचन्द्र चन्द्रिका थिकहुँ हम, सपन न मन व्यभिचार ।
विधिबुधि बिरहिणि व्याकुलि एकसरि चित चिन्ता विस्तार ॥[26]

(ग) श्रुत्यनुप्रास—

जतय तालु, कण्ठ आदि एकहि स्थानसँ उच्चरित भेनिहार व्यंजनमे (स्वरमे नहि) समानता हो ओतय श्रुत्यनुप्रास कहबैत अछि ।[27] एहि अनुप्राससँ एक स्थानसँ उच्चरित वर्ण सभक आवृत्ति होइत अछि । वर्णक उच्चारणस्थान निम्नलिखित अछि—

1. कंठ, 2. तालु, 3. दाँत, 4. मूर्धा, 5. ओष्ठ, 6. नासिका इत्यादि ।

स्थानभेदसँ वर्णकेँ निम्नलिखित भागमे बाँटल जाइत अछि—

1. कंठ— अ कु ह विसर्जनीयानां कण्ठः - अ, कवर्ग, विसर्ग तथा ह ।
2. दन्त— लृतुलसानां दन्ताः - लृ, तवर्ग, ल एवं स ।
3. तालु— इचुयशानां तालुः - इ, चवर्ग, य एवं श ।
4. मू□र्— □टुरषाणां मूर्धा - □, टवर्ग, र एवं ष ।
5. ओष्ठ— उपूपध्मानीयानामोष्ठौ - उ, पवर्ग ।
6. नासिका— □ा म ङ ण ना नां नासिका च - □ा, म, ङ, ण, एवं न
7. कंठ-तालु— एदैतोः कण्ठतालुः - ए एवं ऐ ।
8. कंठोष्ठ्य— ओदौतोः कण्ठोष्ठम् - ओ एवं औ ।
9. दंतोष्ठ्य— वकारस्य दन्तोष्ठम् - व ।

एहि तरहेँ श्रुत्यनुप्रासक अनेक भेद भए जाइत अछि । किछु उदाहरण अवलोकनीय थिक—

1. **कण्ठ्य—**

किलकि-किलकि कौतुक करय, कपिकुल अति वाचाल ।
रघुनन्दन आगाँ कहय, के थिक खल दशभाल ॥[28]

एतय कण्ठ्य वृत्ति सभक आवृत्ति भेल अछि ।

2. **दन्त्य—**

आतप-तापित मरुथल शापित कंठ पिपासित घोर ।
नीर विन्दु बिनु पथिकक जीवन संकट पड़ल अथोर ।[29]

3. **तालव्य—**

तम-तस्कर तत छनहि चोराओल चन्दा-चानी
प्रिया-पहुक मन जुगुति चोराओल अवसर जानी ।
निद्रा क्रम-क्रम जगत जनक चित चेत चोरौलक
भावी अर्जुन राजसुखक चोरी चित कैलक ॥[30]

4. **ओष्ठ्य—**

पापी, पाखण्डी, परम नीच
रौ, निरपराध-द्विज-शिखा खीच
निज-निज परिवारक मृत्यु खीच
भावी संहारक योग खीच
फूटत रौ, पापक घृणित घैल
भसिआयत शीघ्र कलंक शैल ॥[31]

ई अनुप्रास सहृदयाह्लादक होइत अछि तेँ आचार्य विश्वनाथ एकरा श्रुत्यनुप्रास कहलनि ।[32]

(घ) अन्त्यानुप्रास—

अन्त्यानुप्रास पदान्तमे प्रयुक्त होइत अछि, जेना एकर नामहिसँ स्पष्ट अछि । जतय व्यंजनक संग स्वरोक आवृत्ति होअए ओतय अन्त्यानुप्रास होइत अछि ।[33] आधुनिक मैथिली काव्यमे एकर पूर्ण प्रयोग भेल अछि किन्तु अत्याधुनिक नव कवितामे एकर पूर्णत: अभाव देखना जाइत अछि । बेसी अतुकान्ते रचना दृष्टिगोचर होइत अछि । किन्तु एखनहुँ जे वस्तुत: लब्धप्रतिष्ठ कवि छथि तनिक रचना अन्त्यानुप्राससँ युक्त छन्हिएँ, भलहि किछु फुटकर अतुकान्तो रचना कय अपन उभय कवित्वशक्तिक परिचय देलनि अछि । अन्त्यानुप्रासक किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

1. **भालु ओ प्रचण्ड कीश जाव जाव झट्ट-झट्ट**
राक्षसेन्द्र वीरकाँ पछाड़ि मार पट्ट-पट्ट
शैल खण्ड वृक्ष हाथ सौँ उखाड़ चट्ट-चट्ट
राक्षसेन्द्र-सैन्य-झुण्ड-मुण्ड फोड़ फट्ट-फट्ट ।[34]

2. **मधुर अधर किसलय सम सुन्दर, मृदुल विटप सम बाहु मनोहर ।**
लोभनीय शोभाक निधान, यौवन तनमे कुसुम समान ॥[35]

संस्कृत साहित्यमे एकर अभाव देखल जाइत अछि, किन्तु मैथिली काव्यक हेतु तँ ई सामान्य विषय थिक ।

(ङ) लटानुप्रास—

शब्द एवं अर्थ दुनूक पुनरुक्तिमे तात्पर्यमात्रक भेद रहलासँ लाटानुप्रास होइत अछि ।[36] लाटक अर्थ होइत अछि गुजरात । अत: गुजरातक लोककेँ प्रिय होयबाक कारणेँ एकरा लाटानुप्रास कहल गेल ।[37] आधुनिक मैथिली काव्यमे एकर अत्यल्प प्रयोग देखल जाइत अछि—

हे जीवनक जीवन,
अहीं केर आस
जे मेटाबए त्रास,
अन्यथा जगतीक होएत लोप,
अछि बढ़ल तत दुष्टताक प्रकोप ।[38]

एतय जीवनक जीवन अपन अर्थक संग दोहरायल अछि किन्तु एहिमे कतेक भाव भरल अछि से तँ पाठकगण स्वयं अनुभव करताह ।

2. यमक

सार्थक भेलहुपर भिन्नार्थक स्वर-व्यंजन-समुदायक क्रमश: आवृत्तिकेँ यमक कहल जाइत अछि ।[39] एहिमे शब्दक आवृत्ति कमसँ कम दू बेरि अवश्य होयबाक चाही ।

संस्कृत साहित्यक आचार्य लोकनि यमककेँ छन्दक आदि, मध्य एवं अन्तके ध्यानमे रखैत- आदि यमक, मध्य यमक इत्यादि नाम रखलनि अछि । एतदतिरिक्त एकर प्रथम चरणक आवृत्ति-दोसर, तेसर एवं चारिम चरणमे, दोसर चरणक आवृत्ति-तेसर एवं चारिम चरणमे होइत अछि । एकरा ध्यानमे रखैत एकर एगारह भेद कयल गेल अछि, जे थिक— मुख, संदेश, आवृत्ति, गर्भ, संदष्टक, पुच्छ, पंक्ति, परिवृत्ति, युग्मक, समुद्गमक तथा महायमक । किन्तु हमरा जनैत यमकक दुइये भेद मानव उचित अछि जकर अनेकानेक उदाहारण आधुनिक मैथिली काव्यमे भेटैत अछि । ई थिक अभंगपद यमक एवं सभंगपद यमक ।

एहि अलंकारक प्रयोग आधुनिक मैथिली काव्यक अन्तर्गत कविचूड़ामणि प. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क राधा-विरहमे एवं कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क बाजि उठल मुरलीमे सर्वाधिक भेटैत अछि ।

राधा-विरह महाकाव्यक भूमिकामे तँ प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' लिखैत छथि जे— 'अक्षर-अक्षरमे अनुप्रास, पद-पदमे यमक, वाक्य-वाक्यमे रस टपकैत- सद्भाग्योपचयादयं समुदित: सर्वोगुणानां गण: ।'[40] पुन: एतबहिसँ सन्तोष नहि भेलनि तँ दोसर ठाम लिखैत छथि— 'कोनो पाँती उठाउ, यमकक झमक, उत्प्रेक्षाक चमक एवं ध्वनिक गमक चमकैत

गमकैत ।[41] डा० जयकांत मिश्र तँ हिनका पूर्णत: आलंकारिक मानैत छथि आ ताहूमे यमक ओ वक्रोक्तिक विशेषज्ञ ।[42]

(क) अभंगपद यमक— जतय शब्दकेँ बिनु तोड़ने अर्थ ग्रहण कयल जाय ओतय अभंगपद यमक कहबैत अछि । किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

1. **पंचम-स्वरसँ कोकिल-कदम्ब, पावस-प्रवेशसँ तरु-कदम्ब ।**
चन्दन-वनसँ गिरि-मलय राज, तहिना सुतसँ ओ महाराज ॥[43]

एतय पहिल कदम्बसँ समूह एवं दोसर कदम्बसँ तरुविशेषक बोध होइत अछि । ई अर्थ शब्दकेँ बिनु तोड़ने ग्रहण कयल गेल अछि, अत: अभंगपद यमक भेल ।

2. **सगर सगर-सुत सुतल महानिद्रा-मुद्रित गुनि ।**
जननि, जगाओल मुक्ति-प्रभातक करुण किरण बनि ॥[44]

3. **तोहर पयरेँ शिव छथि धाङल**
पाबय साधक शिव बिन माङल ।[45]

4. **रहितहु दोष दोष हमरा नहि-द' सकता सज्जन ई मानि ।**
दोषाकर बुझितहुँ दोषाकर-केँ चढ़ाऔल शंकर चट चानि ॥[46]

उक्त पद्यमे दोषाकर (दोष+आकर - दोषक समूह) दोषक समूह एवं चन्द्रमाक हेतु प्रयुक्त अछि । तेँ अभंगपद यमक भेल ।

(ख) सभंगपद यमक— जतय शब्दकेँ तोड़ि वा जोड़िकए अर्थ ग्रहण कयल जाय ओतय सभंगपद यमक होइत अछि, यथा—

2. **कानब सुन क्यो कान न, कानन-सन जग रे ।**
जन विच दु:खक असर न, असरण सभ लग रे ॥
बीतय यौवन असगर, सगर रयनि दुख रे ।
अछि नहि शान्तिक लेश, कलेश-मलिन मुख रे ॥
ककरो हृदय कृपा न, कृपान-कुवच कह रे ।
हम धनि विकल अकेलि, अ-केलि समय बह रे ॥
आयल घृतिक नसाओन, साओन दुर्ग्रह रे ।
आह, मुदा मन-भावन, भाव न फल लह रे ॥
हमर एखन नहि सुलगन, लग नहि प्रियतम रे ।
भार लगै अछि जीवन, जीव न अब हम रे ॥[47]

एहन-एहन उदाहरणमे शब्दकेँ कतहु तोड़य पड़ैत छैक तँ कतहु जोड़य पड़ैत छैक । अत: कृत्रिमताक भान होमय लगैत छैक ।

यमक अलंकारक योजनामे प्रसाद गुणक होयब आवश्यक छैक, जे आधुनिक मैथिली काव्यमे सर्वत्र देखल जाइत अछि ।

यमक दोष—

यमक अलंकारक नियमानुसार यमक कोनो पद्यक एक चरण, दू चरण वा चारू चरणमे होयबाक चाही । एकर विपरीत यदि तीन चरणमे यमक देखल जाइत अछि तँ ओकरा अप्रयुक्त दोष कहल जयतैक ।

आधुनिक मैथिली काव्यक अन्तर्गत एहन दोष नहि देखना जाइत अछि । किन्तु विद्यापति एहि दोषसँ वंचित नहि रहि सकलाह । हिनक एकटा प्रसि□ पद्यक अवलोकन करब अप्रासंगिक नहि होयत—

सारंग नयन वयन पुनि सारंग, सारंग तसु समधाने ।
सारंग उपर उगल दस सारंग, केलि करथि मधुपाने ॥[48]

एतय सारंग शब्द मात्र तीने चरणमे प्रयुक्त अछि । अत: अप्रयुक्त दोष भेल ।

3. श्लेष

श्लिष्ट शब्दक द्वारा एकार्थक बोध भेलासँ श्लेष अलंकार होइत अछि ।[49] एहि अलंकारमे अनेकार्थवाची शब्दक प्रयोग कयल जाइत अछि । महाकवि वाणभट्ट तँ अक्लिष्ट श्लेषहिकेँ सुरचनामे योग्य बुझैत छथि ।[50] आचार्य दण्डी श्लेषालंकारकेँ सभ अलंकारक सौन्दर्यप्रदाता मानैत छथि ।[51]

श्लेषालंकारक प्रयोगकर्त्ता विशेषत: संस्कृतेक विद्वान लोकनि छथि । हुनकालोकनिकेँ क्लिष्ट-शिलष्ट शब्दसँ काव्य रचना करबामे विशेष आनन्द अबैत छलनि । संस्कृत साहित्यमे तँ एहन-एहन महाकाव्य सभ लिखल गेल अछि जाहिमे आद्योपान्त श्लेषालंकारयुक्त श्लोक सभ भेटत । अठारह-अठारह सर्गक महाकाव्य आद्योपान्त श्लेषालंकारयुक्ते अछि जाहिमे एक संग तीन-तीनटा कथावस्तु चलैत छैक । एहन काव्यमे प्रसि□ अछि कविराजकृत-'राघवपाण्डवीयम्-', विद्यामाधवकृत-'पार्वती-रुक्मिणीयम्', वेदान्तदेशिकृत-'यादवराघवीयम्', सोमेश्वरकृत- 'राघव-यादव-पांडवीयम्-' इत्यादि । ई काव्य सभ सामान्य पाठकक हेतु ग्राह्य नहि अछि । काव्य तँ जतेक स्पष्ट, मधुर ओ सुलभ रहय से नीक ।

आधुनिक मैथिली काव्यमे श्लेषालंकारक अत्यल्प प्रयोग देखबामे अबैत अछि । किछु संस्कृत परम्पराक अनुसरणकर्त्तालोकनि श्लेषालंकारक प्रयोग कयलनि अछि जाहिमे छथि— कविशेखर बदरीनाथ झा, कविचूड़ामणि 'मधुप', 'सुमन' आदि ।

साहित्यदर्पणकार श्लेषालंकारक आठ भेद कयलनि अछि, जे थिक— वर्णश्लेष, प्रत्ययश्लेष, लिंगश्लेष, प्रकृतिश्लेष, पदश्लेष, विभक्तिश्लेष, वचनश्लेष एवं भाषाश्लेष ।[52]

किन्तु ई सभ भेद ओझरओनिहार अछि, संगहि मैथिली काव्यक प्रकृतिक अनुकूल नहि अछि । मैथिलीक प्रसि□ आलंकारिक प० दामोदर झा एहि अलंकारक मात्र दू भेद मानलनि अछि— अभंगश्लेष एवं सभंगश्लेष ।[53] एकरे आधार मानिकए चलब समुचित बुझना जाइत अछि कारण जे बेसी भेदोपभेद भेलासँ काव्यमे कृत्रिमता आबि जाइत अछि ।

(क) अभंग श्लेष—

अभंग श्लेष ओ थिक जाहिमे शब्दकेँ बिनु तोड़नहि दू वा दूसँ अधिक अर्थ निष्पन्न होअए । किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

1. **किंवा भए ब्रह्मर्षि सुत, साक्षी कर्मक जानु ।**
प्रतिदिन सेवल वारुणी, पतित भेल तेँ भानु ।।[54]

एतय 'वारुणी' श्लिष्ट शब्द थिक जकर अर्थ होइत अछि पश्चिम दिशा एवं मदिरा । एकदिस जँ सूर्यदेव पश्चिम दिशारूपी नायिकासँ सम्पर्क कयलासँ पतित भेलाह तँ दोसर दिस ब्रह्मर्षि सुत भए मदिरा सेवनसँ ।

जेँ कि 'वारुणी' शब्दकेँ बिनु भंग कयनहि अर्थक निष्पादन भेल अछि तेँ अभंग श्लेष भेल । एहिना अन्यान्यो उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

2. **जनिक जनक कश्यप स्वयं, लोकवेदमे ख्यात ।**
से यदि सेवथि वारुणी, तँ की अद्‌भुत बात ?[55]

एतय **कश्यप** एवं **वारुणी** श्लिष्ट शब्द थिक जकरा बिनु तोड़नहि अर्थक निष्पादन होइत अछि ।

3. **जत निर्वाध प्रवेश जलक कण-कण अध्यापक ।**
नर नारी शिशु युवा जीर्ण पल भरिमे स्नातक ।।[56]

(ख) सभंग श्लेष—

जतय भिन्नार्थक प्रतिपादनक हेतु शब्दकेँ तोड़ए पड़ैत छैक ओतय सभंग श्लेष होइत अछि, यथा—

मत्स पताका कामदेव केर मीन पुराने । सजल भूमिकेर सरस सरोवर मीन प्रधाने ।।
मीनाक्षी केर अंग-अंगमे नयन महाने । आर्यभूमिकेर मत्स्य-देश ई केतु समाने ।।[57]

एतय सजल सँ जलयुक्त एवं सजाओल दुनू अर्थ ग्राह्य थिक । जेँ सजल शब्दकेँ तोड़ि कए अर्थ ग्रहण होइत अछि तेँ सभंग श्लेष भेल ।

4. वक्रोक्ति

वक्ताक अन्यार्थक वाक्यक यदि श्रोता, काकु वा श्लेषक द्वारा अन्यार्थक कल्पना कए लेथि तँ ओतय व क्रोक्ति अलंकार होइत अछि ।[58]

वक्रोक्ति दू शब्दक मेलसँ बनल अछि— वक्र एवं उक्ति, जकर अर्थ होइत अछि टेढ़ कथन । एहिमे वक्ता द्वारा भिन्न अभिप्रायसँ कहल वाक्यक श्रोता भिन्न अर्थ ग्रहण कए लैत अछि आ ओ अर्थ वक्ताक अभीष्टसँ सर्वथा भिन्न रहैत अछि ।

आचार्य भामह वक्रोक्तिकेँ अतिशयोक्तिक पर्याय मानैत छथि ।[59] किन्तु आधुनिक आचार्य लोकनि प्रायः सभ दुनूक पृथक् अस्तित्वकेँ स्वीकार करैत छथि । भामहक अनुसार वक्रोक्तिक बिना कोनो अलंकार भइये ने सकैत अछि— 'कोलंकारो नयाविना' तेँ ओ सूक्ष्म आ लेश सन वक्रतारहित अलंकारक अलंकारत्वकेँ नहि स्वीकार कयलनि ।[60]

आचार्य दण्डी काव्यक दू भेद कयलनि— 1. स्वभावोक्ति एवं 2. वक्रोक्ति ।[61] आचार्य भोजराज एकर तीन भेद कयलनि अछि— 1. स्वभावोक्ति, 2. रसोक्ति एवं 3. वक्रोक्ति ।[62] आचार्य कुन्तक तँ वक्रोक्तिकेँ काव्यक प्राणे कहलनि अछि । ओ वक्रोक्तिविहीन काव्यकेँ शवतुल्य मानैत छथि । हुनका अनुसारेँ वक्रोक्तिक छओ भेद भए जाइत अछि— 1. वर्ण-विन्यास-वक्रता, 2. पद-पूर्वा-वक्रता, 3. पद-परा□-वक्रता, 4. वाक्य-वक्रता, 5. प्रकरण-वक्रता एवं 6. प्रबन्ध-वक्रता ।

मैथिलीक प्रसि□ आलंकारिक प० दामोदर झा वक्रोक्तिकेँ शब्दार्थालंकारक अन्तर्गत रखलनि आ एकर मात्र दू भेद कयलनि, जे थिक— 1. काकु-वक्रोक्ति एवं 2. श्लेष-वक्रोक्ति ।[63]

1. काकु वक्रोक्ति- मात्र ध्वनिक परिवर्त्तनसँ काकु वक्रोक्ति अलंकार होइत अछि । ई कण्ठध्वनिक विकारसँ उत्पन्न होइत अछि, यथा—

1. **सुयश कतय नहि सोर, रे रे राक्षस अधम तोँ ।**
धिक धिक वनिता चोर, शूर्पनखा गति हम करब ।।[64]

एतय अंगद रावणक सुयश कहि कण्ठविकार द्वारा ओकर दुर्यशक वर्णन कयलनि अछि ।

2. **रावण चरण धरय चललाह, अंगद देखितहि हँसि उठालाह ।**
कयलह रघुनन्दनसँ वैर, ककर-ककर नहि धरवह पैर ।।[65]

2. **श्लेष वक्रोक्ति**- श्लेषाश्रित वक्रोक्तिकेँ श्लेष वक्रोक्ति कहल जाइत अछि । एकर पुनः दू भेद भए जाइत अछि– (अ) अभंगपद श्लेष वक्रोक्ति एवं (आ) सभंगपद श्लेष वक्रोक्ति ।

(अ) अभंगपद श्लेष वक्रोक्ति– जतय पदकेँ बिनु भंग कयने अर्थ ग्रहण कयल जाय, यथा–

1. **हे सखि भानस सँ अधिक, परसबमे श्रम होय ।**
परसब पीड़ा जान सखि, जकरा परसब होय ॥

उक्त पंक्तिमे (एक सखीक स्वसखीक प्रति उक्ति) परसबसँ वक्ताक अभिप्राय छैक भोजन परसबसँ, किन्तु श्रोता ओकर अर्थ लगबैत अछि प्रसव वेदना ।

एतय परसब शब्दकेँ भंग नहि कयल गेल अछि तेँ अभंगपदश्लेष वक्रोक्ति भेल ।

2. रावणक कथन :

अपनहि हाथ माँथ दश काटल, होम कयल नहि किछु मन त्रास ।
अति प्रसन्न गौरीश देल वर, नव नव शिर भेल मन भेल आस ॥
बाँचल विधिक लेख नहि भालहि, मरण मनुष्य हाथसौँ पाब ।
सकल लोकजित बिस भुज हमरा, विधि अति वृ□ ज्ञान नहि आब ॥

अंगदक उत्तर :

पतिहीना दीना अबला कत करय निराकुल अनल प्रवेश ।
अथवा इन्द्रजाल विज्ञानी काटय अंग दुःख नहि लेश ॥
सुन रावण आब न मुख लज्जा, निजमुख निजगुण वर्णन कयल।
अक्षय कुमार मारि पुर जारल, तनि कपिकाँ किय बाँधि न धयल ॥[66]

(आ) सभंगपद श्लेष वक्रोक्ति–

जखन शिलष्ट पदक खण्डन कय अन्यार्थक कल्पना कयल जाय तँ सभंगपद श्लेष वक्रोक्ति कहबैत अछि, यथा–

हे आली, पी पाबिके लूटल अनुपम चैन ।
की दर से पीपा बिकै हमहुँ चहै छी लेन ॥[67]

उक्त पद्यमे एक सखी दोसर सखीसँ कहैत छथि जे 'पी' अर्थात् स्वामीकेँ पाबिकय अहाँ अनुपम आनन्दक अनुभव कयलहुँ, किन्तु दोसर सखी जबाब दैत छथि जे 'पीपा' अर्थात् वर्त्तन विशेष की दर छैक, हमरो लेबाक अछि ।

एतय पूर्वपदमे पी एवं पाबिके अलग-अलग शब्द भिन्नार्थक प्रतिपादन करैत अछि, जकरा श्रोता भिन्नार्थ ग्रहण करबालेल तोड़ि कय 'पीपा' एवं 'बिके' बना दैत छथि ।

5. पुनरुक्तवदाभास

भिन्न आकारबला शब्दक अर्थमे जतय आपाततः पुनरुक्तिक प्रतीति होअए ओतय पुनरुक्तवदाभास अलंकार कहबैत अछि ।[68]

नामहिसँ आभास होइत अछि जे एहि अलंकारमे पुनरुक्तिक आभासेटा भेटत, वस्तुतः पुनरुक्ति नहि । बाह्यतः देखलापर पुनरुक्ति बुझायत किन्तु गम्भीरतापूर्वक विचारलापर स्पष्ट भए जायत जे एकार्थक बोधक शब्द भिन्नार्थक प्रतिपादनक हेतु प्रयुक्त भेल अछि । आचार्य मम्मटक अनुसारेँ भिन्न आकारक शब्दमे पुनरुक्तिक प्रतीतिकेँ पुनरुक्तवदाभास अलंकार कहल जाइत अछि ।[69]

प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अनुसारेँ यदि प्रथम श्रवणमे अर्थक पुनरुक्ति प्रतीत होअए तँ पुनरुक्तवदाभास अलंकार होइत अछि ।[70] एहि अलंकारक अनेकानेक उदाहरण आधुनिक मैथिली काव्यमे भेटैत अछि । किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक–

1. **हे देव, दयासागर, रमेश, दर्शन दय कयलहुँ दूरि क्लेश ।**
कत तुच्छ हमर तप अणु समान, ओ ई फल कत पर्वत महान ॥[71]

एतय देव, दयासागर एवं रमेश तीनू एके अर्थ भगवान विष्णुक द्योतक थिक, तेँ पुनरुक्ति बुझाइत अछि, किन्तु अर्थबोधक पश्चात् पुनरुक्तिक निराकरण भए जाइत अछि, अर्थात् देव-देवता, दयासागर-दयाक समुद्र एवं रमेश-लक्ष्मीक पति । एहन भगवान विष्णुक दर्शनसँ राजा तुर्वसुक क्लेश दूर भेल ।

2. **घनश्याम, चतुर्भुज, दानवारि, बाहर भीतर तुर्वसु निहारि ।**
कर जोड़ि प्रणाम करैत घूमि, झट काटल तरुसम पड़ल भूमि ॥[72]

3. **सौन्दर्यक निधि, सुषमाक खानि, तेजक आश्रय, प्रतिभाक मानि ।**
अवलम्ब प्रसादक एकमात्र, ओ छल कुमार सुकुमात्र-गात्र ॥[73]

4. **कैल जलधिकेँ रत्नाकर दय जीवन-धारा ।**
भूतलकेँ कयलहुँ स्वर्गहुसँ बढ़ि शुचि-सारा ॥[74]

5. **मन्युक भाव अभाव, परीक्षित अर्थ गर्भिते ।**
कृष्ण पक्ष रहितहु स्वच्छहि दल पार्थ अर्चिते ॥[75]

6. वीप्सा

जतय हर्ष, उल्लास, दुःख, शोक इत्यादिक प्रकटीकरणक हेतु एक शब्दक दू बेरि आवृत्ति होअए ओतय वीप्सालंकार होइत अछि ।[76]

एहि अलंकारक प्रतिष्ठाता हिन्दी साहित्यक सुप्रसि□ आलंकारिक आचार्य भिखारी दास भेलाह । संस्कृत साहित्यमे एकर नामोल्लेखो तक नहि अछि । आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा सेहो एकरा स्वीकार करैत छथि । 'वीप्सायां द्विरुक्तिः'क आधारपर एहिमे एक शब्द केर मात्र दुइये बेरि आवृत्ति होयबाक चाही, किन्तु कतहु-कतहु दूसँ अधिको बेरि शब्दावृत्ति देखल जाइत अछि । अलङ्कार-भास्करकेँ छोड़ि मैथिलीक आलंकारिक लोकनि अपन ग्रंथमे एकर नामोल्लेखो तक नहि कयलनि अछि ।

आचार्य डा० रमाशंकर शुक्ल रसाल एहि अलंकारक चारि भेद कयलनि अछि, जे थिक— 1. संज्ञात्मक, 2. क्रियात्मक, 3. अव्ययात्मक एवं 4. विशेषणगत ।

उदाहरण :

1. संज्ञात्मक वीप्सा : एहिमे संज्ञाक आवृत्ति होइत अछि—

(क) **शिव शिव आब कि रामक आश, लंका छोट हाथ उनचास ।**[77]

(ख) **कठिन विषय विष तिष नहि भेटल, खड़्ग न लग तिष धार ।**
शिव शिव जीव घात बड़ मानल, थिक जीवन संसार ॥[78]

2. क्रियात्मक वीप्सा : एहिमे क्रियाक आवृत्ति होइत अछि ।

क) **जननी वचन कठोर, सुनलनि भरत अनर्थ कहि ।**
धिक-धिक जीवन तोर, कहइत कण्ठ न कटि खसल ॥[79]

ख) **दौड़-दौड़ रे कटलक नाक, सूर्पनखा कानथि दय हाक ॥**[80]

3. अव्ययात्मक वीप्सा : एहिमे अव्ययक आवृत्ति होइत अछि—

राम नामक अतुल विक्रम, केसरी संकास ।
वार वार विलोकि लंका, करय चाहथि नाश ॥[81]

4. विशेषणगत वीप्सा : एहिमे विशेषणक आवृत्ति होइत अछि—

कण्ठ अंगमे लगाव, कौसिकादि सौख्य पाव ।
धन्य धन्य भूप बाल, दुष्ट राक्षसीक काल ॥[82]

7. पुनरुक्तिप्रकाश

पुनरुक्तिप्रकाश ओ अलंकार थिक जाहिमे अर्थकेँ सुन्दर बनयबालेल अनेक बेरि शब्दक आवृत्ति होइत अछि ।

एहि अलंकारकेँ प्रायः संस्कृत ओ मैथिलीक आलंकारिक लोकनि (अलङ्कार-भास्करकेँ छोड़ि) नहि मानैत छथि, किन्तु आधुनिक मैथिली काव्यमे एकर अनेकानेक उदाहरण भेटैत अछि । काव्य-निर्णयकार एकर परिभाषा दैत कहलनि अछि जे वर्णनमे रुचिरता अनबालेल यदि अनेक बेरि शब्दावृत्ति होअए तँ ओतय पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार थिक ।[83] एहि अलंकारमे शब्दावृत्ति दू वा दूसँ अधिक बेरि होइत अछि । किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

1. **फूसि सभटा थीक**
थिक महाजंजाल
फूसि ब्रह्म-विष्णु दस दिक्पाल
फूसि श्रुति-स्मृति
फूसि शास्त्र-पुरान
फूसि व्रत-उपवास
फूसि थिक राजा सभक इतिहास ।[84]

2. **सत्य की, त---**
सत्य थिक ई माटि
सत्य थिक ई पानि
सत्य थिक संसार
सत्य धरती, सत्य थिक आकाश[85]

8. भाषासम

जतय एकहि प्रकारक शब्दसँ अनेक भाषामे वैह वाक्य रहय, ओतय भाषासम अलंकार होइत अछि ।[86] प० दामोदर झा[87] एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[88] सेहो एकरा स्वीकार करैत छथि ।

आधुनिक मैथिली काव्यमे एहि अलंकारक सर्वाधिक प्रयोग कयनिहार छथि कवीश्वर चन्दा झा । किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

1. **जय जय राम नवल घनश्याम । सकल लोक लोचन अभिराम ॥**[89]

2. **स्वर्ण वर्ण मुख लाल, महा फणीन्द्राकार भुज ।**
महा नगेन्द्र विशाल, प्राप्त महेन्द्राचल उपर ॥[90]

3. **बालि कहल हम कहल वहल, अनुचित अज्ञाने ।**
क्षमा करिय क्षितिभार-हरण कारक भगवाने ॥
तीर्थमूल करतीर विहत, ई त्याग शरीरे ।
निरखि निरखि नव नीरदाभ, अभयद रघुवीरे ॥[91]

आधुनिक मैथिली काव्यमे शब्दालंकारक प्रचुर प्रयोग भेल अछि । किछु शब्दाडम्बरी कविलोकनि तँ पन्नाक पन्ना एकहि शब्दक वा वर्णक प्रयोग करैत रहि जाइत छथि आ अपन अभिप्रेत अर्थहुकेँ नहि बिसरैत छथि । एहन कवि लोकनिकमे प्रमुख छथि— कवीश्वर चन्दा झा, प० सीताराम झा, कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप', प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' आदि । प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' तँ मधुपजीक प्रसंग हिनक राधा-विरह महाकाव्यक भूमिकामे लिखैत छथि जे— ''कोनो पाँती उठाउ- यमकक झमक, उत्प्रेक्षाक चमक एवं ध्वनिक गमक चमकैत-गमकैत ।[92] मधुपजीक झांकारमे सेहो यत्र-तत्र-सर्वत्र शब्दाडम्बर दृष्टिगोचर होइत अछि ।

संदर्भ :

1. वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
   जगतः पितरौ वन्दे पार्वती-परमेश्वरौ ॥ —रघुवंश, 1-1
2. शब्दार्थौ सत्कविरिव द्वयं विद्वानपेक्षते ॥ —माघ
3. वर्णसाम्यमनुप्रासः —काव्यप्रकाश, 9-2
4. अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत् । —साहित्य-दर्पण
5. व्यंजन समतासँ होअए अनुप्रास से पाँच ।
   छेक वृत्ति श्रुति लाट पुनि अन्य नामसँ बाँच ॥ —अलंकार-कमलाकर, पृ. 2
6. अनुप्रास विषमहु स्वरहु सम व्यंजन संधान । —अलंकार-मालिका, सू. 200
7. छेको व्यंजनसंघस्य सकृत्साम्यमनेकधा । —साहित्य-दर्पण, 10-3
8. पृथक् युग्म व्यंजन-ततिक बहुधा छेक प्रवृत्ति । —अलंकार-मालिका, सू० 201
9. कविचूड़ामणि 'मधुप' : राधा-विरह, 1-13
10. वैह, 1-10
11. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अर्चना, पृ. 21
12. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 3-17
13. व्यंजन एक अनेक वा तहिना सदृश रहैछ ।
    अक्रम वा सक्रम रहए ..... । —प० दामोदर झा : अलंकार-कमलाकर, पृ. 2

14. रस अनुवृत्तहिँ रूप-क्रम वृत्ति अनेक प्रकार । —'सुमन' : अलंकार-मालिका, सू० 202
15. 'यात्री' : चित्रा, पृ. 23
16. 'मधुप' : झांकार, पृ. 67
17. 'मधुप' : राधा-विरह, 1-17
18. वैह
19. 'मधुप' : झांकार, पृ. 10
20. तत्रैव, पृ. 67
21. डा० सुधाकर झा 'शास्त्री' : मुद्रा-राक्षस, पृ. 65
22. सरसकवि ईशनाथ झा : शकुन्तला नाटक, 3-21
23. कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' : बाजि उठल मुरली, पृ. 13
24. वैह, पृ. 32
25. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, पृ. 195
26. वैह, पृ. 172
27. उच्चार्यत्वाद्यदेकत्र स्थाने तालुरदारिके ।
    सादृश्यं व्यंजनस्यैव श्रुत्यनुप्रास उच्यते ॥ —साहित्य-दर्पण, 10-5
28. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, पृ. 196
29. श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' : कथा-यूथिका, पृ. 60
30. मुन्शी रघुनन्दन दास : सुभद्रा-हरण, तृतीय सर्ग, पृ. 30
31. दीनानाथ पाठक 'बंधु' : चाणक्य, तृतीय सर्ग, पृ. 23
32. एष च सहृदयानामतीव श्रुतिसुखावहत्वाच्छ्रुत्यनुप्रासः । —साहित्यदर्पण, पृ. 276
33. व्यंजनं चेद् यथावस्थं साहाय्येन स्वरेण तु ।
    आवर्त्यतेन्त्ययोज्यत्वादन्त्यानुप्रास एव तत् । —साहित्यदर्पण, 10-6
34. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, लंकाकाण्ड, पृ. 319
35. सरसकवि ईशनाथ झा : शकुन्तला नाटक, 1-14
36. शब्दार्थयोः पौनरुक्त्यं भेदे तात्पर्यमात्रतः । —साहित्यदर्पण, 10-6क बाद
37. लाटजन-वल्लभत्वाच्च लाटानुप्रासः । —काव्यप्रकाश, 9-81 वृत्ति
38. डा० श्रीकृष्ण मिश्र : मेरुप्रभा, पृ. 5
39. सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यंजनसंहतेः ।
    क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते ॥ —साहित्यदर्पण, 10-8
40. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : राधा-विरहक भूमिका, पृ. ई

41. वैह, पृ. घ

42. Madhup's weakness is an excessive ornamentation, at times there is a monotonous use of figures of speech, particularly 'Yamaka' and 'Vakrokti'.
–History of Maithili Literature, Vol. I, p. 298

43. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली–परिणय, 1–82

44. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अर्चना, पृ. 13

45. कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' : बाजि उठल मुरली, पृ. 147

46. कविचूड़ामणि 'मधुप' : राधा–विरह, 1–5

47. कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' : बाजि उठल मुरली, पृ. 112

48. विद्यापति

49. शिलष्टैः पदरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते । —साहित्य–दर्पण, 10–11

50. श्लेषोक्लिष्टः । —हर्षचरितम्, प्रथम उच्छ्वास, श्लोक–8

51. श्लेषः पुष्णाति सर्वासु प्रायो वक्रोक्तिश्रियम् । —दण्डी, काव्यादर्श

52. वर्ण प्रत्यय लिंगानां प्रकृत्योः पदयोरपि ।
श्लेषाद्विभक्तिवचनभाषाणामष्टधा च सः ।। —साहित्य दर्पण, 10–11

53. दुइ अर्थक शब्दे जतए अर्थ अनेक लसैछ ।
बुध मण्डल सँ श्लेष ई अलंकार कहबैछ ।।
तकर संभंग अभंग ई भेद युगल कहि जाए ।
बिनु तोड़ल शब्दे पहिल तोड़ल अन्य कहाए ।। —अलंकार–कमलाकर, पृ. 6

54. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली–परिणय, 2–3

55. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली–परिणय, 2–4

56. श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अर्चना, पृ. 21

57. श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' : उत्तरा, पृ. 12

58. अन्यस्यान्यार्थकं वाक्यमन्यथा योजयेद्यदि ।
अन्यः श्लेषेण काक्वा वा सा वक्रोक्तिस्ततो द्विधा ।। —साहित्य दर्पण, 10–9

59. वक्रोक्तिजीवितम् : सम्पादक– डा० नगेन्द्र, पृ. 3

60. काव्यालंकार, 2–86

61. भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिवक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयम् । —काव्यादर्श, 2–263

62. वक्रोक्तिश्च रसोक्तिश्च स्वभावोक्तिश्चेति वाङ्मयम् ।
सर्वासु ग्राहिणी तासु रसोक्तिं प्रतिजानते ।।
—सरस्वती कण्ठाभरणम्, 5–8

63. आनक बातक आन जे आन अर्थ कए लैछ ।
तकरे पुनि उत्तर जहाँ तहँ वक्रोक्ति रहैछ ।।
श्लेष काकुकेँ हेतुसँ दुइ प्रकार ई ह्वैछ ।
कइ अर्थक शब्देँ पहिल दोसर स्वरेँ लसैछ ।। —अलंकार–कमलाकर, पृ. 9

64. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, लंकाकाण्ड– पृ. 216–17

65. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : लंकाकाण्ड, पृ. 220

66. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण – लंकाकाण्ड, पृ. 218–19

67. अलंकार–दर्पण : सीताराम झा

68. आपाततो यदर्थस्य पौनरुक्त्यावभासनम् ।
पुनरुक्तवदाभासः स भिन्नाकारशब्दगः ।। साहित्य–दर्पण, 10–2

69. पुनरुक्तवदाभासो भिन्नाकारशब्दगः । —काव्यप्रकाश

70. प्रथम श्रवणमे अर्थकेर पुनरुक्तिक आभास । —अलंकार–मालिका, सूत्र– 199

71. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली–परिणय, 1–40

72. वैह, 1–38

73. वैह, 1–76

74. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अर्चना, पृ. 12

75. ऐजन : उत्तरा, पृ. 12

76. एक शब्द बहु बार जहँ, हर्षादिकतेँ होइ ।
ता कहँ वीप्सा कहत हैं कवि कोविद सब कोइ ।। —काव्य–निर्णय, पृ. 201

77. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड– पृ. 168

78. वैह, पृ. 172

79. वैह, अयोध्याकाण्ड, पृ. 90

80. वैह, अरण्यकाण्ड, पृ. 116

81. वैह, लंकाकाण्ड, पृ. 207

82. वैह, बालकाण्ड, पृ. 20

83. एक शब्द बहुबार जहँ, परै रुचिरता अर्थ ।
पुनरुक्तीप्रकाश गुन, वरनै बु[illegible] समर्थ ।। —काव्य–निर्णय, पृ. 195

84. श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' : चित्रा, पृ. 80

85. ऐजन, चित्रा, पृ. 80

86. शब्दैरेकविधैरेव भाषास्तु विविधास्वपि ।
वाक्यं यत्र भवेत्सोयं भाषासम इतीष्यते ।। —साहित्यदर्पण, 10–10

87. एक प्रकारक शब्दसँ नाना भाषा रूप ।
वाक्य बनय जँ सएह अछि भाषासमक स्वरूप ।।
—पं. सीताराम झा : अलंकार-दर्पण, पृ. 9

88. भाषासम पद वाक्य जत, भाषा भिन्न, समान । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 208

89. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड, पृ. 163

90. वैह, किष्किन्धाकाण्ड- पृ. 162

91. वैह, पृ. 142

92. राधा-विरह : भूमिका, प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'

तृतीय अध्याय

साधर्म्यमूलक अलंकार

1. उपमा

उपमा सादृश्यमूलक भेदाभेदप्रधान अलंकारमे प्रथम परिगण्य थिक ।[1] कवि जखन अपन कथनकेँ अधिक प्रभावकारी बनाकय उपस्थित करय चाहैत छथि तँ हुनका अन्य वस्तुक संग ओकर समता देखाबय पड़ैत छनि ।[2]

वस्तुतः उपमालंकारमे दू भिन्न स्तरीय वस्तुकेँ एक स्नेह सूत्रमे गाँथल जाइत अछि ।

उपमा समस्त अर्थालंकारक मूल थिक । एकर सम्यक् ज्ञान भए गेलापर समस्त अर्थालंकारकेँ बुझब सुगम भए जाइत अछि । चित्रमीमांसाकार उपमा-नर्तकीकेँ 22 रूपमे देखओलनि अछि ।[3] आचार्य वामन प्रतिवस्तूपमा प्रभृति 30 अलंकारकेँ उपमा-प्रपंच मानैत छथि ।[4] अभिनवगुप्त तँ समस्त अलंकारकेँ उपमाप्रपंच मानि लेलनि ।[5] आचार्य रुद्रटक अनुसार विषयक प्रतिपादनक हेतु उपमाक बहुत महत्त्व देल गेल अछि ।[6]

मैथिली साहित्यमे आदिकालहिसँ अद्यपर्यन्त उपमालंकारक प्रचुर प्रयोग भेटैत अछि । हमरा लोकनिक आद्य उपलब्ध ग्रंथ कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरक भूमिका लिखबाक क्रममे डा० सुनीति कुमार चटर्जी सेहो एहिमे प्रयुक्त उपमालंकारक अलंकारत्वकेँ स्वीकार कयलनि अछि ।[7] आधुनिक मैथिली काव्यमे सेहो उपमालंकारक बाहुल्य भेटैत अछि । एकर वर्गीकरणक प्रयास निरुक्तकार यास्कसँ आइ धरि सभ आचार्य लोकनि करैत रहलाह अछि । किछु आचार्यक उपमा प्रभेद द्रष्टव्य थिक ।

आचार्य दण्डी उपमाक बत्तीस भेद कयलनि अछि, जे थिक—

1. धर्मोपमा, 2. वस्तूपमा, 3. विपर्यासोपमा, 4. अन्योन्योपमा, 5. नियमोपमा,

6. अनियमोपमा, 7. समुच्चयोपमा, 8. अतिशयोपमा, 9. उत्प्रेक्षितोपमा, 10. अद्भुतोपमा, 11. मोहोपमा, 12. संशयोपमा, 13. निर्णयोपमा, 14. श्लेषोपमा, 15. समानोपमा, 16. निन्दोपमा, 17. प्रशंसोपमा, 18. अचिख्यासोपमा, 19. विरोधोपमा, 20. प्रतिषेधोपमा, 21. चाटूपमा, 22. तत्वाख्यानोपमा, 23. असाधारणोपमा, 24. अभूतोपमा, 25. असम्भावितोपमा, 26. बहूपमा, 27. विक्रियोपमा, 28. मालोपमा, 29. वाक्योपमा, 30. प्रतिवस्तूपमा, 31. तुल्ययोगितोपमा एवं 32. हेतूपमा ।[8]

अप्पय दीक्षित चित्रमीमांसामे तीन प्रकारक उपमाक उल्लेख कयलनि अछि, जे थिक– 1. स्ववैचित्र्यमात्र-विश्रान्ता, 2. उक्तार्थोपपादनपरा एवं 3. व्यंग्यप्रधाना ।[9]

उपमालंकारमे चारिटा तत्त्व मानल गेल अछि– उपमेय, उपमान, वाचक एवं साधर्म्य ।[10] पण्डितराज जगन्नाथ तँ धर्मक वाच्यता, लक्ष्यता एवं व्यंग्यताक आधारपर सेहो तीन भेद कयने छथि– 1. वाच्यधर्मोपमा, 2. लक्ष्यधर्मोपमा एवं 3. व्यंग्यधर्मोपमा ।

उपमाक चारि तत्त्वक आधारपर सेहो एकर वर्गीकरण कयल गेल अछि । ई वर्गीकरण मैथिलीक आलंकारिक द्वारा सेहो मान्य अछि । जतय उपमाक चारू तत्त्व-उपमेय, उपमान, वाचक एवं साधर्म्य विद्यमान होअए ओतय पूर्णोपमा कहबैत अछि ।[11] जतय चारूमेसँ एकोटाक शब्दतः कथन नहि रहैत अछि ओतय लुप्तोपमा होइत अछि ।[12]

(क) पूर्णोपमा :

1. **होएत शम्भु सन ओ उदार, विद्याक प्रजापति-सम अगार ।**
   सुरगुरुकाँ बु्□क बलेँ जीति, शुक्रहुकेँ देत सिखाए नीति ।।[13]

एतय प्रथम चरणमे– शम्भु-उपमान, सन-वाचक, ओ (एकवीर)- उपमेय एवं उदार-साधर्म्य थिक, तेँ पूर्णोपमा भेल ।

2. **इन्द्रक सन पाबि महाविभूति, कए रहत जगतमे एक जूति ।**
   हैहय क्षत्रिय वंशक निदान, होएत भानु सम भासमान ।।[14]

3. **धूमकेतु सम स्वयं समुज्ज्वल द्योतित गगन समान ।**
   उतरि रहल अछि के ई नभसँ भासुर-प्रबल-प्रचण्ड ।[15]

4. **मधुर अधर किसलय सम सुन्दर, मृदुल विटप सम बाहु मनोहर ।**
   लोभनीय शोभाक निधान, यौवन तनमे कुसुम समान ।।[16]

(ख) लुप्तोमपा :

(अ) एकलुप्ता–

1. उपमेय लुप्ता–

1. **सत्य-स्नेह हित प्राण दैत राजा दशरथ सम ।**
   युग-युगमे जे लोकक सभटा पाप-निवारक ।।[17]

2. **शशि समान आह्लादक पुनि दाहक पावन सम ।**
   कमल सदृश कोमल विकसित अछि गिरक श्रृंग सम ।।[18]

एतय उपमेय (स्तन)क कथन नहि अछि आओर उपमाक तीनू तत्त्व विद्यमान अछि, तेँ उपमेयलुप्ता उपमा भेल ।

एतय पूर्वा□मे विरोधाभास एवं सम्पूर्णमे भिन्नधर्मा उपमेय लुप्ता मालोपमा सेहो द्रष्टव्य थिक ।

2. वाचक लुप्ता–

वचन-अमृत दूतीक पिबि, सहचर-मदन-समेत ।
चललि मुदित अभिसारिका, प्रिय-संकेत-निकेत ।।[19]

3. उपमान लुप्ता–

ककर कान्तिसँ जगमग अन्तःपुर अछि सगरो ।
तुलनामे ललना न एक जत गामो-नगरो ।।[20]

4. धर्मलुप्ता–

1. **कन्या रमा समा मिथिलेश । तपबल पाओल तिरहुति देश ।।[21]**

2. **गरजल गरुड़ जकाँ नभ जाय, स्तम्भ महागोट हाथ उठाय ।[22]**

(आ) द्विलुप्ता–

1. वाचक-धर्म लुप्ता–

नव-नागरि प्रिय-दोष लखि, सखी-वचन दए कान ।
महि सम्मुख मुख-कमल कए, तानल भौँह-कमान ।।[23]

2. धर्मोपमान लुप्ता–

अहँकाँ सतत रहय कल्याण । अहँक समान सूझ नहि आन ।।[24]

3. धर्मोपमेय लुप्ता—

छल छथि अतिबल प्रबल प्रताप, रावण सम जनिका छथि बाप ।
मेघनाद सन जनिका भाय, बानर हाथ मरण अन्याय ॥[25]

4. वाचकोपमान लुप्ता—

1. **केअओ जन भोजन-सामग्री, ततए न गनि सकलाह ।**
एकओ गोट प्रकार जाहिमे, छल नहि पुनि अधलाह ॥[26]

2. **आँखि-लाल भुज-विशाल उन्नत-भाल ठोर-लाल**
दाँत-फार नाक-ताड़ परशुराम हाथ खाड़ ।[27]

(इ) त्रिलुप्ता—

1. वाचक-धर्मोपमान लुप्ता—

1. **मानस धर्मे पुत्री भाव, उपमा हिनक आन के पाव ।**[28]

2. **ककर रूप-गुन नयन श्रवण-सर्वस्व मनोरम ।**
सुषमा सरिता, लता बनलि लावण्यक अनुपम ॥[29]

3. **वैजयन्त सन राज-भवन कत, कत आश्रम तृण-पर्ण-कुटीर ।**
सुर दुर्लभ कौशेय वसन कत, कत कौपीन मृगाजिन चीर ।[30]

प्रथम चरणमे धर्मलुप्ता एवं दोसर चरणमे धर्मोपमानवाचकलुप्ता द्रष्टव्य थिक ।

4. **स्पर्धा वस्तु न आन आन परिहासहुँ मनमे,**
केवल निज उपमेय गेय तेँ ओ त्रिभुवनमे ॥[31]

2. वाचक धर्मोपमेयलुप्ता—

वेद न पावथि कहियत पार, जनिकर सिरजल थिक संसार ।[32]

एहि अलंकारकेँ किछु आलंकारिक लोकनि रूपकातिशयोक्ति सेहो मानि लैत छथि, किन्तु गम्भीरतापूर्वक विचार कयलापर दुनूक अन्तर स्पष्ट भए जाइत अछि । सुमतिकृत तुलसीभूषणमे रूपकातिशयोक्ति एवं वाचक-धर्मोपमेयलुप्ता उपमामे अन्तर देखबैत कहल गेल अछि जे रूपकातिशयोक्तिमे कोनो रूपात्मक रचना द्वारा उपमानक वर्णन होइत अछि आ एहिमे रूपात्मिका रचना नहि रहैत अछि ।[33]

आधुनिक मैथिली काव्यमे सर्वाधिक उदाहरण पूर्णोपमाक एवं एकलुप्तोपमाक भेटैत अछि जे प्रायः सर्वग्राही होइत आछि । एहि अलंकारक सर्वाधिक प्रयोगकर्त्ता छथि

कवीश्वर चन्दा झा, कविशेखर बदरीनाथ झा, प० सीताराम झा, मुन्शी रघुनन्दन दास आदि । आधुनिक मैथिली काव्यमे द्विलुप्ता एवं त्रिलुप्ता उपमाक उदाहरण अत्यन्त विरल देखबामे अबैत अछि । एहन अलंकारक प्रयोजन सायास बुझना जाइत अछि ।

उपमादोष—

आचार्य भामह कोनो प्राचीन आचार्य मेधावी द्वारा वर्णित निम्नलिखित सात प्रकारक उपमादोषक वर्णन कयलनि अछि—

1. हीनता- उपमेयसँ न्यूनगुणवला उपमान ।
2. असम्भव- सादृश्यक असम्भवता ।
3. लिंग-भेद- उपमेय एवं उपमानमे लिंग-भिन्नता ।
4. वचन-भेद- उपमेय एवं उपमानमे वचन-भिन्नता ।
5. विपर्यय- उपमेय एवं उपमानक गुणमे बहुत न्यूनता व अधिकता ।
6. उपमानक आधिक्य- उपमेयसँ अधिक गुणवला उपमान ।
7. उपमानक असादृश्य- उपमेय एवं उपमानमे विसदृशता ।[34]

आचार्य भामहक पश्चात् पण्डितराज जगन्नाथ सेहो अनेक उपमादोषक विवेचन कयलनि अछि, किन्तु हुनक दोष भामह-वर्णित दोषसँ पूर्णतः भिन्न अछि ।[35]

आधुनिक मैथिली काव्यमे किछु उपमादोष द्रष्टव्य थिक—

1. हीनता—

कएलन्हि भूतल विमल विधु, सुधाधारसँ धोए ।
शुचि-शासनसँ नीति-रत, जनि नव राजा होए ॥[36]

एतय पूर्वा□मे उपमेय वाक्य थिक जकर तुलनामे उत्तरा□ उपमान वाक्य न्यून गुणवला अछि ।

2. असम्भव—

1. **झपटि झपटि बानरकेँ खाथि । गिरि सपक्ष सन सत्वर जाथि ॥**[37]

एतय सपक्ष गिरिसँ तुलना करब असम्भव कल्पना थिक ।

2. **जाइत सैन्य असुरपुर रोसक लेल ।**
जंगम-कानन-सम ओ लक्षित भेल ।[38क]

3. लिंगभेद—

सहस सूर सन सुछवि प्रकाश । कुटिल अलक सुमुकुट भल भास ।।[38ख]

एतय सूर (सूर्य) पुलिंग प्रयोग थिक आ सुछवि स्त्रीलिंग, तेँ लिंगभेद भेल ।

4. वचनभेद—

चारि वर्ष वयसक एक गोटि । कोटि रती उपमा हो छोटि ।।[39]

एतय चारि वर्ष एक बालिकाक हेतु कोटि रतिकेँ उपमान बनाओल गेल अछि तेँ वचनभेद भेल ।

5. विपर्यय—

नृप-आज्ञाकाँ पबितहि वीर वयस्य । धनुर्मुक्त-सायक सम वेग-प्रशस्य ।।[40]

एतय वीर सैनिकक गतिक तुलना धनुर्मुक्त सायकक संग करबामे हीन विपर्यय अछि ।

6. उपमानक आधिक्य—

अति भयकारक कपिदल जान । कुम्भकर्ण थिक काल समान ।।[41]

एतय कुम्भकर्णकेँ कालसमान कहब उपमानाधिक्य वर्णन थिक ।

7. असादृश्यता—

दिन दिन दोगुन शिशुक बढ़ल पुन, शशिमण्डल सन देह ।
परिजन पुरजन बन्धुवर्गसँ, परिचय प्रचुर सिनेह ।।[42]

शिशुक वृ□ ओ चन्द्रमाक वृ□मे असादृश्य अछि ।

दोष देखयबा लेल जाहि कष्टप्राप्य उदाहरणकेँ प्रस्तुत कयल गेल अछि से दोष नहि कहल जाय सकैत अछि कारण जे ओ ने तँ चमत्कारक अपकर्षक अछि आ ने विद्वानक उद्वेगजनक ।[43]

2. उपमेयोपमा

जतय उपमेय एवं उपमान परस्पर एक दोसराक उपमेय एवं उपमान बनि जाइत अछि ओतय उपमेयोपमालंकार कहबैत अछि ।[44] ई परिभाषा भामहक परिभाषाक संक्षिप्त रूप थिक ।[45] दण्डी, मम्मट, जयदेव, विद्यानाथ एवं विश्वनाथ आदि आलंकारिक लोकनि सेहो एकर परिभाषा दैत प्रायः एहने शब्दावलीक प्रयोग कयलनि अछि, किन्तु बादमे आलंकारिक[46] लोकनि एकटा शब्द— सदृश-व्यवच्छेदक—सेहो आवश्यक मानलनि ।

अर्थात् एहन वर्णन होअए जाहिसँ ई बात हो जे एहन कोनो दोसर पदार्थ अछिए ने । दण्डी, रुद्रट एवं भोज एकरा उपमालंकारेक अन्तर्गत राखिकय एकर नाम क्रमशः अन्यन्योपमा[47] एवं उपमेयोपमा[48] देलनि ।

पं० सीताराम झा उपमेयोपमाकेँ उपमेक अन्तर्गत मानैत छथि ।[49] प० दामोदर झा उपमेय एवं उपमानकेँ परस्पर एक दोसरक उपमेय एवं उपमान होयबामे उपमेयोपमालंकार मानैत छथि ।[50] एहिमे तेसर उपमानक निषेध रहैत अछि ।

उपमेयोपमामे कविक मानसिक स्थिति एहन भए जाइत अछि जे ओ उपमेय एवं उपमानक अतिरिक्त अन्यकेँ अपन भावक आधारे नहि बना पबैत छथि । ओ उपमेय एवं उपमानमे एहि तरहक समता देखैत छथि जे उपमेयकेँ देखि हुनक मनःतृप्ति भए जाइत छनि आ ओकरे उपमान मानि लैत छथि ।

उदहारण—

1. **अहँक प्रभो, अछि श्री सम बु□ । बु□ सदृश पुनि थीक समृ□ ।।**[51]

2. **अहँक वदन सम चान चान सन अहँक वदन पुनि ।**
कुच-युग पद्म समान पद्म अछि कुच-युग सम पुनि ।।[52]

3. रशनोपमा

जतय उत्तरोत्तर उपमेय उपमान बनैत जाय ओतय रशनोपमा अलंकार होइत अछि ।[53] एहि अलंकारमे अनेक वस्तु उपमेय उपमानक रूपमे परस्पर एकटा शृंखला बना लैत अछि । पं० सीताराम झा एकर उल्लेख नहि कयलनि अछि किन्तु प० दामोदर झा[54] एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[55] एकर स्वतंत्र अस्तित्वकेँ स्वीकार कयलनि अछि ।

आधुनिक मैथिली काव्यमे एहि अलंकारक अत्यल्प प्रयोग भेल अछि ।

उदाहरण—

1. **जानय सभ जन भनय पुनि आगम-निगम-पुराण ।**
जन्मभूमि-जननी-गिरा-सुरपुर-सुधा समान ।।
सुरपुर-सुधा समान जनक जनपद-जनवाणी ।
छथि बुझैत तत्त्वज्ञ सकल भाषा-विज्ञानी ।।[56]

2. **भविष्य वर्त्तमान थिक, वर्त्तमाने थिक अतीत ।**
एक सभ, नाम मात्र-भेदक होअए प्रतीत ।।[57]

4. **मालोपमा**

जतय एक उपमानक बदलामे कतोक उपमान रहय ओतय मालोपमा अलंकार होइत अछि ।[58] मालोपमाक अर्थ होइत अछि मालारूप उपमा । जखन एक उपमेयक अनेक उपमानक संग सादृश्य देखाओल जाइत अछि तँ मालोपमा अलंकार होइत अछि । प्राय: सभ मैथिलीक आलंकारिक, यथा— प० सीताराम झा,[59] प० दामोदर झा,[60] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[61] आदि एकर पृथक् अस्तित्वकेँ मानैत छथि ।

ई उपमाक माला तीन प्रकारक होइत अछि— 1. समानधर्मा, 2. भिन्नधर्मा एवं 3. लुप्तधर्मा ।

1. **समानधर्मा**— जतय बहुतो उपमानक एकहि साधारण धर्म रहय—

1. **होए जे पुनि**
क्षमासारा
रत्नगर्भा
हरितवसना
इन्द्रकेर अमरावती सन
राघवक जन्मस्थली सन
जनक केर मिथिलापुरी सन
दिव्य ई धरणी ।[62]

एतय धरणीक तीनटा उपमान अछि— इन्द्रक अमरावती, राघवक जन्मस्थली एवं जनकक मिथिलापुरी । सभक समान धर्म एके थिक— दिव्यता ।

2. **कीचक भीमक भेल द्वन्द, अति घोर,**
वासव वृत्र, सुन्द-उपसुन्द समान
आखण्डल-वैरोचन, तारक-स्कन्ध
पद्मनाभ-कैटभ हर-अन्धक तुल्य ।[63]

2. **भिन्नधर्मा**— जतय बहुतो उपमानक भिन्न-भिन्न साधारण धर्म होअए—

1. **रवि सम दीप्त अनल सम दाहक पवि सम कठिन कठोर**
कोनो गूढ़तम भावमग्न चिन्तासँ आत्मविभोर ।[64]

2. **बेलक सदृश कठोर, सरस पुनि सन्तोला सम ।**
अहँक पयोधर-युगल पुष्ट अछि पूर्ण कलश सम ।।[65]

3. **लुप्तधर्मा**— जतय अनेक उपमानक साधारण धर्मक स्पष्ट कथन हो—

पंचम-स्वरसँ कोकिल-कदम्ब । पावस-प्रवेशसँ तरु-कदम्ब ।
चन्दन-वनसँ गिरि-मलय राज । तहिना सुतसँ ओ महाराज ।।[66]

5. **अनन्वय**

एकहि वस्तुकेँ उपमेय एवं उपमान बनायब अनन्वय अलंकार थिक ।[67] एही तरहक परिभाषा रुय्यक[68], जयदेव[69], विश्वनाथ[70], आदि देने छथि । किन्तु भामह[71], उद्भट[72], पण्डितराज जगन्नाथ[73] आदि एकर संग-संग 'असादृश विवक्षा' अथवा 'उपमानान्तरण्यवच्छेद'केँ सेहो आवश्यक मानैत छथि ।

अनन्वय एक विलक्षण अलंकार थिक । एहिमे कवि उपमेयक सदृश उपमान ताकि निराश भए जाइत छथि तेँ उपमेयकेँ उपमान बना दैत छथि । संगहि उपमानान्तरक व्यवच्छेद कए दैत छथि । एकर प्रयोग सामान्यत: देवी-देवताक अलौकिक अप्रतिम रूप-सौन्दर्यक वर्णनमे होइत अछि । एतबे नहि, कोनो विशिष्ट व्यक्ति, वस्तु इत्यादिक सेहो वर्णन होइत अछि, ओकरा अद्वितीय सि□ करबा लेल ।

अनन्वय शब्दक व्युत्पत्ति होइछ— 'न अन्वेति इति अनन्वय:' । अर्थात् जकर सम्बन्ध ककरो संग नहि रहैत अछि, अनन्वय कहबैत अछि ।

प० सीताराम झा अनन्वयकेँ उपमालंकारेक अन्तर्गत रखैत एकरा अनन्वयोपमा कहैत छथि ।[74] एतबे नहि, ई तँ एकर अतिरिक्त मालोपमा, उपमेयोपमा, प्रतीपोपमा आदिहुकेँ उपमेक अन्तर्गत मानैत छथि ।[75] प० दामोदर झाक अनुसार यदि अन्य उपमानक निषेध कय उपमेयकेँ उपमान बनाबी तँ अनन्वय अलंकार होइत अछि ।[76]

उदाहरण—

1. **मण्डन-प्रिया-मण्डिता मिथिला-सन दोसर नहि हो अनुमान**
शंकर सन शंकरे तथा भारती सदृश नहि विदुषी आन ।।[77]

कवि स्वयं कहि रहल छथि जे मिथिलाक विदुषी भारतीक समक्ष अनन्वय अलंकार चरितार्थ भेल—

2. **स्वयं शंकराचार्य जतय भारती संग कयलनि शास्त्रार्थ**
भेल अनन्वय उपमालंकारो जनिका लगमे चरितार्थ ।[78]

3. **राम दशानन सम संग्राम । राम दशानन उपमा ठाम ।।**[79]

4. **मैथिलीक रससि□ कवि, सुमन नाम अन्वर्थ ।**
अपना सन अपनहि थिका, उपमा ताकब व्यर्थ ।।[80]

5. **आकाश आकाशहिक सदृश, तारा तारे सन ।**
सीतारामक युगल मूर्त्ति, सीतेरामहि सन ।।[81]

6. स्मरण

जतय सदृश वस्तुक स्मरणसँ अन्यवस्तुक स्मरण होअए ओतय स्मरण अलंकार होइत अछि ।[82] एहि अलंकारक स्थापक रुद्रट[83] छथि, संगहि अनेक आचार्य; यथा— मम्मट[84], शोभाकर[85], विश्वनाथ[86], विद्याधर[87], एवं विद्यानाथ[88] आदि । शब्दान्तरे हिनके परिभाषापर स्थिर होइत छथि । विश्वनाथ राघवानन्द महापात्रक[89] विचारक अनुमोदन करैत विरु□ वस्तुक अनुभवसँ उत्पन्न स्मरणकेँ सेहो स्मरणालंकार मानैत छथि ।

स्मरण अलंकारमे दू वस्तुक सादृश्य वा वैसादृश्यक वर्णन रहैत अछि । अधिकांश स्थितिमे उपमेयकेँ देखिकय उपमानक स्मरण होइत अछि, किन्तु एहनो स्थिति अबैत अछि जतय उपमानकेँ देखिकय उपमेयक स्मरण होइत अछि । स्मरणालंकारक परिप्रेक्ष्यमे मैथिलीक आलंकारिक लोकनि सेहो रुय्यकेक मतकेँ स्वीकार कय लैत छथि ।[90]

सदृश एवं असदृश दुनू प्रकारक वस्तुक स्मरणसँ स्मरण अलंकार होइत अछि । किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

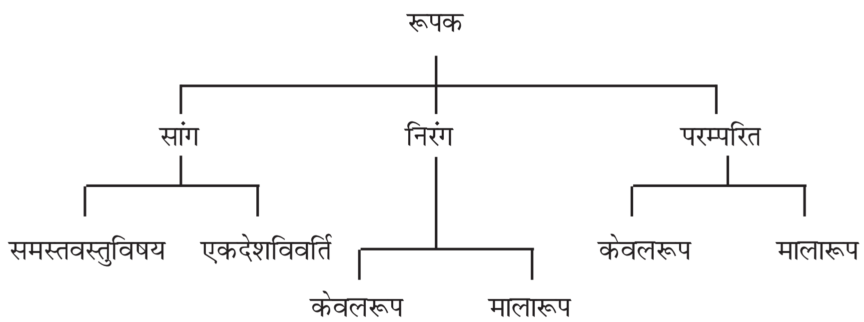
1. **लंकादेवी विकला कान । वरियाकाँ नहि लागय वान ।।**
   पूर्व विरंचि कहल छल जैह । अनुभव होइछ भेल कि सैह ।।[91]
2. **कर विचार रावण मन अपन । पूर्बरात्रि जे देखल सपन ।।**[92]
3. **लंका नगर कोलाहल ढेर । पुरदाहक कपि आयल फेर ।।**[93]
4. **स्मित-मुख रावण बजला आह । बड़ गुणशालि वालि मुइलाह ।।**[94]
5. **आली-कुल-वलित-विलास-मग्न, तनिकाँ लखितहिँ स्मृति-पटल-लग्न ।**
   नहि ककर भेलि सुरयुवति संग, करइत कमला क्रीड़ा प्रसंग ?[95]

ओना तँ सभ अलंकार मनोवैज्ञानिक मानसिक प्रक्रियासँ सम्ब□ अछि, किन्तु स्मरण अलंकार तँ मनोवैज्ञानिक प्रक्रियासँ अत्यन्त प्रगाढ़ सम्बन्ध रखैत अछि । कविशेखरजीक उपुर्यक्त पंक्तिक अवलोकनसँ स्मरण अलंकारक प्रत्यक्ष प्रभाव देखबामे अबैत अछि । एहन आकर्षक चित्र उपस्थित करबामे आन कोन अलंकार सफल भए सकत ? पाँती-पाँतीमे स्मरणालंकारक छटा छिटकि रहल अछि आ लोकक मोनकेँ शक्तिशाली चुम्बक जकाँ अपना दिस आकर्षित कए रहल अछि ।

7. रूपक

रूपक सादृश्यमूलक अभेदप्रधान अलंकार थिक । मम्मट, रुय्यक एवं रुद्रट आदि एकरा भिन्न-भिन्न प्रकारेँ परिभाषित कयलनि अछि ।[96] एकर अभेद प्रतीति[97] एवं ताद्रूप्य प्रतीतिकेँ लए कए पूरा शास्त्रार्थ कयल गेल अछि । एतय शास्त्रार्थक झंझटमे पड़बाक प्रयोजन नहि अछि । तेँ एतबे बुझब पर्याप्त थिक जे उपमा दू भिन्न-धरातलीय पदार्थमे सादृश्य प्रदर्शन करैत अछि आ रूपक दू भिन्न-धरातलीय पदार्थसँ अभिन्नता वा तद्रूपता आरोपित करैत अछि । अतः दण्डीक कथन ठीक बुझना जाइत अछि जे उपमेय आ उपमानमे भेद मेटा देलापर उपमे रूपक कहल जाइत अछि ।[98]

रूपकक स्वरूपक संग-संग एकर भेदोपभेदकेँ लए कए आलंकारिक लोकनिमे पर्याप्त मतभेद अछि । भामह एकर मात्र दू भेद मानैत छथि— समस्त वस्तु विषय एवं एकदेश-विवर्त्ति ।[99] दण्डी बीस भेद कहैत छथि ।[100] भामह समस्त वस्तु विषयकेँ सकल रूपक कहलनि अछि ।[101] उद्‌भट सेहो भामहक भेदकेँ मानैत हुनक समस्त वस्तुविशेषकेँ मालारूपक कहैत छथि ।[102] आचार्य रुद्रट रूपकक तीन भेद मानैत छथि— सावयव, निरवयव एवं संकीर्ण । मम्मटक वर्गीकरण सेहो रुद्रटे जकाँ अछि, मात्र संकीर्णकेँ परम्परित मानैत छथि । सावयव एवं निरवयवकेँ क्रमशः सांग एवं निरंग रूपक कहल जाइत अछि । मम्मट, रुय्यक, विश्वनाथ एवं जगन्नाथ आदि काव्यशास्त्रीय द्वारा मान्य रूपकक प्रमुख भेद निम्नलिखित अछि—



प० सीताराम झा उपमानक उपमेयमे अभेदस्थापनकेँ रूपक कहैत छथि आ एकर छओ भेद मानैत छथि ।[103] प० दामोदर झाक परिभाषा पूर्वकथिते परिभाषावत् छनि आ ओहिना ओहो छओ भेद मानैत छथि ।[104] एकर अतिरिक्त एकटा आओर भेद कहैत छथि— अधिकारूढ़ वैशिष्ट्य रूपक ।[105] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' हिनके लोकनिक मतानुसार चलैत छथि ।[106]

रूपक उपमाक अपेक्षा अधिक सहृदयसंवेद्य अछि, कारण जे ई मनःचक्षुक

भावक मूर्त्ति उपस्थित कए दैत अछि । आधुनिक मैथिलीकाव्यमे उक्त छओ भेदक सुन्दरसँ सुन्दर उदाहरण भेटैत अछि—

1. **समस्तवस्तुविषय (सांगरूपक)**— एहिमे अंग सहित उपमानक उपमेयमे आरोप रहैत अछि; यथा—

1. **देखि भूमिपति पूर्णविधु, तत शिशु-शशकक संग ।**
उमड़ल लोक-समुद्र ओ, बढ़ल उमंग तरंग ॥[107]

2. **विधि-रजक अरुण-अम्बर काँ, छवि-छार लगाए पखारल ।**
भए गेल स्वच्छ ओ लगले, तेँ तेजि समस्त तिमिर-मल ॥[108]

3. **भुजा-मृणाली नयन-नील-सरसिज मुख-सारस ।**
कच-शैवाल कुच-चक्र नाभि-आवर्त्त जतए लस ॥[109]

4. **□तुपति घटक काम पजियार । जेठ भाय पुनि देल विचार ॥**
दण्डकवनक विदित मलिकानि । हो सि□ान्त भाग्य मनमानि ॥[110]

एतय □तुपति वसन्तकेँ घटक एवं कामदेवकेँ पंजियार बनयबामे कविक कौशल देखबा योग्य अछि ।

2. **एकदेशविवर्ति (सांगरूपक)**— जाहिमे किछु आरोप शब्दतः कथित रहय, यथा—

1. **आनन-पूर्ण-सुधांशु-सन्निधानहुँ प्रमुदित रहि,**
पलको भरि कुच-चक्रवाक-जोड़ी बिछुड़ए नहि ।
अथवा सरसिज-युगल कनेको हो न संकुचित,
ई कन्दर्प-नरेन्द्र-नीति-अनुभावक समुचित ॥[111]

2. **दलित दनुज-जलधर-पटल उदित मुदित-नृप-चान ।**
सखि, चकोर स्वच्छन्द भए करिअ अमिअ-रस-पान ॥[112]

3. **शु□ निरंगरूपक**— जतय अंगरहित उपमेयमे उपमानक आरोप होइत अछि ओतय निरंगरूपक होइत अछि । शु□ निरंगरूपकमे एक उपमेयमे एकहि उपमानक आरोप होइत अछि,[113] यथा—

अहिँक नीरबल नारायण-पद-नीरज पावन ।
करथि अहिँक संचय हित विधिहु कमण्डलु धारण ॥[114]

4. **मालारूप निरंग**— जतय एक उपमेयमे अंगरहित अनेक उपमानक आरोप रहैत

अछि, यथा—

1. **चिन्तामणि चतुर-चकोरक, विरही-तरुणक बड़वानल ।**
भए गेल लीन वारिधिमे, अति-प्रभाहीन शशि-मण्डल ॥[115]

2. **प्राची-मुख-चन्दन-तिलक, रजनी-रति-रस-कन्द ।**
तृषित-चकोरी-दृग-अमृत, गेल गगनमे चन्द ॥[116]

3. **पाप-कुमुद-कुल दलनि पुण्य-पंकज विकासिका ।**
भगीरथक तप-गगन-भानु-रश्मिक प्रकाशिका ॥[117]

5. **एकरूप परम्परित**— जतय एक आरोप दोसर आरोपक कारण होअए । पुनः जतय एकहि बेर आरोप होअए ओतय एकरूप आ जतय एकसँ अधिक बेरि आरोप होअए ओतय मालारूप परम्परित रूपक होइत अछि, यथा—

1. **स्तन-गिरि ओटहि बैसि वीण वाणीमिष बजबथि,**
तरल-तरुण-मन-हरिण अनायासहिँ जनु बझबथि ॥[118]

2. **जनिक चरण-नख-ज्योति तिमिर-तति उर-उर हरइत ।**
नूपुर-शिंचित संचित कैनहि वीणा मुखरित ॥[119]

3. **अन्धकार साम्राज्य धरापर रात्रिंचरक प्रकोप ताहिपर**
सुजन-कमल कन वापी गृहमे मूर्छित पड़ल निराश ।[120]

4. **श्र□ा-दिवा दूर चलि गेली नहि कहि कत अन्तर्हित भेली ।**
विश्वासक निर्मल प्रकाश केर भए गेल असमय ह्रास ॥[121]

6. **मालारूप परम्परित**—

धर्मसूर्य अस्ताचल चलता, काम चन्द्रमुख नभ उगि गेला
तारा उगि उगि देखए लागल निशा-स्त्रीक अभिसार ।[122]

विभिन्न आलंकारिक लोकनि रूपक अलंकारक भिन्न-भिन्न भेद कयलनि अछि । ओहि सभ भेद पर पृथक्-पृथक् विचार करब एतय संभव नहि अछि । समस्त भेदोपभेदक उदाहरण देलासँ एकर क्षेत्र विस्तृत भए जायत ।

8. परिणाम

आरोप्यमानकेँ प्रकृतोपयोगी भेलापर परिणाम अलंकार होइत अछि ।[123] रूपकालंकारसँ एकरा अत्यन्त साम्य छैक । रूपकमे सेहो आरोप रहैत अछि, किन्तु ओहिमे आरोप्यमान

वा उपमान आरोप विषय वा उपमेयक उपरंजन मात्र करैत अछि, ओकर उपयोग नहि ।[124] परिणाम अलंकारमे उपमान उपमेयक स्वरूप धारण कय कार्यक सम्पादन करैत अछि । परिणाम रूपकसँ अत्यन्त साम्य रखैत अछि । तेँ भामह, दण्डी, रुद्रट, उद्‌भट आदि प्राचीन आलंकारिक एकरा स्वतन्त्र अलंकार नहि माननलि, किन्तु रुय्यकक उद्‌भावनाक बाद शोभाकर,[125] विश्वनाथ,[126] विद्याधर,[127] अप्पय दीक्षित,[128] एवं पण्डितराज जगन्नाथ[129] आदि एकरा स्वतन्त्र अलंकार मानैत छथि आ तेँ सभ केओ रूपकेक लक्षणमे सामान्य परिवर्त्तन करैत परिभाषा देलनि अछि ।

परिभाषामे निष्क्रिय उपमान उपमेयक संग मिलिकय प्रकृतकार्योपयोगी होइत अछि । एहिमे कविक दृष्टि मूलतः उपमेय एवं ओकर कार्य-कलापेपर स्थिर रहैत अछि । प० सीताराम झा सेहो रूपकक परिभाषाकेँ परिमार्जित करैत उपमेयमे क्रियाक रूपक स्थापना करैत छथि ।[130] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क परिभाषा सेहो एहने सन छनि ।[131] प० दामोदर झा परिणाम अलंकारपर किछु भिन्न ढंगे विचार कयलनि अछि । हिनक कथन अछि जे एहि अलंकारमे उपमेय उपमानक रूप धारण कय उपमानक कार्य करैत अछि, जखनकि अन्य कविक अनुसारेँ उपमाने उपमेयक रूप धारण कय उपमेयक कार्य करैत अछि । यद्यपि दुनूक उदाहरण आधुनिक मैथिली काव्यमे पर्याप्त भेटैत अछि । प० दामोदर झा एकर दू भेद कयलनि अछि– 1. अधिकारूढ़ वैशिष्ट्य एवं 2. एकदेशविवर्त्ति ।[132] किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक–

1. **आनन्द पयोधर उमड़ल, उत्साह सिन्धु अति उछलल ।**
   बहि चलल दान-जलधारा, याचक-मयूर मुद-मातल ॥[133]

2. **सारथि जीव अमन्द, अतुल-कलेवर-रथ-सहित ।**
   चलि कुचालि स्वच्छन्द, इन्द्रिय-हय खसबय त्वरित ॥[134]

उक्त पद्य सभमे उपमेय उपमानक कार्य करैत अछि ।

प० दामोदर झाक अतिरिक्त अन्य आचार्य लोकनिक मतानुसार परिणाम अलंकारमे उपमान स्वयं कार्य सम्पादन करबामे सक्षम नहि होइत अछि, तेँ ओ उपमेयक संग कार्य करैत अछि । उदाहरण द्रष्टव्य थिक–

1. **कुटिल अलकक वक्ररेखा सँ टवर्गक कल्पना ।**
   कर-चरण-तल-पल्लवहि सँ चारु वर्गक स्पर्शना ॥[135]

उक्त पद्यांशमे पल्लवमे स्पर्शन शक्ति नहि छैक, किन्तु जखन ओ कर एवं चरणक संग मिलि जाइत अछि तँ ओकरामे ओ शक्ति आबि जाइत छैक ।

2. **कर-कमल परसि अवनीश-माथ, मृदु-वचन उचारल लोक-नाथ ।**
   नरपाल, कठिन तप तेजु आब, हमरहु लखि जन की दुःख पाब ? ।[136]

एतय उपमान कमलमे स्पर्श करबाक शक्ति नहि छैक तेँ ओ करक संग मिलिकय कार्यक सम्पादन करैत अछि ।

1. **कए विदग्ध भावक अवलम्बन, उत्सुक मनकाँ रोकल ।**
   कर-किसलय-परसहुँ सँकुचलि लखि, शंकित होइत टोकल ॥[137]

2. **कर-पल्लवसँ इंगित कय तरु प्रकट करैछ मनोगत भाव ।**
   मधुकर स्वस्ति बँचैछ मुदित मन मार्गक विघ्न दुराव ॥[138]

3. **उत्सुक-लोचन-खंजन घुमैत, सभठाम गेल शिशुकाँ तकैत ॥**[139]

एतय उपमेय उपमानक कार्य करैत अछि एवं उपमान उपमेयक कार्य । लोचन खंजनक रूपमे घुमैत अछि आ खंजन लोचनक रूपमे तकैत अछि ।

9. संदेह

प्रकृतमे अप्रकृतक सम्भावनाकेँ सन्देह अलंकार कहल जाइत अछि ।[140] संदेहमे संशयक सादृश्यमूलक होयब आवश्यक अछि तथा ओकरा चमत्कारपूर्ण सेहो होयबाक चाही । कवि अपन कवित्वशक्तिक द्वारा एक उपमेयमे अनेक उपमानक संदेह प्रकट करैत एहि अलंकारक योजना करैत छथि । एहि अलंकारक निरूपणमे कविक भावना लौकिक संदेह-ज्ञानसँ सर्वथा भिन्न रहैत अछि । अर्थात् कवि-प्रतिभाप्रसूत संशयक वर्णनमे संदेहालंकार थिक, अन्यथा केवल संदेहक वर्णनमे अलंकारत्व संभव नहि ।

भामह, उद्‌भट, मम्मट, अप्पय दीक्षित तथा पण्डितराज जगन्नाथ एकरा ससन्देह कहैत छथि आ रुद्रट संशय । दण्डी एकरा संशयोपमा कहैत छथि ।[141] ओ संशयोपमाक संग-संग निर्णयोपमाक सेहो उल्लेख कयलनि अछि, जे निश्चयान्त संदेह जकाँ बुझि पड़ैत अछि ।[142] किन्तु बेसी आलंकारिक एकरा सैह नैत छथि ।

संदेहक भेदोपभेदक विषयपर आचार्य लोकनिमे मतैक्य नहि अछि । उद्‌भट एकर दू भेद मानैत छथि– 1. शु□ एवं 2. निश्चय गर्भ । रुद्रट तीन भेद कयलनि– 1. शु□, 2. निश्चय एवं 3. निश्चयान्त ।[143] भोज संदेहक प्रथमतः दू भेद कयलनि– 1. एकवस्तु विषय एवं 2. अनेकवस्तु विषय । अनेकवस्तु विषयक पुनः दू भेद कहलनि– शु□ एवं मिश्र ।[144]

मैथिलीक आलंकारिक लोकनिक परिभाषा विश्वनाथेक परिभाषासँ मिलैत-जुलैत अछि ।[145] प० दामोदर झा एकर तीन भेदक सेहो उल्लेख कयलनि, जे थिक– केवल, निश्चयगर्भ एवं निश्चयान्त ।[146]

संदेहालंकारक पर्याप्त उदाहरण आधुनिक मैथिली काव्यमे भेटैत अछि–

(क) शु□ सन्देह— जतय आदिसँ अन्त धरि संदेह बनल रहि जाय—

1. **बिनु जलहु रम्यरुचि भरल ओज । ओ छल सरोज वा छल उरोज ॥**[147]

2. **केओ मकरी बनि पानि डूबि, डेराओल सभकाँ चरण छूबि ।**
सम्भ्रमसँ ओ बालासमूह, विभ्रम पाओल अति सुकवि ऊह ॥[148]

3. **क्यो कहइछ— ई थिक दैवी उत्पात । बजइछ क्यो, कारण किछु आने बात ॥**[149]

(ख) **निश्चयमध्य सन्देह**— जकर आदि एवं अन्तमे अनिश्चय रहैत अछि किन्तु मध्यमे निश्चय—

1. **रानी कहलनि हन्त, कही अनुमानि । कारण तोँही अनर्थक, कही प्रमानि ॥**
हम बुझलहुँ रूपसि, तोँ कुसुमक वृन्त । किन्तु आइ की नहि तोँ अहि-विषदन्त ?।[150]

2. **कुरुराजक मनमे आशंका व्याप्त । की पाण्डव अज्ञातवास संप्राप्त ?**
मत्स्यदेशमे बसि कीचक बधि देल । एखनहि पता लगाएब, उचित न देर ॥[151]

(ग) **निश्चान्त सन्देह**— जकर अन्तमे निश्चय रहैत अछि—

1. **के छल ओ छाया-प्रेत भयंकर ताल-लम्ब ?**
अति दुष्ट धृष्ट कामुक निकृष्ट निश्चर प्रलम्ब ?
बिनु कहनहि बुझलक लोक, आन के नगर बीच ?
निश्चय ओ राज-कलंक, कीचके क्रूर-नीच ॥[152]

2. **ई स्वप्न थीक की इन्द्रजाल,**
वा भ्रान्तिलोकमे छी घुमैत ?
नहि नहि-
ई तँ मम प्राणेश्वरि तरलादेवी ।[153]

10. भ्रान्तिमान

सादृश्यक कारण उपमेयमे उपमानक निश्चयात्मक ज्ञानकेँ भ्रान्तिमान कहल जाइत अछि ।[154] एहि अलंकारमे कविकेँ नहि भ्रान्ति होइत छनि अपितु कविनिब□ पात्रकेँ भ्रान्ति होइत छनि । यदि कवि स्वयं भ्रममे पड़ि जाथि तँ ने अलंकारत्वे सम्भव होयत आ ने आने प्रकारक चमत्कार । कारण जे भ्रान्त व्यक्ति सभटा भसिअयले गप्प कहत । विश्वनाथ एहि परिभाषामे कविप्रतिभोत्थित[155] शब्द जोड़ि कए ई कहय चाहैत छथि जे ई कविप्रतिभोत्थापित होइत अछि, अन्यथा अलंकारत्व सम्भव नहि ।

किछु आचार्यगण यथा भामह, भट्टि, उद्भट तथा वामन आदि भ्रान्तिमान

अलंकारक चर्चा नहि कयलनि अछि । दण्डीक उपमाभेद मोहोपमाकेँ भ्रान्तिमानक पूर्वरूप कहल जा सकैत अछि ।[156] एकर जन्मदाता आचार्य रुद्रट थिकाह ।[157] हिनके परिभाषाकेँ परिमार्जित कय मम्मट, रुय्यक, विद्यानाथ एवं विद्याधर आदि प्रकट कयलनि । भोज अपन सरस्वती कण्ठाभरणमे भ्रान्तिक अनेक भेदोपभेदक उल्लेख कयलनि अछि ।[158]

प० सीताराम झाक अनुसार तुल्य गुण, आकृति आदिसँ जँ (उपमा, उपमेयमे) युग्मकथन हो तँ भ्रान्ति अलंकार कहबैत अछि ।[159] । प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क परिभाषा उक्त परिभाषा सदृशे अछि ।[160] किन्तु प० दामोदर झा ओहिमे कविप्रतिभा शब्द जोड़ि देलनि अछि ।[161]

उदाहरण—

1. **लखि केओ हुनक सुन्दर कपोल, अनुमानल दुइ थिक मुकुर गोल**
पुनि केओ लेल नवरंग जानि, तऽ केओ सेवफल लेल मानि ॥[162]

2. **पैसय लागल जानि बिल व्याल सूँढ़मे व्याल ।**
गजो श्याम कुसियार बुझि, पकड़ि दबाओल गाल ॥[163]

ई परस्पर भ्रान्तिक उदाहरण थिक । परस्पर भ्रान्तिमे दुनूकेँ भ्रान्ति भए जाइत छैक । व्याल (हाथी)क सूँढ़केँ बिल बुझि व्याल (कृष्ण सर्प) ओहिमे प्रवेश करय लागल । हाथी ओकरा कारी कुसियार बुझि गालमे दबा लेलक ।

एतय दुनूकेँ भ्रान्ति भए गेलैक तेँ परस्पर भ्रान्ति अलंकार भेल ।

3. **राज तनूजक विहसित मुख पर, लटकल लखि कचपालि ।**
के नहि मानल विकच कमल पर, लुबुधल भल मधुपालि ॥[164]

4. **कुच-युगल सरोरुह-मुकुल जानि, द्रुतभावी तकर विकास मानि ।**
षट्-पद-पटली-मकरन्द आस, कएलक झट आबि समीप वास ॥[165]

5. **साँझहिँ शशांक-मण्डलकेँ, उगइत लखि उदयाचल पर ।**
मानल बाला रतिरमणक, आयुध आग्नेय उदित्वर ॥[166]

11. उल्लेख

निमित्तभेदक कारण एकहि विषय अथवा अनुभाविकताक अनेकशः ग्रहण उल्लेख अलंकार कहबैत अछि ।[167] शोभाकर सेहो एकर अनेकधा कथनमे उल्लेख अलंकार मानैत छथि ।[168] एहि अलंकारमे कतहु अनेक व्यक्ति अपन-अपन भावनाक आधारपर एक पदार्थक विभिन्न प्रकारसँ वर्णन करैत छथि आ कतहु एकहि व्यक्ति, एकहि पदार्थक, ओकर भिन्न-भिन्न गुण-धर्मक आधारपर वर्णन करैत छथि । तेँ ज्ञातृभेद

ओ विषयभेदक कारण उल्लेखक ई दू भेद स्पष्ट अछि ।[169] मैथिलीक आलंकारिक लोकनि सेहो विश्वनाथहिसँ अभिन्न परिभाषा देलनि अछि ।[170]

(क) ज्ञातृभेदसँ– जखन अनेक व्यक्ति एक व्यक्तिकेँ अनेक रूपमे देखैत अछि–

1. **प्रजा, युवति, याचक, बैरी ओ खल भूपतिकाँ जानल ।**
पिता, मदन, कल्पद्रुम, अन्तक तथा प्रलयकालानल ॥[171]

एतय एकहिटा राजाकेँ विभिन्न व्यक्ति विभिन्न रूपमे देखैत अछि, यथा– प्रजा- पिताक रूपमे, युवती- कामदेवक रूपमे, याचक- कल्पवृक्षक रूपमे, शत्रु- यमराजक रूपमे एवं खल- प्रलयाग्निक रूपमे, तँ प्रथम उल्लेख भेल । उक्त पद्यमे यथासंख्य अलंकार सेहो अछि ।

2. **प्रजा द्विभुज-गोविन्द द्विलोचन-हर वैरीगण, चिन्तामणि चैतन्यशालि याचना-परायण ।**
पुरुष-भाव-सम्प्राप्त भारती विद्यायोगी, धर्मराज नररूप बुझथि जनिकाँ अभियोगी ॥[172]

3. **भक्त-चतुर्भुज, शत्रु काल, राजा नरपुंगव, रानी वत्स, प्रजासब राजा, मुनिसब ज्ञानी ।**
छद्मवेषधारी कराल, विकराल असुरगण, देखल जनक नगर केर वासी सारंगपानी ॥[173]

(ख) विषयवस्तुभेदसँ– जतय एकहि व्यक्ति विषयवस्तुक भेदेँ एकहि व्यक्तिकेँ विभिन्न रूपमे देखैत अछि–

1. **पहलवान बलवान उत्तरक माम विराटक सार ।**
रानिक अनुज दनुजसम देखिअ मनुजहु पशु साकार ॥
कीचक नीच बीच वंशक जनु रन्ध्र लागि बातास ।
बाजि उठैछ सुरहु बेसुर सैरन्ध्रिक रूप पिआस ॥[174]

2. **निर्लज्ज, नीच, निर्मम, नृशंस,**
की अही-पाप-सन्ताप हेतु
डुबइत हमरा कैलेँ बहार ॥[175]

3. **पापिष्ठ,**
शठ, पामर, मदान्ध, कुत्सित, खल, नीच
परदारालम्पट, अयलेँ मन बाँटि
करब एतय सैरन्ध्री-सुख सम्भोग,
भेटलह आबि कराल सपत्नकृतान्त ।
सैरन्ध्री-कण्टक, तोहि झट संहारि
करब शान्त प्रज्वलित अपन आमर्ष ॥[176]

4. **अहँ छी अ□ंगिनी हमर व्यावहारिक पथमे**
सुरतकालमे नवयुवती मन्त्री विचारमे ।
विपत्कालमे संग न छोड़ी बहि प्रवाहमे
घरमे घरणी सहयोगी पुनि बाहर धरिमे ॥[177]

12. अपह्नुति

अपह्नुति अलंकारक आविष्कर्त्ता छथि आचार्य भामह । हिनक कथन अछि जे जतय उपमाक आधारपर वास्तविक अर्थक अपह्नव (नुकाओल) कयल जाय ओतय अपह्नुति अलंकार होइत अछि ।[178] विश्वनाथ किछु परिमार्जित परिभाषा दैत कहलनि जे जतय उपमेयक निषेध कय उपमानक आरोप कयल जाय, ओतय अपह्नुति अलंकार होइत अछि ।[179]

भामह, उद्भट, रुद्रट, मम्मट, जगन्नाथ एवं विश्वेश्वर आदि केवल सादृश्य-सम्बन्धमे अपह्नुति मानैत छथि जखन कि दण्डी, शोभाकर, जयदेव, विश्वनाथ तथा अप्पय दीक्षित सादृश्येतर सम्बन्धमे सेहो ।

अपह्नुतिक भेदोपभेदक सम्बन्धमे विद्वानलोकनिमे मतैक्य नहि अछि । दण्डी अपह्नुतिक दू भेद मानैत छथि– 1. विषयापह्नुति एवं 2. स्वरूपापह्नुति ।

रुय्यक एकर तीन भेद कयलनि–

1. अपह्नव-पूर्वक-आरोप, 2. आरोप-पूर्वक-अपह्नव, 3. प्रतिषेधाभाव-सूचनक हेतु छलादि शब्दमे अपह्नवक विधान ।[180]

जयदेव अपह्नुतिक पाँच भेद कयने छथि– 1. शु□ापह्नुति, 2. पर्यस्तापह्नुति, 3. भ्रान्तापह्नुति, 4. छेकापह्नुति एवं 5. कैतवापह्नुति ।

अप्पय दीक्षित हिनके भेदकेँ स्वीकार करैत एहिमे एकटा आओर जोड़ि देलनि– हेत्वपह्नुति । पण्डितराज जगन्नाथ उपमा तथा रूपकक समान अपह्नुतिक सावयव-निरवयव भेद कयलनि अछि । प० सीताराम झा[181] एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[182] सेहो दीक्षित कृत छओ भेदकेँ स्वीकार कय लैत छथि । प० दामोदर झा[183] एहिमेसँ एकटा भ्रान्त्यापह्नुतिकेँ छोड़ि देलनि अछि ।

1. **शु□ापह्नुति**– यदि उपमेयक निषेध कय उपमानक स्थापना कयल जाय तँ शु□ापह्नुति होइत अछि ।[184]

1. **गगन न थिकथि उदधि मन मान । तारा तति नव फेन समान ।**
शशि न कुण्डलित थिकथि फनीश । अंक न शयित विष्णु जगदीश ॥[185]

2. **घनव्रण भरल शरीर मलिन अछि, बिजुरी नहि, ई चरक चिह्न अछि ।**
सलिल-धार नहि, गलित गात्र केर, पूति-प्रवाह चलल अविरल अछि ॥[186]

3. **आकाश नहि जलपुंज थिक, तारो न सुरधुनि फेन थिक ।**
चन्द्रो न ई कुंडलित हरि, नहि थिक कलंक सूतल मुरारि ॥[187]

2. **हेत्वपह्नुति**– जतय शु□ अपह्नुतिमे कारण कथित रहय ओतय हेत्वपह्नुति कहबैत अछि ।[188]

1. **कालक न त्रास अछि, अयोध्या निवास अछि,**
अरिगण दास अछि, शूर गुणधाम छी ।[189]

एतय निवास अयोध्या (जतय शु□ नहि हो), शत्रुसभ दास एवं स्वयं शूर रहबाक कारण कालक त्रास नहि होयबासँ हेत्वपह्नुति भेल ।

1. **नहि ई लटकल जलधर, ई थिक कज्जल गिरिवर ।**
काटल पक्ष पुरन्दर, तेँ खसइत अछि भू ऊपर ॥[190]

3. **भ्रान्त्यापह्नुति**– जतय सत्यवचनसँ भ्रान्तिक निवारण होअय ओतय भ्रान्ति अपह्नुति होइत अछि ।[191]

तात हमर नहि श्रेय यु□मे, हम तँ कंपित-चित्त ।
छलहुँ पलायमान रिपु-बल लखि, तावत अद्‌भुत ज्वृत्त ॥
साक्षी जकर हमहिँ एकाकी, समर धीर प्रत्यक्ष ।
दिव्य एक क्यो देवपुत्र, सहसा भय प्रकट समक्ष ॥
तनिकहि धनु-टंकार, अहंकारी रिपु केर संहार ।
कयल छनहि जे चमत्कार, तनिकहि चाही सत्कार ॥[192]

4. **पर्यस्तापह्नुति**– जतय उपमेयमे उपमानक गुण धर्मकेँ आरोपित कयल जाय ओतय पर्यस्तापह्नुति कहबैत अछि ।[193]

नृप-तनया-तनु-खेत पैसि शैशव-थिति-दूषक,
मूसि कामरुचि-रुचिर-सस्यभर यौवन-मूषक ।
उचित उच्च थल हेरि ततय दुइ ढेरि लगाओल,
तकरहि विधि कर्कशता दए कुच-शैल बनाओल ॥[194]

एतय उपमेय **कुच**मे शैलक गुण-धर्म कर्कशताक आरोप अछि । एकरा कविशेखर बदरीनाथ झा रूपकापह्नुति कहैत छथि ।[195]

5. **छेकापह्नुति**– जाहिठाम आनक शंकासँ सत्यकथाक निषेध एवं मिथ्याक आरोप हो, ओतय छेकापह्नुति कहबैत अछि ।[196]

तकलन्हि आनोठाम जे, सुन्दरि आँखि उठाए ।
चललि नितम्बक भारसँ, जे नहुँ-नहुँ अगराए ॥
जाउ न कहि रोकल सखी, तकरा पर तमसाए ।
सुमुखि उत्तर देल जे, निज दुहु भौंह चढ़ाए ॥[197]

6. **कैतवापह्नुति**– यदि स्पष्ट शब्देँ निषेध नहि कए व्याज, कपट, छल, कैतव इत्यादि कपटवाचक शब्द द्वारा उपमेयक निषेध व्यंजित हो तँ कैतवापह्नुति होइत अछि ।[198]

शशि अमृत-किरणसँ जनिकाँ, सींचल छल से द्रुम-मण्डल ।
बहबैत ओस-अश्रुक कण, खग-कलकल-छलसँ कानल ॥[199]

13. प्रतिषेध

प्रतिषेध आलंकारक उद्‌भावक अप्पय दीक्षित छथि । हिनका अनुसारेँ जतय प्रसि□ निषेधक अनुकीर्त्तन कयल जाय ओतय प्रतिषेध अलंकार होइत अछि ।[200] ई विधि अलंकारक विपरीत अलंकार थिक ।

मैथिलीक आलंकारिक लोकनि सेहो दीक्षितेक परिभाषाकेँ शब्दान्तरेँ स्वीकार कए लैत छथि ।[201]

उदाहरण–

ई दनुज भुवन, नहि मर्त्यलोक, क्षणमे देबहु रणरस चखाए ।
घर जाह घूड़ि, लड़ने कनतहु, विधवा वनिता ओ वृ□ माए ॥[202]

एतय दनुजभुवन मर्त्यलोक नहि थिक से प्रसि□ रहितहुँ निषेध कएल गेल अछि, तेँ प्रतिषेध अलंकार भेल ।

14. उत्प्रेक्षा

उत्प्रेक्षा साधर्म्यमूलक अभेदप्रधान अध्यवसान-साध्य अलंकार थिक जाहिमे अध्यवसान व्यापारावस्थामे रहैत अछि ।[203] विश्वनाथ उत्प्रेक्षाकेँ परिभाषित करैत कहैत छथि जे उपमेयमे उपमानक सम्भावनाकेँ उत्प्रेक्षा कहल जाइत अछि ।[204] एकर संदिग्धता भ्रान्तिमान एवं संदेहक संदिग्धतासँ भिन्न अछि । भ्रान्तिमानमे निश्चयात्मक ज्ञान रहैत अछि, संदेहमे ज्ञानक दू वा दूसँ अधिक स्तर रहैत अछि, किन्तु उत्प्रेक्षामे सम्भावना निश्चयात्मक नहि अपितु निश्चिते जकाँ रहैत अछि ।

आचार्य विश्वेश्वर तथा विद्याचक्रवर्तिन् आदिक मतानुसार उत्प्रेक्षाक हेतु कविकल्पिते उपमान पर्याप्त अछि ।[205] किन्तु ई मत भ्रान्तिमूलक बुझि पड़ैत अछि । उत्प्रेक्षाक हेतु आवश्यक अछि सम्भावना । एहि अलंकारमे उपमेय गौण एवं उपमान उत्कृष्ट वा प्रधान देखल जाइत अछि, कारण जे कवि बलपूर्वक उपमानक संग उपमेयक साम्य स्थापित करैत छथि । कतोक स्थलपर देखल जाइत अछि जे उपमालंकार विफल भए जाइत अछि ।[206] यैह कारण थिक जे काव्यमे सुन्दर-सुन्दर उत्प्रेक्षाक प्रयोग कयल जाइत रहल अछि । केशव मिश्र उत्प्रेक्षाक महत्त्वपर प्रकाश दैत कहैत छथि जे—

सर्वालंकार सर्वस्वं कविकीर्त्तिविवर्धिनी, उत्प्रेक्षा हरति स्वान्तमचिरोढ़ास्मितादिव ।
शंके मन्ये ध्रुवं प्रायो नूनं जानामि तर्कये, इवेत्यादिभिरुत्प्रेक्षा व्यज्यते काव्यवर्त्मनि ॥[207]

उत्प्रेक्षामे कविक मानसचक्षु पृथ्वीसँ आकाश धरि जाहि तरहेँ भ्रमण कए लैत अछि तेना आन अलंकारमे नहि । महाकविक कलात्मकता आ अतिविकसित सौन्दर्यबोध करयबामे उत्प्रेक्षा समस्त सादृश्यमूलक अलंकारमे प्रथम अछि । वर्णनक जेहन चमत्कार एहिमे देखि पड़ैत अछि तेहन अन्यत्र कतहु ने भेटत । कतहु-कतहु तँ कवि सागरक लहरि जकाँ उत्प्रेक्षाक माला प्रस्तुत कए दैत छथि ।

कविशेखर बदरीनाथ झा अपन 'एकावली-परिणय' महाकाव्यमे दानव कालकेतुक वर्णन करबामे उत्प्रेक्षालंकारक सुन्दर चमत्कार देखओलनि अछि । एकक बाद दोसर उत्प्रेक्षा, जेना उच्च पर्वत स्थित मन्दिरक सोपान होअए, तेना बुझि पड़ैत अछि ।

तावत् जनु प्रलय-निशा-कलाप, संचित जनु पातकि जनक पाप ।
सांबर्तक-गण-जनु घनक व्यूढ़, जनु अन्धकार विश्वक समूढ़ ॥
जनु मृगनयनी-काजरक पुंज, संहत जनु श्यामा लता कुंज ।
व्यामोहक जनु संचय विशाल, जगदन्तक जनु स्वयमेव काल ॥
जनु सकल समाहृत कालकूट, जनु नीलमणिक उत्तुंग कूट ।
समवेत अखिल जनु नील शैल, पूगीकृत जनु त्रिभुवनक मैल ॥
दुर्यश-समूह जनु लक्ष्यगात, जनु एक मधुव्रत-कुलव्रात ।
संघात कोकिलक जनु महान, काकक जनु निकर अनन्त तान ॥
उच्छित जनु इन्दीवर-व्यूह, जनु मिलित वन्य-शूकर-समूह ।
आसज्जित जनु सैरभि कदम्ब, जनु वृन्द करीन्द्रक गगन लम्ब ॥
जनु कृष्णसार सारंग-यूथ, जनु कोलभिल्ल-वनचर-वरूथ ।
सभ गहनक जनु संकलित □क्ष, संचित जनु सकल तमाल वृक्ष ॥
संहत जनु कस्तूरीक धूर, संगत जनु यमुना-नदी-पूर ।
एकीकृत जनु छाया निकाय, समुदाय कयक जनु महोच्छाय ॥

सागरक वारि जनु ढेरि भेल, जनु कलि कृतयुग अवतार लेल ।
परधनवनिता-आसक्त चित्त, घुमइत हरबा लए सतत वित्त ॥[208]

कविशेखरजी दाक्षिणात्य जकाँ उत्प्रेक्षाक प्रिय नहि छथि ।[209] तथापि अनेक स्थलपर उत्प्रेक्षाक माला देखना जाइत अछि । उत्प्रेक्षालंकारक हेतु इहो आवश्यक छैक जे कविकेँ अत्यधिक क्लिष्ट एवं यत्नकृत उपमानक कल्पना ने करय पड़नि । दण्डीक कथन छनि जे लोकातीत वर्णनसँ विदग्धे परितुष्ट होइत छथि, आन नहि ।[210]

एहि छोट सन उत्प्रेक्षामे नहि जानि कतेक आलोचक एक संग-चाक्षुष बिम्ब (विजुअल इमेज), वर्ण बिम्ब (कलर-इमेज), ज्योति बिम्ब (लाइट इमेज) तथा घ्राण बिम्ब (आलप्रोक्ट्री इमेज) आदि-आदि कतेक प्रकारक बिम्बक जमघट देखैत छथि ।

प० सीताराम झा उत्प्रेक्षाक वर्णन करैत कहैत छथि जे उपमेयमे उपमानक अभेद जकाँ सम्भावनाकेँ उत्प्रेक्षालंकार कहल जाइत अछि ।[211] हिनका अनुसारेँ एकर छओ भेद अछि—

- उत्प्रेक्षा
  - वस्तूत्प्रेक्षा
    - उक्तविषया
    - अनुक्तविषया
  - हेतूत्प्रेक्षा
    - सि□हेतु
    - असि□हेतु
  - फलोत्प्रेक्षा
    - सि□फल
    - असि□फल[212]

प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[213] एवं प० दामोदर झाक[214] सेहो एहने मन्तव्य छनि ।

आचार्य विश्वनाथक अनुसार उत्प्रेक्षाक मूलमे कोनो आन अलंकार रहने आओर चमत्कारयुक्त भए जाइत अछि ।[215] किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

1. उपमोपक्रमोत्प्रेक्षा—

सभ जन हृदय कदलि सन काँप, जनु कपि भेल चोटाओल साप ।[216]

2. प्रतीपगर्भितोत्प्रेक्षा—

   1. **उड़ि गेल गगनवेगेँ विमान, जे निरखि भेल गरुड़ो विमान ।**
      जनि तरणि सिन्धु, नभ-सरणि-पार, पलमे पहुँचल अमरेन्द्र द्वार ॥[217]

   2. **ललना-निकर पंचम स्वरसँ, घरमे गबइत गीत ।**
      पिक-विलासनीकाँ कए देलन्हि, जनु लज्जित ओ भीत ॥[218]

3. अधिक–गर्भितोत्प्रेक्षा–

अँटि गेल सकल पुरवासी, सुखसँ नृपतिक आलयमे ।
जनि उदरमध्य भगवानक, जग-जीव-कदम्ब प्रलयमे ।।[219]

एतय आलय आधार आ पुरवासी आधेय अछि । पुरवासी नृपतिक आलयमे सुगमतासँ अँटल तेँ आधारक अधिक वर्णन भेल । अत: ई अधिक गर्भितोत्प्रेक्षा थिक ।

4. अशियोक्ति–गर्भितोत्प्रेक्षा–

1. **स्नेह कालिमा विधिक धूपमाला-परिमलवर,**
अतुल दीर्घता अचल पाब कथमपि यदि चामर ।
तँ एकावलि-अलक-पालि-तुलनाक कथंचित,
हो कदाच किछु मात्र ततए अवसर सम्भावित ।।[220]

2. **अद्वितीय-लावण्यशालि विरचइत तनिक तनु,**
कान्ति-कोष निश्शेष भेल धाताक अखिल जनु ।
भए निरुपाय समेटि तिमिर समुदाय बनाओल,
चिकुरपाश, तेँ शशिप्रकाश निर्मल यश पाओल ।।[221]

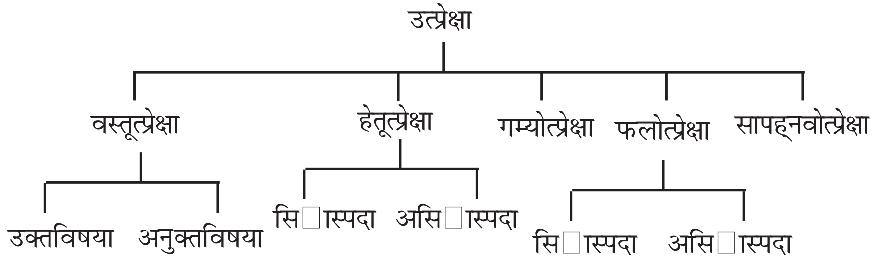
5. रूपक–गर्भितोत्प्रेक्षा–

1. **जन समूह प्रमुदित-नयन-विकसित-कमलक ढेरि ।**
नृपतिक पूजा हेतु जनि, अरपल एकहि बेरि ।।[222]

2. **करइत सतत कुलाल कलश-निर्माणक अनुभव,**
एकावलि-कुच-कांचन-घट-युग रचल नाभिभव ।।
अनिवारित-जनदृष्टि-दोष-भयसँ मन काँपल,
तेँ जनु चतुर विचारि रुचिर कंचुकसँ झापल ।।[223]

कतोक आलंकारिक तँ उत्प्रेक्षाक भेदक विस्तारपूर्वक चर्चा कयने छथिा, यथा रुय्यक 120 भेद कयने छथि,[224] विश्वनाथ 176 भेद,[225] एवं अप्पय दीक्षित एकर मात्र छओ भेदक उल्लेख कयलनि अछि ।[226]

आधुनिक मैथिली काव्यमे उत्प्रेक्षालंकारक प्रभेद जँ आचार्य विश्वनाथक मतेँ देखय लागब तँ एहिपर एकटा पृथक् शोध करय पड़त आ यदि प० सीताराम झाक अनुसार चलब तँ संतोष नहि होयत । तेँ हम मैथिल आलंकारिक लोकनिक अनुगमन करैत (2003 ई.मे प्रकाशित अपन अलंकार–भास्करक आधारपर) उत्प्रेक्षाक निम्नलिखित भेद करैत उदाहरण प्रस्तुत कय रहल छी ।[227]



1. वस्तूत्प्रेक्षा–

एहिमे उपमेय एवं उपमान दुनू शब्दत: कथित रहैत अछि । एकर दू भेद अछि–

(क) उक्तविषया एवं (ख) अनुक्तविषया ।

(क) उक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षा– एहिमे प्रथमत: उत्प्रेक्षाक विषयवस्तु कहल जाइत अछि, आ बादमे ओहिमे सम्भावना देखाओल जाइत अछि, यथा–

छल कामुक तस्कर आदिक, जत जीव भुवनमे रतिचर ।
से डरहिँ कतहु भए सटकल, जनि हारल नृपतिक अनुचर ।।[228]

(ख) अनुक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षा– एहिमे वस्तुक कथन बिनु कयनहि उत्प्रेक्षा कयल जाइत अछि, यथा–

तेँ भूपालक तखनुक दशा विचित्र । जनि विषादतम नासल उगि मुदमित्र ।।[229]

एकवीरकेँ देखितहिँ राजा तुर्वसुक विषाद ओहिना नष्ट भए गेलनि जेना सूर्यक उगलापर अन्हारक नाश होइत छैक । एतय वस्तु एकवीरक कथन नहि अछि, तेँ अनुक्तविषया भेल ।

2. हेतूत्प्रेक्षा–

जतय अहेतुमे हेतुक कल्पना कयल जाय ओतय हेतूत्प्रेक्षा होइत अछि । एकरहु दू भेद होइत अछि– (क) सि□ास्पदा एवं (ख) असि□ास्पदा ।

(क) सि□ास्पदा– जतय उत्प्रेक्षाक आधार सि□ हो ओतय सि□ास्पदा हेतूत्प्रेक्षा कहबैत अछि, यथा–

1. **वैरि तिमिर-मण्डल मिहिर, बढ़इत लखि तत्काल ।**
प्रतीकार-असमर्थ जनि, भेल क्रोधसँ लाल ।।[230]

2. **कर-चाबुक लए रवि उदयाचल आगत लखि तमचय भागल**
मूर्तिधारि जनु सएह भयंकर कुम्भकर्ण लग स्थित बहु निश्चर ।[231]

(ख) असि□ास्पदा— जतय उत्प्रेक्षाक आधार असि□ हो, यथा—

भूपतिक दान-वैभवसँ भए गेल याचको दाता ।
निज लेख देखि जनु निष्फल, पछताओल विकल विधाता ॥[232]

3. फलोत्प्रेक्षा—

जतय वस्तुतः फल नहियो रहलापर फल मानि लेल जाइत अछि । एकरो दू भेद अछि— (क) सि□ास्पदा, एवं (ख) असि□ास्पदा ।

(क) सि□ास्पदा— जतय फलक आधार सत्य हो, यथा—

1. **तनिक नयन-युग के न युवति लखि मन-स्वतन्त्रता बेचल ।**
   सेवित रवि जनु मीन मिथुनकाँ नलिनराज्य अभिखेचल ॥[233]

2. **भास्करक प्रभा लखि भीषण, भए गेल मलिन-मुख कैरव ।**
   जनि देखि विजेता नृपतिक, खलजन प्रताप अति भैरव ॥[234]

3. **नेत्र-चपल-कज्जल-रंजित, उन्नत पुनि वक्षोज ।**
   जनि नरव्याघ्र-शिकारकेँ, मारथि विषशर ओज ॥[235]

(ख) असि□ास्पदा— जतय फलक आधार असत्य वा असम्भव रहैत अछि, यथा—

1. **नरपालक नासा-सुन्दरता निरुपम कीर अकानल ।**
   लखि स्वचंचु कल-व्याज लाज-वश वनवसि कए जनु कानल ॥[236]

2. **अधिकारच्युत मैथिलीक लखि नभ मण्डलमे बैसि अधीर ।**
   कानि रहल छथि सुरगण नित से अश्रुबुन्द जनि वर्षानीर ॥[237]

4. गम्योत्प्रेक्षा—

जतय वाचक शब्द (जनि, जनु आदि) लुप्त रहय, यथा—

मन्द-मन्द नरपति क्रमहिँ, पहुँचल सिंहद्वार ।
पथ तकइत छल भवन जत, लोचन खोलि केबाड़ ॥[238]

5. सापह्नवोत्प्रेक्षा—

जतय निषेधपूर्वक उत्प्रेक्षा कयल जाइत अछि, यथा—

सीमर-लाल-फूल-कपटेँ जनु ऊपरसँ पाटक पट ।
कान्त वसन्त देल परिणयमे वनलक्ष्मीकाँ घोघट ॥[239]

सीमर लाल फूल नहि, पाटक वस्तु थिक जे कान्त वसन्त वनलक्ष्मीकेँ परिणयमे घोघटक रूपमे देलनि अछि ।

उत्प्रेक्षा एवं उपमामे अत्यन्त साम्य अछि । कतहु-कतहु दुनूकेँ चिन्हबामे भ्रम होयबाक सम्भावना रहैत छैक । उपमाक वाचक पद थीक सम, सन इत्यादि किन्तु कतहु-कतहु ओ अव्यय उत्प्रेक्षोक वाचक बनिकय आबि जाइत अछि । आधुनिक मैथिली काव्यमे सर्वाधिक उत्प्रेक्षाक प्रेमी छथि कविशेखर बदरीनाथ झा एवं यात्रीजी । ई लोकनि तँ कतहु-कतहु उत्प्रेक्षाक माला सेहो प्रस्तुत कय दैत छथि । यात्रीजीक मुक्त रचना सभमे उत्प्रेक्षालंकार ओहिना चकचकाइत अछि जेना अन्हार घरमे भगजोगनी । एतदतिरिक्त अन्यान्यो कविलोकनिक सम्बन्धमे ई नहि कहल जाय सकैत अछि जे केओ एकर बहिष्कार कयलनि अछि ।

15. तुल्ययोगिता

जतय प्रकृति अथवा अप्रकृतिमे एकधर्माभिसम्बन्ध रहैत छैक ओतय तुल्ययोगिता होइत अछि ।[240] एहिमे अनेक उपमेय वा उपमानक एकधर्माभिसम्बन्ध वर्णित रहैत अछि ।[241] किछु आलंकारिक लोकनि, यथा— भामह,[242] दण्डी,[243], उद्भट,[244] वामन,[245] अप्पय दीक्षित[246] इत्यादि एकर किछु भिन्न परिभाषा देने छथि ।

ई सादृश्यमूलक गम्योपम्य आश्रयक पदार्थगत अलंकार थिक । एहिमे एकहि वाक्यमे अनेक पदार्थक वर्णन कए कवि एकधर्माभिसम्बन्ध स्थापित करैत छथि । ई पदार्थ चाहे प्रस्तुत रहैत अछि वा अप्रस्तुत । एहिमे धर्मक कथन मात्र एकहि बेर रहैत अछि ।

1. प्रथम तुल्ययोगिता— जतय अनेक उपमेय वा अनेक उपमानक एकधर्म कथन हो ।
2. द्वितीय तुल्ययोगिता—जतय शत्रु एवं मित्रमे एकहि प्रकारक वृत्ति देखाओल जाय ।
3. तृतीय तुल्ययोगिता— जतय प्रस्तुतकेँ उत्कृष्ट गुणवलाक संग गणना कयल जाइत अछि ।

प० सीताराम झाक अनुसारेँ प्रस्तुत विषयक वा अप्रस्तुत विषयक गुण वा कर्मसँ तुल्यधर्म भेलासँ तुल्ययोगिता होइत अछि ।[247] इहो अप्पय दीक्षितक तीनू भेदकेँ स्वीकार करैत छथि ।[248] प० दामोदर झा[249] एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[250]क परिभाषा सेहो उपर्युक्त परिभाषासँ मिलैत-जुलैत अछि । ई लोकनि एकर भेदक चर्चा नहि कयने छथि ।

1. प्रथम तुल्ययोगिता—

(क) अनेक उपमेयक तुल्ययोगिता—

1. **रानिक आङन कुल ललना ओ, मन उछाह भरि गेल ।**
अपनहि आदरपूर्वक सबकाँ, समुचित बैसक देल ॥[251]

2. **त्यागि चलल जप तप यती, बनिआँ सभ दोकान ।**
बिथरल पोथी छात्रगण, गूढ़ मन्त्र मतिमान ॥[252]

(ख) अनेक उपमानक तुल्ययोगिता—

1. **सहजहिँ पद एकावलीक कमलहुसँ कोमल,**
ततए उरोज-नितम्ब-महीधर-भार-अरोपल ।

तकर मन्द संचार समुचिते तेँ पृथिवी तल,
ताहूसँ पुनि हारि हंस-गज लाजेँ बीतल ॥[253]

2. **वलि राज्य, मांस शिवि, कर्ण चाम, जीवन दधीचि, भूलोक राम ।**
तेजल जत पर-उपकार काज, तत हमरा की नहि स्वार्थ लाज ?[254]

3. **चन्द्रमुखि ! लखि वदन अहँक, शशि सरसिज सब भेल दीन ।**
द्रुतभावी कुचक विकास मानि, युग चक्रवाक कुवलय मलीन ॥[255]

2. द्वितीय तुल्ययोगिता—

1. **के थिक अपन बुझी नहि आन, सुरा हरल जतबो छल ज्ञान ।**[256]

2. **क्यो प्रशंसा पूल बान्हथु, निन्द्य अथवा क्यो बखानथु,**
देथु क्यो सम्मान माला, वा पियाबथु ग्लानि प्याला ।
किन्तु नहि अनुभूति हो से, जेँ 'मधुप' अविकार छी हम ।
एक टूटल तार छी हम ॥[257]

3. **स्तुति निन्दामे भेद न मानल रिपु हित बुझल समाने ।**
पटबथि वा काटथि दुहूकेँ छायासँ सम्माने ॥[258]

4. **वादी-प्रतिवादी मिलन एतहि, सभ क्रोध-विरोधक शमन एतहि ।**
भाषा-भूषा जत वेश-भेष, आस्तिक नास्तिकक न भेद लेश ॥
छी एक-रूपमय एक नाम, चरितार्थ एकता हे श्मशान ॥[259]

5. **स्वर्ग राज्यमे भेद न राखल, नृपति-रंकमे ।**
भक्तिक श्रममे, ज्ञानक पूजीपतिक अंकमे ॥[260]

6. **क्यो मारथि पाथर उठा, क्यो सीचथि वरु नीर ।**
थिक स्वभाव ई आम केर, कर ककरहु न अधीर ॥[261]

3. तृतीय तुल्ययोगिता—

1. **जा धरि रहता सूर्य-चन्द्रमा, जा धरि ग्रहगण जा धरि तारा ।**
जा धरि बहती गंगा-गण्डकि, वाग्मति-कमला कोसिक धारा ॥
जाधरि पृथिवी सागर जाधरि जीवित रहब अहाँ तहिया धरि ॥[262]

2. **कल्पवृक्ष अरु कामधेनु तेसर अहँ दानी ।**
करब त्वरित सब काज हमर नहियो हम कानी ॥[263]

16. दीपक

आचार्य विश्वनाथक अनुसार प्रस्तुत एवं अप्रस्तुत पदार्थमे एकधर्माभिसम्बन्ध रहलापर अथवा अनेक क्रियाक एक कारक रहने दीपक अलंकार होइत अछि ।[264] तुल्ययोगिता एवं दीपकमे अत्यधिक साम्य रहलाक कारण विद्वानलोकनिमे विवाद छनि जे दुनूकेँ चाहे तुल्ययोगितेक अन्तर्गत वा दीपकेक अन्तर्गत रखबाक चाही ।[265] किन्तु एकर अन्तर्गत कोन अलंकारकेँ राखल जाय, से विवादेक विषय बनल रहल आ परिणामतः दुनू अलंकारक पृथक् अस्तित्व स्थिर रहल ।

ई सादृश्यगर्भ—गम्योपम्याश्रय-मूलक अलंकार थिक । प० सीताराम झा प्रस्तुत एवं अप्रस्तुतमे तुल्य धर्म रहने दीपक अलंकार मानैत छथि ।[266] प० दामोदर झा आचार्य विश्वनाथहिक परिभाषाकेँ स्वीकार कयलनि अछि ।[267] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क परिभाषा उक्त प० सीताराम झाक परिभाषासँ पूर्णतः अभिन्न अछि ।[268]

दीपक अलंकारक भेदोपभेदक कथनमे विद्वानलोकनिक मतैक्य नहि अछि । भामह दीपकक— आदि मध्य एवं अन्त— तीन भेद कयलनि ।[269] दण्डी एकर 19 भेद कयलनि ।[270] मम्मट दीपकक मुख्यतः दू भेद कयलनि— 1. क्रिया दीपक एवं 2. कारक दीपक ।[271] मैथिलीक आलंकारिक लोकनि दीपकक भेदकेँ स्वतंत्र अलंकार मानि लेलनि अछि । किन्तु एतय दीपकेक अन्तर्गत सभ प्रकारक दीपककेँ राखिकय उदाहरण प्रस्तुत कयल जाइत अछि ।

दीपक—

1. **पूजा न देव, पितरो न पानि, नहि अतिथि अपुत्रक अन्न, जानि ।**
स्वीकार करथि, नहि होअ स्वर्ग, उत्साह-रहित रह प्रजा-वर्ग ॥[272]

2. **सम्भव नहि फेरि फिराएब, कालक घर पहुँचल जनकेँ ।**
कृपणक कर सोपल धनकेँ, दयितक पद लागल मनकेँ ॥[273]

(क) **कारक दीपक**– जतय एकहि कारकमे अनेक क्रियाक कथन हो, यथा–

1. **केलि-कुंजमे कामिनी, दूतिक संगहि जाए ।**
कान्त बिलम्बहुँ पाब नहि, घूरलि घर पछताए ॥[275]

2. **चिन्तनमे एहि प्रकार–**
लीन-मुग्ध ग्रीकराज भेल श्रान्त-क्लान्त-भ्रान्त
क्षण-क्षण निश्वास लैछ वेदनासँ तप्त भेल
नाव छोड़ि धार बीच हीन पतवारि सँ ॥[276]

3. **केलि कुंजमे नव परिणीता डरथि, संकुचित होथि ।**
नेत्र बन्द पुनि तिर्यक देखथि, चह आलिंगन चुम्बन देथि ।[277]

(ख) **पदावृत्ति दीपक**– जतय पदक आवृत्ति होअए–[278]

नव तन्त्र मन्त्र चिन्ता धारा, नव सूर्य चन्द्र नव ग्रह तारा
सब कथुक भेल अछि पुनर्जन्म, हे हरित भरित हे ललित भेस
हे छोट-छीन सन हमर देश, हे मातृभूमि शत शत प्रणाम ॥[279]

(ग) **अर्थावृत्ति दीपक**– जतय अर्थक आवृत्ति होअए ।

निष्प्रताप अवनीश, तापहीन शीतल अनल ।
तेजरहित नलनीश, तीनि अनादृत रह बनल ॥[280]

एतय निष्प्रताप, तापहीन एवं तेजरहित– तीनू समानार्थक शब्द थिक तेँ अर्थावृत्ति दीपक भेल ।

(घ) **माला दीपक**– दीपक एकावलीक योगसँ माला दीपक कहबैत अछि–[281]

1. **नरकेर आकर्षण नारीमे, नारिक सहजहिँ अछि नरमे ।**
दुहुकेँ देखि दुहू तच्छन भए उठइछ व्याकुल अन्तरमे ॥[282]

2. **विद्यासँ धन ताहिसँ धर्म, धर्मसँ शान्ति ।**
तहिसँ सुख, सद्बुि पुनि, हटय हृदयसँ भ्रान्ति ॥[283]

3. **धन्वा लय रणभूमिमे अयला लक्ष्मण लाल ।**
पाओल के की तत्क्षणहि सुनू कहब तत्काल ॥
धनुष वाण, वाण घननाद, घननाद भूमितल ।
भूमि लषण, ओ कीर्त्ति, कीर्त्ति त्रैलोकहु जीतल ॥[284]

गम्भीरतापूर्वक विचार कयलासँ मालादीपक शृंखलामूलक अलंकारक अन्तर्गत आबि जाइत अछि, किन्तु सुगमताक करण एकरहु उल्लेख दीपकेक अन्तर्गत कयल गेल अछि । एहि अलंकारमे पूर्व पूर्व पदार्थक द्वारा उत्तरोत्तर पदार्थक उपकार होइत छैक । कारक दीपक एवं आवृत्ति दीपकक उल्लेख सेहो सुविधाक दृष्टिएँ एतहि कयल गेल अछि ।

(ङ) **पदार्थावृत्ति दीपक**– जतय पद एवं अर्थ दुहूक आवृत्ति होअए–

दीनबन्धु जँ चाहथि करुणासिन्धु । सागरकेँ मरु बनबथि, मरुकेँ सिन्धु ॥[285]

17. प्रतिवस्तूपमा

प्रतिवस्तूपमा सादृश्यवर्ग-गम्योपम्याश्रय-मूलक अलंकार थिक । एहिमे उपमेय एवं उपमान दुनू वाक्यक साधारण धर्म भिन्न-भिन्न शब्दक द्वारा कहल जाइत अछि ।

एहि अलंकारमे औपम्य गम्य रहैत अछि । उपमा व्यंग्य रूपमे रहैत अछि, शब्दतः कथित नहि । प्रतिवस्तूपमाक अर्थ होइत अछि जे उपमा प्रति वस्तुमे रहय ।[286] ई अलंकार साधर्म्यैटासँ नहि, अपितु वैधर्म्योसँ होइत अछि । वैधर्म्यो द्वारा साम्य देखाओल जाय सकैत अछि ।[287] भामह[288] तथा दण्डी[289] एकरा उपमाक अन्तर्गत विवेचित कयलनि । भोज एकरा प्रतिवस्तूक्तिसँ अभिहित कयलनि । एकर ओ ज्वी, वक्रा, पूर्वा, उत्तरा, विधि एवं निषेध आदि भेद कयलनि ।[290] विश्वनाथक अनुसार जतय उपमेय एवं उपमान वाक्यमे सादृश्य प्रतीति होअय आ ओहिमे यदि एकहि साधारण धर्म पृथक्-पृथक् धर्म शब्द द्वारा कहल जाय तँ प्रतिवस्तूपमा अलंकार होइत अछि ।[291] आचार्य रुय्यक, विद्यानाथ, विश्वनाथ एवं दीक्षितक अनुसारेँ ई साधर्म्य एवं वैधर्म्य दुनूसँ होइत अछि । आचार्य मम्मट एवं विश्वनाथक अनुसार एकर मालारूप सेहो होइत अछि ।

प० सीताराम झाक अनुसार पृथक्-पृथक् उपमेय एवं उपमान वाक्यक जँ साधारण धर्म एके रहय तँ प्रतिवस्तूपमा अलंकार होइत अछि ।[292] प० दामोदर झा[293] एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[294] हिनकहिसँ मिलैत-जुलैत परिभाषा देने छथि । ई लोकनि एकर कोनो भेद नहि कयने छथि ।

आधुनिक मैथिली काव्यमे प्रतिवस्तूपमाक पर्याप्त उदाहरण भेटैत अछि–

(क) **साधर्म्यसँ प्रतिवस्तूपमा :** जतय उपमेय-उपमान वाक्यमे एकहि साधारण धर्म रहैत अछि–

1. **हमर समरमे तँ नहि कथमपि भंग । अनल मिझाए सकए की कतहु पतंग ?**[295]

एतय उपमेय एवं उपमान दुनू वाक्य निषेधात्मक अछि तेँ साधर्म्यसँ प्रतिवस्तूपमा भेल ।

2. **विद्वानक बहुमूल्य परीश्रम दुष्ट-बुि सँ नहि वाधित हो ।**
रत्नदीप केर शिखा प्रज्वलित हवा झोंकसँ नहि विचलित हो ।।[296]

(ख) वैधर्म्यसँ प्रतिवस्तूपमा :

जतय उपमेय एवं उमान वाक्यमे साधारणधर्मक भिन्नता रहय—
भए जाएत हमरासँ दुष्कर त्राण, अपटु कुलाल करए की घट निर्माण ?[297]

एहिमे प्रथम उपमेय वाक्य आ दोसर उपमान वाक्य थिक । उपमान वाक्यमे 'अपटु कुम्हार घट निर्माण नहि कय सकैत अछि' कहि कए पटुता देखाओल जाइत अछि । अर्थात् निषेधसँ एतय उत्कर्ष बढ़ि जाइत अछि ।

(ग) मालारूप प्रतिवस्तूपमा :

जतय एकहि गप्प शब्दान्तरक मालासँ कहल जाय—

1. **बाँझक कष्ट निपुत्र थिक, शूरक पीर पराजय ।**
मूर्ख वेदना थिक विद्वानक, शूल अग्नि केर पानिय ।।[298]

2. **अपमानित ब्राह्मण जागि उठल, सूतल पन्नग फुफकारि उठल ।**
पजरल क्रोधानल महाज्वाल, उठि गेल रूप धय महाकाल ।।[299]

एतय जागब, फुफकारब, पजारब आ उठबसँ एकहिटा तात्पर्य अछि सचेत रहब जे शब्दान्तरक मालासँ कहल गेल अछि ।

18. दृष्टान्त

दृष्टान्त अलंकारमे उपमेय, उपमान एवं ओकर साधारण धर्ममे विम्ब-प्रतिविम्बभाव रहैत छैक ।[300] प्रतिवस्तूपमासँ एकरा अत्यन्त लग सम्बन्ध छैक । प्रतिवस्तूपमामे साधारणधर्ममे वस्तु-प्रतिवस्तुभाव रहैत छैक, किन्तु दृष्टान्तमे विम्ब-प्रतिविम्बभाव । वामन, दण्डी एवं भामह एकर उल्लेख नहि कयलनि । उद्‌भट एकर उद्‌भावक थिकाह । भोज साम्यालंकारक एक भेद दृष्टोक्तिक चर्चा कयने छथि ।[301]

प० सीताराम झाक[302] अनुसार यदि उपमान ओ उपमेय वाक्यमे भिन्न धर्म विम्ब-प्रतिविम्ब जकाँ हो तँ दृष्टान्त अलंकार होइत अछि । प० दामोदर झा[303] एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[304] सेहो एहने परिभाषा देने छथि । दामोदर झाक अनुसार साधर्म्य एवं वैधर्म्य दुनूसँ दृष्टान्त होअए ।

आधुनिक मैथिली काव्यमे डेग-डेगपर दृष्टान्तालंकारक उदाहरण भेटैत अछि । हमरालोकनिक समाजमे गप्प-सप्पमे लोककेँ दृष्टान्त देबाक अभ्यास छैक—

(क) साधर्म्यसँ दृष्टान्त—

खन हो मनमे वनमे बहूत, संचर श्वापद जत मृत्युदूत ।
तत सम्भव शिशु बचबाक कोन ? की बाट पड़ल रह कतहु सोन ?[305]

जहिना हिंसक जन्तुसँ पूर्ण वनमे शिशुक बचबाक आश नहि तहिना बाटपर सोना भेटबाक आशा नहि । दुनूमे बिम्ब-प्रतिबिम्बभाव अछि । दुनू निषेधात्मक वाक्य थिक, तेँ साधर्म्यसँ दृष्टान्त भेल ।

(ख) वैधर्म्यसँ दृष्टान्त—

बुध हर्षनाथ, कवि भानु, चन्द्र प्रतिभासँ जे अछि अति अतन्द्र ।
तत विफल हमर रचना-प्रयास रवि रहितहुँ की खद्योत भास ?[306]

एतय तेसर चरण विधि रूप अछि आ चारिम निषेध रूप । तेँ वैधर्म्यसँ दृष्टान्त भेल ।

19. निदर्शना

वस्तुमे सम्बन्धक अभाव रहलहुपर सम्बन्धक कल्पना करब तथा उपमान एवं उपमेयत्वक कल्पना करब निदर्शना थिक ।[307] विश्वनाथक अनुसार वस्तुक सम्बन्ध सम्भव हो वा असम्भव, जखन बिम्ब-प्रतिबिम्बभाव द्वारा ओहिमे सम्बन्ध देखाओल जाइत अछि तँ निदर्शना अलंकार होइत अछि ।[308]

प० सीताराम झाक अनुसारेँ उपमेय तथा उपमानक वाक्यार्थमे एकताक आरोप कयल जाय तँ निदर्शना अलंकार कहबैत अछि ।[309] पण्डितजी एकटा दोसरो निदर्शना मानैत छथि जतय ककरो कोनो विशिष्ट क्रियासँ अनुचित-उचित विषयक ज्ञान होइत अछि ।[310] हिनका अनुसारेँ निदर्शनाक दू भेद होइत अछि ।[311] प० दामोदर झा सम्भव एवं असम्भव वस्तुक सम्बन्धसँ निदर्शनाक दू प्रकार मानैत छथि ।[312] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अनुसार समतुल दुइ वाक्यार्थमे ऐक्यारोपसँ निदर्शना मानैत छथि । इहो एकर सम्भव एवं असम्भव सम्बन्धसँ भेद कयलनि अछि ।[313]

निदर्शनाक प्रमुख तीन भेद कयल जाइत अछि—[314] 1. प्रथम निदर्शना, 2. द्वितीय निदर्शना एवं 3. तृतीय निदर्शना ।

1. प्रथम निदर्शना— एकर पुनः दू भेद कयल जाइत अछि—

(क) सम्भव वस्तुसम्बन्धावली— जतय वस्तुक सम्बन्ध सम्भव रहय—

जे पाँतर-पथिकक तरु विशाल, जे नाव महोदधि डुबक काल ।
जे मरु-मण्डलमे अमृत-वृष्टि, से ओहि नरेशक तनय-सृष्टि ।।[315]

(ख) असम्भव वस्तुसम्बन्धावली— जतय वस्तुक सम्बन्ध असम्भव रहय—

1. **छन नरनाथक बीतल जतेक, पथ उत्कंठासँ युग ततेक ॥**[316]

2. **पछिमहुँ रवि उग, हो शिशिर आगि, कर्कशता गिरि वरु सकथि त्यागि ।**
भए जाए उष्णा हिम, अचल बात, हो किन्तु हरिक नहि वृथा बात ॥[317]

2. **द्वितीय निदर्शना**— जतय उपमेयक गुण उपमान वा उपमानक गुण उपमेय धारण करैत अछि ओतय द्वितीय निदर्शना होइत अछि ।

(क) उपमानक गुण उपमेयमे—

दृष्टि बुधक विद्यामे रहइछ जएह । एकावलिमे रैभ्यक की नहि सएह ?[318]

(ख) उपमेयक गुण उमानमे—

1. **जे अति तपबथि जीवकेँ, क्षणिक पाबि अधिकार ।**
तनिक अन्तगति बुझबइत, भानु डुबल जलधार ॥[319]

2. **चिन्ता-मलिन-वदनकेँ गहि नृप-नीति ।**
प्राभातिक-विधुमण्डल लेलक जीति ॥[320]

3. **तृतीय निदर्शना**— एकरा अप्पय दीक्षित सदसदर्थबोधिका निदर्शना कहैत छथि । जतय नीक वा अधलाह गुणसँ ककरो नीक वा अधलाह ज्ञान देल जाइत अछि ।[321]

(क) सद्गुणसँ दोसराकेँ सद्गुण देब—

1. **फलक समय आनत होएब, अहँ देल जगत केँ शिक्षा ।**
आश्रय-गत यदि उच्छेदक हो, ततहु अदेय न भिक्षा ॥[322]

2. **जीवन भरि साधना ध्येय हो, यदि उन्नतिक प्रतीक्षा ।**
हे महोपदेशक, अपनहिसँ लेब जीवनक दीक्षा ॥[323]

3. **फलवाला तरुवर सिखबइये झुकल रहक थिक ।**
दम्भ-कपट-तजि विद्वज्जनकेँ नम्र बनक थिक ॥[324]

(ख) असद्गुणसँ दोसराकेँ असद्गुण देब—

1. **मध्याह्न-मध्य तप-□तुमे, मरुलता कला वा चानक ।**
जे पाबि, सएह गति पाओल, ओ वश भए विरह वितानक ॥[325]

2. **पद-कन्दुक सिखबैत अछि, सहि-सहि लातक मारि ।**
लातहि मारनयोग थिक, पशु, गँवार, अमरारि ॥[326]

3. **तुला सिखाबय सतत ई, अथिर रूप-धन-जीव ।**
सारहीन संसारमे, दुख-सुख अपन नसीब ॥[327]

एहि तरहेँ हमरा लोकनि देखैत छी जे निदर्शनाक पर्याप्त उदाहरण हमरालोकनिक आधुनिक मैथिली साहित्यमे भेटैत अछि ।

20. व्यतिरेक

आचार्य भामहक अनुसार उपमानक अपेक्षा उपमेयक वैशिष्ट्य निदर्शनमे व्यतिरेक अलंकार होइत अछि ।[328] मम्मटक अनुसार उपमानसँ उपमेयक उत्कर्ष वर्णनमे व्यतिरेक होइत अछि ।[329] व्यतिरेकक अर्थ होइत अछि आधिक्य । एहिमे उपमेयक आधिक्यक वर्णन हो वा उपमानक से भ्रमात्ममूलक अछि आ तेँ एहि विषयपर विद्वानलोकनिमे मतैक्य नहि अछि । अतः आलंकारिक लोकनिक दू वर्ग बनि गेल अछि । प्रथम वर्ग उपमानक अपेक्षा उपमेयक उत्कर्ष-वर्णनकेँ मानैत छथि तेँ दोसर वर्ग एकर विपरीत । प्रथमवर्गमे उल्लेखनीय विद्वान छथि— भामह, मम्मट, हेमचन्द्र एवं जगन्नाथ तथा द्वितीय वर्गमे- उद्भट, रुद्रट, रुय्यक, विश्वनाथ, विद्यानाथ, भूषण एवं पद्माकर ।[330]

प० सीताराम झाक अनुसार जँ उपमान वा उपमेयमेसँ कोनो एकक आधिक्य वर्णन हो तँ व्यतिरेक अलंकार होइत अछि ।[331] प० दामोदर झाक परिभाषा उक्त परिभाषाक तुल्ये अछि किन्तु ई एकर चारि भेद सेहो मानैत छथि ।[332] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' उपमेयक उपमानसँ उत्कर्षक वर्णनमे व्यतिरेक मानैत छथि ।[333] ई एकर कोनो भेदक चर्चा नहि कयने छथि ।

व्यतिरेक अलंकारमे सामान्यतः उपमेयसँ अधिक गुणवला उपमान रहैत अछि, किन्तु वर्ण्यक अतिशयताक कारण उपमान न्यून भए जाइत अछि । अतः कविकेँ अपन उपमेयकेँ श्रेष्ठ सि□ करबा लेल विवश होमय पड़ैत छनि ।

व्यतिरेक अलंकारक भेदोपभेदकेँ लए कए सेहो विद्वानलोकनिमे मतभेद छनि । भामह व्यतिरेकक कोनो भेद नहि मानैत छथि । दण्डी एकर पाँच भेदक सविस्तर वर्णन कयलनि अछि, जे थिक— 1. व्यतिरेक, 2. उभय व्यतिरेक, 3. सश्लेष व्यतिरेक, 4. सदृश व्यतिरेक एवं 5. सजाति व्यतिरेक ।[334] भोज एकर 16 भेद कयने छथि ।[335] मम्मट 24,[336] एवं विश्वनाथ 48[337] । हिन्दी एवं मैथिलीक आलंकारिक लोकनि एकर मात्र चारि भेद मानैत छथि—[338] 1. प्रथम व्यतिरेक, 2. द्वितीय व्यतिरेक, 3. तृतीय व्यतिरेक एवं 4. चतुर्थ व्यतिरेक ।

1. **प्रथम व्यतिरेक**— जतय उपमेयक उत्कर्ष एवं उपमानक अपकर्ष वर्णनमे कारण कथित रहय—

1. **माए-बाप-गुरु सेवामे आसक्त ।**
मूर्खो नीक, न पुनि बुध ततए विरक्त ॥[339]

2. **कृष्णपक्षमे घटल कलंकित चन्द्र तमोग्रहशंकी ।**
हरिदल-हर्ष-बढ़ल भूपक मुख तिमिर वैरि अकलंकी ॥[340]

2. **द्वितीय व्यतिरेक**— जतय उपमेयक उत्कर्ष-वर्णन सकारण हो—

भोजन-निद्रा-भय-विलास पशु-नरमे तुल्ये ।
ज्ञान-धर्मसँ भेद मनुजमे, मान तकर छै ॥[341]

3. **तृतीय व्यतिरेक**— जतय उपमानक अपकर्ष वर्णन सकारण रहय—

कह रघुवर विधुविम्ब निहारि, कत विधु कतय विदेह कुमारि ।
तनि मुख समता शशि की पाब, प्रति तिथि व्यथित अतिथि बनि आब ॥[342]

एतय उपमान चन्द्रमाक अपकर्षक वर्णन सकारण भेल अछि ।

4. **चतुर्थ व्यतिरेक**— जतय उपमेयक उत्कर्ष एवं उपमानक अपकर्षक कारण नहि कहल जाय—

(क) **सुनितहि वाणी तनिक गुणिक वीणाधुनि उसरल,**
कलकण्ठी मधु-मध्य पंचमस्वरकेँ बिसरल ।
तेजल सुर-गन्धर्ववधू संगीतक ममता,
आनक सम्भव कोन करत जे कनिओ समता ॥[343]

एतय उपमेय वाणीकेँ श्रेष्ठ कहल गेल अछि आ ओकर आगूमे वीणाक धुनि, वसन्तमे कोइलीक गान, अप्सरा लोकनिक संगीत आ अन्य सभ उपमान न्यून अछि, किन्तु उपमेयकेँ श्रेष्ठ होयबाक वा उपमानक न्यून होएबाक कारण नहि कहल गेल अछि, तेँ चतुर्थ व्यतिरेक भेल ।

(ख) **तनि पद समता वारिज कहब, असमंजस अपयश जन सहब ॥**[344]

21. सहोक्ति

सहोक्ति अलंकार व्याकरणक आधारपर बनल अछि । सह, साकम्, सार्ध्वम्, समम् इत्यादिक योगमे तृतीया विभक्ति होइत अछि जकर अर्थ होइछ संग । एहिमे एक अर्थ रहैत अछि प्रधान आ दोसर गौण, किन्तु दुनूक हेतु एकहि क्रियापदक प्रयोग होइत अछि । विभिन्न आलंकारिक एकरा भिन्न-भिन्न ढंगेँ परिभाषित कयलनि अछि । उपमान एवं उपमेयमे एकक प्रधानता रहलापर, दोसरकेँ सहार्थसँ सम्बन्ध रहने सहोक्ति अलंकार

होइत अछि ।[345] मम्मटक अनुसार एकार्थवाचक भेलहु पर जतय सहार्थक बलपर दुनूक वाचक होइत अछि ओतय सहोक्तिक क्षेत्रक होइत अछि ।[346] अप्पय दीक्षित सहभावक संग जनरंजनकेँ अनिवार्य माननलनि अछि ।[347] रुय्यक एवं विश्वनाथक अनुसार सहोक्तिमे सह, संग आदि शब्दक द्वारा एक पदक अनेक अर्थ होइत अछि, किन्तु ओहिमे वर्णित समकालिकतामे कारण कार्य विपर्यय रूप अतिशयोक्ति रहैत अछि ।[348] पण्डितराज जगन्नाथ एहि मतक खण्डन करैत छथि ।[349]

सहोक्तिक भेदोपभेदकेँ लए कए सेहो विद्वानलोकनिमे मतैक्य नहि छनि । रुय्यक[350] भोज,[351] आदि आलांकारिक लोकनि एकर अनेक भेदोपभेदक चर्चा कयने छथि, किन्तु बादमे आबिकय आलंकारिक लोकनि एकर भेदोपभेदक झंझटमे नहि पड़लाह ।

प० सीताराम झाक अनुसार यदि मनोहर शब्दक द्वारा कोनो एक वस्तुक संग दोसरक क्रिया आदिक वर्णन हो तँ सहोक्ति कहबैत अछि ।[352] प० दामोदर झा अतिशयोक्तिक संग कथनमे सहोक्ति मानैत छथि ।[353] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' सह भावक वर्णनसँ सहोक्ति मानैत छथि ।[354]

उदाहरण :

1. **संगहि दिग्वृन्दक तन्निमित्त, जीवक भए गेल प्रसन्न चित्त ।**
ओ अनिल-सहित नीरज विकास, पुनि उज्ज्वल अनल-समेत भास ॥[355]

2. **तरुणगणक उल्लासक संगहिँ, बाढ़ल रजनी क्रमसँ ।**
क्षीण भेल पुनि नलिन सहित दिन, हिम-□तु वर विक्रमसँ ॥[356]

3. **कुमुद-समेत दशो दिशा, विकसित शशिक इजोर ।**
जन-लोचन-संगहिँ तथा, प्रमुदित भेल चकोर ॥[357]

22. विनोक्ति

विनोक्ति अलंकारक उद्भावक आचार्य मम्मट छथि । हिनका अनुसारेँ यदि कोनो वस्तु कोनहुँ दोसर वस्तुक बिना शोभनीय वा अशोभनीय लागय तँ विनोक्ति अलंकार होइत अछि ।[358] विश्वनाथ सेहो एकरा स्वीकार करैत छथि ।[359]

प० सीताराम झा विनोक्तिक दू प्रकार मानलनि अछि— शोभनीय एवं अशोभनीय । अर्थात् यदि कोनो वस्तु बिना वर्णनीयमे न्यूनता वा उत्कर्षता बुझल जाए तँ विनोक्ति होइत अछि ।[360] प० दामोदर झा[361] एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[362]क परिभाषा सेहो उक्त परिभाषा तुल्ये अछि ।

1. शोभनीय विनोक्ति–

(क) **आओरो जे छल समुचित स्वागत कृत्य ।**
बिनु कहनहुँ से भूपक कयलक भृत्य ।।[363]

(ख) **अहँ अबितहिँ शुचि मास लगाबी □णमे निज पण,**
दश दिन धरि पुनि करी संकलन बिततहिँ अगहन ।
बिनु व्याजहिँ अहँ विपद सहायक थिकहुँ महाजन,
जलद, तखन के कहत अहाँकेँ थिकहुँ अचेतन ?[364]

2. अशोभनीय विनोक्ति–

दिनमणि बिनु दिन शशि बिनु राति । हरि बिनु ब्रज तीनू एक भाँति ।।[365]

23. अर्थान्तरन्यास

अर्थान्तरन्यासमे दू प्रकारक वाक्य होइत अछि– एकटा सामान्यपरक एवं दोसर विशेषपरक । एहिमे सामान्यसँ विशेषकेँ वा विशेषसँ सामान्यकेँ समर्थन कयल जाइत अछि ।[366] आचार्य विश्वनाथ एकरा आओर व्यापक बनबैत कहलनि जे ई समर्थन साधर्म्य एवं वैधर्म्य दुनूक द्वारा भए सकैत अछि, कार्यकेँ कारणसँ एवं कारणकेँ कार्यसँ ।[367] किछु विद्वान् कारणकेँ कार्यसँ अथवा कार्यकेँ कारणसँ समर्थनमे काव्यलिंग मानैत छथि, किन्तु विश्वनाथ ओकरा खण्डित करैत कहैत छथि जे हेतु तीन प्रकारक होइत अछि– ज्ञापक, निष्पादक एवं समर्थक । जतय ज्ञापक होइत अछि ओतय अनुमान अलंकार, जतय निष्पादक होइत अछि ओतय काव्यलिंग अलंकार एवं जतय समर्थक होइत अछि ओतय अर्थान्तरन्यास अलंकार बुझबाक थिक ।[368] यद्यपि परवर्त्ती आचार्यलोकनिकेँ ई मत मान्य नहि छनि ।

मैथिलीक आलंकारिक लोकनिमे प० सीताराम झा एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' सामान्यसँ विशेषकेँ एवं विशेषसँ सामान्यक समर्थनकेँ अर्थान्तरन्यास अलंकार मानैत छथि ।[369] ई लोकनि एकर कोनो भेदोपभेद नहि करैत छथि, किन्तु प० दामोदर झा एहि परिभाषाकेँ आओर व्यापक बनओलनि । ई हुनकालोकनिक परिभाषामे किछु विशेष गप्प जोड़ि देलनि जे एहिमे कारणसँ कार्यक एवं कार्यसँ कारणक सेहो समर्थन साधर्म्य वा वैधर्म्य द्वारा भए सकैत अछि । एहि तरहेँ ई एकर आठ भेद बनओलनि ।[370]

अर्थान्तरन्यास अलंकारक प्रमुख चारि भेद सर्वमान्य अछि, जे थिक–

1. सामान्यक विशेषसँ साधर्म्य द्वारा समर्थन ।
2. सामान्यक विशेषसँ वैधर्म्य द्वारा समर्थन ।

3. विशेषक सामान्यसँ साधर्म्य द्वारा समर्थन ।
4. विशेषक सामान्यसँ वैधर्म्य द्वारा समर्थन ।

अर्थातरन्यास अलंकारक उदाहरणसँ आधुनिक मैथिली काव्य भरल पड़ल अछि । किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक–

1. सामान्यक विशेषसँ साधर्म्य द्वारा समर्थन–

नहि रोकल गुरुजन भए विरु□, भवितव्यक गति की कतहु रु□ ?
विधि इच्छहिँ जीवक चित्तवृत्ति, पाबए प्रवृत्ति अथवा निवृत्ति ।।[371]

'एतय भवितव्यक गति की कतहु रु□' सामान्य वाक्य थिक जकर समर्थन विशेष वाक्य ब्रह्मेक इच्छासँ जीवक चित्तवृत्ति प्रवृत्ति वा निवृत्ति पबैत अछि, द्वारा कयल गेल अछि । दुनूक समान धर्म एके थिक जे भवितव्य हयबेटा करत ।

2. सामान्यक विशेषसँ वैधर्म्य द्वारा समर्थन–

जीवनमुक्त थिकथि हनुमान, की करत तनिका बन्धन आन ।[372]

एतय प्रथम चरण सामान्य वाक्य थिक जकर समर्थन निषेधात्मक विशेष वाक्यसँ भेल अछि ।

3. विशेषक सामान्यसँ साधर्म्य द्वारा समर्थन–

1. **से सुनितहिँ उपजल हृदय-कम्प, तेँ विकल बाल लए चलल चम्प ।**
राखल ताही थल त्वरित जाए, भय योगहिँ लोलुपता पड़ाए ।।[373]

एतय चम्प अनिष्टक डरेँ ओहि बालक (एकवीर)केँ ओही स्थलपर राखि देलक विशेष वाक्य थिक जकर समर्थन सामान्य वाक्य– **भय योगहिँ लोलुपता पड़ाए**सँ कयल गेल अछि । दुनूक साधारण धर्म एके थिक जे (भय) डरसँ लोभ भागि जाइत अछि ।

2. **रुचिर कलेवर रहओ, यदि न पुनि सरुचि सजाओल जाय ।।**
बिनु खराज चढ़ने मणि-रत्न न महज सहज द्युतिदाय ।।[374]

3. **कतबहु कहथि, नीच कीचक उर असर न होइछ दृष्ट ।**
सुनय न हित उपदेश सुहृदहुक बिगड़ल जकर अदृष्ट ।।[375]

4. विशेषक सामान्यसँ वैधर्म्य द्वारा समर्थन–

देवारि मदन-शर-दलित-चित्त, एकावलि अनुकूलन-निमित्त ।
सत्वर सुनाए देलनि निदेश, औत्सुक्य सहय न बिलम्ब लेश ।।[376]

एतय कालकेतु कामवाणसँ पीड़ित भए एकावलीकेँ अनुकूल होयबाक निर्देश सुनाए देलकनि— विशेष वाक्य थिक जकर समर्थन सामान्य वाक्य— 'औत्सुक्य सहय न बिलम्ब लेश'सँ कयल गेल अछि, जे निषेधाात्मक वाक्य थिक । अत: विशेषक सामान्यसँ वैधर्म्य द्वारा समर्थन भेल ।

24. विकस्वर

विकस्वर अलंकारक उद्‌भावनाक श्रेय छनि आचार्य जयदेवकेँ । हुनका अनुसारेँ विशेष अर्थक पुष्टिक हेतु सामान्य अर्थ आ पुन: ओकरा विशेष अर्थसँ सम्पुष्ट कयल जाय तँ विकस्वर अलंकार होइत अछि ।[377] हिनक परिभाषाकेँ परिवर्त्ती आचार्य लोकनि स्वीकार कय लेलनि ।[378]

उदाहरण :

1. **घर लाग सून, गुनि पिण्ड-बाध, दम्पतिक आधि मन हो अगाध ।**
   तनयक विनु निष्फल सकल राज्य, जनि हुतवह-विनु हुत बहुत आज्य ॥[379]

एतय पूर्वा□क दुनू चरण विशेष वाक्य थिक जकर समर्थन सामान्य वाक्य द्वारा कयल गेल अछि जे पुत्रक बिना समस्त राज्य निष्फल थिक आ पुन: एकर समर्थन विशेष उपमान वाक्य द्वारा कयल गेल अछि ।

2. **ब्रह्म विष्णु रामक अवतार, के गुण कहत हुनक विस्तार ।**
   वेद न पाबथि कहियत पार, जनिकर सिरजल थिक संसार ॥[380]

25. निश्चय

निश्चय अलंकारक सर्वप्रथम उल्लेख विश्वनाथ कयलनि । हिनका अनुसारेँ उपमानक निषेध कए उपमेयक स्थापना करब निश्चय अलंकार थिक ।[381] अपह्नुतिक विपरीत ई अलंकार थिक । जतय अपह्नुतिमे उपमेयक निषेध कय उपमानक स्थापना होइत छल ओतय निश्चयमे उपमानक निषेध कय उपमेयक स्थापना होइत अछि । एकरा निश्चयान्त सन्देहसँ एहि तरहेँ पृथक् कए सकैत छी जे निश्चयान्त सन्देहमे निश्चय एवं सन्देह एकहिमे रहैत छैक आ एहिमे दुनू पृथक्-पृथक् ।

प० सीताराम झा एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' निश्चय अलंकारक उल्लेख नहि कयलनि अछि । प० दामोदर झा विश्वनाथेक परिभाषाकेँ स्वीकार कए लेलनि ।[382]

उदाहरण :

बानर रूप धयल दशकण्ठ, हमरा मोहय कारण चण्ठ ।
मानिय हमरा जननि न आन, हम रघुपतिक दास हनुमान ॥[383]

एतय हुनमानजीकेँ देखि सीताकेँ रावणक सन्देह भए जाइत छनि, किन्तु हनुमान ई कहि— 'जे हमरा आन नहि बुझू, हम रामक दास हनुमान छी'— सीताकेँ विश्वास दियबैत छथि ।

एतय आन उपमान थिक, जकर निषेध कय उपमेय रामदास हनुमानक स्थापना कयल गेल अछि ।

उदाहरण

उदाहरण अलंकारक चर्चा संस्कृतक प्रसि□ आलंकारिक लोकनि नहि कयलनि अछि । आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्माक अनुसार यदि कोनो गप्प कहि कय ओकर स्पष्टीकरणक हेतु ओहने दोसर गप्प कहल जाय तँ उदाहरण अलंकार होइत अछि ।[384] प० सीताराम झा एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' एकर चर्चो नहि कयलनि । प० दामोदर झाक अनुसार यदि सामान्य एवं विशेष वाक्यमे अंगांगीभावक कथन रहय तँ उदाहरण अलंकार होइत अछि ।[385]

उदाहरण :

1. **भेल अनेक वचन उच्चार । जनु पटु वटु रटु श्रुति स्वर सार ।**[386]

एतय राम अपन विरह-दशाक वर्णन कए रहल छथि जकरा ओहने कथनसँ सम्पुष्ट कयल गेल अछि जेना निपुण बालक सस्वर वेदपाठ करैत होथि ।

2. **उच्चासन आसीनो खल नर, भए सकैछ नहि गुणिवर ।**
   जहिना तारक तरुपर रहने, काक न कहबय हंस बराबर ॥[387]

27. असम

असम अलंकारक सर्वप्रथम उल्लेख कयनिहार छथि पण्डितराज जगन्नाथ । हिनका अनुसारेँ उपमानक सर्वथा निषेध असम अलंकार थिक ।[388] हिनक पूर्ववर्त्ती आचार्य लोकनि असम अलंकारकेँ उपमा वा व्यतिरेकमे अन्तर्भुक्त कए देलनि, किन्तु जगन्नाथ एकरा स्वतन्त्र अलंकार घोषित कयलनि ।

मैथिलीक आलंकारिक लोकनिमे केवल प० दामोदर झा एहि अलंकारक विवेचन कयने छथि । इहो शब्दान्तरेँ जगन्नाथेक परिभाषाकेँ मानि लैत छथि ।[389]

उदाहरण :

1. **अछि अहँक पाठशाला सुबोध, कण-कणसँ दर्शन-तत्त्व बोध**
   लय पाठ एतय ने होथि मुक्त, के एहन जीव छथि जगत युक्त ।
   अध्यापक दोसर एहन आन, कहु के अछि जगमे, हे श्मशान ॥[390]

एतय श्मशानकेँ सर्वोपरि कहलनि अछि जे अहाँ सन शिक्षक केओ नहि अछि।

2. **केअओ रिपु रहत न समर थीर, तनि नाम धरब तेँ एकवीर।**
परिहरि प्रजाक ओ दुःख-पाँक, निर्मल विस्तारत यश अहाँक॥[391]

संदर्भ :

1. (क) यथावसरप्राप्तेष्वर्थालंकारेषु प्राधान्यात्सादृश्यमूलेषु लक्षितव्येषु तेषामप्युपजीव्यत्वेन प्रथममुपमामाह ॥ —विश्वनाथ : साहित्यदर्पण, पृ. 292

(ख) उपमैवानेकप्रकारवैचित्र्येणानेकालंकारबीजभूतेति प्रथमं निर्दिष्टा।

—रुय्यक : अलंकारसर्वस्व, पृ. 40

(ग) तत्र प्रथममनेकालंकारबीजभूतत्वादुपमा निरूप्यते। —विद्यानाथ : प्रतापरुद्रीय, पृ. 35-1

2. (क) विरु□नोपमानेन देशकालक्रियादिभिः।
उपमेयस्य यत् साम्यं गुणलेशेव सोपमा॥ —भामह

(ख) वस्तुनः केनचित् साम्यं तदुत्कर्षवतोपमा। —कुंतक

(ग) साधर्म्यमुपमा भेदे। —मम्मट

(घ) साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक उपमाद्वयोः। —विश्वनाथ

(ङ) तुलना एकक धर्मसौं, आनक हो जहिठाम।
ताहि अलंकारक कहथि, कविजन उपमा नाम॥

—प.सीताराम झा : अलंकार-दर्पण, पृ.1

(च) उपमेयक उपमान सङ समता उपमा उक्त।

—प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अलंकार-मालिका, सू० 1

3. उपमैका शैलूषी संप्राप्ता चित्रभूमिकाभेदान्।
र□जयति काव्यरंगे नृत्यन्ति नद्विदां चेतः॥
तदिदं चित्रं विश्वं ब्रह्मज्ञानादिवोपमाज्ञानात्।
ज्ञातं भवतीत्यादौ निरूप्यते निखिलभेदसहिता सा॥ —चित्र मीमांसा, पृ. 5

4. प्रतिवस्तुप्रभृतिरुपमाप्रपंचः। —वामन : काव्यालंकार सूत्र, 4-3-1

5. उपमाप्रपंचस्य सर्वोलंकारः इति विद्वद्भिः प्रतिपन्नमेव। —अभिनवगुप्त : अभिनव भारती

6. सम्यक् प्रतिपादयितुं स्वरूपतो वस्तु तत्समानमिति वस्त्वन्तरमभिद्यादवक्ता यस्मिस्तदौपापम्।

—रुद्रट : काव्यालंकार, 8-1

7. It is a sort of lexicon of vernacular and Sanskrit terms, a repository of literary similies and conventions dealing with the various things in the world and ideas which are usually treated in poetry. We have in it either bare lists of terms, or the similies and conventions are set in the frame-work of a number of descriptions. –Varnaratnakara : page 21.

8. काव्यादर्श : दण्डी, द्वितीय परिच्छेद, श्लोक- 14-48

9. क्वचित् स्ववैचित्र्यमात्रविश्रान्ता..........क्वचिदुक्तार्थोपपादनपरा..........क्वचिद्व्यंग्यप्रधाना सा व्यंग्यवस्त्वलंकाररसरूपतया त्रैविध्यास्ति विधा। —अप्पयदीक्षित : चित्रमीमांसा, पृ. 28

10. उपमा ओ उपमेय, वाचक, धर्म समान ई।
चारि विषय अछि ध्येय, नित उपमालंकारमे॥ —प० सीताराम झा : अलंकार-दर्पण, पृ. 1

11. उपमा ओ उपमेय पुनि, वाचक, धर्म समान।
उक्त जतय चारू ततय, पूर्णोपमा प्रमाण॥ —ऐजन, पृ. 2

12. लुप्त एक, दुइ, तीन वा उपमादिक जहिठाम।
विविध भाँति लुप्तोपमा, अलंकार तहिठाम॥ —ऐजन, पृ. 4

13. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-51

14. वैह, पृ. 1-52

15. दीनानाथ पाठक 'बन्धु' : चाणक्य, पृ. 1

16. सरसकवि ईशनाथ झा : शकुन्तला-नाटक, पृ. 1-14

17. डा० श्रीकृष्ण मिश्र : मेरुप्रभा, पृ. 14

18. प्रो. रमण झा : मिथिला मिहिर, पृ. 19-25, जून 1983

19. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 2-16

20. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : उत्तरा, पृ. 15

21. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : बालकाण्ड, पृ. 36

22. वैह, सुन्दरकाण्ड, पृ. 180

23. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 2-27

24. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : किष्किन्धाकाण्ड, पृ. 153

25. वैह, सुन्दरकाण्ड, पृ. 180

26. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 4-97

27. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, पृ. 19-25, जून 83

28. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : बालकाण्ड, पृ. 42

29. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : उत्तरा, पृ. 15

30. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 4-101

31. वैह, 8-59

32. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : सुन्दरकाण्ड, पृ. 103

33. सुमति-कृत-तुलसीभूषण, पृ. 44

34. हीनस्ता सम्भवो लिंगविचोभेदो विपर्ययः । उपमानाधिक्यं च तेनादशतापि च ।।
त एत उपमादोषाः सप्त मेधाविनोदिताः । सोदाहरणलक्ष्माणौ वर्ण्यन्तत्र च ते पृथक् ।।
—काव्यालंकार, द्वितीय परिच्छेद, पृ. 39-40 श्लोक

35. अथास्याश्चमत्कारस्यापर्षकं यावत्सर्वमपि दोषः
कविसमयप्रसि□साहित्यम् उपमानोपमेययोः योजयित्वा
प्रमाणेन लिंगसंख्याभ्यां चानुनरूप्यं बिम्बप्रतिबिम्बभावे
धर्माणामुपमानोपमेयगतानां न्यूनाधिकत्वम्
अनुगमितायामनुपपद्यमानकालपुरुषविद्याद्यर्थकत्वम् एवमादि ।। —रसगंगाधर : द्वितीयमाननम्

36. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 2-33

37. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : लंकाकाण्ड, पृ. 234

38. क+ख. वैह, बालकाण्ड, पृ. 15

39. वैह, पृ. 46

40. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली परिणय, पृ. 10-78

41. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा-रामायण : लंकाकाण्ड, पृ. 234

42. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 4-42

43. न लिंगवचने भिन्ने न हीनाधिकतापि वा ।
उपमादूषणायालं यत्रोद्वेगो न धीमताम् ।। —काव्यादर्श, द्वितीय परिच्छेद- 52

44. पर्यायेण द्वयोरेनदुपमेयोपमा मता । — साहित्यदर्पण, पृ. 303

45. उपमानोपमेयत्वं यत्र पर्यायतो भवेत् ।
उपमेयोपमां नाम ब्रुवते ते यथोदितम् ।। —भामहालंकार, 3-37

46. तृतीयसादृश्यव्यवच्छेदं बु□फलकवर्णनविषयीभूतं परस्परमुपमानोपमेयभावापन्नयोरर्थयोः
सादृश्यमुपमेयोपमा । —रसगंगाधर

47. तवाननमिवाम्भोजमिव ते मुखम् इत्यन्योन्योपमा सेयमन्योत्कर्षशंसिनी ।। —काव्यादर्श, 9-9

48. वस्त्वन्तरमस्त्यनयोर्न सममिति परस्परस्य भवेत् ।
उभयोरुपमानत्वं सक्रममुभयोपमा सान्या । —काव्यालंकार, 8-9

49. उपमानक उपमेय पुनि, उपमेयक उपमान ।
उपमा हो तौँ कवि कथित, उपमेयोपम मान ।। —प० सीताराम झा : अलंकार दर्पण, पृ.6

50. पूर्व जकर उपमान छल, तकरे पुनि उपमेय ।
कहबय उपमेयोपमा फल तेसर सम हेय ।।
—पं० दामोदर झा : अलंकार कमलाकर, पृ. 15

51. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय

52. प्रो० रमण झा : अलंकार-भास्कर

53. कथिता रशनोपमा यथो□विमुपमेयस्य यदि स्यादुपमानता । —विश्वनाथ : साहित्यदर्पण

54. क्रमशः जे उपमेय से, उपमाने बनि जाए ।
ई कविकुल व्यवहारमे, रशनोपमा कहाए ।। —प० दामोदर झा : अलंकार कमलाकर, पृ.14

55. पूर्व-पूर्व उपमेय यदि, क्रमहि बनथि उपमान ।
जुड़ि-जुड़ि कांची-दाम जनु, रशनोपमा प्रमान ।।
—प्रो०सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अलंकार मालिका, पृ.7

56. कविता संग्रह : मैथिली अकादमी, पृ. 42

57. वैह, पृ. 143

58. मालोपमा यदेकस्योपमानं बहु दृश्यते । —विश्वनाथ : साहित्यदर्पण

59. जतय एक उपमेयमे हो अनेक उपमान ।
ततय जानु कविजन-कथित, मालोपमा प्रमाण ।।
—प० सीताराम झा : अलंकार दर्पण, पृ. 5

60. एकेटा उपमेयकेँ, जँ अनेक उपमान ।
से कहबय मालोपमा, ई कविकुलक विधान ।।
—प० दामोदर झा : अलंकार कमलाकर, पृ. 14

61. उपमा विविध विधानसँ, ग्रथित ललित यदि ह्वैछ ।
नाम तकर मालोपमा, कविगण उचित कहैछ ।।
—प्रो०सुरेन्द्र झा 'सुमन', अलंकार मालिका, सू. 5

62. डा० श्रीकृष्ण मिश्र : मेरुप्रभा, पृ. 8

63. प्रो० तन्त्रनाथ झा : कीचक वध, पृ. 89

64. दीनानाथ पाठक 'बन्धु' : चाणक्य, प्रथम सर्ग, पृ. 1

65. प्रो० रमण झा : मिथिला मिहिर, पृ. 19-25, जून 1983

66. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 1-82

67. एकस्योपमेयोपमानत्वेनान्वयः । —वामन : काव्यालंकार सूत्र, 4-3-14

68. वैह, —रुय्यक : अलंकार सर्वस्व, सूत्र- 12

69. उपमानोपमेयत्वे यत्रैकस्यैव जाग्रतः ।—जयदेव : चन्द्रालोक, 5-12

70. उपमानोपमेयत्वम् एकस्यैव त्वनन्वयः । —विश्वनाथ : साहित्यदर्पण, 10-6

71. यत्र तेनैव तस्य स्यादुपमानोपमेयता
असादृश्यविवक्षातस्तमित्याहुरनन्वयम् । —भामह काव्यालंकार, 3-45

72. यत्र तेनैव तस्य स्यादुपमानोपमेयता
असादृश्यविवक्षातस्तमित्याहुरनन्वयम् । —उद्‌भट : काव्यालंकार सार संग्रह, 6-4

73. द्वितीयसादृशविवच्छेदफलकवर्णनविषयीभूतं यदेकोपमानोपमेयकं सादृश्यं तदनन्वयः ।
—रसगंगाधर

74. उपमेये उपमान पुनि, होइत अछि जहिठाम ।
ततय अलंकारक कहथि, सुकवि अनन्वय नाम ।।
—प० सीताराम झा : अलंकार दर्पण, पृ. 6

75. वैह, पृ. 6

76. उपमेये उपमान भए, जँ रमणीय रहैछ ।
उपमानान्य निषेध फल, ततय अनन्वय ह्वैछ ।।
—प० दामोदर झा : अलंकार कमलाकर, पृ. 15

77. प० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' : आशा-दिशा, पृ. 11

78. प० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' : आशा-दिशा, पृ. 12

79. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : लंकाकाण्ड, पृ. 250

80. प्रो० तन्त्रनाथ झा

81. प्रो० रमण झा : मिथिला मिहिर, 19-25, जून 1983

82. सदृशानुभवाद् वस्त्वन्तरस्मृतिः स्मरणम् । —रुय्यक : अलंकार सर्वस्व, सूत्र- 14

83. वस्तुविशेषं दृष्ट्वा प्रतिपत्ता स्मरति यत्र तत्सादृश्यम् ।
कालान्तरानुभूतं वस्त्वन्तरमित्यदः स्मरणम् ।। —काव्यालंकार, 8-109

84. यथानुभवमर्थस्य दृष्टे तत्सदृशम् स्मृतिः । —मम्मट : काव्यप्रकाश

85. सदृशानुभवात् स्मरणे स्मृतिः । —शोभाकर : अलंकार शेखर

86. सदृशानुभवाद्वस्तु स्मृतिः स्मरणमुच्यते । —विश्वनाथ : साहित्यदर्पण

87. सदृशे सदृशानुभवाद्यत्र स्मर्येत तत् स्मरणम् । —विद्याधर : एकावली

88. सदृशानुभवादन्यस्मृतिः स्मरणमुच्यते । —विद्यानाथ : प्रतापरुद्रीय

89. राघवानन्दमहापात्रस्तु वैसादृश्यात्स्मृतिमपि स्मरणालंकारमिच्छन्ति ।
—विश्वनाथ : साहित्यदर्पण, पृ. 303

90. (क) यदि एकक गुन रूपसँ, मन पड़ि आबै आन ।
स्मरण नाम अभरण ततै, मानथि सब मतिमान ।।
—प०सीताराम झा : अलंकार-दर्पण, पृ.14

(ख) उपमानक प्रत्यक्षसँ उपमेयक स्मृति जानि ।
स्मरणालंकृति से तखन बुध-जन कहथि बखानि ।।
—प० दामोदर झा : अलंकार-कमलाकर, पृ. 16

(ग) सदृश अनुभवेँ वस्तुकेर स्मरण रुचिर स्मृति जान ।
—प्रो० 'सुमन', अलंकार-मालिका, सूत्र- 24

91. मिथिलाभाषा रामायण : सुन्दर काण्ड, पृ. 166

92. वैह, पृ. 167

93. वैह, पृ. 212

94. वैह, लंकाकाण्ड, पृ. 214

95. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 9-14

96. (क) तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः । —मम्मट : काव्यप्रकाश, 10-130
(ख) अभेदप्राधान्ये आरोपे आरोपविषयानपह्नवे रूपकम् ।
—रुय्यक : अलंकार सर्वस्व, सू. 15
(ग) यत्र गुणानां साम्ये सत्युपमानोपमेययोरभिदा ।
अविवक्षितसामान्या कल्प्यत इति रूपकं प्रथमम् । —रुद्रट : काव्यालंकार, 8-38
(घ) रूपकं रूपितारोपि विषये निरपह्नवे । —विश्वनाथ : साहित्य दर्पण, 10-27 बादक

97. (क) उपर्युक्त मम्मटक कथन द्रष्टव्य ।
(ख) सादृश्ये भेदेनारोपो रूपकमेकानेकविषयम् । —काव्यानुशासन, 6-5
(ग) अप्पय दीक्षित द्वारा ताद्रूप्य प्रतीतिक खण्डन, द्रष्टव्य —चित्रमीमांसा, पृ. 22 सँ 56

98. उपमैव तिरोभूतभेदा रूपकमुच्यते । —काव्यादर्श, 2-66

99. समस्तवस्तुविषयमेकदेशविवर्ति च ।
द्विधा रूपकमुद्दिष्टमेतच्चोच्यते यथा । —भामह : काव्यालंकार, 2-22

100. काव्यादर्श- 2-66-295

101. ताम्रांगुलिदलश्रेणि नखदीधितिकेसरम् ।
ध्रियते मूर्ध्नि भूपाले भवच्चरणपंकजम् ।।
अंगुल्यादौ दलादित्वं पारे चारोप्य पद्मताम् ।
तद्योग्यस्थानविन्यासादेतत् सकलरूपकम् ।। — काव्यदर्श, 2-69-70

102. समस्तवस्तुविषयं मालारूपकमुच्यते । —उद्‌भट, 1-25

103. उपमानक उपमेयमे, तद्रूपत्व अभेद ।
हो आरोपन तोँ दुनू, जानू रूपक भेद ।।

से पुनि तीनि प्रकार अछि, अधिक, न्यून, सम मानि ।
कहल सुकवि सब भेद हो, काव्यमर्मकेँ जानि ।।

प० सीताराम झा, अलंकार दर्पण, पृ. 9

104. अलंकार-कमलाकर, पृ. 16सँ 19 धरि लक्षण मात्र

105. जँ कदापि उपमेयमे, अधिक विशेष बुझाए ।
अधिकारूढ़ विशेष से, रूपक माझ कहाए ।। — अलंकार-कमलाकर, पृ. 20

106. उपमेयक उपमानमे, तद्रूपता अभेद ।
अधिक न्यून समगम तिनू, रूपक छओ विभेद ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 17

107. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 2-52

108. वैह, पृ. 2-22

109. वैह, पृ. 8-80

110. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : अरण्यकाण्ड, पृ. 143

111. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 8-24

112. वैह, पृ. 13-32

113. अलंकार कौस्तुभ, पृ. 216

114. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अर्चना, पृ. 9

115. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 3-8

116. वैह, 2-38

117. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अर्चना, पृ. 13

118. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 8-88

119. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अर्चना, पृ. 25

120. डा० श्रीकृष्ण मिश्र : मेरुप्रभा, पृ. 36

121. वैह, पृ. 35

122. वैह

123. आरोप्यमाणस्य प्रकृतोपयोगित्वे परिणामः । —अलंकार सर्वस्व, सूत्र- 16

124. प्रकृतं मुखादि तत्रोपयोगित्वं वाक्यर्थानप्रवेशपर्यन्तमारोपण विवक्षायां स्यात् ति□ रूपके नास्ति मुखमेव चन्द्र इत्येतावतैव रूपकत्वसि□ः । तस्मादारोप्यमाणं चन्द्रत्वादि मुखादौ प्रकृतार्थे ताद्रूप्ये प्रतीत्याधानरूपेणोपरंजकत्वेनैव रूपकालंकारोन्वयं भजते ।

—विद्याचक्रवर्त्तिन् : अलंकार-सर्वस्व-संजीवनी, पृ. 61

125. प्रकृतोपयोगित्वे परिणामः । —अलंकार रत्नाकर, सूत्र- 28

126. विषयात्मतयारोप्ये प्रकृतार्थोपयोगिनि ।
परिणामो भवेत्तुल्यातुल्याधिकरणो द्विधा ।। —विश्वनाथ : साहित्य दर्पण, 10-34

127. यत्रारोपविषयः प्रकृतकार्यसि□्यर्थमारोप्यमाणात्मतया परिणमति तत्र यथार्थाभिधानः परिणामः ।
—एकावली

128. परिणामः क्रियार्थश्चेद्विषयी विषयात्मना । —अप्पय दीक्षित : कुवलयानन्द, 6-21

129. विषयी यत्र विषयात्मतयैव प्रकृतोपयोगी न स्वातन्त्र्येण, स परिणामः । —रसगंगाधर

130. उपमेयक उपमानमे आरोपन जाहिठाम । वर्णित उपमेयक क्रिया, तोँ जानू परिणाम ।
—अलंकार दर्पण, पृ. 12

131. विषय रूप विषयी फलित अलंकार परिणाम । —अलंकार मालिका, सूत्र- 21

132. अलंकार कमलाकर, पृ. 21-22

133. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 3-81

134. वैह, 6-5

135. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अर्चना, पृ. 45

136. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-48

137. वैह, 14-91

138. दीनानाथ पाठक 'बन्धु' : चाणक्य, पृ. 25

139. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-70

140. संदेह : प्रकृतेन्यस्य संशयः प्रतिभोत्थितः । —साहित्यदर्पण, पृ. 10-35

141. किं पद्ममन्तभ्रान्तालि किं ते लोलक्षणं मुखम् ।
मम दोलायते चित्तमितीयं संशयोपमा ।। —काव्यादर्श, 2-26

142. न पद्मस्येन्दुनिर्ग्राह्यस्येन्दुलब्धाकरी द्युतिः ।
अतस्त्वन्मुखमेवेदमित्यसौ निर्णयोपमा ।। —वैह, 2-27

143. काव्यालंकार, 8-60, 8-63, 8-64

144. अर्थयोरिति सादृश्याद्यत्र दोलायते मनः ।
तमेकानेकविषयं कवयः संशयं विदुः ।।
अनेकवस्तु विषयो द्विधा शु□ो मिश्रश्च ।। —सरस्वती कण्ठाभरण, 4-41

145. तुल्य-रूप-मन वस्तुमे, संशय सँ सन्देह ।
भूषण मानथि चतुर जन, जनिका काव्य-सनेह ।। —अलंकार-दर्पण, पृ. 16

146. केवल, निश्चयगर्भ वा निश्चयान्तहू तीन ।
संदेहालंकारके भेदो कहल प्रवीण ।। —अलंकार कमलाकर, पृ. 23

147. ईशनाथ झा

148. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 9-35

149. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : उत्तरा, पृ. 31

150. वैह, पृ. 32

151. वैह, पृ. 33

152. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : उत्तरा, पृ. 29

153. कविचूड़ामणि 'मधुप' : द्वादशी, पृ. 53

154. सादृश्याद्वस्त्वन्तर प्रतीतिः भ्रान्तिमान् । —रुय्यक

155. साम्यादततस्मिंदब-ि□भ्रान्तिमान्प्रतिभोत्थितः ।। —साहित्यदर्पण, पृ. 10-36

156. शशीत्युत्प्रेक्ष्य तन्वंगि त्वन्मुखं त्वन्मुखाशया ।
इन्दुमप्यनवद्याङ्गीत्येषा मोहोपमा स्मृता ।। —काव्यादर्श, 2-25

157. अर्थविशेषं पश्यन्नवगच्छेदन्यमेव तत्सदृशम् ।
निःसन्देहं यस्मिन्प्रतिपत्ता भ्रान्तिमान् स इति ।। —काव्यालंकार, 8-87

158. अतत्त्वे तत्त्वरूपाया त्रिविधा सापि पठ्यते । अबाधिता बाधिता च तथा कारणबाधिता ।।
अतत्त्वरूपा तत्त्वे या सापि त्रैविध्यमिष्यते । हानोपादानयोर्हेतुरूपेक्ष्याश्च जायते ।।
भ्रान्तिमान् भ्रान्तिमाला च भ्रान्तेरतिशयश्च यः । भ्रान्त्यनध्यवसायश्च भ्रान्तिरेवेति मे मतम् ।।
—सरस्वती कण्ठाभरण, 3-36, 3-37, 3-38

159. तुल्य रूपगुणवस्तुमे, भ्रम वर्णन जहिठाम ।
कविगण एकर कहैत छथि, भ्रान्ति विभूषण नाम ।। —अलंकार दर्पण, पृ. 15

160. भ्रम अवस्तुमे वस्तुकेर भ्रान्तिमान कहबैछ । —अलंकार-मालिका, सू.- 25

161. कविप्रतिमासँ प्रकृतमे उपमानक भ्रम ह्वैछ ।
भ्रान्तिमानसे अलंकृति सहृदयवर्ग कहैछ ।। —अ.क. पृ.25

162. ईशनाथ झा

163. चन्द्राभरण

164. एकावली-परिणय, 4-55

165. वैह, 9-17

166. वैह, 11-27 ।

167. एकस्यापि निमित्तवशादनेकधा ग्रहणमुल्लेखः । —अलंकार सर्वस्व, सूत्र- 19

168. एकस्यानेकधा कल्पनमुल्लेखः । —अलंकार रत्नाकर, सूत्र- 34

169. क्वचिद् भेदादग्रहीतृणां विषयाणां तथा क्वचित् ।
एकस्यानेकधाल्लेखः यः स उल्लेख उच्यते ।। —साहित्यदर्पण, 10-37

170.(क) एक वस्तुकेँ बहुत जोँ, बहुत रूपसोँ देख ।
तौँ जानू कविजन कथित, अलंकार उल्लेख ।।
एकहु जनसौं कथित जौं, एकक बहुतो भेख ।
विषय भेदसौं होए तौं, ततहु मानु उल्लेख ।। —अलंकार-दर्पण, पृ. 13

(ख)हेतु ग्रहीता भेद वा विषयक भेद लखाए ।
एकक बहु उल्लेखमे तँ उल्लेख कहाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ. 26

(ग) दृष्टि-भेदसँ एकहुक, बहुल कथन उल्लेख ।
विषय-भेदसँ पुनि बहुल, उक्तिहु पुनि उल्लेख ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 22-23

171. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 7-93

172. वैह, 2-25

173. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

174. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : उत्तरा, पृ. 20

175. कविचूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप' : द्वादशी, पृ. 49

176. प्रो० तन्त्रनाथ झा : कीचक-वध, नवम सर्ग- पृ. 80

177. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

178. अपह्नुतिरभीष्टा च किंचिदन्तर्गतोपमा ।
भूतार्थापह्नवादस्याः क्रियते चाभिधा यथा । —काव्यालंकार, 3-21

179. प्रकृतं यत् निषिध्यान्यस्थापनं स्यादपह्नुतिः । —साहित्य दर्पण, 10-38

180. तस्य च त्रयी बन्धच्छाया-अपह्नव-पूर्वक आरोपः,
आरोपपूर्वकोपह्नवः, छलादिशब्दैरसत्यत्वप्रतिपादकैर्वापह्नवनिर्देशः ।।
—अलंकार सर्वस्व, पृ. 76

181. कविजन-कथित प्रशस्त, छौटा तकर विभेद अछि ।
शु□, हेतु, पर्यस्त, भ्रान्ति, छेक, कैतव तथा । —अलंकार दर्पण, पृ. 17

182. अलंकार-मालिका, सूत्र 27-32

183. अलंकार-कमलाकर, पृ. 27-29

184. यदि निषेध उपमेय हो, आरोपित उपमान ।
शु□ अपह्नुति नामसँ, भूषण कहथि सुजान ।। —अलंकार दर्पण, पृ. 17

185. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : किष्किन्धाकाण्ड, पृ. 149

186. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : साओन-भादव, पृ. 43

187. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, पृ. 19-25, जून 1983

188. शु□ अपह्नुति होए पुनि, हेतु सहित जाहिठाम ।
ततय कहथि कविगन तकर, हेतु अपह्नुति नाम ।। —अलंकार दर्पण, पृ. 18
189. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : बालकाण्ड, पृ. 48
190. प्रो० जगदीश मिश्र : जिजीविषा, पृ. 24
191. शंका भ्रान्ति निवारणेँ, भ्रान्त-अपह्नुति नाम । —अलंकार-मालिका, सूत्र 30
192. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : उत्तरा, पृ. 42
193. आरोपित उपमेयमे, उपमानक गुण-धर्म ।
पर्यस्तापह्नुति ततै, कहथि सुकवि बुझि धर्म । —अलंकार-दर्पण, पृ. 18
194. एकावली-परिणय- 8-85
195. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 122
196. चतुर नुकाबथि सत्यकेँ, कहि मिथ्या जहिठाम ।
अलंकार मानू ततय, छेक अपह्नुति नाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ. 19
197. ईशनाथ झा : शुकुन्तला नाटक, 2-2
198. व्याज आदि पदसँ कतहु, हो निषेध यदि भान ।
ततै अपह्नुति कहथि सब, कैतव नाम सुजान ।। —अलंकार-दर्पण, पृ. 20
199. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 3-12
200. प्रतिषेधः प्रसि□स्य निषेधस्यानुकीर्त्तनम् ।। —कुवलयानन्द, 165
201. (क) जे निषेध अछि सि□ पुनि, तकरहि करै निषेध ।
कविजन ततै कहैत छथि, अलंकार प्रतिषेध ।। —अलंकार-दर्पण, पृ. 92
(ख) जतय प्रसि□ निषेधकेँ, अनुकीर्त्तन भए जाए ।
मूल प्रकृति उत्कर्ष हो, तँ प्रतिषेध कहाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ. 52
(ग) विदितहु जतय निषेध हो, तदपि कहब प्रतिषेध । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 176
202. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, पृ. 12-94
203. अध्यवसाये व्यापारप्राधान्ये उत्प्रेक्षा । —अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 21
204. भवेत्संभावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना । —साहित्य दर्पण, 10-4
205. यत्र तूपमानतावच्छेदकविशिष्टमुपमानमप्रसि□म् तत्रोत्प्रेक्षैव । तदुक्तं चक्रवर्तिना —
यदायमुपमानांशो लोकतः सि□मृच्छति, तदोपमेव येनेवशब्दः सादृश्यवाचकः ।
यदा पुनरयं लोकादसि□: कविकल्पितः, तदोत्प्रेक्षैव येनेवशब्दः संभावनापरः ।।
—संस्कृत साहित्य में सादृश्यमूलक अलंकारों का विकास, पृ. 262

206. (क) रजनि विकास न हिमसोँ हानि, जानकि उपमा देवकि जानि ।
कन्यारत्न प्रकट महि फूल, उपमा विधि न रचल निधिमूल ।।
—कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, बालकांड, पृ. 34
(ख) मैथिलीक रससि□ कवि, सुमन नाम अन्वर्थ ।
अपना सन अपनहि थिका, उपमा ताकब व्यर्थ ।। —प्रो० तन्त्रनाथ झा
207. संस्कृत साहित्य में सादृश्यमूलक अलंकारों का विकास, पृ. 36
208. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 9/42-49
209. श्लेषप्रायमुदीच्येषु प्रतीच्येष्वर्थमात्रकम् ।
उत्प्रेक्षा दाक्षिणात्येषु गौड़ेष्वक्षरडम्बरम् ।। —हर्षचरित, प्रथम उच्छ्वास, 7
210. लोकातीत इवात्यर्थमध्यारोप्य विवक्षितः ।
योऽर्थस्तेनातितुष्यन्ति विदग्धा नेतरे जनाः । —काव्यादर्श, 1-89
211. उपमानक उपमेयमे, सम्भावन जहिठाम ।
ततय अलंकारक कहथि, कवि उत्प्रेक्षा नाम । —अलंकार-दर्पण, पृ. 21
212. वस्तु-हेतु-फल रूपसँ, से पुनि त्रिविध प्रसि□ ।
उक्त अनुक्त विषय प्रथम, पर दुह सि□ असि□ ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 21
213. उत्प्रेक्षा सम्भावना वस्तु, हेतु, फलहीक ।
उक्त अनुक्त द्विभेद पुनि वस्तूत्प्रेक्षा थीक ।।
सि□ असि□ विचारसँ भेल हेतु फल चारि ।
दुहुक क्रमहि योजित करिअ लक्षण लक्ष्य विचारि ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 33-34
214. विषयी केर सम्भावना विषयक उपर लखाए ।
मिथ्या भए शोभा करए उत्प्रेक्षा कहि जाए ।।
वाच्यक गम्यक रूपमे एकरो दूइ प्रकार ।
जनु आदिक रहने पहिल नहि तँ अन्य प्रकार ।।
दुनूक अभेद स्वरूप ओ हेतु फलहि से देख ।
मोटामोटी इएह छै सूक्ष्म भेद अनलेख ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 30
215. अलंकारान्तरोत्था सा वैचित्र्यमधिकं भजेत् । —साहित्यदर्पण, 10-45
216. मिथिलाभाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड, पृ.- 185
217-218. एकावली-परिणय, 1-60, 4-75
219-23. एकावली-परिणय, 3-41, 8-53, 8-54, 2-54, 8-89
224. अलंकार-सर्वस्व, पृ.- 84-86
225. साहित्यदर्पण, पृ.- 318-20

226. सम्भावना स्यादुत्प्रेक्षा वस्तुहेतुफलात्मना ।
उक्तानुक्तास्पदाद्यात्र सि□ा सि□ास्पदे परे ।। —कुवलयानन्द, 32

227. प्रो० रमण झा : अलंकार भास्कर

228. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 3-10

229. वैह, 5-6

230. वैह, 2-8

231. प० जीवनाथ झा : रावण-वध, दशम सर्ग- पृ.- 57

232. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 3-77

233-34. वैह, 7-11, 3-25

235. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

236. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 7-15

237. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

238. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 2-66

239. वैह, 7-43

240. नियतानां सकृ□र्मः सा पुनस्तुल्ययोगिता । —काव्यप्रकाश

241. पदार्थानां प्रस्तुतानाम् अन्येषां वा यदाभवेत् ।
एकधर्माभिसम्बन्धः स्यात्तदा तुल्ययोगिता ।। —साहित्यदर्पण, 10-48

242. न्यूनस्यापि विशिष्टेन गुणसाम्यविवक्षया ।
तुल्यकार्यक्रियायोगिदित्युक्ता तुल्ययोगिता ।। —भामह : काव्यालंकार, 3-27

243. विवक्षितगुणोत्कृष्टैर्यत् समीकृत्य कस्यचित् ।
कीर्त्तनं स्तुतिनिन्दार्थं सा मता तुल्ययोगिता ।। —दण्डी : काव्यादर्श, 2-330

244. उपमानोपमेयोक्तिशून्यैरप्रस्तुतैर्वचः ।
साम्याभिधायिप्रस्तावैर्वाग्भि र्वा तुल्ययोगिता ।। —उद्भट : काव्यालंकार-सार-संग्रह, 5-7

245. विशिष्टेन साम्यार्थमेककालक्रियायोगस्तुल्ययोगिता । —वामन : काव्यालंकार सूत्र, 4-3-36

246. वर्ण्यानामितरेषां वा धर्मैक्यं तुल्योगिता । —दीक्षित : कुवलयानन्द, 44

247. प्रस्तुत अप्रस्तुतक वा, तुल्य धर्म जहि ठाम ।
गुण सँ वा यदि कर्मसँ, तुल्ययोगिता नाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 27

248. यदि वा हो हित अहितमे, क्रिया एक परकार ।
तुल्योगिता नामसौँ, अछि तकरो व्यवहार ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 28

249. एक धर्मसँ योग जँ, कइ प्रस्तुतक लसैछ ।
कइ अप्रस्तुत केर वा, तुल्योगिता ह्वैछ ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 28

250. प्रस्तुत वा अप्रस्तुतक, क्रिया रूप गुण धर्म ।
ऐक्य बोध हो युगपदे, तुल्ययोगिता मर्म ।। —अलंकार-मालिका, पृ.- 34

251. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 4-35

252-54. वैह, 8-106, 1-33, 2-44

255. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

256. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिला भाषा रामायण, लंकाकाण्ड, पृ.- 235

257. कविचूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप' : झांकार, पृ.- 76

258. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : प्रतिपदा, पृ.- 38

259. वैह, पृ.- 28

260. वैह, अर्चना, पृ.- 20

261. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

262. यात्री : चित्रा, पृ.- 68

263. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

264. अप्रस्तुताप्रस्तुतयोर्दीपकं तु निगद्यते ।
अथ कारकमेकं स्यादनेकासु क्रियासु चेत् । —साहित्यदर्पण, 10-49

265. रसगंगाधर : पण्डितराज जगन्नाथ
अलंकार मुक्तावली : आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, अलंकार मंजरी : सेठ कन्हैयालाल पोद्दार

266. दीपक वर्ण्य अवर्ण्यमे, धर्म तथ्य जदि होय । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 29

267. प्रकृत तथा अप्रकृतमे एकधर्म सम्बन्ध ।
दीपक बहुत क्रियाक बिच एक कारकक बोध ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.-35

268. प्रस्तुत अप्रस्तुत दुहुक दीपक धर्म समान ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 49

269. आदिमध्यान्तविषयं त्रिधा दीपकमिष्यते ।
एकस्यैव व्यवस्थत्वादिति तद्भिद्यते त्रिधा ।। —भामह, 2-25

270. काव्यादर्श- 2-97-115

271. सकृद्वृत्तिस्तु धर्मस्य प्रकृताप्रकृतात्मानम् ।
सैव क्रियास्तु बह्वीषु कारकस्येति दीपकम् ।। —काव्यप्रकाश, 10-103

272. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-29

273. वैह, 11-23

275. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 2-29

276. दीनानाथ पाठक 'बन्धु' : चाणक्य, अष्टम सर्ग- पृ.- 61

277. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

278. (क) अर्थक, पदक, दुहूक वा, आवृत्ति हो जहि ठाम ।
भूषण तीन प्रकार सोँ, आवृत्ति दीपक नाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 30
(ख) जतय शब्द वा अर्थकेँ, वा दुहूक आवृत्ति ।
दीपकके आवृत्ति कहि, कवि आनथि विच्छित्ति ।।—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 10
(ग) पद अर्थक पुनि दुहुक यदि आवृत्ति दीपक पूर्व । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 50
279. यात्री : चित्रा, पृ.- 67
280. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 6-3
281. (क) मिलि दीपक एकावली मालादीपक नाम । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 61
(ख) एकावलिक पदार्थ सब, जँ सम्ब□ जनाए ।
एक धर्मसँ क्रमहि से, मालादिपक कहाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 69
282. श्री जितेन्द्र नारायण झा 'काश्यप' : जिजीविषा, पृ.- 48
283. कविता-संग्रह : मैथिली अकादमी, पृ.- 42
284. प्रो० रमण झा : मिथिला मिहिर, 19-25 जून, 1983
285. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 5-30
286. प्रतिवस्तु, प्रतिवाक्यार्थमुपमा साधारणधर्मोस्याम् । —दीक्षित : कुवलयानन्द, पृ.- 310
287. न केवलमियं साधर्म्येण या वैधर्म्येणापि दृश्यते । —अलंकार-सर्वस्व, पृ.- 72
288. काव्यालंकार
289. काव्यादर्श
290. सरस्वती कण्ठाभरण
291. प्रतिवस्तूपमा सा स्याद् वाक्योर्गम्यसाम्ययो: ।
एकोऽपि धर्म: सामान्यो यत्र निर्दिश्यते पृथक् ।। —साहित्यदर्पण, 10-49क बाद
292. उपमा ओ उपमेयमे, वाक्य पृथक् जहिठाम ।
धर्म तुल्य यदि होय तोँ, प्रतिवस्तूपम नाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 21
293. गम्य साम्य दुइ वाक्यमे एके धर्म रहैछ ।
से थिक प्रतिवस्तूपमा शब्दान्तरे कहैछ ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 35
294. पृथक पृथक दुइ वाक्यमे एके धर्म समान ।
भिन्न शब्दमे उक्त प्रतिवस्तूपमा प्रमाण ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 52
295. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 10-39
296. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983
297. एकावली-परिणय : 10-46

298. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983
299. दीनानाथ झा पाठक 'बन्धु' : चाणक्य : तृतीय सर्ग, पृ.- 22
300. दृष्टान्त: पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम् । —काव्यप्रकाश, 10-102
301. तत्रेवादे: प्रयोगेण दृष्टान्तोक्तिं प्रचक्षते ।। —सरस्वती कण्ठाभरण, 4-36
302. उपमा ओ उपमेयमे, धर्म विभिन्न प्रकार ।
हो बिम्ब-प्रतिबिम्ब तँ, दृष्टान्तालंकार ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 32
303. सदृश धर्म दुइ वाक्यके जे प्रतिबिम्बन ह्वैछ ।
सहृदय रंजक ताहिकेँ बुध दृष्टान्त कहैछ ।। —अलंकार कमलाकर, पृ.- 36
304. प्रस्तुत अप्रस्तुत दुहुक, तुल्यधर्म एकान्त ।
बिम्बन-प्रतिबिम्बन तुलित, अलंकार-दृष्टान्त ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 54
305. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-71
306. वैह, 1-6
307. अभवन् वस्तुसम्बन्धो भवन् वा यत्र कल्पयेत् ।
उपमानोपमेयत्वं कथ्यते सा निदर्शना ।।—उद्भट : काव्यालंकार-सार-संग्रह, 5-10
308. सम्भवन्वस्तुसम्बन्धोऽसम्भवन्वाऽपि कुत्रचित् ।
यत्र बिम्बानुबिम्बत्वं बोधयेत् सा निदर्शना ।। —साहित्य-दर्पण, 10-51
309. सम वाक्यार्थक एकता, आरोपन जहिठाम ।
कविजन-कथित निदर्शना, द्विविध विभूषण नाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 32
310. परक क्रियासँ होए जदि, अनुचित उचितक ज्ञान ।
मानथि ततहु निदर्शना, अलंकार मतिमान ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 34
311. अलंकार-दर्पण, पृ.- 32-33
312. असम्भवक सम्बन्ध वा, सम्भव केर लखाए ।
प्रतिबिम्बन जहिठाम हो, निदर्शना कहि जाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 36
313. (क) समतुल दुइ वाक्यार्थमे, ऐक्य निदर्शन जैह ।
(ख) सत् सम्भव वा असम्भव, असत् क्रिया फलबोध ।
पृथक् वस्तुहुक एकमत सम्बन्धन अविरोध । —अलंकार मालिका- सूत्र- 57
314. (क) रामचरित मानस में अलंकार योजना- डा० वचनदेव कुमार, पृ.- 134-35
(ख) अलंकार मीमांसा : डा० राजवंश सहाय हीरा, पृ.- 91
315. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-56
316. वैह, 1-70
317. वैह, 1-73

318. वैह, 10-64

319. वैह, 2-9

320. वैह, 10-9

321. अपराधबोधनं प्राहु: क्रियया: सत्सदर्थयो: । नश्येद्राजविरोधीति क्षीणं चन्द्रोदये तम: ।।
उदयन्नेव सविता पद्मेष्वर्पयति श्रियम् । विभावयन् समृ□ानां फलं सुहृदनुग्रह: ।।
—कुवलयानन्द, 55-46

322. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : प्रतिपदा, पृ.- 40

323. वैह, पृ.- 40

324. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

325. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 11-16

326. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

327. वैह

328. उपमानवतोर्थस्य यद्विशेषनिदर्शनम् । व्यतिरेकं तमिच्छन्ति विशेषापादनाद्यथा ।।
—काव्यादर्श, 2-75

329. उपमानाद्यदन्यस्य व्यतिरेक: स एव स: । —काव्यप्रकाश, सूत्र- 145

330. (क) भेदप्राधान्ये उपमानादुपमेयस्याधिक्ये विपर्यये वा व्यतिरेक: ।।
—अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 28
(ख) आधिक्यमुपमेयस्योपमानान्न्यूनताथवा व्यतिरेक: । —साहित्यदर्पण, 10-52

331. उपमा ओ उपमेयमे, जदि विशेष हो एक ।
तेँ सब सुकवि कहैत छथि, अलंकार व्यतिरेक ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 35

332. उपमेयहिमे अधिकता, बुधजन मनहि लोभाए ।
वा ताहीमे न्यूनता, से व्यतिरेक कहाए ।।
दुहूमे एकक अधिकता, वा एकक अपकर्ष ।
हेतु सहित वा रहित हो, चारि भेद निष्कर्ष ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 38

333. उपमेयक उपमानसँ हो व्यतिरेक विशेष । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 59

334. काव्यादर्श 2-180 सँ 198 तक

335. स्वजातिव्यक्त्युपाधिन्यामेकोभयभिदा च स: ।
सादृश्याद्वैसादृश्याच्च भिन्न: षोढ़ाभिजायते ।। —सरस्वती कण्ठाभरण, 3-33

336. काव्यप्रकाश

337. एक उक्तेनुक्ते हेतौ पुनस्त्रिधा ।
चतुर्विधोपि साम्यस्य बोधनाच्छब्दतोर्थत: । आक्षेपाच्च द्वादशधा श्लेषेपीति त्रिरष्टधा ।
प्रत्येकं स्यान्मिलित्वाष्टचत्वारिंशद्विध: पुन: ।। —साहित्य दर्पण, 10/52क बाद पृ.- 333

338. (क) रसमंजरी : सेठ कन्हैयालाल पोद्दार, पृ.- 230-39
(ख) काव्यदर्पण : प० रामदहिन मिश्र
(ग) अलंकार-मुक्तावली : आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्म्मा, पृ.- 38
(घ) अलंकार-कमलाकर : प० दामोदर झा, पृ.- 38
(ङ) मैथिली काव्यशास्त्र : डा० दिनेश कुमार झा, पृ.- 28

339. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 5-90

340. वैह, 7-27

341. कविवर उपेन्द्र ठाकुर मोहन : बाजि उठल मुरली, पृ.- 62

342. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ.- 34

343. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 8-73

344. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ.- 34

345. उपमानोपमेययोरेकस्य प्राधान्यनिर्देशे परस्य सहार्थसम्बन्धे सहोक्ति: ।
—अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 29

346. सा सहोक्ति: सहार्थस्य बलादेकं द्विवाचकम् । —काव्यप्रकाश, 10-112

347. सहोक्ति: सहभावश्चेद्भासते जनरंजन: । —कुवलयानन्द, 21-58

348. मूलभूतातिशयोक्तिर्यदा भवेत् । —साहित्यदर्पण, 10-55

349. रस-गंगाधर, पृ.- 486

350. अलंकार सर्वस्व, पृ.- 133

351. कर्त्रादीनां समावेश: सहान्यैर्य: क्रियादिषु ।
विविक्तश्चाविविक्तश्च सहोक्ति: सा निगद्यते ।। —सरस्वती-कण्ठाभरण, 4-57

352. संग उक्ति जनमनहरण, वर्णन जतै रहैछ ।
अलंकार बुधजन कथित, से सहोक्ति कहबैछ । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 36

353. ककरहु संगक कथन हो, अतिशयोक्तिके संग ।
से सहोक्ति कहिजाइ जँ चमत्कृतिक नहि भंग । —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 40

354. सह भावक यदि वर्णना, हो सहोक्ति रुचिवन्त । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 60

355-57. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-84, 15-94, 2-34

358. विनोक्ति: सा विनान्येन यत्रान्य: सन्ननेतर: । —काव्यप्रकाश, 10-113

359. विनोक्तिर्यद्विनान्येन नासाध्वन्यदसाधु वा । —साहित्यदर्पण, 10-56

360. (क) से विनोक्ति जदि किछु बिना, वर्णनीय हो ह्रास ।
(ख) जानु विनोक्ति तथापि जदि, किछु विनु गुण बढ़ि जाय ।।
—अलंकारदर्पण, पृ.- 36-37

361. ककरहु विनु जँ नीक हो, वा ककरहु अधलाह ।
से विनोक्ति थिक अलंकृति, ई बुध कहु सोत्साह ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 40

362. (क) विना कथुक यदि विथुत हो, प्रकृति विनोक्ति बनैछ ।
(ख) हो विनोक्ति पुनि विनु कथुक, कहने प्रस्तुत रम्य ।।
—अलंकार-मालिका, सूत्र- 61-62

363. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 5-15

364. कविता संग्रह : मैथिली अकादमी, पृ.- 66

365. महाकवि मनबोध : कृष्णजन्म, अध्याय- 4, पृ.- 8

366. सामान्येन विशेष्यविशेषणसामान्यस्य वा यत् समर्थनं तदर्थान्तरन्यासः । —जगन्नाथ

367. सामान्यं वा विशेषेण विशेषस्तेन वा यदि ।
कार्यं च कारणेनेदं कार्येण च समर्थ्यते ।
साधर्म्येणेतरेणार्थान्तरन्यासोऽष्टधा ततः ।। —साहित्यदर्पण, 10-61

368. इह केचिद् वाक्यार्थगतेन काव्यलिंगेनैव गतार्थतया कार्यकारणभावेऽर्थान्तरन्यासं नाद्रियन्ते, तदयुक्तम् । तथाह्यत्र हेतुस्त्रिधा भवति-ज्ञापको निष्पादकः समर्थकश्चेति । तत्र ज्ञापकोऽनुमानस्य विषयः, निष्पादकः काव्यलिंगस्य, समर्थकोऽर्थान्तरन्यासः इति पृथगेव कार्यकारणभावोऽर्थान्तरन्यासः काव्यलिंगात् । —साहित्यदर्पण, पृ.- 148

369. (क) कहि सामान्य विशेषसँ, जतय समर्थन भास ।
वा विशेष सामान्यसँ, तँ अर्थान्तरन्यास ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 69
(ख) भाव समर्थ्य-समर्थकक, एक दोसरक विन्यास ।
यदि सामान्य विशेषगत, हो अर्थान्तरन्यास ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 123

370. हो सामान्य विशेषसँ, अनुमोदित सविलास । हो विशेष सामान्यसँ, से अर्थान्तरन्यास ।।
अथवा कारण कार्यसँ, कारणसँ हो कार्य । साधर्म्ये वैधर्म्य वा, आठ भेद अनिवार्य ।।
—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 71

371. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 9-27

372. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, सुन्दर काण्ड, पृ.- 181

373. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-67

374. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : उत्तरा, द्वितीय सर्ग, पृ.- 19

375. वैह, पृ.- 20

376. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-67

377. यस्मिन् विशेष-सामान्य-विशेषः स विकस्वरः ।—चन्द्रालोक, 5/69

378. (क) कुवलयानन्द- 125
(ख) कहि विशेष सामान्य पुनि, कहि विशेष जहि ठाम ।
अर्थ समर्थन होए तोँ, जानु विकस्वर नाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 70
(ग) कहि विशेष सामान्यसँ, करए समर्थन जाहि ।
तकरे पुनि उपमान कहु, विकस्वरे कहु ताहि ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 72
(घ) कए विशेषकेँ समर्थन, सामान्यक उपचार ।
पुनि विशेष उपमान जनु, विकस्वरक आधार ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 125

379. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-30

380. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड, पृ.- 183

381. अन्यन्निषिध्य प्रकृदस्थापनं निश्चयः पुनः । —साहित्य-दर्पण, 10-39

382. इतरक वारण कए जतए, प्रकृतस्थापन देखु ।
निश्चय निश्चय नामसँ, अलंकार से लेखु ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 24

383. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड- पृ.- 104

384. अलंकार मुक्तावली, 128

385. सामान्यहि जे कहल अछि, तकरो कहए विशेष ।
आंगांगीभावक कथन, उदाहरण के देश ।। —अलंकार-कमलाकर

386. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, पृ.- 147

387. प्रो० रमण झा : मिथिला मिहिर, 19-25 जून, 1983

388. हिन्दी रसगंगाधर : द्वितीय भाग, 161

389. जतय महा उत्कृष्टकेँ, नहि भेटय उपमान ।
हेतु बड़प्पन के अधिक, असमालंकृति जान ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 41

390. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : प्रतिपदा : श्मशान, पृ.- 27

391. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-53

l

चतुर्थ अध्याय

विरोधमूलक अलंकार

1. विरोधाभास

जतय वास्तविक विरोध नहि रहिकए विरोधक आभास मात्र रहय ओतय विरोधाभास अलंकार कहबैत अछि ।[1] मैथिलीक आलंकारिक लोकनि सेहो उपरकथित परिभाषाकेँ मानि लेलनि अछि ।[2]

आचार्य दण्डी विरोधाभासकेँ विरोध कहि ओकर अनेक प्रकारक चर्चा बिनु नामकरण कयने कयलनि अछि ।[3] रुद्रट सेहो विरोधाभास नहि मानि विरोधे मानैत छथि । हुनका विचारेँ एकहि समयमे एकहि स्थानपर परस्पर द्रव्यादिक अवस्थान भेलासँ विरोध अलंकार होइत अछि ।[4] रुय्यक सेहो एहि अलंकारक नाम विरोधे रखलनि किन्तु हुनक परिभाषासँ स्पष्टतः प्रतीति होइत अछि जे ओ विरोधाभासकेँ विरोध संज्ञासँ अभिहित कयलनि ।[5] मम्मट विरोधक दस भेद कयलनि ।[6] विश्वनाथक मत हिनकासँ अभिन्न छनि ।[7] जयदेव, विरोध[8] एवं विरोधाभासकेँ[9] एके अलंकार मानलनि[10] आ यैह मानव यथार्थताक निकट अछि, औचित्यपूर्ण बुझना जाइत अछि ।

विरोधाभासक निम्नलिखित दस भेद अधिकाधिक आलंकारिक द्वारा मान्य अछि— 1. जातिक जातिसँ विरोध 2. जातिक गुणसँ विरोध 3. जातिक क्रियासँ विरोध 4. जातिक द्रव्यसँ विरोध 5. गुणक गुणसँ विरोध 6. गुणक क्रियासँ विरोध 7. गुणक द्रव्यसँ विरोध 8. क्रियाक क्रियासँ विरोध 9. क्रियाक द्रव्यसँ विरोध 10. द्रव्यक द्रव्यसँ विरोध ।

विरोधाभासक किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

1. **अपने छी निगुण, गुणाधार, निष्क्रिय, जग पालन-कएनिहार ।**
   निर्लेप, भक्त-जनतानुरक्त, नीरूप विविध-अवतार सक्त ॥[11]

एतय भगवान विष्णु निर्गुण छथि आ गुणक आधारे, निष्क्रिय अर्थात् कोनो कार्यक नहि आ संसारेक पालन कयनिहार, निर्लेप-करहुसँ कोनो मतलब नहि आ भक्त जनतामे अनुरक्त, नीरूप-कोनो रूप नहि आ अनेक रूपमे अवतार लेनिहार-परस्पर एक-दोसराक विरोधी थिक किन्तु भगवान विष्णुक हेतु सभ यथार्थे अछि । तेँ वास्तविक विरोध नहि भए मात्र विरोधाभास भेल ।

2. **निर्भय, पद्मा-भ्रू-भंग-भीत, सम-दृष्टि असुर-रिपु, देव-मीत ।**
   जग-आदि, अनादि, अनन्त, अन्त, अज्ञेय, बु□-गोचर तुरन्त ॥[12]

3. **की सुन्दर अछि वह्नि प्रज्वलित, कामिनीक कुच-मण्डल मे ।**
   दूरहिसँ छाती जरबय पुनि, शीतल हृदयालिंगन मे ॥[13]

2. असम्भव

असम्भव अलंकारक उद्भावनाक श्रेय छनि जयदेवकेँ । हिनका अनुसारेँ कार्य-सि□केँ कोनो प्रकारेँ सम्भव नहि कहब असम्भव अलंकार थिक ।[14] हिनके आधार मानिकय अप्पय दीक्षित एवं मैथिल आलंकारिक लोकनि एकर परिभाषा देलनि अछि ।[15]

उदाहरण :

हेम हरिण सुनलहुँ नहि कान, की रचनाकारक भगवान ।
हेमक हरिण रत्न तन बिन्दु, पकड़ल जाय अवनिगत इन्दु ॥[16]

3. विभावना

विभावना अलंकारक विवेचन क्रममे संस्कृत आलंकारिक लोकनिक दू वर्ग स्पष्ट देखि पड़ैत अछि । प्रथम वर्गमे अबैत छथि— भामह,[17] वामन,[18] उद्भट,[19] एवं मम्मट[20] तथा द्वितीय वर्गमे विश्वनाथ,[21] अप्पय दीक्षित,[22] एवं पण्डितराज जगन्नाथ ।[23]

मैथिलीक आलंकारिक लोकनि एकर दोसर वर्गकेँ मानैत छथि । अर्थात् बिनु कारणेँ कार्योत्पत्ति होयबाकेँ विभावना अलंकार मानैत छथि ।[24] प० सीताराम झाक अनुसार विभावना अलंकारक छओ भेद होइत अछि ।[25] प० दामोदर झा[26] एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क[27] परिभाषा उक्त परिभाषासँ समानता रखैत अछि ।

आचार्य विश्वनाथ विभावनाक मात्र दू भेद कयलनि[28]— 1. उक्तनिमित्ता एवं 2. अनुक्तनिमित्ता ।

पण्डितराज जगन्नाथ अप्पय दीक्षितकृत विभावनाक छओ भेदक खण्डन करैत एकर उपर्युक्त दुइये भेद मानलनि । किन्तु परवर्ती आचार्यगण अप्पय दीक्षितक छओ

भेदकेँ मानि लेलनि ।[29] हिनका अनुसारेँ विभावनाक छओ भेद निम्नलिखित अछि—

1. प्रथम विभावना– जतय बिनु कारणहि कार्य हो ।
2. द्वितीय विभावना– जतय अपर्याप्त कारणक कार्य हो ।
3. तृतीय विभावना– जतय प्रतिबन्धकेँ रहैत कार्य हो ।
4. चतुर्थ विभावना– जतय अकारणक कार्य हो ।
5. पंचम विभावना– जतय विरु□ कारणसँ कार्य हो ।
6. षष्ठ विभावना– जतय कार्यसँ कारण हो ।

आचार्य रुय्यक तँ विभावनाक मूलमे अतिशयोक्ति अलंकार मानैत छथि जे ओकरा बाधित नहि, अपितु अनुप्राणित करैत छैक ।[30]

1. प्रथम विभावना– जतय बिनु कारणहि कार्योत्पत्ति होअए—

1. **क्रन्दन-ध्वनि होइछ एक कात, पुनि क्षुब्ध गृ□-दल करय घात ।**
मनमे न घृणा-करुणाक थान, बिनु उपनिषदेँ जत ब्रह्म-ज्ञान ।।[31]

एतय बिनु उपनिषदेँ ब्रह्मज्ञान होयब बिनु कारणक कार्य थिक तेँ प्रथम विभावना भेल ।

2. **रामक कर मरणोँ श्रुति युक्ति । साधन बिनु हम पायब मुक्ति ।।**[32]

2. द्वितीय विभावना— जतय अपर्याप्त कारणक कार्य होअए—

1. **प्रभुकर परस धनुष टुटि गेल, शब्द प्रचण्ड भुवन भरि गेल ।।**[33]

एतय स्पर्श मात्रसँ धनुष टुटब अपर्याप्त कारण थिक । पृथ्वी पर राखल ओहि भयंकर धनुषक स्पर्श मात्रसँ टुटबामे अपर्याप्त कारणसँ कार्योत्पत्ति होइत अछि । अतः ई द्वितीय विभावना भेल ।

2. **मनसिज नहि चरितार्थ भेल छथि, तैयो देखि परस्पर-रीति ।**
निश्चय एतबा बूझि पड़ए जे, उभय जनक मन उपजल प्रीति ।।[34]

3. तृतीय विभावना— जतय प्रतिबन्धक रहनहुँ कार्य होअए—

1. **तत्कालहिँ शिशु तकबाक हेतु, चढ़ि यान चलल नरपाल-केतु ।**
रथ-पथ छल विषम तथापि गेल, सानन्द, मनोरथ-मग्न भेल ।।[35]

एतय पथक विषमता व्यवधान थिक तथापि रथक जयबामे तृतीय विभावना भेल ।

2. **कुच-नितम्ब-भारेँ विकलि, रहितहुँ झटकारैत ।**
वार वधूजन चललि मग, युवजन-हृदय हरैत ।।[36]

एतय कुच-नितम्बक भार व्यवधान थिक तथापि झटकारिकेँ चलबामे तृतीय विभावना भेल ।

4. चतुर्थ विभावना— जतय अकारणसँ कार्य होअए—

कहल जानकी अहिँक सन, कपिदल सूक्ष्म शरीर ।
यु□ असम्भव असुरसँ, नहि होइछ मन थीर ।।[37]

एतय सूक्ष्म शरीरवला सेना लए कए रावण सन बलशालीक सामना करब, अकारणहि कार्य होएब कहाओत । कारण जे विशाल सेना लए कए सेहो रावणकेँ पराजित करब कठिन छैक तखन सूक्ष्म शरीरवला सेनाक गप्पे कोन ?

5. पंचम विभावना— जतय विरु□ कारणेँ कार्य होअए—

तुहिन शीतलो चन्द्र-रुचि, देल विरहिकेँ दाह ।
दैव विमुख भेलेँ जनक, नीको कर अधलाह ।।[38]

एतय शीतलता प्रदान कयनिहार चन्द्रमा विरहीकेँ जरबैत छथि ।

6. षष्ठ विभावना— जतय कार्यहिसँ कारण हो—

सूर्य सुधाकर खोजलोँ ने पाबिअ । कमल कुमुद निशि वासर जानिअ ।।[39]

एतय कमल एवं कुमुदिनीक विकाससँ दिन एवं रातिक ज्ञान होयबामे षष्ठ विभावना होइत अछि । एतय कार्यहिसँ कारणक ज्ञान होइत अछि ।

4. विशेषोक्ति

आचार्य भामहक अनुसार एकक गुणक हानि भेलापर विशेषता वृ□क हेतु दोसरक गुणक वर्णनमे विशेषोक्ति अलंकार होइत अछि ।[40] दण्डीक कथन अछि जे जखन गुण, जाति, क्रिया आदिमे वैकल्य प्रदर्शित कए विशेषता देखाओल जाए तँ विशेषोक्ति अलंकार होइत अछि ।[41] आधुनिक आचार्य लोकनि कारण अछैतहुँ कार्यकेँ नहि होयबामे विशेषोक्ति मानैत छथि ।[42]

विशेषोक्तिक निम्नलिखित तीन भेद अछि—[43]

1. उक्तनिमित्ता, 2. अनुक्तनिमित्ता, एवं 3. अचिन्त्यनिमित्ता

1. उक्तनिमित्ता विशेषोक्ति— जतय कार्य नहि होयबाक कारण कथित रहय—

1. **आनन-पूर्ण-सुधांशु-सन्निधानहुँ प्रभुदित रहि**
पलको भरि कुच-चक्रवाक-जोड़ी विछुड़ए नहि ।
अथवा सरसिज-युगल कनेको हो न संकुचित,
ई कन्दर्प-नरेन्द्र-नीति-अनुभावक समुचित ॥[44]

एतय मुखरूपी पूर्णचन्द्रक सामीप्य रहनहुँ पयोधररूपी चक्रवाकक जोड़ीमे विछुड़न नहि अबैत अछि (जखनकि रातिमे विछुड़न होयब आवश्यक छैक) । तेँ कारण अछैतहु कार्य नहि भेल । पुनः मुखचन्द्रक सामीप्य रहनहुँ स्तनरूपी कमल मुकुलाएल नहि (जखन कि चन्द्रमाक समक्षमे कमख मुकुला जाइत अछि) । तेँ एतहु विशेषोक्ति भेल । एहि सभक कारण कवि कहैत छथि जे ई राजा कामदेवक नीतिक अनुकूल अछि । अतः एकरा उक्तनिमित्ता विशेषोक्ति कहल जायत ।

2. **विष कंठहु उर भुजग भयंकर, किन्तु न होथि मलीन ।**
मस्तक चन्द्र जटा बिच गंगा, तेँ होइथ नहि दीन ॥[45]

एतय कंठमे विष एवं हृदयमे साप रहलहुपर मलीन नहि होयबाक कारण कहल गेल अछि जे माथ पर चन्द्रमा एवं जटामे गंगा छथिन ।

2. अनुक्तनिमित्ता विशेषोक्ति— जतय कार्य नहि होयबाक कारण नहि कहल गेल रहय—

1. **फूलक शय्या पर कुसुम-वृन्त, छिलइत छल जनिकर अंग हन्त ।**
से दबि कठोर काठक पहाड़, नहि बुझथि कनेको कष्ट भार ।[46]

एतय काठक पहाड़सँ दबएलो पर कष्ट नहि बुझबामे विशेषोक्ति अछि, किन्तु कष्ट नहि बुझएबाक कारण कथित नहि अछि तेँ अनुक्त-निमित्ता थिक ।

2. **रागी-सन्ध्या दिवस पुनि, आगू किछुए दूर ।**
विधिक विधान विचित्र अछि, संगम होए न पूर ॥[47]

एतय संध्या एवं दिवसक मिलन नहि होयबाक कारण नहि कहल गेल अछि । एकरा विधाताक भरोसपर छोड़ि देल गेल अछि ।

एतय अचिन्त्यनिमित्ताक विवेचन करब अनावश्यक बुझना जाइत अछि, कारण जे एकर समावेश अनुक्त-निमित्तामे भए जाइत छैक ।

5. सम

सम अलंकारक उद्‌भावक छथि आचार्य मम्मट । हिनका अनुसारेँ दू वस्तुमे योग्य रूपसँ सम्बन्ध वर्णन सम अलंकार थिक ।[48] विषमक विपरीत अलंकार होयबाक

कारणेँ एकरा विरोधमूलक मानल जाइत अछि, अन्यथा एहिमे विरोध नहि अछि । एहि अलङ्कारमे कवि संगति एवं सन्तुलन स्थापित करए चाहैत छथि । प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' सेहो दुइ वस्तुक अननुरूप वर्णनमे सम अलङ्कार मानैत छथि ।[49] ई एकर कोनो भेदोपभेद नहि कयलनि अछि ।

अप्पय दीक्षित, प० सीताराम झा, प० दामोदर झा प्रभृति तीनि प्रकारेँ सम अलंकार मानैत छथि ।[50]

1. जतय अननुरूप वस्तुमे यथायोग्य सम्बन्ध वर्णन हो,
2. जतय कारण एवं कार्यक अननुरूप वर्णन हो, तथा
3. जतय बिनु अनिष्टहिक कार्य सि□ भए जाय ।

1. प्रथम सम—

उचित अंग उपयुक्त थिक, वस्तु विशेषक संग ।
मेहदी-हाथहिँ पीक-मुख, काजर नयनहि रंग ॥[51]

एतय मेहदीक हाथमे, पीकक मुँहमे एवं काजरक आँखिमे यथायोग्य सम्बन्ध वर्णित अछि ।

2. द्वितीय सम— एहिमे कारण एवं कार्यक अनुरूप वर्णन होइत अछि—

रचल विधाता सुन्दरिक, अंग-अंग अरु ठोर ।
जेँ उरमे काठिन्य तेँ, छनि अति उरज कठोर ॥[52]

3. तृतीय सम— जतय बिनु अनिष्टहिक कार्य सि□ भए जाए—

1. **कर-कमल परसि अवनीश-माथ, मृदु-वचन उचारल लोकनाथ ।**
नरपाल, कठिन तप तेजु आब, हमरहु लखि जन की दुःख पाब ?[53]

एतय राजा तुर्वसु भगवानकेँ मनयबालेल तपनिरत छलाह आ भगवान विष्णु स्वयं आबि कए हिनका दर्शन दए देलनि । जेँ बिनु अनिष्टहिक अभीष्ट सि□ भए गेल तेँ तृतीय सम भेल ।

2. **प्रभु कर परस धुनुष टुटि गेल । शब्द प्रचण्ड भुवन भरि भेल ॥**[54]

एतय बिना कोनो बाधाक धनुष टुटबामे समालंकार भेल ।

6. विचित्र

विचित्र अलंकारक उद्‌भावक छथि— राजानक रुय्यक । हिनक पश्चात्

विश्वनाथ, जयदेव, अप्पय दीक्षित आदि सेहो एकर विवेचन कयलनि अछि । रुय्यकक अनुसार कारणसँ विपरीत फलक प्राप्ति हेतु प्रयत्न विचित्र अलंकार थिक ।[55]

मैथिलीक आलंकारिक लोकनि सेहो रुय्यकेक परिभाषाक समर्थक छथि ।[56]

विचित्र अलंकारक विलक्षणता अछि जे एहिमे विपरीत कारणसँ फलप्राप्ति भए जाइत छैक । आदिकवि वाल्मीकि उनटा नाम जपिकए महान् भए गेलाह, उन्नति करबालेल गुरुक सेवा करू, इत्यादि विचित्र क्रिया थिक ।

उदाहरण :

1. **प्रभुसँ करब विरोध, लड़ब भिड़ब रणमे मरब ।**
से करता जोँ क्रोध, बनत काज सभटा हमर ।।[57]

एतय रावण रामसँ शत्रुता कएकेँ, हुनका हाथेँ मरिकए हुनक धाम जाए चाहैत अछि ।

2. **शिक्षा प□ति बदलय पग-पग, क्षण-क्षण बदलय इच्छा ।**
छात्र-कदम्ब उन्नति करबा ले', चिटसँ देत परीक्षा ।।[58]

एतय पास करबालेल चिटसँ परीक्षा देब विचित्र कारण थिक ।

3. **हाथीकेँ अपना वश करबा ले' अंकुश मारू ।**
बरदहुकेँ सीधा चलबय लय डंडा मारू ।।
बुधजनसँ ईप्सित पयबालय जीवन बाँधू ।
गृहणीसँ पाछू चलबय लय निजकेँ साधू ।।[59]

7. अधिक

अधिक अलंकारक उद्भावक आचार्य रुद्रट छथि, किन्तु हिनक परिभाषा विद्वान् लोकनि ग्रहण नहि कयलनि ।[60] आचार्य जयदेव, अप्पय दीक्षित, पण्डितराज जगन्नाथ एवं परवर्त्ती विद्वान लोकनि अधिक अलंकारक परिभाषा दैत कहलनि जे आधार एवं आधेयमेसँ कोनो एकक आधिक्य वर्णन अधिक अलंकार थिक ।[61]

एहि तरहेँ आलंकारिक लोकनि अधिकालंकारक दू भेद मानलनि—

1. प्रथम अधिक एवं 2. द्वितीय अधिक ।

1. प्रथम अधिक— जतय आधारकेँ आधेयसँ पैघ कहल जाय—

1. **अँटि गेल सकल पुरवासी, सुखसँ नृपतिक आलयमे ।**
जनि उदर मध्य भगवानक, जग-जीव-कदम्ब प्रलयमे ।।[62]

एतय नृपतिक आलय आधार एवं पुरवासी आधेय थिक तहिना भगवानक उदर आधार एवं जगजीव-कदम्ब आधेय । दुनू स्थितिमे आधार पैघ अछि ।

2. **छल यद्यपि ओ राजपथ, पुरक बहुत विस्तीर्ण ।**
किन्तु तखन जनसंघसँ, भेल परम संकीर्ण ।।[63]

2. द्वितीय अधिक— जतय आधारसँ पैघ आधेय हो—

1. **अष्टगन्धसँ हुतबहु गेल अघाए ।**
सुरभिधूमसँ नभकाँ देल छपाए ।।[64]

एतय अग्नि एवं आकाश आधार थिक किन्तु आधेय ओहिसँ पैघ अछि तेँ अग्निकेँ अघाए देलक एवं आकाशकेँ झाँपि देलक ।

2. **महायु□ वरणय के पार, शेष सहसमुख कहइत हार ।**[65]
3. **कहइत बाढ़ विपुल स्वरभंग, हर्ष न अटय अहल्या अंग ।।**[66]
4. **अहँक उदर बड़-बड़ संसार, हमर तनय बनलहुँ व्यवहार ।।**[67]

8. अल्प

आचार्य मम्मट, विश्वनाथ आदिक अधिक अलंकारक विपरीत अलंकारक थिक अल्प । संस्कृत आलांकारिक लोकनिमे मात्र अप्पय दीक्षितेटा एकर उल्लेख कयलनि अछि । हिनका अनुसारेँ अल्प अलंकारमे छोट आधेयक अपेक्षा बहुत पैघ आधार रहनहुँ ओकरा छोट कहल जाइत अछि ।[68] मैथिलीक आलंकारिक लोकनि एकरा स्वतन्त्र अलंकार मानैत छथि । ई लोकनि अप्पय दीक्षितेसँ मिलैत-जुलैत परिभाषा देलनि अछि ।[69]

उदाहरण :

1. **लंका उलटक तन सामर्थ्य, प्रलय करब ई यश बुझि व्यर्थ ।।**[70]

एतय लंका पैघ रहितहुँ ओतबे छोट कहल गेल अछि जे ओकरा रामक दलक कोनो बानर अपन तन-सामर्थ्यसँ उनटि सकैत अछि ।

2. **गुण, महिमा, लीला, रूप, भेद, अपनेक सकथि नहि वरनि वेद ।**
धए रहथि मौन, दुर्वच विशेष, बुझि आओर शारदा-सहित शेष ।।[71]

एतय गुण, महिमा इत्यादि आधेय थिक एवं भेद, शारदा एवं शेष आधार । अतः अत्यन्त पैघ आधारकेँ छोट कहबामे अल्पालंकार भेल । यदि वस्तुतः भगवानक महिमा, गुण इत्यादिकेँ वेद, शारदा एवं शेषक वर्णन क्षमतासँ पैघ मानब तँ ई अधिक अलंकारक उदाहरण भए जायत ।

9. अन्योन्य

अन्योन्य अलंकारक उद्भावनाक श्रेय छनि रुद्रटकेँ । हिनका अनुसारेँ जतय दुइ पदार्थमे परस्पर क्रियाक द्वारा विशिष्टताक परिपुष्ट कयनिहार एक कारक भाव होअए, ओतय अन्योन्य अलंकार होइत अछि ।[72] विश्वनाथक अनुसार यदि दू पदार्थ परस्पर एकहि क्रिया करए तँ अन्योन्य अलंकार होइत अछि ।[73]

मैथिलीक आलंकारिक लोकनि विश्वनाथहिसँ मिलैत-जुलैत परिभाषा देने छथि ।[74]

उदाहरण :

एक खोआबथि दोसरकेँ, नहि कर मोड़बाक प्रसंग
संच-मंच भोजन कैलन्हि, नहि अनुशासनक उलंघ ।।[75]

ब्रह्माक प्रति राक्षसक आक्रोश छलैक जे अहाँ देवताकेँ बेसी मानैत छियनि । ब्रह्मा एकर खण्डन करैत राक्षस एवं देवता दुनूकेँ आमन्त्रित कयलनि आ कहलथिन जे बिनु हाथ मोड़ने मधुर खाउ । पहिने राक्षस पहुँचल जे बिनु हाथ मोड़ने नहि खाय सकल किन्तु बादमे देवतालोकनि अयला आ एक देवता दोसराक मुहमे खोआबए लगलाह जाहिमे हाथ मोड़बाक कोनो प्रश्न नहि छलैक । अतः ई अन्योन्य अलंकारक विलक्षण उदाहरण थिक ।

10. विशेष

विशेष अलंकारक उद्भावक रुद्रट थिकाह । हिनका अनुसारेँ जखन कोनो वस्तुक बिनु आधारक वर्णन होइत अछि एवं ओकर निराधारता उपलभ्यमान रहैत छैक तँ विशेष अलंकार होइत अछि ।[76] रुय्यकक अनुसार आधेयक आधारहीन होयब, एकक अनेक गोचर होयब, यथा असम्भाव्य वस्त्वन्तरक निष्पादन विशेष थिक ।[77] एहि परिभाषाकेँ परवर्त्ती आचार्यलोकनि मानि लेलनि ।[78]

एहि तरहे विशेष अलंकार तीन स्थितिमे होइत अछि—

1. प्रथम विशेष, 2. द्वितीय विशेष एवं 3. तृतीय विशेष ।

1. प्रथम विशेष— जतय बिनु आधारक आधेयक वर्णन हो—

उड़ि चलला हनुमान, ध्यान राम पदमे सतत ।
प्रवल प्रलय पवमान, रौद्रमूर्त्ति लंकाभिमुख ।।[79]

एतय हनुमान बिनु आधारहि उड़िकए जा रहल छथि ।

2. द्वितीय विशेष— जतय एक वस्तुक एकहि समयमे अनेकत्र वर्णन हो—

दिश ओ विदिश विकल दल कयल, गरुड़ अस्त्र रघुनन्दन धयल ।।[80]

एतय एकहि समयमे रावण अपन पन्नग अस्त्रसँ सब दिशा एवं विदिशोमे वानर दलकेँ विकल कए देलक ।

3. तृतीय विशेष— जतय एक कार्यकेँ करैत दोसर अशक्य सि□ भए जाय—

गुरु आज्ञा लए वाटिका, पुष्प चयन हित अयलहुँ ।
एत सुन्दर सखिमध्य विराजित वैदेहीकेँ पओलहुँ ।।[81]

एतय पुष्प चयनक क्रममे सीतासँ भेँट होएब अशक्य सि□ थिक ।

11. मुद्रा

मुद्रा अलंकारक उद्भावक छथि आचार्य भोजराज । मुद्रा शब्द मुदसँ बनल अछि जकर अर्थ होइत अछि सुलभ करब । भोजराजक अनुसार जतय कोनो वाक्यमे साभिप्राय वचनक प्रयोग होइत अछि ओतय मुद्रा अलंकार होइत अछि । ई सहृदयकेँ प्रसन्न करैत अछि ।[82] हिनका अनुसारेँ ई शब्दालंकार थिक, किन्तु अप्पय दीक्षित एकरा अर्थालंकारक अन्तर्गत विवेचन कयलनि, संगहिँ एकर परिभाषाकेँ परिमार्जित कयलनि । हिनका अनुसारेँ जतय प्रस्तुत अर्थसँ सम्ब□ पदक द्वारा सूचनीय अर्थ सूचित कयल जाय ओतय मुद्रा अलंकार होइत अछि ।[83]

आधुनिक आलंकारिक लोकनि दीक्षितसँ मिलैत-जुलैत परिभाषा देने छथि ।[84] जहिना नामांकित मुद्रासँ कोनो विशेष अर्थक सूचना भेटैत अछि तहिना एहि अलंकारसँ प्रासंगिक वर्णनक द्वारा एक विशेष सूचनीय अर्थक सूचना भेटैत अछि ।

उदाहरण :

1. **से कुसंयोगेँ, अभाग्येँ भूसुरक,**
पड़ि गेल असुरक हाथ ।
की होयत धुनने माथ ?
दोष की देबन्हि विधाता केर
ओ प्रथम ई रत्न देलन्हि देवगण दिशि फेरि ।।[85]

एतय भूसुरसँ सज्जन एवं असुरसँ दुर्जनक सूचना भेटैत अछि, तदनुरूपे देवगण एवं दानवक सेहो अर्थ ग्राह्य थीक ।

2. **हम छोट मानव**
पैघ दानव
कातर स्वरसँ करै छी सोर
विकल मनसँ ओ लगै छी गोर ।।[86]

12. व्याघात

व्याघात अलंकारक उद्‌भावक रुद्रटक कथन अछि जे जखन अन्य कोनो कारणक विरोधी नहियोँ भेलापर जतय कारण, कार्यक उत्पादन नहि करैत अछि ओतय व्याघात अलंकार होइत अछि ।[87] रुय्यकक अनुसारेँ एक प्रकारसँ निष्पन्न कार्यकेँ यदि ओही प्रकारसँ अन्यथा निष्पादन कयल जाय तँ व्याघात अलंकार होइत अछि ।[88] पुनः रुय्यक एकर दोसर भेद तखन मानैत छथि जखन कि ककरो द्वारा सुगमतासँ कार्यकेँ उनटि देल जाए ।[89] एही मतकेँ परवतर्त्ती विद्वान लोकनि ग्रहण कए लेलनि अछि ।[90]

प० दामोदर झा एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' व्याघातक एकहि प्रकार मानैत छथि किन्तु प० सीताराम झा एकर दू भेद स्वीकार कए लेलनि अछि ।

1. प्रथम व्याघात— जतय साधन किछु आ साध्य किछु रहय—

रचलनि कुचमण्डल चतुरानन, बढ़बए धनिक शृंगार ।
ओ पुनि किंचित दृश्य देखाकए, मारथि रसिक गमार ।।[91]

2. द्वितीय व्याघात—

1. **लोभी सोचथि धन नहि छोड़ी, जँ दिन विपतिक आबए ?**
दानी सोचथि झट दए दए दी, जँ धन पुनि नहि आबए ?[92]

2. **जे रावण सिर शिवहि चढ़ाब, तकरा गृ□ सकल लतियाब ।**
जे दृग लखि सुर कर किल्लोल, तेहिमे मारए कौआ लोल ।
जे रसनासँ नीति प्रचार, तकरा कर आहार सियार ।
जे श्रुतिपुट सुर-किन्नर गान, नोचय झपटि शकुनि से कान ।।[93]

13. विधि

विधि अलंकारक उद्‌भावनाक श्रेय छनि अप्पय दीक्षितकेँ । हिनका अनुसारेँ पूर्वतः सि□ वस्तुक पुनः विधान विधि अलंकार थिक ।[94] यद्यपि पूर्व सि□ वस्तुक पुनर्विधान पुनरावृत्ति दोष सन बुझाइत अछि, किन्तु विधि अलंकारमे एहन दोष नहि बुझायत । एहिमे एकटा चमत्कार दृष्टिगोचर होइत अछि ।

आधुनिक आलंकारिक लोकनि हिनके परिभाषाकेँ स्वीकार कए लेलनि अछि ।[95] प० दामोदर झा उक्त परिभाषामे कने आर गप्प जोड़ि देलनि जे एहिमे व्यंग्य वर्जित रहैत अछि ।[96]

उदाहरण :

1. **क्रान्ति वैह जे सोनक लंका पलमे भस्म करैछ ।**
कुरुक्षेत्रकेँ महासमरमे सोनित-नद बहबैछ ।।[97]

2. **क्रान्ति वैह जे सिंहासनसँ सुरपतिकेँ भगबैछ ।**
क्रान्ति तथागतकेर भाषा बनि अमर गीत गुंजबैछ ।।[98]

कवि सभ क्रान्तिकेँ क्रान्ति नहि कहैत छथि । जाहिमे सोनक लंकाकेँ छाउर बनएबाक सामर्थ्य छैक, कुरुक्षेत्रक लड़ाइ जकाँ सोनितक धार बहयबाक शक्ति छैक एवं इन्द्रकेँ सिंहासनसँ भगयबाक शक्ति छैक सैह क्रान्ति थिक ।

एहने अन्यान्य उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

3. **कालकूट घट पीबि, सुधारस जगमे बाँटि सकैछ ।**
मर्त्यलोकसँ देवलोक धरि नेता ओ कहबैछ ।।[99]

4. **विषज्वाला-परिपूर्ण नागफण चढ़ि जे नाचि सकैछ ।**
सैह समाजक, धर्मक, राष्ट्रक जन-नेता कहबैछ ।।[100]

14. असंगति

असंगति अलंकारक उद्‌भावक रुद्रट[101] छथि, जे परवर्त्ती आचार्यगणक द्वारा मान्य भेल । विश्वनाथक अनुसार कारण एवं कार्यक भिन्न-भिन्न स्थानमे वर्णन करब असंगति अलंकार होइत अछि ।[102] परवर्त्ती आचार्यगण हिनकहि परिभाषासँ अभिन्न परिभाषा दैत एकर तीनि प्रकारकेँ स्वीकार कयलनि अछि ।[103] मैथिलीक आलंकारिक लोकनिमे प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' कार्य एवं कारणक भिन्न स्थानमे होयबामे असंगति मानैत छथि । ई एकर कोनो भेदोपभेदक उल्लेख नहि कयलनि अछि ।[104]

आधुनिक मैथिली काव्यमे असंगतिक तीनू भेदक उदाहरण भेटि जाइत अछि ।

1. प्रथम असंगति— जतय कारण एवं कार्य भिन्न-भिन्न स्थानमे देखाओल जाय—

प्रिय दर्शन पाओल नयन, हर्ष रोमकेँ भेल ।
सुषमा मूसल नृपक धृति, कम्प कलेवर लेल ।।[105]

एतय आँखि दर्शन करैत अछि आ रोम ठाढ़ भए जाइत अछि, अर्थात् प्रसन्न भए जाइत अछि ।

2. द्वितीय असंगति— उपयुक्त स्थान छोड़ि अन्यत्र कयल गेल कार्यसँ द्वितीय असंगति होइत अछि—

भंग स्वरक पुनि मलिनता, तनिकर वर्णक भेल ।
पीबि अमृत लोचन तृषा, मनक शान्त कए देल ॥[106]

एतय रूपरश्मिक पान नयन करैत अछि जखन कि पान करबाक कार्य थिकैक मुँहक । अत: द्वितीय असंगति भेल ।

3. तृतीय असंगति— एहिमे स्वभावक प्रतिकूल क्रिया करबाक वर्णन होइत अछि—

चलल चित्त वेगेँ मगहिँ, थाकि बनल जड़ देह ।
आह्लादेँ उमड़ल हृदय, बरिसल लोचन मेह ॥[107]

एतय पूर्वा□मे चित्त वेगसँ चलैत अछि किन्तु थाकि कए जड़ देह बनि जाइत अछि जे चित्तक प्रतिकूलता थिक । चित्त तँ सतत चंचल रहनिहार थिक तेँ तृतीय असंगति भेल ।

15. आक्षेप

आचार्य रुद्रटक अनुसार जतय वक्ता कोनो प्रसि□ अथवा विरु□ वस्तुकेँ कहि कए ओकर आक्षेप करैत ओकर समर्थनक हेतु अन्य वस्तुक कथन करय ओतय आक्षेप अलंकार होइत अछि ।[108] मम्मटक अनुसार विवक्षित गप्पमे विशेष उत्कर्ष अनबाक हेतु निषेध सन कयल जाइत अछि, सैह आक्षेप अलंकार भेल ।[109] अप्पय दीक्षितक अनुसार स्वयं कहल गेल गप्पकेँ कोनो कारणविशेषकेँ सोचिकए प्रतिषेध जकाँ करब आक्षेप अलंकार थिक ।[110] प० सीताराम झा आक्षेपक तीन भेद मानैत छथि ।[111] प० दामोदर झा विवक्षित अर्थक निषेधाभासकेँ आक्षेप मानैत छथि ।[112] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' आक्षेपकेँ चारि भागमे बाँटि देलनि अछि ।[113]

आक्षेप अलंकारक मुख्यत: तीन प्रकार अछि—

1. उक्ताक्षेप, 2. निषेधाक्षेप एवं 3. व्यक्ताक्षेप ।

1. उक्ताक्षेप— जतय अभीष्ट गप्प बाजि स्वयं ओकर निषेध कयल जाय—

तुर्वसुक मोद से कहय पार, जे नापि सकए जल जलधिधार ।
करबामे वा क्षम हो विशेष, जे तारागण-गणना अशेष ॥[114]

2. निषेधाक्षेप— जतय इष्टार्थहिमे निषेध नुकायल हो—

1. **वृ□ नृपति-दम्पतिक मुद, तखनुक सकथि वखानि ।**
जँ विधि कविकेँ जीभ सभ, देथि शेष केर आनि ॥[115]

2. **किन्तु अन्तरक कातर वीरक बोल ।**
कहइत छथि, हम जैतहुँ रणरिपु टोल ॥
मुदा हमर उपयुक्त न सारथि एक ।
महारथी सङ लड़बा हित रथ टेक ॥[116]

1. व्यक्ताक्षेप— जतय विषयक कथनसँ पूर्वहिँ निषेध कयल गेल हो—

1. **तखनुक के कवि कहि सकय, युवजन हृदयाह्लाद ।**
अनुभव गोचर जनिक नहि, सपनहुँ ब्रह्मस्वाद ॥[117]

2. **छन्हि दोष किनकर, से कहब लगइछ महा गड़बड़ कथा**
षड्यन्त्र छल, बहुतो गोटय केर से बुझाइछ सर्वथा ॥
चौदह बरस धरि राम वनमे बास लेबय जाइ छथि
राज्याभिषेक छलैन्हि जनिकर, से भिखारी आइ छथि ॥[118]

16. विषम

विषम सम अलंकारक विपरीत अलंकार थिक जकर उद्भावनाक श्रेय छनि रुद्रटकेँ । हिनका अनुसारेँ जतय कार्य एवं कारणसँ सम्ब□ गुणक वा क्रियाक परस्पर विरोध होअए ओतय विषम अलंकार होइत अछि ।[119] रुय्यकक अनुसार प्रतिकूल कार्य, अनर्थक उत्पत्ति एवं विरु□ संघटना जतय वर्णित होअए, ओतय विषम अलंकार होइत अछि ।[120] इषत् परिवर्त्तनक संग मम्मट एकर चारि भेदक कल्पना कयलनि ।[121] विश्वनाथ एकर तीने भेद मानलनि आ मैथिल आलंकारिक लोकनि सेहो हिनक अनुयायी छथि ।[122]

अत: विषम अलंकारक निम्नलिखित तीन भेद मान्य अछि—

1. प्रथम विषम— जतय दूटा वेमेल बस्तुमे परस्पर सम्बन्ध देखाओल जाए—

दनुजाधिप, जनु अगुताह त्रस्त, छथि आइ अधिक ई विपति-ग्रस्त ।
कत तात नृपति-घर सौख्य भोग, कत आकस्मिक अपहरण-योग ॥[123]

एतय राजाक घरक सुखभोग एवं अपहरणजन्य दु:खमे सम्बन्ध देखाओल गेल अछि ।

2. द्वितीय विषम— जतय कार्य एवं कारणक गुण वा क्रिया परस्पर भिन्न होअए—

कत तुच्छ हमर तप अणु-समान । ओ ई फल कत पर्वत महान ॥[124]

एतय क्रिया-वैषम्य द्वारा विषम देखाओल गेल अछि ।

3. तृतीय विषम— जतय कर्ताकेँ अभीष्टक बदलामे अनिष्टक प्राप्ति होइत अछि—

नाम यथार्थ मानि पथिक ब्रज, स्फुट अशोककेँ सेवल ।
ओ पुनि मदन दहन उज्ज्वल कए, शोक बढ़ाओल केवल ॥[125]

पथिक अशोकक (जतय शोक नहि होअए) गाछ तर ओकर नाम सुनि पहुँचल किन्तु कामदेव ओकर शोक आओरो बढ़ा देलथिन ।

17. विषादन

विषादन अलंकारक सर्वप्रथम उल्लेख कयनिहार थिकाह आचार्य जयदेव । हिनका अनुसारेँ जतय इच्छाक विरु□ फलप्राप्ति होअए ओतए विषादन अलंकार होइत अछि ।[126] हिनक परिभाषाक अनुकरणकर्त्ता छथि अप्पय दीक्षित,[127] पण्डितराज जगन्नाथ,[128] प० सीताराम झा,[129] प० दामोदर झा,[130] प्रो० सुरेन्द्र 'झा' सुमन[131] आदि आचार्यगण ।

एहि अलंकारमे इष्टसि□क हेतु लोक प्रयास करैत अछि आ भए जाइत छैक अनिष्ट । ई प्रहर्षणक विपरीत अलंकार थिक ।

उदाहरण :

1. **जे वातावरण कलाक मधुर, से अकत-तीत ।**
जत रस-चर्चा तत आतंकक चर्चा विगीत ॥
छथि क्षुब्ध एम्हर सैरन्ध्री, क्रु□ पुरुष-पंचक ।
सोचथि की दण्ड अखण्डक ओम्हर संच मंचक ॥[132]

एतय इच्छाक विपरीत फल भेने विषादक स्थिति व्याप्त भए गेल तेँ विषादन अलंकार थिक ।

2. **पीयूषक लए चूष, गाड़ि दृढ़ पर्वसुधानिधि,**
क्षीरसागरक फेन मिलाओल अपन हाथ विधि ।
रचल ताहिसँ तनिक हास, से मार-सहायक,
किन्तु भेल विरहीक सहज सन्ताप-विधायक ॥[133]

3. **सूगा फूल देखितहिँ सिमरक फल आशासँ लुबुधल ।**
लगने अन्त लोल भरि तूरक झूरचित्त भए ऊड़ल ॥[134]

18. अनुकूल

एहि अलंकारक उद्‌भावक छथि विश्वनाथ । हिनका अनुसारेँ जतय प्रतिकूलते अनुकूल कार्य करय ओतय अनुकूल अलंकार होइत अछि ।[135]

प० सीताराम झा एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' एहि अलंकारक उल्लेख नहि कयलनि अछि । प० दामोदर झा विश्वनाथहिसँ अभिन्न परिभाषा देने छथि ।[136]

उदाहरण :

1. **सुनु सुनु सुमुखि विमुख विधि भेल, भरतो अपनेक नैहर गेल ।**
नृपतिक अनुमति सौतिनि संग, दिन लग आयल देखब रंग ॥
अहँक अभाग कहल की जाय, सभ गुण गोबर अवसर पाय ॥[137]

एतय मन्थरा द्वारा कहल गप्प प्रतिकूल रहितहुँ कैकेयीक हेतु अनुकूल भए जाइत अछि ।

2. **मरा मरा जप मन एकठाम, यावत हम आबी एहि ठाम ।**
मन एकाग्र सुजप हम कयल, विषय विराम दिव्य हठ धयल ॥[138]

एतए मरा-मरा जपि कए वाल्मीकि महानताकेँ प्राप्त कयलनि ।

संदर्भ :

1. (क) अविरोधेऽपि विरु□त्वेन यद्वचः । —काव्यप्रकाश, 10-110
(ख) आभासत्वे विरोधस्य विरोधाभास इष्यते ॥ —कुवलयानन्द, 76
2. (क) जानु विरोधाभास जोँ, हो विरोध आभास । —अलंकार दर्पण, पृ.- 45
(ख) जँ लखि पड़ए विरोध सन, किन्तु न रहए विरोध ।
से विरोध आभास कहि अलंकार करु बोध ॥ —अलंकार कमलाकर, पृ.- 55
(ग) नहि विरोध आभास तनि, बुझिअ विरोधाभास । —अलंकार मालिका, सूत्र- 79
3. इत्यनेकप्रकारोयमलंकारः प्रतीयते । —काव्यादर्श, पृ.- 196
4. यस्मिन्द्रव्यादीनां परस्परं सर्वथा विरु□ानाम् ।
एकत्रावस्थानं समकालं भवति स विरोधः ॥ —काव्यालंकार, 9-30
5. विरु□ाभासत्वे विरोधः । —अलंकार सर्वस्व, सूत्र- 40
6. जातिश्चतुर्भिर्जात्याद्यैर्विरु□ा स्याद् गुणैस्त्रिभिः ।
क्रिया द्वाभ्यामपि द्रव्यं द्रव्येणैवेति ते दश ॥ —काव्यप्रकाश, 10-110
7. साहित्य दर्पण, 14-28
8. विरोधोऽनुपपत्तिश्चेद्‌गुणद्रव्यक्रियादिषु ।
अमन्दचन्दनस्यन्दः स्वच्छन्दो दन्दहीति माम् ॥ —चन्द्रालोक, 5-74
9. श्लेषादिना विरोधः श्चेद्विरोधाभासता मता ।
अप्यन्धारिणो नेन जगदेतत्प्रकाश्यते ॥ —चन्द्रालोक, 5-75
10. आभासत्वे विरोधस्य विरोधाभास इष्यते ।
विनापि तन्वि हारेण वक्षोजौ तव हारिणौ ॥ —कुवलयानन्द
11. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-14
12. वैह, 1-42
13. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983
14. असम्भवोऽर्थनिष्पत्तावसम्भाव्यत्ववर्णनम् । — चन्द्रालोक, 5-2-76

15. (क) कुवलयानन्द, 24
(ख) असम्भवालंकार हो जतै असम्भव काज । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 50
(ग) कएल गेल जे काज हो, तकर असम्भव उक्ति ।
असम्भवालंकार से, कविजन कहथि सयुक्ति ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 75
(घ) अर्थ सि□ सम्भाव्य नहि, अथच असम्भव बन्ध ।—अलंकार-मलिका, सूत्र- 22
16. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, अरण्यकाण्ड, पृ.- 122
17. क्रियायाः प्रतिषेधे या तत्फलस्य विभावना ।
ज्ञेया विभावनेवासौ समाधौ सुलभे सति ।। —भामह : काव्यालंकार, 2-77
18. क्रियाप्रतिषेधे प्रसि□तत्फलव्यक्तिर्विभावना । —वामन : काव्यालंकार, सूत्र- 4-3
19. क्रियायाः प्रतिषेधे या तत्फलस्य विभावना । —उद्भट : काव्यालंकार सार संग्रह,
20. क्रियाः प्रतिषेधेपि फलव्यक्तिः । —मम्मट : काव्यप्रकाश, 20-107
21. विभावना विना हेतुं कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते ।। —विश्वनाथ : साहित्यदर्पण, 10-66
22. विभावना विनाऽपि स्यात् कारणं कार्यजन्म यत् । —अप्पय दीक्षित : कुवलयानन्द, 77
23. कारणस्य निषेधेन वाध्यमानः फलोदयः । —जगन्नाथ : रसगंगाधर, तृ.ख. पृ.- 77
24. प्रसि□ कारण वेत्रेक कार्योत्पत्ति । —अलंकार-सागर, पृ.- 61
25. अलंकार-दर्पण, पृ.- 47 सँ 49 धरि
26. अलंकार-कमलाकर, पृ.- 57
27. (क) कारण विनु यदि काज हो, विभावनालंकार ।
(ख) बिनु समग्र कारणहु यदि, काज विभावन ह्वैछ ।
(ग) प्रतिबन्धक रहितहुँ वचन, काज विभावन ह्वैछ ।
(घ) जे न जकर कारण ततहु, काज विभावन जानु ।
(ङ) पुनि यदि हेतु विधान किछु, काज अनाप-सनाप ।
(च) काजहिसँ कारणक, हो उत्पति नवे विलास ।।
—अलंकार-मालिका, सूत्र- 80 सँ 85 धरि ।
28. उक्तानुक्तनिमित्तत्वाद् द्विधा सा परिकीर्त्तिता । —साहित्यदर्पण, पृ. 350
29. कुवलयानन्द : पृ. 78-82
30. सा चास्यामप्यभिचारेणेति न तद्वाधेनास्या उत्थानम् अपितु तदनुप्राणितत्वेन ।
—अलंकार-सर्वस्व, पृ.- 231
31. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : प्रतिपदा : श्मशान, पृ.- 29
32. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : अरण्यकाण्ड, पृ.- 122
33. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, अरण्यकाण्ड, पृ.- 38

34. सरसकवि ईशनाथ झा : शकुन्तला-नाटक, 2-1
35. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-57
36. वैह, 2-46
37. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड, पृ.- 177
38. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 2-37
39. महाकवि मनबोध : कृष्णजन्म, अध्याय-2, पृ.- 4
40. एकदेशस्य विगमे या गुणान्तरसंस्थितिः ।
विशेषप्रथनायासौ विशेषोक्तिर्मता यथा ।। —काव्यालंकार, 3-23
41. गुण जाति क्रियादीनां यत्र वैकल्प्यदर्शनम् ।
विशेष दर्शनायैव सा विशेषोक्तिरिष्यते ।। —काव्यादर्श, 323
42. (क) सति हेतौ फलाभावे विशेषोक्तिस्थता द्विधा । —साहित्यदर्पण, 10-67
(ख) कारण हो परिपूर्ण पुनि, जोँ उत्पन नहि काज ।
विशेषोक्ति भूषण ततै, वरणथि सुकवि समाज ।।—अलंकार-दर्पण, पृ.- 50
(ग) कारण रहितहुँ कार्यकेँ, नहि उत्पत्ति लखाए ।
काव्य मार्गमे ताहिकेँ विशेषोक्ति कहि जाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 60
(घ) विशेषोक्ति नहि काज वरु, कारण रहओ अशेष । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 85
43. अलंकार मीमांसा : डा० राजवंश सहाय 'हीरा', पृ.- 122
44. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली परिणय, 8-84
45. प्रो० रमण झा : मिथिला मिहिर, 19-25 जून, 1983
46. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : प्रतिपदा : श्मशान, पृ.- 29
47. प्रो० रमण झा : मिथिला मिहिर, 19-25 जून, 1983
48. समं योग्यतया योगो यदि सम्भावितः क्वचित् । —काव्यप्रकाश, 10-125
49. अलंकार-मालिका, सूत्र- 92
50. (क) समं स्याद्वर्णनं यत्र द्वयोरप्यनरूपयोः ।
सारूप्यमपि कार्यस्य कारणेन समं विदुः ।।
विनानिष्टं च तत्सि□र्यमर्थं कर्त्तुमुद्यतः ।। —कुवलयानन्द, 91-93
(ख) अलंकार सम होए जोँ, दुइ अनुरूपक संग ।
सम तथापि यदि काजमे, कारण सन गुण भास ।।
जकर हेतु उद्योग से बिना अनिष्टहि सि□ ।
हो तोँ तहाँ कहैत छथि, अलंकार सम वृ□ ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.-53-55

(ग) हेतु कार्यकेँ गुण क्रिया जँ अनुकूल बुझाए ।
कृत अनर्थ निष्फल रहए इष्टसि□ भए जाए ।।
जतय दुहू अनुरूपके, संगम सुभग लखाए ।
अलंकारकेँ शास्त्रमे, से सम नाम कहाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 87

51. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983
52. वैह
53. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-48
54. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ. 38
55. स्वविपरीतफलनिष्पत्तये प्रयत्नो विचित्रम् ।। —अलंकार सर्वस्व, सूत्र- 47
56. (क) जदि विरु□ फल हेतु हो, उद्यम ततै ि वचित्र ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.-55
(ख) जतय इष्ट फल लाभ के, रहय क्रिया प्रतिकूल ।
से विचित्र कहि जाए हो, चमत्कार के मूल ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 63
(ग) फल इच्छा विपरीत यदि, क्रिया विचित्र प्रयुक्त । —अलंकार'मालिका, सूत्र- 92
57. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, अरण्य काण्ड, पृ.- 119
58. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983
59. वैह
60. यत्रान्योन्यविरु□ं विरु□बलवत्क्रियाप्रसि□ं वा ।
वस्तुद्वयमेकस्माज्जायते इति तद्भवेदधिकम् ।। —काव्यालंकार, 9-25
61. (क) आश्रयाश्रयिणोरेकस्याधिक्येऽधिकमुच्यते । —विश्वनाथ : साहित्यदर्पण, 10-72
(ख) अति विशाल आधार सँ, आधेयक जहिठाम ।
होए अधिकता कथन तोँ, आधिकालंकृति नाम ।।
अथवा पृथु आधेय सोँ, अधिक जतै आधार ।
ततहु मानु कविजन कथित, पुनि अधिकालंकार ।। —अलंकार दर्पण, पृ.- 55-56
(ग) आश्रित वा आधारकेँ, जँ आधिक्य लखाए ।
अधिकालंकृति मानुसे, बुधजन कहथि बुझाए ।। —अलंकार कमलाकर, पृ.- 64
(घ) अधिक पैघ आधारसँ, यदि आधेय विशेष ।
अधिक यदि च बढ़ि बढ़ल हो, आधेयहु आधार ।।
—अलंकार-मालिका, सूत्र- 94-95
62.-63. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 3-41. एवं 2-64
64. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 5-13

65. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, लंकाकाण्ड, पृ.- 158
66. वैह, बालकाण्ड- पृ.- 23
67. वैह, पृ.- 16
68. अल्पं तु सूक्ष्मादाधेयाद्यदाधारस्य सूक्ष्मता ।
मणिमालोर्मिका तेऽद्य करे जपवटीयते ।। —कुवलयानन्द, 97
69. (क) परम सूक्ष्म आधेयसँ, अल्प जतै आधार ।
ततै जानु कविजन कहथि, नित अल्पालंकार ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 56
(ख) जतय सूक्ष्म आधेयसँ, परम सूक्ष्म आधार ।
से अल्पालंकार कहि, बुधजन करु व्यवहार ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 64
(ग) आधेयहुसँ सूक्ष्मतर, आधारे हो अल्प । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 96
70. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, लंकाकाण्ड, पृ.- 215
71. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-44
72. यत्र परस्परमेक: कारकभावोऽभिधेययो:, क्रियया संजायते स्फारिततत्त्वविशेषस्तदन्योन्यम् ।
—काव्यालंकार, 9-91
73. अन्योन्यमुभयोरेकक्रियाया: कारणं मिथ: । —साहित्यदर्पण, पृ.- 354
74. (क) जते होए दुइ वस्तुमे, तुल्य परस्पर कार ।
ततै जानु कविजन कथित, अन्योन्यालंकार ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.-57
(ख) एके कृतिसँ दुइ करथि, परस्परक उपकार ।
अन्योन्यालंकार कहि, तकर होए व्यवहार ।। —अ.क. पृ.- 65
(ग) अलंकार अन्योन्य थिक, परस्परक उपकार । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 97
75. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : कथा-यूथिका, पृ.- 57
76. किंचिदवश्याधेयं यस्मिन्नभिधीयते निराधारम् तादृगुपलभ्यमानं विज्ञेयोऽसौ विशेष इति ।
—काव्यालंकार, 9-5
77. अनाधारमाधेयमेकमनेकगोचरमशक्यवस्त्वन्तकरणं विशेष: । —अलंकार सर्वस्व, सूत्र- 50
78. (क) 1. वर्णित हो आधेय जौँ, विनु आधार विशेष ।
2. एकक एकहि काल वा, वर्णन बहुतो ठाम ।
3. थोड़ हेतु उद्योग सोँ, बहुत लाभ जहि ठाम ।। —अलंकार दर्पण, पृ.- 57-58
(ख) निराधार आधेय रह एके कइ थल माह ।
आन कार्य करबाक सङ आनो करु अवगाह ।।
जाहि कार्य करबाक नहि शक्ति, सेहो देवात ।
कैल जाय तँ होए से पुनि विशेषकेँ गात ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 65

79. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड, पृ.- 193
80. वैह, लंकाकाण्ड, पृ.- 258
81. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983
82. साभिप्रायस्थे वाक्ये यद्वचसो विनिवेशनम् । मुद्रां तां मुत्प्रदायित्वात्काव्यमुद्राविदो विदुः ।

—सरस्वती कण्ठाभरण, 2-82

83. सूच्यार्थं सूचनं मुद्रा प्रकृतार्थं परैः पदैः । —कुवलयानन्द, 139
84. (क) प्रकृत अर्थ पदसाँ जतै, सूचनीय पद अर्थ ।
सूचित होइछ तोँ कहथि, मुद्रा सुकवि समर्थ ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 78
(ख) प्रकृत अर्थ वर्णनक सङ, किछु सूचित भए जाए ।
कविक कला संयुत रहए, मुद्रा तखन कहाए ।। —अ.क. पृ.- 112
(ग) मुद्रा प्राप्त प्रसंग मत, पदसँ सूचित अर्थ । — लंकार-मालिका, सूत्र- 147
85. डा० श्रीकृष्ण मिश्र : मेरुप्रभा, आवाहन, पृ. 3
86. वैह, आवाहन, पृ.-7
87. अन्यैरप्रतिहतमपि कारणमुत्पादनं न कार्यस्य ।
यस्मिन्नभिधीयते व्याघातः स इति विज्ञेयः ।। —काव्यालंकार, 9-52
88. यथा साधितस्य तथैवान्येनान्यथाकरणं व्याघातः । —अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 51
89. सौकर्येण कार्यविरु□क्रिया च ।। —अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 52
90. (क) साहित्यदर्पण, पृ.- 355
(ख) 1. दुइ जन एकहि वस्तुसँ, साधय काज विरु□ ।
वा विरु□ कृति एकहिक, तोँ व्याघात विशु□ ।।
2. यदि दू क्रिया विरु□ हो, एकहि साधन हेतु ।
व्याघातालंकार पुनि, ततहु कहल कवि केतु ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.-59
(ग) एक हेतुसँ कार्यकेँ एक जेना कय दैछ ।
ताहीसँ क्यो आन करु, से व्याघात रहैछ ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 66
(घ) साधन आने साध्य किछु, हो व्याघातहि नाम ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 101
91. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983
92. वैह
93. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, लंकाकाण्ड, पृ.- 315
94. सि□स्यैव विधानं यत्तमाहु-र्विध्यलंकृतिम् । —कुवलयानन्द, 166
95. (क) सि□हि वस्तुक कथन जोँ, होय ततय विधि नाम । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 93

(ख) सि□ वस्तुहिक सि□ता, थिक विधि लक्षण उक्त । — अलंकार-मालिका, सूत्र- 77
96. जन साधारण सि□ के शब्दहु करए विधान ।
व्यंग्यार्थाविष्फरण फल ततए विधिक करु मान । —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 53
97. दीनानाथ पाठक 'बन्धु' : चाणक्य : प्रथम सर्ग, पृ.- 3
98. वैह, पृ.- 3
99. वैह, पृ.- 3
100. वैह, पृ.- 3
101. विस्पष्टे सकलं कारणमन्यत्र कार्यमन्यत्र ।
यस्यामुपलभ्यते विज्ञेयासंगतिः ज्ञेयम् । —काव्यालंकार, 9-48
102. कार्यकारणयोर्भिन्नदेशतायामसंगतिः । —साहित्यदर्पण, 10-69
103. (क) विरु□ं भिन्नदेशत्वं कार्यहेतोरसंगतिः ।
अन्यत्र करणीयस्य ततोऽन्यत्र कृतिश्च सा ।।
अन्यत्कर्तुं प्रवृत्तस्य तद्विरु□कृतिस्तथा ।। —कुवलयानन्द, 85-86
(ख) 1. कारणसँ काजक जतै, भिन्न विरु□ स्थान ।
अलंकार कविजन कथित, ततय असंगति मान ।।
2. उचित बलक कर्त्तव्य पुनि, हो यदि दोसर ठाम ।
यदि वा काज विरु□ हो, तदपि असंगति नाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 51
(ग) कारण जँ अनतय रहय, अनतए कार्य लखाए ।
असंगतिक ई रूप अछि, जतए विरोध बुझाए ।।
अनतए जे कर्त्तव्य छल, से अनतए कए लेल ।
आन काज कर्त्तव्य छल, तद्विरु□ कए देल ।।
से एहि तीनू भेदकेँ, विवुध असंगति जान ।
रहए विरोधाभास संग रचना कलानिधान ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 60
104. काज कतहु कारण कतहु, असंगतिक थिक मूल ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 87
105. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 13-61
106. वैह, 13-62
107. वैह, 13-63
108. वस्तु प्रसि□मिति यद्विरु□मिति वास्य वचनमाक्षिप्य अन्यत्तथान्यसि□ै र्यत्र ब्रूयात्स आक्षेपः ।

—काव्यालंकार, 8-89

109. निषेधो वस्तुनिष्ठस्य यो विशेषोभिधित्सया ।
वक्ष्यमाणोक्तविषयः स आक्षेपो द्विधा मतः ।। —काव्यप्रकाश, 10-161

110. आक्षेपः स्वयमुक्तस्य प्रतिषेधोविचारणात् ।। —कुवलयानन्द, 73

111. (क) जिन उक्तिक प्रतिषेध हो, किछु बुझि तोँ आक्षेप ।
(ख) जदि निषेध आभास हो, तोँ आक्षेप बखान ।।
(ग) सम्मतिमे प्रतिषेध हो, गुप्तरूप जहिठाम ।
ततहु कहल आक्षेप कवि, अलंकार अभिराम ।।—अलंकार-दर्पण, पृ.- 44-45

112. जे कहबाक अभीष्ट हो, तकर निषेधाभास ।
आक्षेपालंकार से, दृढ़ता करए विकास ।। —अलंकार कमलाकर, पृ.- 50

113. (क) कहि किछु पुनि नव कथा कहि, प्रतिषेधे आक्षेप ।
(ख) नहि निषेध वास्तविक पुनि, मात्र तकर आभास ।
आक्षेपहिक प्रकार से, उक्ति विदग्ध प्रकाश ।।
(ग) विधि निषेध वचनक यदि च, व्यक्त अन्यथाभाव ।
(घ) आभाषिते निषेध हो, सेहो भेद आक्षेप ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 75-78

114. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-55

115. वैह, 13-96

116. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : उत्तरा-चतुर्थ सर्ग, पृ.- 38

117. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 2-39

118. व्यथा

119. कार्यस्य कारणस्य च यत्र विरोधः परस्परं गुणयोः तद्वक्रिययोस्तथा संजायतेति तद्विषमम् ।
—काव्यालंकार, 9-45

120. विरूपकार्ययोरनर्थयोरुत्पत्तिर्विरूपसंघटना च विषमम् । —अलंकार-सर्वस्व, 45

121. काव्यप्रकाश, 10-126-27

122. (क) गुणौ क्रिये वा यत् स्यातां विरु□ हेतु कार्ययो : यद्वरब्धस्य वैफल्यम् अनर्थस्य च सम्भवः विरूपयोः संघटना या च तद्विषमम् मतम् ।। —साहित्यदर्पण, 10-70
(ख) असदृश घटना भेद अति, वर्णन हो जहिठाम ।
ततय कहथि कविजन सदा, विषम अलंकृति नाम ।।
2. निश्चय रूप हो हेतुसँ, काज कतहु जुनि ओज ।
3. साधन इष्ट करैत वा, हो अनिष्ट जहिठाम । —अलंकार दर्पण, पृ.- 52-53
(ग) हेतु कार्यकेँ गुण-क्रियासँ प्रतिकूल बुझाए ।
कृत प्रयत्न निष्फल होअए, उपर अनर्थ देखाए ।।
जँ दुइ वस्तु विरु□केँ, संगम कतहु जनाए ।
कविगण पोषक सकल ई, विषमक भेद कहाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 62
(घ) 1. विषम सुदूर विरूपहुक, यदि घटना संयोग ।
2. पुनि विषमो यदि काज हो, हेतुक तुक विपरीत ।
3. अथवा इष्ट अनिष्ट केर, प्राप्ति मनक प्रतिकूल ।।
—अलंकार-मालिका, सूत्र- 89-91

123. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 8-87

124. वैह, 1-40

125. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय- 7-34

126. इष्यमाणविरु□ार्थसम्प्राप्तिस्तु विषादनम् । —चन्द्रालोक- 5-50

127. कुवलयानन्द- 132

128. हिन्दी रसगंगाधर- तेसर भाग, पृ.- 326-29

129. अपन विचारल इष्टमे, हो अनिष्ट जहिठाम ।
ततय अलंकारक कहल, सुकवि विषादन नाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 75

130. वांछितार्थ प्रतिकूलके, जतय लाभ भए जाए ।
ततए विषादन नामकेँ, अलंकार कहि जाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 102

131. इच्छा छल किछु, भेल किछु, विरुध विषादन अन्त ।
उसकाबय दीपक चलल, मिझा गेल हा हन्त ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 136

132. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : उत्तरा : तेसर सर्ग, पृ.- 29

133. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 8-74

134. वैह- 7-44

135. अनुकूलं प्रतिकूलमनुकूलनिबन्धि चेत् । —साहित्य-दर्पण, 10-64

136. प्रतिकूलो जे काज से, जँ अनुकूल बुझाए ।
अनुकूलांकृति तखन से, बुध जनसँ कहि जाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 63

137. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : अयोध्याकाण्ड- पृ. 58

138. वैह, अरण्यकाण्ड- पृ.- 84

पंचम अध्याय

शृंखलामूलक अलंकार

1. कारणमाला

कारणमाला शृंखलामूलक अलंकार थिक । एहिमे कारणक माला बनि जाइत अछि । एकर उद्भावनाक श्रेय छनि रुद्रटकेँ । हिनका अनुसारेँ एहि अलंकारमे पूर्ववर्त्ती अर्थक परवर्त्ती अर्थ कारण बनि जाइत अछि आ ई प□ति यदि आगुओ निमहि जाइत अछि तँ कारणमाला अलंकार होइत अछि ।[1] एहने परिभाषा मम्मट[2] एवं विश्वनाथ[3] सेहो देलनि, किन्तु पण्डितराज जगन्नाथ किछु-किछु भिन्न परिभाषा दैत कहलनि जे जतय पूर्व-पूर्व कार्य एवं पर-पर कारण हो ओतय कारणमाला अलंकार होइत अछि ।[4]

प० सीताराम झा[5] एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[6] पूर्व-पूर्व वर्णित कारणसँ कारणमाला अलंकार मानैत छथि, किन्तु प० दामोदर झा[7] पूर्व-पूर्व वर्णित कारण एवं पूर्व-पूर्व वर्णित कार्य दुनूसँ कारणमाला अलंकार मानैत छथि ।

एहि तरहेँ कारणमाला दू प्रकारक होइत अछि—

1. प्रथम कारणमाला एवं 2. द्वितीय कारणमाला

1. प्रथम कारणमाला— जतय पूर्व-पूर्व कारण एवं पर-पर कार्य हो—

1. **विद्या सोँ हो विनय, विनयसोँ हो पात्रत्व विशेष ।**
   पात्रत्वहिसोँ धनक प्राप्ति हो, धनसोँ धर्म अशेष ॥
   सुख धर्महिक फल थिक, सुखसँ शान्ति रहल मन लाए ।
   शान्ति प्राप्त भेलासोँ मानव जन्म सफल भय जाय ॥[8]

2. **विद्यासँ धन, ताहि सोँ धर्म, धर्मसँ शान्ति ।**
   तहिसँ सुख, सद्बु□ पुनि हटय हृदयसँ भ्रान्ति ॥[9]

3. **श्रमसँ विद्या, विद्यासँ धन, धनसँ हो सम्मान ।**
   सम्मानहिसँ यशक प्राप्ति हो, यशसँ कीर्त्ति महान ॥[10]

2. द्वितीय कारणमाला— जतय पूर्व-पूर्व कार्य एवं पर-पर कारण कथित रहय—

ईश्वर भेटथि विरागसँ, हो विराग यदि भक्ति ।
भक्ति होय आसक्ति सँ, आसक्तिहु यदि शक्ति ॥[11]

एतय पूर्व-पूर्व कार्य एवं पर-पर कारण वर्णित अछि ।

2. एकावली

एकावलीक अर्थ होइत अछि माला । एहि अलंकारमे विशेष्य एवं विशेषणक मेलसँ मालारूप धारण कए लैत अछि । एकर सर्वप्रथम उल्लेख रुद्रट कयलनि । हिनका अनुसारेँ जतय अर्थक परम्परा उत्कृष्ट राखल जाइत अछि ओतय एकावली अलंकार होइत अछि । एहिमे पूर्ववर्त्ती अर्थ अपन परवर्त्ती अर्थक विशेषण होइत छैक । ई कतहु विधि रूपसँ एवं कतहु निषेध रूपसँ वर्णित रहैत अछि ।[12] विश्वनाथ एकर परिमार्जित परिभाषा देने छथि । हिनका अनुसारेँ पूर्व-पूर्वक प्रति पर-पर वस्तुक विशेषण रूपमे स्थापन वा निषेध एकावली अलंकार थिक ।[13] अप्पय दीक्षितक अनुसार अनेक पदार्थक श्रेणी एहि तरहेँ निब□ कयल जाय जे पूर्व-पूर्व पद उत्तरोत्तर पदक विशेषण वा विशेष्यक रूपमे ग्रहण वा त्याग कयल जाय ।[14]

प० सीताराम झा पूर्व-पूर्वकेँ पर-परसँ सम्बन्ध रहने एकावली अलंकार मानि लैत छथि ।[15] प० दामोदर झाक अनुसार यदि पर-पर विशेषणक स्थापन वा निषेध हो ततए एकावली अलंकार होइत अछि ।[16] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अनुसार पूर्व-पूर्व विशेषण प्रयोगसँ एकावली अलंकार होइत अछि ।[17]

उदाहरण :

1. **जलमे किरण, किरणमे लाली, लालीमे सौन्दर्य अपार**
   सरमे खग, खगमे कलरवरव कलरवमे मुद मोद प्रचार
   सरमे कमल, कमल पर मधुकर, मधुकरमे कलमद गुंजार
   तरुमे दल, दलपर कोकिलकुल, कोकिलकुल कलनाद उचार ॥[18]

एतय पर-पर वर्णित पद पूर्व-पूर्व वर्णित पदक विशेषण रूपमे प्रयुक्त अछि ।

2. **नृप-भवन पूर्ण छल लोकेँ, सभलोक हर्षसँ मनमे ।**
   पुनि हर्ष विलक्षणतासँ, सुतजन्म-महोत्सव छनमे ॥[19]

3. **संख्या-बल रहनहि की, यदि नहि ऊर्जस्वल बल-सत्व ?**
सत्त्व एहन की, जहिसँ नहि हो अर्जित मान-महत्त्व ?
एहन महत्त्वे की, जहिसँ नहि उपकृत जाति-समाज ?
जाति-समाज एहन की, जकर पतन-चर्चासँ लाज ?[20]

3. रत्नावली

रत्नावलीक उद्भावक छथि अप्पय दीक्षित । यद्यपि भोजराजक शब्दालंकारक एक प्रभेद क्रमगत-गुम्फनामे रत्नावलीक भाव आबि जाइत अछि, तेँ भोजराजक क्रमगत गुम्फनाक उदाहरण एवं दीक्षितक रत्नावलीक उदाहरण एके थिक ।[21]

अप्पय दीक्षितक अनुसार जतय प्रकृतक अर्थकेँ प्रसि□ क्रमक आधारपर राखल जाइत अछि ओतय रत्नावली अलंकार होइत अछि ।[22] आधुनिक आलंकारिक लोकनि हिनके अनुगमन कयलनि अछि ।[23]

उदाहरण :

1. **अपनहि विधि हरि हर सुर सर्व्व । हरण करिय जग दुष्टक गर्व्व ॥**[24]

एतय भगवान रामक हेतु विधि, हरि एवं हरक प्रयोग भेल अछि जे सक्रम अछि— सृजनकर्त्ता, पालनकर्त्ता एवं संहारकर्त्ता । अतः रत्नावली अलंकार भेल ।

2. **विधि हरि हर महिमा नहि जानथि वेद न पाबथि पार**
आनक कोन कथा जगदीश्वर विनमोँ बारम्बार ॥[25]

3. **उत्पत्ति पालन लय सामर्थ्य, हमरा ककरो भय से व्यर्थ ।**[26]

4. **लक्ष्मण कहल धैर्य धरु नाथ, उत्पत्ति स्थिति लय प्रभु हाथ ॥**[27]

4. सार

सार शृंखलामूलक अलंकार थिक जकर उद्भावक छथि रुद्रट । हिनका अनुसारेँ जतय क्रमसँ उत्कृष्टताक सीमा निर्धारित कयल जाइत अछि, ओतय सार अलंकार होइत अछि ।[28] रुय्यकक कथन अछि जे पूर्व-पूर्वक अपेक्षा उत्तरोत्तर उत्कर्ष वर्णन सार थिक ।[29] मम्मट[30] एवं विश्वनाथ[31] रुय्यकेक परिभाषाकेँ समर्थन करैत छथि । पण्डितराज जगन्नाथ उक्त परिभाषाकेँ स्वीकार करैत उत्तरोत्तर अपकर्ष वर्णनमे सेहो सार अलंकार मानैत छथि ।[32] प० सीताराम झा उत्तरोत्तर उत्कर्ष वा अपकर्षक वर्णनमे सेहो सार अलंकार मानैत छथि ।[33] प० दामोदर झा[34] एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[35] उत्तरोत्तर उत्कर्ष वर्णनमे सार अलंकार मानैत छथि ।

एहि तरहेँ सार अलंकारक दू भेल भेल— 1. प्रथम सार एवं 2. द्वितीय सार ।

उदाहरण :

1. प्रथम सार— एहिमे उत्तरोत्तर उत्कर्ष वर्णन देखल जाइत अछि ।

नारि जाति सहजहिँ सुन्दर, सुन्दरतम तनि रूप ।
रूपहुँसँ सुन्दर नयन, नयनहु कुच अपरूप ॥[36]

2. द्वितीय सार— एहिमे उत्तरोत्तर अपकर्षक वर्णन रहैत अछि ।

सभसँ दुख थिक दरिद्रता, दुखतर थिक पुनि व्याधि ।
व्याधिहुसँ दुख थिक महा, चंचल मनकेर आधि ॥[37]

संदर्भ :

1. कारणमाला सेयं यत्र यथापूर्वमेति कारणताम्, अर्थानां पूर्वार्थाद्भवतीदं सर्वमेवेति । —काव्यालंकार, 84
2. यथोत्तरं चेत्पूर्वस्य पूर्वास्यार्थस्य हेतुता, तदा कारणमाला स्यात् । —काव्यप्रकाश, 10-186
3. परं परं प्रति यदा पूर्वपूर्वस्य हेतुता तदा कारणमाला स्यात् । —साहित्यदर्पण, 10-76
4. रसगंगाधर : तेसर भाग : नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, पृ.- 212
5. जोँ कारण सोँ काज भै, से कारण बनि जाय ।
तोँ कारणमाला ततै, कहल सुकवि-समुदाय ॥ —अलंकार-दर्पण, पृ.- 60
6. पूर्व-पूर्व कारण ग्रथित कारणमाला जान । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 102
7. पूर्व-पूर्व जे हेतु रहि पर-पर कार्य लखाए । कारणमाला काव्यमे कविजनसँ कहि जाए ॥
अथवा पर-पर हेतु हो पूर्व-पूर्व हो कार्य । कारणमाला नामसँ तकरहु कहलन्हि आर्य ॥
—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 67
8. प० जनार्दन झा 'जनसीदन' : नीति-पदावली, 207
9. कविता-संग्रह : मैथिली अकादमी, पृ.- 42
10. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983
11. वैह
12. एकावलीति सेयं यत्रार्थपरम्परा यथालाभम् ।
आधीयते तथोत्तरविशेषणा स्थित्यपोहाभ्याम् ॥ —काव्यालंकार, 7-109
13. पूर्व-पूर्व प्रतिविशेषणत्वेन परं परम् ।
स्थाप्यतेऽपोह्यते वा चेत् स्यात्तदैकावली द्विधा ॥ —साहित्यदर्पण, 11-78
14. गृहीतमुक्तरीत्यार्थश्रोणिदेकावलिर्मता ॥ —कुवलयानन्द, 105

15. पूर्व-पूर्वकेँ होए यदि, क्रमहि परक सम्बन्ध ।
अलंकार एकावली, कहल सुकवि दृढ़ सन्ध ।। —अलंकार-दर्पण

16. जतए विशेषण रूपमे, पर-पर थापल जाए ।
अथवा होए निवारणे, एकावली कहाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 68

17. क्रमहि पहिल हो विशेषण अगिलुक श्रेणीब□ ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 103

18. दीनानाथ पाठक 'बन्धु' : चाणक्य : प्रथम सर्ग, पृ.- 26

19. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 3-64

20. कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' : बाजि उठल मुरली, पृ.- 55

21. सरस्वती कण्ठामरण : 183, एवं कुवलयानन्द- 234

22. क्रमिकं प्रकृतार्थानान्यासं रत्नावली विदुः । —कुबलयानन्द, 140

23. (क) प्रस्तुत वर्णन मध्य जोँ, आनहु वस्तुक नाम ।
क्रमसोँ वर्णन होय तेँ, रत्नावली ललाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 79

(ख) जतय प्रकृत अर्थक सङे क्रम-प्रसि□ उल्लेख ।
होए तखन रत्नावली काव्य-सरणिमे देख ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 70

(ग) प्रकृत अर्थ गाँथव क्रमिक, रत्नावली सुरेब । —अलंकार मालिका, सूत्र- 148

24. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, लंकाकाण्ड- पृ.- 200

25. प्राचीन गीत : प्रो० रमानाथ झा, पृ.- 145

26., 27. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, लंकाकाण्ड, पृ.- 200 एवं किष्किन्धाकाण्ड, पृ.-13

28. यत्र तथा समुदायाद्यथैकदेशं क्रमेण गुणवदिति निर्धायते परावधि निरतिशयं तद्भवेत्सारम् ।
—काव्यालंकार, 7-96

29. उत्तरोत्तरमुत्कर्षः सारः । —अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 56

30. उत्तरोत्तरमुत्कर्षो भवेत्सारः परावधिः ।। —काव्यप्रकाश, 10-123

31. उत्तरोत्तरमुत्कर्षो वस्तुनः सार उच्यते ।। —साहित्यदर्पण, 10-79

32. रसगंगाधर : खण्ड-3, पृ.- 222-23

33. जतै एकसोँ एक हो, क्रमहि अधिक उत्कृष्ट ।
सार नाम भूषण ततै, अथवा क्रमहि निकृष्ट ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 61

34. उत्तर-उत्तर वस्तुमे, जँ वैशिष्ट्य बुझाए ।
सारालंकृति काव्यमे बुध जनसँ कहि जाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 69

35. सार उत्तरोत्तर बढ़य, जत उत्कर्ष उदार । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 107

36. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

37. वैह

l

षष्ठ अध्याय

गूढ़ार्थ प्रतीतिमूलक अलंकार

1. सूक्ष्म

सूक्ष्म गूढ़ार्थ प्रतीतिमूलक अलंकार थिक जे अत्यन्त प्राचीनकालसँ आलंकारिक द्वारा ग्राह्य होइत रहल अछि । एकर उद्भावक के छथि से अज्ञात रहल अछि । भामह एकरा अलंकार नहि मानैत छथि कारण जे एहिमे वक्रोक्तिक अभाव अछि ।[1] किन्तु दण्डी तँ एकरा वाणीक उत्तम भूषण कहलनि अछि ।[2] एहि तरहेँ प्रख्यात आलंकारिक लोकनिमेसँ सभ केओ एकर अलंकारत्वकेँ स्वीकार कयलनि अछि । आचार्य विश्वनाथक अनुसार आकार एवं चेष्टासँ बुझबायोग्य सूक्ष्म अर्थ जतय कोनो युक्तिसँ सूचित कयल जाय, ओतय सूक्ष्म अलंकार होइत अछि ।[3] प० सीताराम झाक अनुसार यदि संकेत बुझि कय ओकर प्रतिकार कयल जाय तँ सूक्ष्म अलंकार होइत अछि ।[4] प० दामोदर झाक अनुसार यदि सूक्ष्म बातकेँ सूक्ष्म ढंगसँ प्रकट कयल जाय तँ सूक्ष्मालंकार होइत अछि ।[5] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अनुसार जतय संकेत आन नहि बुझय ओतय सूक्ष्म अलंकार होइत अछि ।[6]

एहि अलंकारक माध्यमे सूक्ष्म अर्थक संकेत इष्ट व्यक्तिहिटाकेँ भेटैत अछि । कोनो नायिका अपन पिता वा गुरुजनक समक्ष उपस्थित नायकसँ रात्रि मिलनक संकेत देबय चाहैत छथि तेँ ओ अपन दुनू हाथसँ कमलक फूलकेँ बन्द कए दैत छथि । एहि संकेतकेँ आन केओ नहि बुझैत छथि, मात्र नायक बुझैत छथि जे सूर्यास्त भेलापर कमल बन्द होयत तेँ सूर्यास्तक बाद हमरा संकेत स्थलपर पहुँचबाक थिक । उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

1. **पितु गुरुजन बिच नलिनकेँ, कयल सम्पुष्टित वाम ।**
छल संकेत निशि मिलन केर, सता रहल छल काम ।।[7]

2. **स्मितमुख राम न बजला अनुज निहारि । चेष्टहि कयल निवारण समय विचारि ॥**[8]

2. व्याजोक्ति

व्याजोक्ति गूढ़ार्थप्रतीतिमूलक अलंकार थिक जकर उद्‌भावक वामन थिकाह । हिनका अनुसारेँ व्याज सत्यक संग सारूप्य व्याजोक्ति थिक ।[9] एहि कथनकेँ स्पष्ट करैत ओ कहलनि जे असत्यक बहानासँ सत्यक प्रतिपादन करब व्याजोक्ति अलंकार थिक जकरा अन्य व्यक्ति मायोक्ति कहैत छथि ।[10]

एकरा आओरो स्पष्ट करैत विश्वनाथ कहलनि जे प्रकट कयल गेल रहस्यकेँ कोनो बहानासँ नुकायब व्याजोक्ति थिक ।[11] परवर्त्ती आचार्य लोकनि हिनकेसँ मिलैत परिभाषा देने छथि ।[12]

एहि अलंकारमे प्रकट होइत रहस्यकेँ बड़ चतुरतासँ नुकाय लेल जाइत अछि । उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

यदपि अपन सखिजनक समाज, तदपि जानकी मन भेल लाज ।
स्वेदस्तम्भ पुलक वर अंग, भाव सरस धर गर स्वरभंग ॥
देह काँप वैवर्ण्य शरीर, जुगल जलज लोचन धरु धीर ।
प्रलय भाव जागल भल आठ, मनसिज प्रथम पढ़ाओल पाठ ॥
तनिक भाव बूझल सखि एक, जनि मनमे छल गूढ़ विवेक ।
चलु जानकि देखू आराम, नीलक कुरवक तरु जहिठाम ॥
कहलनि से परिहरु परिहास, अहँक रहै अछि मन बड़ आश ॥[13]

एहिठाम सीताक मोनमे रामकेँ देखबाक उत्कट इच्छा भए गेलनि अछि जे हुनक स्वेद, पुलक, स्वरभंग आदिसँ सखी बुझि जाइत छथिन आ कहैत छथिन जे हे सखि, नीलक कुरवक तरुकेँ देखबा लेल चलू । सीताजी, ई कहि जे अहाँकेँ सतत मजाके रहैत अछि, अपन प्रकटित रहस्यकेँ नुकालैत छथि । अतः एतय व्याजोक्ति अलंकार भेल ।

3. स्वभावोक्ति

स्वभावोक्ति अति प्राचीनकालसँ प्रख्यात अलंकारक रूपमे परिगणित होइत रहल अछि । वाणभट्ट एकरे जाति नामसँ स्वीकार कयलनि अछि तथा सुन्दर रचनाक हेतु अग्राम्य जातिक विनिवेश सयह श्रेयस्कर मानलनि अछि ।[14] भामह तँ जखन वक्रोक्ति विहीन रहलाक कारणेँ हेतु, सूक्ष्म एवं लेशकेँ अलंकारक कक्षासँ हटाए देलनि तँ स्वभावोक्ति किएक रखताह ?[15] विद्यानाथक अनुसार स्वभावोक्ति यथावत् वस्तुवर्णन थिक, किन्तु ओ अत्यन्त चारु एवं सूक्ष्म होइत अछि ।[16] दण्डी एकरा आद्या अलंकृति

मानैत छथि, संगहि जाति, गुण, क्रिया एवं द्रव्यक स्वभाव-वर्णनकेँ स्वभावोक्ति कहैत छथि ।[17] भट्टि स्वभावोक्तिएकेँ वार्त्ताक नामसँ अभिहित करैत छथि ।[18] कुन्तक स्वभावोक्तिकेँ अलंकार नहि मानैत छथि । हिनका विचारेँ स्वभावोक्ति अलंकार्य वा काव्यशरीर थिक ।[19]

स्वभावोक्तिपर अत्यधिक वाद-विवाद भए चुकल अछि तेँ ओहि झंझटमे नहि पड़ि सोझ शब्दमे कही जे कोनो वस्तुक नैसर्गिक सूक्ष्म वर्णनमे स्वभावोक्ति अलंकार होइत अछि । एहि हेतु ई प्रतिबन्ध उचित नहि बुझाइत अछि जे केवल बच्चा वा पशुक स्वाभाविक वर्णनमे स्वाभावेक्ति अलंकार होअए ।[20] प० सीताराम झा[21] एवं प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'[22] जातिक अनुकूल गुणक वर्णनमे स्वभावोक्ति अलंकार मानैत छथि, किन्तु प० दामोदर झा[23] बच्चा वा पशुक स्वाभाविक वर्णनमे ।

आधुनिक मैथिली काव्यमे स्वभावोक्ति अलंकार निम्नलिखित रूपमे दृष्टिगत होइत अछि ।

1. मनुष्यक स्वभाव वर्णन :

   1. **कय बेरि आगि हाथसँ छीनु, कय बेरि पकला तकला बीनु ।**
      कय बेरि साप धरय पुनि जाथि, कय बेरि चून दही वदि खाथि ॥[24]
   2. **कखनहु आबि कोरमे बैसथि, लटकि पीठ पर जाथि ।**
      कखनहु पुनि सस्नेह बजओनहुँ, हैहय दूर पड़ाथि ॥[25]

2. प्राकृतिक दृश्यक वर्णन :

   प्रपूर्ण सत्तड़ाग की सुधा समान वारि सोँ ।
   विचित्र पद्मिनी बनी विहंग वारि चारि सोँ ॥
   द्विरेफ गुंजि-गुंजिकेँ महा मदान्ध घूमिकेँ ।
   सरोजिनीक अंग सुप्त बारबार चूमिकेँ ॥[26]

3. मानवेतर स्वभावक वर्णन :

   शालिगोप गीतिकाँ सुप्रीति रीति सूनि-सूनि ।
   खेत शस्य खाथि ने कुरंग आँखि मूनि-मूनि ॥
   सत्य तीरहूति यज्ञभूमि पुण्य देनिहारि ।
   शास्त्रकेँ बजैत वेस कीर बैसि डारि-डारि ॥[27]

4. यु□-वर्णन :

भालु ओ प्रचण्ड कीश जाय जाय झट्ट झट्ट ।
राक्षसेन्द्र वीरकाँ पछारि मारि पट्ट पट्ट ॥
शैलखण्ड वृक्ष हाथसोँ उखाड़ चट्ट चट्ट ।
राक्षसेन्द्र सैन्य झुण्ड मुण्ड फोड़ फट्ट फट्ट ॥[28]

4. भाविक

भाविक अलंकारक विवेचन आचार्य भामह सँ लए कए अद्यपर्यन्त होइत रहल अछि । भामह एवं दण्डी एकरा प्रबन्ध गुण माननलि तथा एकरा लेल अर्थक चित्रता, उदात्तता, अद्‌भुतता एवं शब्दक स्वच्छताकेँ आवश्यक कहलनि ।[29] दण्डी भाविक अलंकारक हेतु सम प्रकरणक पारस्परिक सम्बन्ध, व्यर्थ विशेषणक अप्रयोग आदिकेँ निष्पादक मानलनि ।[30] परवर्त्ती आचार्यगण ईषत् परिवर्त्तन कय एकेरंग भाव प्रदर्शित कयने छथि जे भूत वा भविष्यक वर्त्तमान जकाँ वर्णन भाविक अलंकार थिक ।[31]

भाविक अलंकारमे कविकेँ पूर्ण पटुताक संग भूत एवं भविष्यक वर्त्तमानवत् वर्णन करय पड़ैत छनि जाहिसँ ओहिमे विलक्षणता दृष्टिगोचर होइत अछि । एहि तरहेँ भाविक अलंकार दू प्रकारक भए जाइत अछि—

1. भूतार्थ वर्णन एवं 2. भविष्यार्थ वर्णन ।

1. भूतार्थ वर्णन :

रक्षक मध्य एको जन नहि छथि, तनिके वार्त्ता लयलहुँ ।
सकल अशोक वाटिका उजड़ल, सीता निकट नुकयलहुँ ॥[32]

एहि प्रथम चरणसँ स्पष्टतः प्रतीत होइत अछि जे वर्त्तमानमे वर्णन भए रहल अछि ।

2. भविष्यार्थ वर्णन :

किछु दिन रहि लंका सिन्धुकेँ फानि जैबे । जनक नृपतिपुत्री दुःखवार्त्ता सुनैबे ॥
प्रबल सकल सेना संग लै फेरि ऐबे । तखन बुझब जे छी से अहाँ काँ बुझैबे ॥[33]

एतय भविष्यक वर्णन वर्त्तमानवत् भेल अछि ।

संदर्भ :

1. हेतुश्च सूक्ष्मो लेशोथ नालंकारतया मतः ।
समुदायाभिधानस्य वक्रोक्त्यनभिधानतः ॥ —काव्यालंकार, 2-86
2. हेतुश्च सूक्ष्मलेशौच वाचामुत्तमभूषणम् । —काव्यादर्श, 2-235
3. संलक्षितस्तु सूक्ष्मोर्थ आकारेणेङ्गितेन वा ।
कयापि सूच्यते भंग्या यत्र सूक्ष्मं चदुच्यते । —सा.द., 10-91
4. संकेतहि आशयपरक जानि तकर प्रतिकार ।
हो ताही बिधि तोँ कहल, कवि सूक्ष्मालंकार । —अ.द. पृ.- 84
5. सूक्ष्म बात जँ बुझि पड़ए तकरा करए प्रकाश ।
सूक्ष्मरूपसँ जे कतहु ततए सूक्ष्मके बास ॥ —अ.क., पृ.- 107
6. आन न बुझ संकेत सुझ, आशय सूक्ष्म परेख । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 160
7. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983
8. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, बालकाण्ड- पृ.- 37
9. व्याजस्य सत्य सारूप्यं व्याजोक्तिः । —काव्यालंकार सूत्रवृत्तिः, 4-3-25
10. व्याजस्य छद्‌मना सत्येन सारूप्यं व्याजोक्तिः । यां मायोक्तिरित्याहुः ॥ —का.सू. वृत्ति
11. व्याजोक्तिगोपनं व्याजादुद्‌भिन्नस्यापि वस्तुनः । —साहित्यदर्पण, 10-92
12. (क) सत्य विषय गोपन करै, जतय हेतु कहि आन ।
नाम अलंकारक ततै, कवि व्याजोक्ति बखान ॥—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 108
(ख) नुकबथि आने हेतु कहि कृति-आकृति व्याजोक्ति । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 162
13. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : बालकाण्ड, पृ.- 31
14. नवोऽर्थो जातिरग्राम्या श्लेषोऽक्लिष्टः स्फुटो रसः ।
विकटाक्षरबन्धश्च कृत्स्नमेकत्र दुर्लभम् ॥ —हर्षचरित
15. हेतुः सूक्ष्मोऽथ लेशश्च नालंकारतया मतः ।
समुदायाभिधानस्य वक्रोक्त्यनभिधानतः ॥ —भामह
16. स्वभावोक्तिरसौ चारु यथावद्‌वस्तु वर्णनम् । —विद्यानाथ
17. स्वभावोक्तिश्च जातिश्चेत्याद्या सालंकृतिर्यथा ।
जाति क्रियागुणद्रव्य स्वभावाख्यानमीदृशम् ॥ —काव्यादर्श, 2-13
18. Some Concepts of Alankar Shastra : Raghvan, page -98
19. वक्रोक्तिजीवितम् । 1-14
20. (क) क्रियायां संप्रवृत्तस्य हेवाकानां निबन्धनम् ।
कस्य चिन्मृगडिम्भादेः स्वभावोक्तिरुदाहृता ॥ —काव्यालंकार-सार-संग्रह, 3-8

(ख) स्वभावोक्तिर्दुरूहार्थस्वक्रियारूपवर्णनम् । —साहित्य-दर्पण, 10-93

(ग) सूक्ष्मवस्तुस्वभावस्य यथावद्वर्णनं स्वभावोक्तिः । —अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 79

21. स्वभावोक्ति वर्णन जतै, गुण जातिक अनुकूल । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 89

22. जाति स्वभावक वर्णना, स्वभावोक्ति निक लाग । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 171

23. बालक ओ पशुआदि के, चेष्टा रूप लखाए ।
स्वाभाविक वर्णन विषय, स्वभावोक्ति कहि जाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 112

24. महाकवि मनबोध : कृष्णजन्म- तृतीय अध्याय, पृ.- 6

25. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 4-58

26. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ.- 25

27. वैह

28. वैह, लंकाकाण्ड, पृ. 256

29. भाविकत्वमिति प्राहुः प्रबन्धविषयं गुणम्, प्रत्यक्षा इव दृश्यन्ते यत्रार्था भूतभाविताः ।
चित्रोदात्तार्थत्वं कथायाः स्वभिनीतता, शब्दानुकूलता चेति तस्य हेतुं प्रचक्षते ।।
—काव्यालंकार, 3-53-54

30. परस्परोपकारित्वं सर्वेषां वस्तुवर्णनाम् ।
विशेषणानां व्यर्थानामक्रियास्थानवर्णना । —काव्यादर्श, 2-365

31. (क) अतीतानागतयोः प्रत्यक्षायमाणत्वं भाविकः । —रुय्यक : अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 80

(ख) प्रत्यक्षा इव यद्भावः क्रियन्ते भूतभाविनः तद्भाविकम् । —काव्यप्रकाश, 10-143

(ग) अद्भुतस्य पदार्थस्य भूतस्याथ भविष्यतः ।
यत्प्रत्यक्षायमाणत्वं तद्भाविकमुदाहृतम् । —विश्वनाथ : साहित्यदर्पण, 10-93

(घ) भूत भविष्य कथाक जौँ, वर्णन होय समक्ष ।
तोँ भाविक नामक ततै, कहथि अलंकृति दक्ष । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 89

(ङ) प्रत्यक्षे सन बुझि पड़ए, मत भविष्यक वेष ।
कवि वर्णन चातुर्यसँ, भाविक करु निर्देश । —अ.क. पृ.-113

(च) भाविक भूतहु भाविहुक, वर्णन जनु प्रत्यक्ष । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 171

32. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड- पृ. 178

33. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड- पृ.- 102

सप्तम अध्याय

गोपनमूलक अलंकार

1. पिहित

पिहित अलंकारक उद्भावक रुद्रट छथि । पिहितक शाब्दिक अर्थ होइत अछि— आच्छादित करब । रुद्रटक अनुसार एक अधिकरणकारकमे रहनिहार गुण अपन प्रबलतासँ जतय प्रकट होइतहुँ असमान गुणकेँ आच्छादित कए लैत अछि, ओतय पिहित अलंकार होइत अछि । जयदेव एहिसँ पूर्णतः भिन्न परिभाषा देलनि अछि ।[1] दीक्षितक अनुसार जतय दोसरक गुप्त वृत्तान्तकेँ बुझि कय कोनो व्यक्ति साभिप्राय चेष्टा करय तँ पिहित अलंकार होइत अछि ।[2] दीक्षितक एहि परिभाषाकेँ मम्मट सूक्ष्म अलंकार मानैत छथि ।[3] प० सीताराम झाक अनुसारेँ यदि गुप्त आशय केओ दोसर बुझि कय ताहि रूपक चेष्टा करय तँ पिहित अलंकार होइत अछि ।[4] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क परिभाषा हिनकासँ भिन्न अछि ।[5] प० दामोदर झा एकर उल्लेख नहि कयने छथि ।

पिहित अलंकारक उदाहरण आधुनिक मैथिली काव्यक अन्तर्गत मिथिला भाषा रामायणमे पर्याप्त भेटैत अछि । अंगद-रावण संवाद क्रममे अंगद रावणक गुप्त गप्पकेँ प्रकट कए दैत छथिन जे कोना हुनका बालि अपन काँखमे दबओने छलथिन ।

काँख दबाय लेल तोहरा जे, सातो जलधिक तट-तट जाय ।
सन्ध्यार्चन जे कयल महाबल, विद्यमान तनि सोदर भाय ।।
एक तीर मारल रघुनन्दन, बालिक रहि न सकल तन प्राण ।
सुनु दशभाल, गाल मारह की, काल-विवश नहि तोहरा ज्ञान।।[6]

2. अप्रस्तुत प्रशंसा

अप्रस्तुत प्रशंसा भामहसँ लए कए अद्यपर्यन्त विवेचित होइत रहल अछि । ई

समासोक्तिक विपरीत अलंकार थिक । समासोक्तिमे प्रस्तुतक वर्णनसँ अप्रस्तुतक बोध होइत अछि, किन्तु अप्रस्तुत प्रशंसामे अप्रसतुतक वर्णनसँ प्रस्तुतक बोध ।

अप्रस्तुत विषयक वर्णनसँ यदि प्रस्तुत विषयक बोध कराओल जाय तँ अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार होइत अछि ।[7]

अप्रस्तुत प्रशंसा केर पाँच भेद कयल गेल अछि,[8] जे थिक—

1. कारण-निबन्धना, 2. कार्य-निबन्धना, 3. विशेष-निबन्धना,
4. सामान्य-निबन्धना एवं 5. सारूप्य-निबन्धना ।

प० सीताराम झा, प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' आदि एकर भेदक उल्लेख नहि कयल अछि ।

1. कारण-निबन्धना— जतय अप्रस्तुत कारणसँ प्रस्तुत कार्यक बोध होअए—

जँ वाक्पति-मति शारद प्रतिभा जीह सहस दुइ पाबथि ।
तँ कदाच हैहय-महिनाथक कवि अशेष गुण गाबथि ।[घ]

एतय प्रस्तुत कार्य अछि एकवीरक गुणवर्णना, किन्तु अप्रस्तुत कारणक वर्णन कए रहल छथि जे दुइ हजार जीहबलाकेँ यदि सरस्वतीक प्रतिभा आबि जाय, तखने एकवीरक गुणगान कयल जाय सकैत अछि ।

2. कार्य-निबन्धना— जतय अप्रस्तुत कार्यक वर्णनसँ प्रस्तुत कारणक वर्णन होअए—

सखि हँसि कहलनि सुनु सुकुमारि, वन छवि देखू आँखि पसारि ।
नव घनश्यामल छथि नहि दूर, घन बिनु बजइछ मत्त मयूर ।।[ङ]

एतय वनछवि देखब इत्यादि अप्रस्तुत कार्य थिक । प्रस्तुत कारण अछि श्रीरामक दर्शन ।

3. विशेष-निबन्धना— जतय अप्रस्तुत विशेषक वर्णनसँ प्रस्तुत सामान्यक बोध होअए—

हा रघुनाथ अनाथ जकाँ, दशकण्ठपुरी हम आइलि छी ।
सिंहक त्रास महावनमे हरिणीक समान डेराइलि छी ।।[च]

एतय अप्रस्तुत सिंहक एवं हरिणीक वर्णनसँ, जे विशेष वाक्य थिक, रावण एवं सीताक बोध होइत अछि ।

4. सामान्य-निबन्धना— जतय अप्रस्तुत सामान्यक वर्णनसँ प्रस्तुत विशेषक बोध होअए—

बाजल क्यो, एकक मुइने नहि खेद । यमक परिकने सगर नगर निर्वेद ।।[9]

एतय यमक परिकब अप्रस्तुत सामान्य वाक्य अछि, जाहिसँ प्रस्तुत विशेषक बोध होइत अछि जे मरबाक कारण ज्ञात होयब आवश्यक, अन्यथा सब केओ बेराबेरी ओकर शिकार बनब ।

5. सारूप्य—निबन्धना— जतय अप्रस्तुततुल्य वस्तुक वर्णनसँ प्रस्तुततुल्य वस्तुक बोध होअए ।

बाउ भस्मासुर,
भूखल-नाङट तँ हम सदासँ छी,
मुदा हमरे परसादेँ ने तोँ-
सिंहासन पर पहुँचलह ।
तहिया हमरा वन्दना करैत नहि लाज भेलह ?[10]

एतय भस्मासुरसँ प्रस्तुत अर्थ अछि सत्ताधारी आ भूखल-नाङट भेल दीन जनता । सिंहासनपर पहुँचबासँ पूर्व तँ ओ सभक द्वारि-द्वारि घूमि वन्दना करैत अछि, किन्तु सत्ता पबितहिँ सभ बिसरि दैत अछि । एहि हेतु अप्रस्तुत समान वस्तु भस्मासुरक वर्णन कयल गेल अछि जे भूखल-नाङट महादेवक स्तुति कय वरदान पओलक आ तकर बाद पुनः हुनके माथा हाथ दियए लगलनि ।

3. प्रस्तुतांकुर

प्रस्तुतांकुर अलंकारक उद्भावक छथि अप्पय दीक्षित । हिनका अनुसारेँ जतय प्रस्तुत वृत्तान्तक द्वारा अन्य प्रस्तुत वस्तुक बोध होअए ओतय प्रस्तुतांकुर अलंकार होइत अछि ।[11] अप्रस्तुत प्रशंसा एवं समासोक्तिमे क्रमशः प्रस्तुतसँ अप्रस्तुतक एवं अप्रस्तुतसँ प्रस्तुतक बोध होइत छल किन्तु एहिमे प्रस्तुतसँ प्रस्तुतहिक बोध होइत अछि । परवर्त्ती आचार्यलोकनि दीक्षितेक परिभाषाकेँ स्वीकार कए लेलनि ।[12]

उदाहरण :

हमर पयर जाँतथि यमराजा, मन्द मन्द रवि किरण पसार ।
आठो लोकपाल भयकम्पित, ब□ांजलि भय वचन उचार ।।
देववधू पन्नगी आदिकाँ गर्भ स्रवित हो देखि तरुआरि ।
के थिक राम कहाँके लक्ष्मण, वचन रचन कर सभा विचारि ।।[13]

एतय रावण द्वारा यमराज आदिक प्रस्तुत वर्णनसँ दोसर प्रस्तुत रामक ओहने अस्तित्व व्यंजित होइत अछि ।

4. गूढ़ोक्ति

गूढ़ोक्तिकेँ केओ गूढ़ार्थप्रतीतिमूलक कहैत छथि तँ केओ गोपनमूलक ।[14] ई गौण अलंकार थिक जकरा बहुत आलंकारिक अलंकारक कोटिमे नहि परिगणित करैत छथि । अप्पय दीक्षितक अनुसार जतय ककरो एककेँ लक्षित कय दोसरकेँ गप्प कहल जाय ओतय गूढ़ोक्ति अलंकार होइत अछि ।[15] मैथिल आलंकारिलोकनि सेहो हिनकेसँ मिलैत-जुलैत परिभाषा देने छथि ।[16] एहि अलंकारमे वक्ता जकरा उद्देश्य कयकेँ कहि रहल अछि सैहटा बुझैत अछि, आन केओ नहि ।

उदाहरण :

अयि सखि सुमुखि स्वस्थ रहु चित्त । मुनिक कहल फल प्राप्त निमित्त ॥
कतजन उपवन कर संचार । सुचित कि उचित कहल व्यवहार ॥[17]

एतय पुष्पबाटिकामे रामक समक्षमे सीताक प्रति सखीक जे कथन अछि ताहिसँ रामकेँ ई बुझबायोग्य भए जाइत छनि जे सीता हमरापर अत्यधिक आकृष्ट छथि । ई बात आन केओ नहि बुझैत छैक, तेँ गूढ़ोक्ति भेल ।

5. समासोक्ति

समासोक्तिक अर्थ होइत अछि— संक्षिप्त कथन । एहि अलंकारमे प्रस्तुत वस्तुक व्यवहारपर अप्रस्तुत वस्तुक व्यवहारक आरोप होइत अछि । उद्‌भटक अनुसार समान विशेषणसँ प्रकृतपरक वाक्य द्वारा अप्रकृत अर्थक अभिधान समासोक्ति थिक ।[18] रुय्यकक अनुसार विशेषणक साम्यसँ अप्रस्तुत बोध समासोक्ति अलंकार थिक ।[19] विश्वनाथक कथन अछि जे समान कार्य, लिंग तथा विशेषणक द्वारा प्रस्तुत वस्तुपर अप्रस्तुत वस्तुक व्यवहारक समारोपण समासोक्ति अलंकारक थिक ।[20]

आचार्य विश्वनाथक मतक तीव्र आलोचना कयल गेल अछि । हिनक परिभाषामे प्रयुक्त-कार्य, लिंग एवं विशेषणमे— कार्यक विशेषणमे समाहार भए जाइत अछि । लिंग शब्दक प्रयोग सेहो भ्रमात्मक बुझाइत अछि, कारण जे स्वयं लिंग अप्रस्तुत वस्तुक व्यंजक नहि भए सकैत अछि । यदि से तँ **निशामुखं चुम्बति चन्द्रिकैषा**— मे सेहो निशामे स्त्रीलिंगक प्रयोग नायिकाक व्यंजक होयबाक चाही, किन्तु से कहाँ होइत अछि ?[21]

जयदेवक परिभाषा अत्यन्त परिमार्जित बुझाइत अछि— प्रस्तुतमे अप्रस्तुतक स्फुरण समासोक्ति-अलंकारक थिक ।[22]

प० सीताराम झाक परिभाषा अत्यन्त सरल अछि— प्रस्तुत वर्णनमे जँ अप्रस्तुतक झलक आबय तँ समासोक्तित होइत अछि ।[23] प० दामोदर झाक अनुसार— प्रस्तुतमे अप्रस्तुतक भान भेने समासोक्ति होइत अछि ।[24] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अनुसार प्रस्तुतमे अप्रस्तुतक स्फुरणमात्र समासोक्ति थिक ।[25]

उदाहरण :

1. **कुमुद-कोश-कारा-निलय-बान्हल रविक निदेश ।**
   अलिकुलकाँ सानन्द झट, कएलन्हि खोलि निशेश ॥[26]

एतय प्रस्तुतक अर्थ अछि जे चन्द्रोदय भेलासँ कुमुद-कोषमे बन्द भ्रमर सभ पुनः रसपान करबालेल भिन्न-भिन्न पुष्पपर मड़राए लागल । एहिसँ अप्रस्तुत अर्थ स्पष्ट अछि जे रातिमे कामुक व्यक्ति परस्त्री संग प्रेम करबाक हेतु बन्धनमुक्त भए जाइत छथि अर्थात् लोकक दृष्टिसँ अपनाकेँ बचा पबैत छथि ।

2. **पट तिमिर हटाए पथिक झट, उदयाचल-कुच पर दए कर ।**
   अनुरागेँ विकसित कएलन्हि, प्राचीक रुचिर मुख दिनकर ॥[27]

3. **दिन-लक्ष्मी-परिणय-उत्सुक, झट धोए पुराने अम्बर ।**
   अपनहिँ करसँ रंगि टाङल, ऊपरकेँ निस्व दिवस कर ॥[28]

ई समासोक्ति तीन प्रकारेँ सम्भव अछि— 1. विशेषण साम्यसँ, 2. कार्य साम्यसँ एवं 3. लिंग साम्यसँ ।

6. व्याजस्तुति

भामह[29] ओ उद्‌भट[30] निन्दाक व्याजेँ स्तुतिकेँ व्याजस्तुति मानलनि, किन्तु पाश्चात्य आलंकारिक लोकनि निन्दाक व्याजेँ स्तुति एवं स्तुतिक व्याजेँ निन्दा दुनूमे व्याजस्तुति मानैत छथि ।[31] प० सीताराम झा स्तुतिसँ निन्दा, निन्दासँ स्तुति एवं स्तुतिसँ स्तुति- एहि तीनू स्थितिमे व्याजस्तुति मानैत छथि ।[32] प० दामोदर झा उपर्युक्त तीनू भेदकेँ मानैत आओर एक भेद बढ़ओलनि जे थिक निन्दासँ निन्दा ।[33]

व्याजस्तुतिक प्रमुख दू भेद मानब उचित थिक— 1. स्तुति पर्यवसायिनी निन्दा एवं 2. निन्दा पर्यवसायिनी स्तुति ।

1. स्तुति पर्यवासयिनी निन्दा (स्तुतिक व्याजेँ निन्दा)—

   1. **असुरेश, असम महिमा निहारि, अपनेकाँ के नहि बरत नारि ।**
      हमरा परन्तु अछि भाग्य वक्र, नेनहि पड़लहुँ जेँ प्रणय-चक्र ॥[34]

एतय एकावली द्वारा दानव कालकेतुक बाह्यस्तुति अछि किन्तु अभ्यन्तरतः निन्दा ।

2. **अद्भुत अछि कवि प्रतिभा अपनेक, अविकल अनुवाद बनओलहुँ अछि ।**
अप्पय केर कुवलयय आनन केर, की सुन्दर बिम्ब देखओलहुँ अछि ॥[35]

एतय कोनो कविक बाह्य प्रशंसा अछि जे अहाँ नीक अनुवाद करैत छी, किन्तु जँ अनुवाद रहय तखन ने ? मौलिक कृतिकेँ अनुवाद कहबामे निन्दा भेल ।

2. निन्दा पर्यवासियनी स्तुति (निन्दाक व्याजेँ स्तुति)—

विष्णु द्रोह तापसकाँ मार, हरि हरि आनय अनकर दार ।
देवी गति किछु कहल न जाय, मुक्तिलाभ तनिका की न्याय ॥[36]

एतय बाह्यतः देवीक निन्दा अछि जे अहाँ पापियोकेँ मुक्ति दए दैत छिऐक किन्तु ई हुनक महानता ओ वैशिष्ट्य भेल ।

7. पर्यायोक्ति

पर्यायोक्तिक अर्थ होइत अछि जे पर्यायवाची शब्दक द्वारा विवक्षित गप्प बाजि दी । अर्थात् अभीष्ट अर्थक स्पष्ट कथन नहि कए पर्याय शब्दक द्वारा कथन करब पर्यायोक्ति थिक ।[37] एहि अलंकारक माध्यमे कवि अपन इष्टार्थकेँ घुमा फिराकए उपस्थित करैत छथि । जतय कोनो व्याजेँ ईप्सित कार्यक सम्पादन कयल जाय ओतहु पर्यायोक्ति अलंकार होइत अछि ।[38]

1. पर्याय शब्दसँ इष्टार्थक कथन—

1. **दशमुख वचन सुनल से कहलनि, सेवा कयल अघयलहुँ ।**
मर्कट एहन विकट नहि देखल, लय लय प्राण पड़यलहुँ ॥
रक्षक मध्य एकोजन नहि छथि, तनिके वार्त्ता लयलहुँ ।
सकल अशोक बाटिका उजड़ल, सीता निकट नुकयलहुँ ॥[39]

एतय इष्टार्थ अछि हनुमानक वीरताक उल्लेख करब, किन्तु राक्षस सभ मारल गेलाह, अशोक वाटिका उजड़ल आदि पर्याय शब्दक कथनसँ कहल गेल अछि ।

2. **श्री रघुवर कर मुक्त विषम शर, खसत समर सभटा तोर भाल ।**
बाल वृ□ मिलि गृ□-काक कुल, क्रीड़ाकुल संचरत शृगाल ॥[40]

एतय इष्टार्थ अछि जे रावणक मृत्यु रामक वाणसँ होयत, किन्तु रणक्षेत्रमे गृ□ काक इत्यादि ओकर कटल शिरक संग क्रीड़ा करत कहि मृत्युक संकेत देल गेल अछि ।

3. **सुयश कतय नहि सोर, रे रे राक्षस अधम तोँ ।**
धिक-धिक वनिता चोर, शूर्पनखा गति हम करब ॥[41]

2. कोनो व्याजेँ इष्टार्थक कथन—

चलु जानकि देखू आराम । नीलक कुरवक तरु जहिठाम ॥
कहलनि से परिहरु परिहास । अहँक रहै अछि बड़ मन आश ॥
सखि हँसि कहलनि सुनु सुकुमारि । वन छवि देखू आँखि पसारि ॥
नव घनश्यामल छथि नहि दूर । घन बिनु बजइछ मत्त मयूर ॥[42]

एतय इष्टार्थ अछि जानकीकेँ श्रीराम दर्शन कराएब, किन्तु फूल सभकेँ देखयबाक व्याजेँ सखि हुनका ओतय लय जाइत छथि ।

8. निरुक्ति

निरुक्ति अलंकारक उद्भावक छथि अप्पय दीक्षित । हिनका अनुसारेँ जतय यौगिक अर्थक द्वारा वस्तुक नामक अन्यार्थ कल्पना कयल जाय, ओतय निरुक्ति अलंकार होइत अछि ।[43] आधुनिक आलंकारिक लोकनि हिनके अनुसरण कयलनि अछि ।[44]

एहि अलंकारमे कवि अपन बौ□क चातुर्यसँ सामान्यसँ भिन्न अर्थक निष्पादन करैत छथि, जे पाठककेँ मुग्ध कए दैत अछि ।

उदाहरण :

1. **केअओ रिपु रहत न समर थीर, तनि नाम धरब तेँ एकवीर ।**[45]

एतय एकवीरक मौलिक व्युत्पत्ति कयल गेल अछि ।

2. **शस्त्र-क्षत-चिह्नहिसँ मण्डित भेल तनिक जेँ छाती ।**
अलंकार तत अलंकार छल तेँ मणिमुक्ता पाँती ॥[46]

3. **कर युग जोड़ि विनति अवनत भए करथि रमेश्वर अम्ब ।**
सत्-चित-आनन्द-रूप-दानमे करब ने देवि विलम्ब ॥[47]

9. विवृतोक्ति

एहि अलंकारक उद्भावनाक श्रेय छनि अप्पय दीक्षितकेँ । हिनका अनुसारेँ श्लिष्ट शब्द वा उक्ति-चातुर्यक द्वारा नुकाओल गेल रहस्यकेँ कवि द्वारा प्रकट करबामे विवृतोक्ति अलंकार होइत अछि । मैथिल आलंकारिक लोकनि हिनकेसँ मिलैत परिभाषा देने छथि ।[48]

उदाहरण :

सूनि ककर वंशी-ध्वनि, नीपक काज छोड़ि, नीपक लग जैब ।
दितहि ककर मटकी, मटकी- लए माथ सबहि घरसँ बहरैब ।।[49]

एतय कवि सूचना दैत छथि जे गोपीलोकनि कोन-कोन व्याजेँ श्रीकृष्णसँ मिलन करबालेल जाइत छलीह ।

10. मिथ्याध्यवसिति

आचार्य जयदेव जकर उल्लेख मिथ्याध्यवसायक रूपमे कयलनि तकरे आलंकारिक लोकनि मिथ्याध्यवसिति मानि लेलनि । हिनका अनुसारेँ जतय कार्य-कारणक मिथ्या कल्पना कय कार्यमे सि□क वर्णन कयल जाइत अछि, ओतय मिथ्याध्यवसाय अलंकार होइत अछि ।[50] अप्पय दीक्षित एकरा मिथ्याध्यवसिति कहैत कहलनि जे जतय मिथ्यात्वक सि□क हेतु दोसर मिथ्यात्वक कल्पना कयल जाय ओतय मिथ्याध्यवसिति अलंकार होइत अछि ।[51] पण्डितराज जगन्नाथ एकरा प्रौढ़ोक्तियेमे अन्तर्भूत मानैत छथि ।[52] आधुनिक आलंकारिक लोकनि दीक्षितेसँ अभिन्न परिभाषा देलनि अछि ।[53] एहि अलंकारमे एकटा असत्यकेँ सि□ करबालेल अनेक असत्य बाजय पड़ैत छैक ।

सूर्पनखा रावणक समक्ष असत्य गप्प बाजि रहल अछि आ पुन: ओकर सत्यता प्रमाणित करबालेल बेर-बेर मिथ्याभाषण करैत अछि—

हम माँगल निज वनिता दैह, धन सम्पत्ति यथेच्छित लैह ।
लंकेश्वर छथि हमरा भाय, देव उपायत ततय पठाय ।।
सीता बलसँ लेबय चहल, काल विवश मन ज्ञान न रहल ।।
लक्ष्मण रामक छोटका भाय, रामक अभिमत ओ खिसिआय ।।
ओ काटल मोर नासा कान, क्षत्रिय जाति शूर मन मान ।।[54]

11. लेश

लेश अलंकारक उद्‌भावक छथि आचार्य दण्डी । हिनका अनुसारेँ जतय अंशत: निन्दाकेँ स्तुति एवं स्तुतिकेँ निन्दा कहल जाय ओतय लेश अलंकार होइत अछि ।[55] एकर विवेचन कयनिहार आचार्य लोकनि छथि— भोजराज, रुद्रट, वाग्भट, अप्पय दीक्षित, पण्डितराज जगन्नाथ एवं आधुनिक मैथिल आलंकारिक लोकनि । दीक्षितक अनुसार जतय दोषकेँ गुण एवं गुणकेँ दोष रूपमे कल्पित कयल जाय ओतय लेश अलंकार होइत अछि ।[56] मैथिल आलंकारिक लोकनि हिनके अनुयायी छथि ।[57]

एहि तरहेँ एकर दू भेद होइत अछि—

1. दोषक गुणत्व-कल्पना एवं 2. गुणक दोषत्व-कल्पना ।

1. दोषक गुणत्व कल्पना—

विजय बनल अछि यश अवदात, हमरा हानि कि सहि आघात ।
देखब राम नवल घनश्याम, अओता शीघ्र रहब यहि ठाम ।।[58]

एहिठाम लंकिनीकेँ हनुमानक मुक्काक आघात सहय पड़ैत छैक, तथापि ओ नीके बुझैत अछि जे श्रीरामक दर्शन होयत ।

2. गुणक दोषत्व कल्पना—

1. **हे प्रभु कहइत हो मन लाज, नहि विभूति वनिता सुख काज ।**
   कतय ज्ञान सुख कत सुखराज, सुत वित बन्धन सकल समाज ।।[59]

एतय सुग्रीव स्त्री, राज्य, बेटाक आकांक्षी छलाह से आब ओकरा दोष कहैत छथि, भक्तिमार्गक बाधक कहैत छथि । तेँ गुणक दोषत्व कल्पना एतए अछि ।

2. **वृथा कराओल दुस्सह घात, यहिसँ अयश लोक विख्यात ।**
   अपनहि शर मारू रघुनाथ, करु न समर्पण कालक हाथ ।।[60]

12. लोकोक्ति

आचार्य भोजराज लोकोक्तिक विवेचन छाया नामक अर्थालंकारक छओ भेदक अन्तर्गत कयलनि अछि ।[61] किन्तु एकर स्वतन्त्र अस्तित्वकेँ स्वीकार कयनिहार पहिल आचार्य थिकाह अप्पय दीक्षित । हिनका अनुसारेँ जतय लोक प्रवाहक अनुकरण कयल जाय ओतय लोकोक्ति अलंकार होइत अछि ।[62]

आधुनिक मैथिलीक आलंकारिक लोकनि हिनकेसँ मिलैत-जुलैत परिभाषा देने छथि । [63]

आधुनिक मैथिली काव्यक अन्तर्गत लोकोक्तिक सभसँ अधिक एवं सफल प्रयोग कयनिहार छथि कवीश्वर चन्दा झा । ई अपन मिथिलाभाषा रामायणमे ठाम-ठाम लोकोक्तिक प्रयोग कए जे सौन्दर्यक छटा छिटकौने छथि, से अत्यन्त चमत्कारपूर्ण अछि । किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

1. **कहलनि हरि बड़गोट मोर भाग, दूरक ढोल सोहाओन लाग ।**
2. **रावण सभा उठल घमलौड़ि, ऐंठन जड़ल न जरि गेल जौड़ि ।**
3. **सभ जन हृदय कदलि सन काप, जनु कपि भेल चोटाओल साप ।**
4. **के थिक केहन न कयल विचार, मूर्खक लाठी माँझ कपार ।**
5. **दूत पराक्रम कहल न जाय, भाग्यवानकाँ भूत कमाय ।**

6. **कपि कह लंका करब विनाश, घैल काँच के मुङरक आश ।**

7. **धिक् रावण आनन न मलान, चोरक मुह जनु चमकय चान ।**

8. **हनुमानक लग केओ न जाय, मारिक डर सोँ भूत पड़ाय ।**[64]

13. छेकोक्ति

अप्पय दीक्षित लोकोक्तिक आधारपर छेकोक्तिक कल्पना कयलनि अछि । हिनकासँ पूर्व भोजराज एकरा छायाक छओ भेदक अन्तर्गत छायाक रूपमे विवेचन कयने छलाह । दीक्षितक अनुसार जखन कोनो छेक अर्थात् विदग्ध व्यक्ति कोनो लोकोक्तिक प्रयोग कय कोनो अन्य अर्थकेँ व्यंजित करैत छथि तँ छेकोक्ति अलंकार होइत अछि ।[65]

हिनके परिभाषाक आधारपर आधुनिक आलंकारिक लोकनि परिभाषा देने छथि ।[66]

उदाहरण :

हमरा मारल बाँधल वेश, बुि वृि हो लगलेँ ठेस ।[67]

एतय हनुमान जी रावणकेँ ठेस लगने बुि बढ़ैत छैक प्रसि लोकोक्तिक माध्यमसँ संकेत दैत छथि जे एही बेर अहाँकेँ बुझा जायत जे ककरासँ पचड़ा पड़ल अछि । तेँ एकरा छेकोक्ति कहबैक ।

14. युक्ति

आचार्य भोजराज 24 शब्दालंकारक अन्तर्गत युक्तिक विवेचन कयलनि । हिनका अनुसारेँ जतय परस्पर अयुज्यमान शब्द वा अर्थक योजना होइत अछि ओतय युक्ति अलंकार कहबैत अछि । ई युक्तिक छओ भेद कहलनि— 1. पदयुक्ति, 2. पदार्थयुक्ति, 3. वाक्ययुक्ति, 4. वाक्यार्थयुक्ति, 5. प्रकरणयुक्ति एवं 6. प्रबन्धयुक्ति ।[68] जयदेवक अनुसार जतय उपमानक अपेक्षा उपमेयमे कोनो चमत्कारी अर्थक सिि होअए, ओतय युक्ति अलंकार होइत अछि ।[69] अप्पय दीक्षितक परिभाषा परिमार्जित अछि । हिनका अनुसारेँ अपन रहस्यकेँ नुकयबा लेल क्रिया द्वारा दोसरक व्यंजना युक्ति थिक ।[70] एकरा व्याजोक्तिसँ एहि तरहेँ भिन्न बुझबाक थिक जे व्याजोक्तिमे गोपन उक्ति द्वारा होइत अछि, किन्तु युक्तिमे क्रिया द्वारा । आधुनिक आलंकारिक लोकनि दीक्षितेक अनुसरण कयलनि अछि ।[71]

आश्रम शून्य जानिकेँ रावण अयला दण्डी वेश बनाय ।
शिखी उपानहि दिव्य कमण्डलु, पहिरल गेरुआ वस्त्र रंगाय ।।[72]

एतय मर्मगोपन हित रावण बाबाजीक भेष बनबैत अछि तेँ युक्ति अलंकार भेल ।

15. उल्लास

उल्लास अलंकारक उद्‌भावक छथि जयदेव । हिनका अनुसारेँ जतय कोनो वस्तुक महिमाक वर्णन कयलासँ ओकर दोष कोनो दोसर वस्तुपर पड़ैक, ओतय उल्लास अलंकार होइत अछि ।[73] अप्पय दीक्षितक परिभाषा परिमार्जित बुझाइत अछि । हिनका अनुसारेँ एक वस्तुक गुण एवं दोषसँ दोसर वस्तुक गुण एवं दोषक वर्णन उल्लास अलंकार थिक ।[74] आधुनिक आचार्यगण हिनके अनुगमन कयलनि अछि ।[75]

एहि तरहेँ उल्लासक चारि भेद भए जाइत अछि— 1. प्रथम उल्लास, 2. द्वितीय उल्लास, 3. तृतीय उल्लास एवं 4. चतुर्थ उल्लास ।

1. प्रथम उल्लास— गुणसँ गुणक प्राप्ति—

अहिँक नीरबल नारायण-पद नीरज पावन ।[76]

एतय गंगाजलक पवित्रतासँ विष्णुक पद पवित्र भेल आ तेँ लोक हुनक चरणक पूजा करैत अछि ।

2. द्वितीय उल्लास— दोषसँ दोषक प्राप्ति—

1. **जनकजा सुनलन्हि अपनहि कान—**
हा लक्ष्मण दौड़ू हम मुइलहुँ रहल उपाय न आन ।।
अयि देवर असुरार्दित भ्राता छथि सुनु आतुर हाक ।।
जाउ विलम्ब पलोभरि करु जनु पड़य चहै अछि डाक ।[77]

एतय दुखमे पड़ल बुझि कय सीताकेँ दुखी होयबामे द्वितीय उल्लास भेल ।

2. **हम रघुनन्दन चरणक दास, अहँकाँ यहि सम्बन्धेँ हास ।**
रानीसँ वानी बनि जायब, पाछाँ अहाँ बहुत पछतायब ।।[78]

3. तृतीय उल्लास— गुणसँ दोषक प्राप्ति—

जनि बलसँ जितइत छह काम, प्रथमहि तनिकहि खायब राम ।।[79]

एतय सूर्पणखाकेँ सीता व्यवधान बुझय । तेँ हुनकेपर आघात कयलक ।

4. चतुर्थ उल्लास— दोषसँ गुणक प्राप्ति—

संकल्पक तनिका नहि हानि, सीता हरब मरब हठ ठानि ।
रणमहि मरब अमरपुर जाइ, राक्षसेन्द्र रणविमुख नुकाइ ।।[80]

एतय सीता हरण करब, रणमे मरब इत्यादि दोषसँ गुणक प्राप्ति अछि, जे मृत्युक पश्चात् अमर पदकेँ प्राप्त करब ।

16. अवज्ञा

अवज्ञा उल्लासक विपरीत अलंकार थिक । एकर सर्वप्रथम उल्लेख जयदेव कयलनि । हिनका अनुसारेँ एकक गुण-दोषक दोसरक गुण-दोषपर असरि नहि पड़ने अवज्ञा अलंकार होइत अछि ।[81] हिनक परिभाषाकेँ स्वीकार कयनिहार छथि अप्पय दीक्षित,[82] पण्डितराज जगन्नाथ[83] एवं मैथिलीक आलंकारिक लोकनि ।[84] पण्डितराज जगन्नाथक अनुसारेँ अवज्ञा विशेषोक्तियेमे गतार्थ भए जाइत अछि ।

उल्लासहि जकाँ अवज्ञाक सेहो चारि भेद भए जाइत अछि, किन्तु अप्पय दीक्षित,[85] प० सीतराम झा आदि एकर दुइये भेद माननलनि अछि—

1. प्रथम अवज्ञा एवं 2. द्वितीय अवज्ञा ।

1. प्रथम अवज्ञा— जतय एकक गुणक असरि दोसर पर नहि हो ।

1. **दशरथ दशा कहल की जाय, कैकयि पयर धयल लपटाय ।**
कहु की रामचन्द्र सोँ भीति, कयल कसाइनि सनि की रीति ।
कहलनि केकयि भेलहुँ बताह, सुनितहि वचन हृदय उठ दाह ॥[86]

एतय राजा दशरथक अनुनय-विनय रूप-गुनक केकयिपर कोनो प्रभाव नहि पड़ैत अछि ।

2. **काल विवश रावण हतज्ञान, धर्म कथा नहि धारण कान ॥**[87]

2. द्वितीय अवज्ञा— जतय एकक दोषक असरि दोसरकेँ नहि हो ।

कहल राम सोँ फेरि, सूर्पनखा कामातुरा ।
वंचक करह अंधेरि, हम कि अवज्ञा योग्य जन ॥[88]

एतय सूर्पनखा कामवासनारूप दोषक रामपर कोनो असरि नहि भेने द्वितीय अवज्ञा भेल ।

17. अनुज्ञा

अनुज्ञा अलंकारक सर्वप्रथम प्रयोग कयनिहार छथि अप्पय दीक्षित । हिनका अनुसारेँ जतय कोनो विशेष गुणक कारण कोनो दोषक इच्छा कयल जाय ओतय अनुज्ञा अलंकार होइत अछि ।[89] पण्डितराज जगन्नाथ[90] एवं आधुनिक आलंकारिक लोकनि[91] एकरा स्वीकार कए लेलनि ।

उदाहरण :

नहि व्यवसायी पोत
सागरक वक्ष विहारी ।
काठ बनब अछि इष्ट
जाह्णवी जल-संचारी ॥[92]

18. ललित

ललित अलंकारक उद्भावक छथि अप्पय दीक्षित । हिनका अनुसारेँ वर्णनीय वृत्तान्तक वर्णन नहि कय ओकर प्रतिबिम्ब वर्णनमे ललित अलंकार होइछ ।[93] एकर अलंकारत्वकेँ माननिहार छथि पण्डितराज जगन्नाथ[94] एवं अनेक मैथिलीक आलंकारिक लोकनि ।[95] आचार्य विश्वेश्वर[96] एवं नागेश भट्ट[97] एकरा निदर्शनेक प्रकार मानैत छथि ।

आधुनिक मैथिली काव्यमे ललित अलंकारक अनेक उदाहरण भेटैत अछि—

1. **लक्ष्मण कहल सरोष सुनि, भृगुपति मति अति छोटि ।**
पर्वत मध्येँ ठेकलेँ, भाँगिय घरक शिलौटि ॥[98]

2. **सीताक हेतु एखनुक युगमे नहि कमी कतहु दशकन्धर केर ॥**[99]

एतय कोनो नायिका अपनाकेँ असहाय सीता बुझैत छथि आ हुनका खल-दशकन्धरक भय छनि । अतः एतय नायिकाक वर्णन नहि भए हुनक प्रतिबिम्ब सीता ओ दशकन्धर वर्णित अछि ।

19. परिकर

जतय साभिप्राय विशेषणक प्रयोग होइत अछि ओतय परिकर अलंकार होइत अछि ।[100] ई सादृश्यमूलक गम्योपम्याश्रय विशेषण-वैचित्र्य सम्बन्धी अलंकार थिक । एकर उद्भावक रुद्रट छथि । मम्मटक विचारेँ परिकरमे एकाधिक विशेषण रहबाक चाही जकर समर्थक छथि जयरथ, विश्वनाथ एवं विद्याधर, किन्तु जगन्नाथ एकहुटा साभिप्राय विशेषणक प्रयोगसँ परिकर अलंकार मानैत छथि ।[101]

साभिप्राय विशेषण प्रयोग मात्र ओहने कविक काव्यमे भेटैत अछि जे शब्दक आत्मामे प्रवेश कय ओकर सूक्ष्म अर्थकेँ नीक जकाँ ध्यानमे रखैत काव्य-रचना करैत छथि ।

उदाहरण :

1. **सुता-हरणकेँ सुननहुँ मानी भूप । रैभ्य किऐक कहू छथि बैसल चूप ?**[102]

एतय भूपक विशेषण मानी साभिप्राय अछि, कारण जे बेटीक अपहरण भेलहुँ सन्ता चुप्प बैसल छथि जेना मान कयने होथि ।

2. **जँ सुनितथि हमर दशा ओ, तँ कथमपि बैसि न रहितथि ॥**
विक्रमी मनस्वी शर धनु, नरनाथ हाथ ध्रुव गहितथि ॥[103]

3. **सुवदनि, सुदनि, सुनयना युवती-रत्न**
पीनस्तनी, नितम्बिनि, तन्वी मोहि
कखन पान कए करब पिपासा तृप्ति
बिम्बोष्ठी रामाक अधर पीयूष ।[104]

20. परिकरांकुर

एहिमे साभिप्राय विशेष्यक प्रयोग होइत अछि[105] जखन कि परिकरमे साभिप्राय विशेषणक । प्राचीन आलंकारिक लोकनि एकरा स्वतंत्र अलंकार नहि मानने छथि । जयदेव,[106] विद्याधर एवं अप्पय दीक्षित एकरा स्वतंत्र अलंकार मानैत छथि ।

उदाहरण :

1. **लक्ष्मी जतय लेल अवतार, तनिक विभव के वरनय पार ॥**[107]
2. **सामग्रीक बूझ के थाह, लक्ष्मी नारायणक विवाह ।**[108]
3. **तरुण तपस्वी मग्नमना छी ।**
चिर साधक तरु, अहँ जन्महिसँ तपमे लग्न कोना छी ॥[109]

एतय प्रथम उदाहरणमे लक्ष्मी साभिप्राय विशेष्य छथि (जे सीताक हेतु प्रयुक्त अछि), तेँ ने हुनक विवाहक पार पओनाइ कठिन । द्वितीय उदाहरणमे सीता-रामक विवाह नहि कहि लक्ष्मी-नारायणक विवाह कहल गेल अछि कारण जे अथाह सामग्रीक उल्लेख अछि । तृतीय उदाहरणमे तरुक मानवीकरण कयल गेल अछि । एतय तपस्या ओ साधनामे निरत रहलाक कारणेँ तरुकेँ तपस्वी कहल गेल अछि जे साभिप्राय अछि ।

संदर्भ :

1. यत्रातिप्रबलतया गण: समानाधिकरणमसमानम् ।
अर्थान्तरं पिदध्यादाविर्भूतमपि तत्पिहितम् । —काव्यालंकार, 9-90
2. पिहितं परवृत्तान्तज्ञातु: साकूतचेष्टितम् । —कुवलयानन्द, 152
3. काव्यप्रकाश- 10-22

4. गुप्तरूप आशय परक, जानि तकर प्रतिकार ।
चतुर करथि जौं ताहि विधि, तौं पिहितालंकार ॥ —अलंकार-दर्पण, पृ.- 85
5. बुझि-सुझि झँपितहिँ पिहित हो, यतन तदनु मन आनि । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 161
6. मिथिलाभाषा रामायण : लंकाकाण्ड, पृ.- 216
7. (क) अप्रस्तुत प्रशंसा या सा सैव प्रस्तुताश्रया । —काव्यप्रकाश, 10-151
(ख) अप्रस्तुतप्रशंसा स्यात्सा यत्र प्रस्तुताश्रया ।
एक: कृती शकुन्तेषु योऽन्यं शक्रान्न याचते ॥ —कुवलयानन्द
(ग) अप्रस्तुत वर्णन सौं, प्रस्तुत भान ।
अप्रस्तुत प्रशंसा, कविजन मान ॥ —अलंकार-दर्पण, पृ.- 40
(घ) अप्रस्तुहिक कथन सौं, जँ प्रस्तुत हो गम्य ।
अप्रस्तुत प्रशस्ति से, अलंकार थिक रम्य ॥ —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 44
(ङ) अप्रस्तुतसँ प्रस्तुतक, निन्दा वन्दा उक्ति ।
थिक अप्रस्तुत प्रशंसा, अलंकार अन्योक्ति ॥ —अलंकार-मालिका, सूत्र- 66
8. (क) कार्ये निमित्ते सामान्ये विशेषे प्रस्तुते रुति ।
तदन्यस्य वचस्तुल्ये तुल्यस्येति च पंचधा ॥ —काव्यप्रकाश, 10-152
(ख) क्वचिद्विशेष: सामान्यात्सामान्यं वा विशेषत: ।
कार्यान्निमित्तं कार्यं च हेतोरथ समात्सम: ॥
अप्रस्तुतात्प्रस्तुतं चेद् गम्यते पंचधा तत: । अप्रस्तुतप्रशंसा स्याद्.... ॥
—साहित्यदर्पण, 10-58, 59
(ग) जे सामान्य विशेष सँ, सामान्यहुसँ विशेष ।
कतहु कार्य हो हेतुसँ, हेतु कार्यसँ शेष ॥
सम घटनासँ सम विषय, जतए गम्य भए जाए ।
एहिमे पाँचम भेद ई, अन्योक्तिओ कहाए ॥ —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 45
(घ) कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 7-104
(ङ) कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : बालकाण्ड, पृ.- 31
(च) वैह, सुन्दरकाण्ड, पृ.- 172
9. सुरेन्द्र झा 'सुमन' : उत्तरा : सर्ग-4, पृ.- 33
10. जिजीविषा : सं० डा० जगदीश मिश्र, पृ.- 1
11. प्रस्तुतेन प्रस्तुतस्य द्योतने प्रस्तुतांकुर: । —कुवलयानन्द, 67

12. (क) प्रस्तुतसँ परिबोध हो, पर प्रस्तुत जहिठाम ।
अलंकार जानू ततै, प्रस्तुत अंकुर नाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 41
(ख) प्रस्तुत घटनहिसँ जतय, तकरे व्यंग्य बनाए ।
प्रस्तुत अंकुर ताहि कहि, बुधजन देथि बुझाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 47
(ग) प्रस्तुत द्योतित प्रस्तुतहि प्रस्तुत-अंकुर सार्थ ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 70

13. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, लंकाकाण्ड- पृ.- 216

14. (क) अलंकार कमलाकर, पृ.- 109
(ख) अलंकारों का ऐतिहासिक विकास : डा० राजवंश सहाय 'हीरा'

15. गूढ़ोक्तिरन्योद्देश्यं भेद्यदन्यं प्रतिकथ्यते । —कुवलयानन्द- 154

16. (क) जदि आनक उद्देशसों, लै फुसिये परनाम ।
कहै गूढ़ निजभाव तों, गूढ़ उक्ति तहिठाम ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 83
(ख) आनक गूढ़ोद्देश्यसँ, अनका कह किछु आन ।
कविकुल नियमहि ताहिकेँ, करु गूढ़ोक्ति बखान ।
—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 10
(ग) गूढ़ उक्ति यदि आनकेँ कही उदेशेँ आन । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 163

17. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : बालकाण्ड, पृ.- 32

18. प्रकृतार्थेन वाक्येन तत्समानैर्विशेषणैः ।
अप्रस्तुतार्थकथनं समासोक्तिरुदाहृता ।। —काव्यालंकार सार संग्रह, 10-33

19. विशेषणसाम्यदप्रस्तुतस्य गम्यत्वे समासोक्तिः । —अलंकार सर्वस्व, सूत्र- 31

20. सामसोक्तिः समैर्यत्र कार्यलिंगविशेषणैः ।
व्यवहारसमारोपः प्रस्तुतेऽन्यस्य वस्तुतः ।। —साहित्यदर्पण, 10-56

21. (क) व्यंजकं हि तत्र मुखचुम्बनादिकमेव स्त्रीत्वादिकं तु सहकारिमात्रम् ।
...किंच स्त्रीलिंगादिकं न निरपेक्षं नायिकात्वादि व्यंजकम् ।
निशामुखं चुम्बति चन्द्रिकैषा इत्यादावपि तदापत्तेः । —अलंकार-कौस्तुभ, पृ.- 159
(ख) संस्कृत साहित्य में सादृश्यमूलक अलंकारों का विकास : ब्रह्मानन्द शर्मा, पृ.-320-21

22. परिस्फूर्तिः प्रस्तुतेऽप्रस्तुतस्य । —चन्द्रालोक, 5-62

23. प्रस्तुत-वर्णन मध्य जदि, अप्रस्तुत झलकैछ ।
अलंकार कविजन कथित, समोसोक्ति कहबैछ ।। —अलङ्कार-दर्पण, पृ.- 42

24. प्रस्तुतके व्यवहारमे, अप्रस्तुत व्यवहार ।
समता सौं आरोप हो, समासोक्तिहुक सार ।। —अलङ्कार-कमलाकर, पृ. 42

25. समासोक्ति यदि अप्रस्तुतक, स्फूर्त्ति प्रस्तुत माँझ ।
प्राचीमुख चूमथि शशी रागी, भरले साँझ ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 63

26. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 2-26

27. वैह, 3-24

28. वैह, 3-31

29. दूराधिकगुणस्तोत्र-व्यपदेशेन तुल्यताम् ।
किंचिद्विधित्सया निन्दा व्याजस्तुतिरसौ यथा । —भामह, 3-30

30. शब्दशक्तिस्वभावेन यत्र निन्दैव गम्यते ।
वस्तुतस्तु स्तुतिः श्रेष्ठा व्याजस्तुतिरसौ मता ।। —काव्यालंकार-सार-संग्रह

31. (क) व्याजस्तुतिर्मुखे निन्दा स्तुतिर्वा रूढिरन्यथा । —काव्यप्रकाश, 10-169
(ख) उक्ता व्याजस्तुतिः पुनः
निन्दा स्तुतिभ्यां वाच्याभ्यां गम्यत्वे स्तुतिनिन्दयोः ।। —साहित्य-दर्पण, 10-60
(ग) उक्तिव्याजस्तुतिर्निन्दास्तुतिभ्यां स्तुतिनिन्दयोः । —चन्द्रालोक
(घ) स्तुतिएँ निन्दा व्याजसँ, निन्देँ स्तुति व्याजोक्ति ।
गंगे केहन विवेक अछि, पापिहुकेँ दी मुक्ति ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 73

32. स्तुति सोँ निन्दा होय वा, निन्दा सोँ स्तुति ज्ञान ।
स्तुति सोँ स्तुति होय तौँ, कवि व्याजस्तुति मान ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 42

33. स्तुतिसँ निन्दा गम्य हो, निन्दासँ स्तुति गम्य ।
व्याजस्तुति दुइ भेद ई, गम्ये रह जँ रम्य ।।
निन्दासँ निन्दा होअए, स्तुतिसोँ स्तुति भए जाए ।
गम्य जतए पुनि भेद दुइ, व्याजस्तुतिक कहाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 49

34. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 9-103

35. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

36. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : लंकाकाण्ड, पृ.- 262

37. पर्यायोक्तं यदन्येन प्रकारेणाभिधीयते ।। —भामह : काव्यालंकार, 2-8
(क) गम्यस्यापि पर्यायान्तरेणाभिधानं पर्यायोक्तम् । —रुय्यक : अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 36
(ख) पर्यायोक्तं यदा भङ्ग्या गम्यमेवाभिधीयते । —साहित्य-दर्पण, पृ.- 345
(ग) अपर रुचिर पर्यायसँ, जोँ ज्ञात हो गम्य ।
नाम अलंकारक ततै, पर्यायोक्त सुरम्य ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 41
(घ) गम्यार्थक अभिधान जँ शब्दहिसँ भए जाए ।
मूल प्रकृतिए गम्य रहि पर्यायोक्त कहाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 48

(ङ) वचन-भंगिमे व्यंग्यहुक प्रवचन पर्यायोक्त ।
हरि-गुन गाबथु राहु-बहु चुम्बित पहुमुख मुक्त ॥ —अलंकार-मालिका, सूत्र- 71

38. (क) पर्यायोक्त तथापि जदि, सि□ व्याजसँ काज ।
माङथि कर गहि गेन निज, राधासँ ब्रजराज ॥ —अलंकार-दर्पण, पृ.- 42

(ख) दोसर पर्यायोक्तमे, जे अभीष्ट बड़ काज ।
ताहि निपुन साधन करए, आन काजके व्याज ॥ —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 48

(ग) इष्टक साधन व्याजसँ, ततहु उक्त पर्याय ।
पट झाँपल कन्दुक हमर, दिअ झट जाइ खेलाय ॥—अलंकार-मालिका, सूत्र- 72

39. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : बालकाण्ड, पृ.- 178

40. वैह : लंकाकाण्ड, पृ.- 216

41. वैह : पृ.- 217

42. वैह : बालकाण्ड, पृ.- 31

43. निरुक्तिभोगतो नाम्नामन्यार्थत्व प्रकल्पनम् । कुवलयानन्द, 164

44. (क) जौँ शब्दक निज बु□ सोँ, अर्थ बनाय नवीन ।
कवि सार्थकता करथि तोँ, कहथि निरुक्ति प्रवीण ॥ —अलंकार-दर्पण, पृ.- 91

(ख) सुकवि प्रसि□हि शब्द केर, आने अर्थ निकारि ।
नवतात्पर्यहि योग कए, लेथि निरुक्ति सकारि ॥ —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 54

(ग) नाम योगसँ कल्पना, अर्थान्तरक निरुक्ति । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 175

45. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-53

46. वैह, 1-45

47. प्राचीन गीत : प्रो० रमानाथ झा, पृ.- 145

48. (क) श्लेष शब्द सोँ प्रकट हो, गुप्त अर्थ जाहिठाम ।
अलंकार विवृतोक्ति सब, सुकवि कहथि तहिठाम ॥ —अलंकार-दर्पण, पृ.- 86

(ख) गूढ़ोक्तिक जे गुप्त छल, विषय न सब क्यो जान ।
कविक कथन सोँ प्रकट हो, से विवृतोक्ति बखान ॥
—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 110

(ग) गूढ़ोक्ति विवरण वचन सुनि विवृतोक्ति बुझैछ ॥ —अलंकार-मालिका, सूत्र- 164

49. प० काशीकान्त मिश्र 'मधुप' : राधा-विरह, 2-13

50. स्यान्मिथ्याध्यवसायश्चेदसती साध्यवसाने । —चन्द्रालोक, 3-7

51. किंचिन्मिथ्यात्वसि□यर्थं मिथ्यार्थान्तरकल्पनम् । —कुवलयानन्द, 127

52. हिन्दी रसगंगाधर, तेसर खण्ड- पृ.- 310

53. (क) मिथ्यासि□क हेतु पुनि, मिथ्यान्तर जाहि ठाम ।
मानु अलंकारक ततै, मिथ्याध्यवसिति नाम ॥ —अलंकार-दर्पण, पृ.- 72

(ख) किछु मिथ्याके सि□ लए, मिथ्यान्तरक प्रयोग ।
मिथ्याध्यवसिति नाम कहि, बुधजन करु उपयोग ॥ —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 75

(ग) मिथ्याध्यवसिति फूसि हित, कथा फूसि गढ़ि आन ॥ —अलंकार-मालिका, सूत्र- 33

54. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : अरण्यकाण्ड, पृ.- 119

55. लेशमेके विदुर्निन्दां स्तुतिं वा लेशतः कृताम् ॥ —काव्यादर्श, 2-268

56. लेशः स्यादोषोर्गुणत्वकल्पनम् । —कुवलयानन्द, 138

57. (क) दोषहुमे गुन कथन वा, गुनमे दोष बखान ।
नाम अलंकारक ततै, लेश कहथि मतिमान ॥ —अलंकार-दर्पण, पृ.- 78

(ख) गुणहु जाहि थल दोष हो, दोषहु गुण भए जाए ।
काव्य मार्गमे से तखन, बुधसँ लेश कहाए ॥—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 106

(ग) गुनक दोष, दोषहुक गुन, लेश विशेष उदन्त ॥ —अलंकार-मालिका, सूत्र- 145

58. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : सुन्दरकाण्ड, पृ.- 169

59. वैह, किष्किन्धाकाण्ड, पृ.- 138

60. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : किष्किन्धाकाण्ड, पृ.- 139

61. सरस्वती कण्ठाभरण, 172

62. लोकप्रवादानुकृतिर्लोकोक्तिरिति भण्यते ॥ —कुवलयानन्द, 157

63. (क) गदहा जाय सरंग तँ, लगले जाइछ छान ।
इत्यादि लोकोक्तिकेँ, कवि लोकोक्ति बखान । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 88

(ख) लोकवादके जँ कथन, करए सुकवि मतिमान ।
चमत्कार विकसित रहए, तँ लोकोक्तिहु जान ॥ —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 111

(ग) थिक लोकोक्ति यथार्थ जे, चलित लोकमुख वाक्य ।
—अलंकार-मालिका, सूत्र- 166

64. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड, पृ.- 181, 185, 186

65. छेकोक्तिर्यत्र लोकोक्तेः स्यादर्थान्तरगर्भिता । —कुवलयानन्द, 158

66. (क) अर्थान्तर गर्भित तथा, लोकउक्ति जहिठाम ।
अलंकार छेकोक्ति सब, सुकवि कहल तहिठाम ॥ —अलंकार-दर्पण, पृ.- 88

(ख) अर्थान्तर गर्भित जतय, लोकोक्तिहुँ केँ जान ।
काव्य सरणिकेँ नहि जतय, तँ छेकोक्ति बखान ॥—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 111

(ग) अर्थान्तर अन्तर निहित, लोकोक्तिहु छेकोक्ति ॥ —अलंकार-मालिका, सूत्र- 167

67. मिथिलाभाषा रामायण : कवीश्वर चन्दा झा

68. सरस्वती कण्ठाभरण, 172

69. युक्तिर्विशेषसि□श्चेद्विचित्रार्थान्तरान्वयात् । —चन्द्रालोक, 3-9

70. युक्तिः परातिसन्धानं क्रियया मर्मगुप्तये । —कुवलयानन्द, 156

71. (क) मर्म गोपन हेतु किछु, कर्म करे मतिमान ।
युक्ति सहित ठकि आनकेँ, ततै युक्ति कवि मान ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.-87

(ख) अनकर छलना लए जतए, काज करए किछु आन ।
अपन मर्म गोपन करए ताहि, युक्ति कहि जान ।।
—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 110

(ग) युक्ति मर्म झाँपिअ तेना आन न बुझ संघानि । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 65

72. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : अरण्यकाण्ड, पृ.- 124

73. उल्लासोन्यमहिम्ना चेद्दोषो ह्यन्यत्र वर्ण्यते । —चन्द्रालोक, 5-101

74. एकस्य गुणदोषाभ्यामुल्लासोऽन्यस्य तौ यदि ।। —कुवलयानन्द, 133

75. (क) अलंकार उल्लास शुभ, मानू सुकवि-प्रयुक्त ।
जोँ एकक गुन दोषसोँ, आन दोष गुन युक्त ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 75

(ख) अनकर जोँ गुनदोषसोँ, हो अनकर गुन दोष ।
चारि भेद उल्लासके, कहि बुध करु सन्तोष ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 173

(ग) आनक ककरहु दोष-गुनसँ होइछ उल्लास । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 138

76. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अर्चना, पृ.- 9

77-78. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : अरण्यकाण्ड, पृ.- 123 एवं 115

79. वैह, पृ.- 115

80. वैह, पृ.- 121

81. अवज्ञा वर्ण्यते वस्तुगुणदोषाक्षमं यदि । —चन्द्रालोक, 5-107

82. कुवलयानन्द, 136

83. हिन्दी रसगंगाधर : तेसर भाग, पृ.- 323-35

84. (क) जोँ एकक गुनदोषसोँ, युक्त होए नहि आन ।
तोँ भूषण तहिठाम सँ, सुकवि अवज्ञा मान ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 76

(ख) अनकर जोँ गुनदोष सोँ, अनकर से न लखाए ।
तखन अवज्ञा नाम सोँ, अलंकार कहि जाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 104

(ग) गुनक असरि दोषक कसरि, यदि न, अवज्ञा उक्त । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 142

85. कुवलयानन्द, पृ.- 226

86. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, अरण्यकाण्ड, पृ.- 94

87. वैह, लंकाकाण्ड, पृ.- 198

88. वैह, अरण्यकाण्ड, पृ.- 115

89. दोषस्याभ्यर्थनानुज्ञा तत्रैव गुणदर्शनात् । —कुवलयानन्द, 137

90. हिन्दी रसगंगाधर : तेसर भाग, पृ.- 335-37

91. (क) दोषहुमे गुन देखि जोँ, होए तकर अभिलाख ।
नाम अलंकारहिक तेँ, सुकवि अनुज्ञा भाख ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 77

(ख) दोषयुक्त जे वस्तु हो, ततहु इष्ट किछु जानि ।
करए ताहि लए प्रार्थना, तखन अनुज्ञा मानि ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 106

(ग) दोखहिकेँ गुन गुनि तकर, माङ अनुज्ञा शिष्ट ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 144

92. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : अर्चना, पृ.- 17

93. वर्ण्ये स्याद्वर्ण्यवृत्तान्तप्रतिबिम्बस्य वर्णनम् । —कुवलयानन्द, 12

94. हिन्दी रसगंगाधर, भाग- 3, पृ.- 318

95. (क) प्रस्तुत वर्णन छोड़ि जोँ, हो प्रतिबिम्ब बखान ।
नाम अलंकारक ततै, ललित कहल मतिमान ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 73

(ख) जतय प्रकृत धर्मी रहए, निज व्यवहार विहीन ।
अप्रकृत प्रतिबिम्बयुत, ललितहुँ कहल प्रवीण ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 99

(ग) अप्रस्तुत प्रतिबिम्बने, प्रस्तुत ललित बनैछ । —अलंकार मालिका, सूत्र- 134

96. अलंकार-कौस्तुभ, पृ.- 268

97. उद्योत, पृ.- 481

98. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ.- 48

99. प० काशीकान्त मिश्र 'मधुप' : द्वादशी, पृ.- 48

100. (क) विशेषणस्य साभिप्रायत्वं परिकरः । —रुय्यक : अलंकार सर्वस्व, सूत्र- 32

(ख) विशेषणैर्यत्साकूतैरुक्तिः परिकरस्तु सः । —काव्यप्रकाश, 10-118

(ग) उक्तैः विशेषणैः साभिप्रायः । —साहित्य दर्पण, 10-57

(घ) परिकर आशय युक्त पुनि, जतए विशेषण होए ।
अघभंजनि सुरधुनि हमर, हरथु पाप सब धोए ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 39

(ङ) साभिप्राय विशेषणक, रचना जतए बुझाए ।
सहृदय मन रंजन करए, से परिकर कहि जाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 43

(च) साभिप्राय विशेषणक, परिकर लेल सङोर ।
गंगा चन्दा माथ जनि, ताप हरथु शिव मोर ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 64

101. रसगंगाधर : हिन्दी अनुवाद, पृ.- 38

102. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 10-41

103. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 11-63

104. प्रो० तन्त्रनाथ झा : कीचक-वध : सर्ग- 8, पृ.- 81

105. (क) आशय जुक्त विशेष्य सोँ, परिकर अंकुर नाम ।
पिया मनाबथि पैर पड़ि, तदपि न मानथि वाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 38

(ख) साभिप्राय विशेष्यके रचना जाही ठाम ।
अलंकार कहि देथि बुध परिकर अंकुर नाम ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 43

(ग) साभिप्राय विशेष्य यदि, परिकरांकुरहु सार्थ ।
दै छथि देव चतुर्भुजे, जे चारू पुरुषार्थ ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 65

106. साभिप्राये विशेष्ये तु भवेत् परिकरांकुरः । —चन्द्रालोक, 5-40

107-08. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ.- 29 एवं 41

109. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : प्रतिपदा, पृ.- 37

l

अष्टम अध्याय

न्यायमूलक अलंकार

1. हेतु

आचार्य भामह खण्डनक क्रममे हेतु अलंकारक चर्चा कयलनि ।[1] दण्डी एकरा वाणीक उत्तम भूषण मानैत छथि ।[2] हिनक पश्चात् रुद्रट, विश्वनाथ, दीक्षित आदि आचार्यगण एकर उल्लेख कयलनि अछि । विश्वनाथक अनुसार हेतु एवं हेतुमानक अभेद कथन थिक हेतु अलंकार ।[3] एकरा स्पष्ट करैत मैथिल आलंकारिक लोकनि कहलनि जे कोनो काजक कारण सहित वर्णन वा कार्य एवं कारणक अभेद वर्णनसँ हेतु अलंकार होइत अछि ।[4]

एहि तरहेँ एकर दू भेद भए जाइत अछि—

1. जतय कार्यक संग कारणक क्रमशः वर्णन रहय

2. जतय कार्य एवं कारणक अभेद वर्णन रहय ।

आधुनिक मैथिली काव्यसँ दुनूक उदाहरण क्रमशः प्रस्तुत कयल गेल अछि—

1. प्रथम हेतु—

विकल भगीरथ ठोकथि कपार, के महि टेकथि सुरसरि धार ।
शरण गहल शिव परसन भेल, आबथु सुरसरि अभिमत देल ।।

□ □ □ □

एक लट जटा शिव देलनि हटाए, ताहि दए सुरसरि देलनि बहाए ।।[5]

2. द्वितीय हेतु—

उगितहि चन्द्रक रहल नहि, तिमिरक ओ घनभाव ।[6]

एतय कारण थिकाह चन्द्र एवं तिमिरक घनभाव रहब कार्य, जे संगहि वर्णित अछि ।

2. अनुमान

एहि अलंकारक उद्भावनाक श्रेय छनि रुद्रटकेँ । हिनका अनुसारेँ जतय कवि पहिने साध्यकेँ कहि कए पुनः ओकर साधक (कारण) कहैत छथि, ओतय अनुमान अलंकार होइत अछि ।[7] विश्वनाथक अनुसार हेतुक द्वारा साध्यक चमत्कारपूर्ण ज्ञान अनुमान थिक ।[8]

प० सीताराम झा प्रमाण अलंकारक आठ भेदमेसँ एकटा अनुमान सेहो मानैत छथि । हिनका अनुसारेँ कोनो विशेष चिह्नकेँ देखि ओहि वस्तुक अनुमान कयल जाइत अछि ।[9] प० दामोदर झाक अनुसारेँ चमत्कारपूर्ण कारणसँ ओहने साध्यक भान होअए तऽ अनुमान अलंकार होइत अछि ।[10] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अनुसार लिंगविशेषक क्रियासँ वस्तुविशेषक ज्ञान होयबाकेँ अनुमान अलंकार कहल जाइत अछि ।[11]

उदाहरण :

थिकथि मनुष्य न राम, परमात्मा अव्यय-अमल ।
हमर विनाशक काम, विधि प्रार्थित नर रूप धर ॥[12]

एतय रावण अनुमान करैत अछि जे राम मनुष्य नहि थिकाह आ हम निश्चय हुनका हाथेँ मरब ।

3. काव्यलिंग

काव्यलिंग तर्कन्यायमूलक अलंकारक अन्तर्गत अबैत अछि, जकर सर्वप्रथम उल्लेख उद्भट कयने छथि ।[13] परवर्त्ती आचार्य लोकनिमे वामन एवं रुद्रटकेँ छोड़ि प्रायशः सभकेओ एकर विवेचन कयलनि अछि । आचार्य विश्वनाथक अनुसारेँ जतय वाक्यार्थ वा पदार्थ कोनो कथनक कारण स्वरूप प्रयुक्त होइत अछि ओतय काव्यलिंग अलंकार होइत अछि ।[14]

मैथिल आलंकारिक लोकनि सेहो वाक्यार्थसँ एवं पदार्थसँ समर्थनीय अर्थक समर्थनकेँ काव्यलिंग मानैत छथि ।[15]

एहि तरहेँ काव्यलिंगक दू प्रकार होइत अछि— 1. वाक्यार्थगत काव्यलिंग, एवं 2. पदार्थगत काव्यलिंग ।

1. वाक्यार्थगत काव्यलिंग— जतय सम्पूर्ण वाक्य कोनो कथनक समर्थन करए ।

1. **ई सुनि प्रस्तावक अननुरूप, उत्तर असुराधिप भेल चूप ।**
सोचल कालेँ हो की न सि□, बालाक बलात्कारो निषि□ ॥[16]

एतय सम्पूर्ण वाक्य **बालाक बलात्कार निषि□** थिक, उपर्युक्त कथनक कारणस्वरूप वर्णित अछि तेँ वाक्यार्थगत काव्यलिंग भेल ।

2. **स्थिति-परिवर्त्तन छनमे करथि महान । लोकक नयन अगोचर विधि बलवान ॥**[17]

2. पदार्थगत काव्यलिंग— जतय कोनो एकहिटा पद कथनक समर्थन करए ।

लक्ष्मी जतय लेल अवतार, तनिक विभव के बरनय पार ।[18]

एतय एकटा पद लक्ष्मी कारणस्वरूप वर्णित अछि, तेँ पदार्थगत काव्यलिंग भेल ।

4. उत्तर

उत्तर लोकन्यायमूलक अलंकारक अन्तर्गत अबैत अछि, जकर उद्भावक छथि रुद्रट ।[19] आचार्य मम्मटक अनुसार जतय उत्तरक श्रवणमात्रसँ प्रश्नक कल्पना कयल जाय अथवा अनेक प्रश्नक अनेक सम्भाव्य उत्तर देल गेलापर उत्तर अलंकार होइत अछि ।[20] एहि तरहेँ मम्मटक परिभाषासँ उत्तरालंकारक दू भेद होइत अछि । अप्पय दीक्षित एकर एकटा भेद चित्रोत्तर सेहो मानैत छथि ।[21] यदि प्रश्न–वाक्यहिसँ उत्तर निकलि जाय वा अनेक प्रश्नक एकहिटा उत्तर देल जाय तँ ओतय उत्तरालंकार होइत अछि । प० दामोदर झा उत्तरालंकारक उक्त तीनू प्रकारकेँ स्वीकार करैत छथि ।[22] प० सीताराम झाक अनुसार यदि उत्तरमे कोनो गूढ़ अभिप्राय हो वा बिनु प्रश्नहु ककरो आदेशमे गूढ़ अभिप्राय रहने उत्तरालंकार होइछ ।[23] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अनुसार गूढ़ाशययुक्त उत्तरसँ उत्तरालंकार होइत अछि । ई चित्रोत्तोरकेँ भिन्न अलंकार मानैत छथि ।[24]

एहि तरहेँ उत्तरालंकारक तीन भेद कयल गेल अछि—

1. जतय उत्तरहिसँ प्रश्नक कल्पना कयल जाय, 2. जतय अनेक प्रश्नक अनेक सम्भाव्य उत्तर देल जाय, एवं 3. जतय प्रश्नवाक्यहिसँ उत्तर निकलय वा अनेक प्रश्नक एकहि उत्तर होअए ।

1. प्रथम उत्तर :

नाम विभीषण जन कहइत छथि, दशमुख सोदर भाय ।
चरण शरणमे राखु दयानिधि, अयलहुँ विकल पड़ाय ।
बहुत कहल हम नीति सभामे, नहि मानल दशभाल ।
□ □ □ □

भयसँ झटिति तनिक तट त्यागल, सहि नहि सकलहुँ मारि ।
मन्त्री हमर चारिजन संगी, हिनकर उत्तम कर्म्म ।
विदित सकल विभु परमेश्वरकाँ सकल शुभाशुभ मर्म्म ।।[25]

एतय उत्तरहिसँ विभीषणक विषयमे प्रश्न उठि जाइत अछि ।

2. द्वितीय उत्तर :

1. रावणक प्रश्न—

रावण पुछलनि परिचय नाम, ककर दूत की अछि मनकाम ।
देवशत्रुपुरमे की काज, त्रास रहित कहु करु जनु व्याज ।।[26]

अंगदक उत्तर—

श्री रामचन्द्र परमेशक दूत जानू ।
लंका निशाचर समस्तक काल मानू ।।
बाली बली सकल जानल सौर्य से टा ।
उद्दण्ड अंगद तनीक थिकोँह बेटा ।।
एतय पठाओल अछि प्रभु राम, उचित प्रथम भूपतिकेँ साम ।
सीताकाँ माता मन मानि, करू समर्पण रामक पानि ।।[27]

2. **दर्शनीय उत्तम की जगमे ? मृगनयनी-मुख प्रेम-प्रसन्न ।**
परिमल की ? तनिमुख सुगन्धि नित, सुनबामे ? तत वचन प्रपन्न ।
स्वादु ? अधर-पल्लव-रस जानू, परस ? सतत जत कोमल गात ।
ध्येय ? सदा युवती नवयौवन विभ्रम सरसक जानू बात ।।[28]

3. तृतीय उत्तर :

पान सड़ल घोड़ा अड़ल, बरदहु किएक उदास ?
केश ठाढ़ रोटी जरल, सेवक किएक हताश ?
नवललना कीड़ा सुमिरि, उर उपजल किअ त्रास ?
उत्तर सभ केर एक छल, फेरल नहि छल काश ![29]

एतय अनेक प्रश्नक एकहि उत्तर देल गेल अछि ।

5. सामान्य

सामान्य लोकन्यायमूलक अलंकार थिक, जकर उद्भावक छथि आचार्य मम्मट । हिनका अनुसारेँ गुणक समता प्रदर्शित करबाक इच्छासँ प्रस्तुत एवं अप्रस्तुतक अभेद वर्णन सामान्य अलंकार थिक ।[30] रुय्यकक अनुसार प्रस्तुतक अप्रस्तुतक संग

गुणसाम्यक कारण एकात्मता सामान्य अलंकार कहबैत अछि ।[31] आधुनिक आलंकारिक लोकनि एही परिभाषाकेँ शब्दान्तरेँ स्वीकार कयलनि अछि ।

एहि अलंकारमे समान रूप गुणक कारण भेद नहि बुझि पड़ैत छैक । आधुनिक मैथिली काव्यमे एकर उदाहरण कम दृष्टिगोचर होइत अछि । उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

युगल बन्धु से रूप समान, रघुपति तेँ न चलाओल वाण ।[32]

एतय वालि एवं सुग्रीवक रूपमे अभेदता बुझयने राम वाण नहि चलओलनि ।

6. विशेषक

एकर उल्लेख अप्पय दीक्षित[33] एवं अनेक मैथिलीक आचार्यगण[34] कयलनि अछि । ई विरोधमूलक विशेषसँ पूर्णतः भिन्न अलंकार थिक । उन्मीलित एवं विशेषक क्रमशः मीलित एवं सामान्यक प्रतिद्वन्द्वी अलंकार थिक । प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' विरोधमूलक विशेष एवं विशेषक दुनूकेँ विशेष सयह कहैत छथि ।

उदाहरण :

सभ जन से छथि अमर समान, रामचन्द्र छथि हमरा प्रान ।।[35]

सभ पुत्रकेँ दशरथ समान मानितहुँ रामचन्द्रमे वैशिष्ट्य देखा रहल छथि ।

7. अनुगुण

अनुगुणक उद्भावक छथि आचार्य जयदेव । हिनका अनुसारेँ जतय कोनो दोसर वस्तुक सान्निध्यसँ स्वतः सि□ गुणक उत्कर्ष वर्णित होअए, ओतय अनुगुण अलंकार होइत अछि ।[36] एकरा माननिहार छथि अप्पय दीक्षित[37] एवं अनेक आधुनिक आलंकारिक लोकनि ।[38]

उदाहरण :

1. **प्रकृति-रक्त ताम्बूल रसे-दुति लहइछ दोगुन ।**
अद्वितीय अछि अधर तनिक पीयूष-मधुर पुन ।।[39]

एतय एकावलीक सहज रक्तिम ओष्ठ पानक रससँ आओर लाल भए गेल ।

2. **भरि रैनि केलिसँ विकलित, तरुणी-तरुणक कामानल ।**
प्रातक वातक लगितहिँ पुनि, प्रज्वलित द्विगुण भए जागल ।।[40]

8. पूर्वरूप

पूर्वरूप अलंकारक उद्भावक छथि जयदेव ।[41] अप्पय दीक्षित एकरा स्वीकार करैत एकर दू भेद कयलनि ।[42] हिनका अनुसारेँ जतय कोनो वस्तु अपन गुणकेँ परित्याग

कय पुनः ओकरा ग्रहण कए लिअए तँ प्रथम पूर्वरूप होइछ आ जतय कोनो वस्तुकेँ विकृतो भए गेलापर ओकर अनुवृत्ति होअए तँ द्वितीय पूर्वरूप होइत अछि । मम्मट, रुय्यक, पण्डितराज जगन्नाथ पूर्वरूपकेँ पृथक् अलंकार नहि मानैत छथि । आधुनिक आलंकारिक लोकनि दीक्षितेक अनुगमन कयलनि अछि ।[43]

एहि अलंकारक अधिक प्रयोग आधुनिक मैथिली काव्यक अन्तर्गत कवीश्वर चन्दा झा कृत मिथिलाभाषा रामायणमे भेटैत अछि—

1. **सीता पर दौड़लि मुँह बाय, धारण कयल भयंकर काय ।**[44]

अर्थात् सूर्पनखा अपन पूर्वरूप धारण कय लेलक जे एकटा सुन्दरी रमणी बनि आयलि छलि ।

2. **हा हम मुइलहुँ लक्ष्मण दौड़ू, कहि कहि मरती बेरि ।**
   से मारीच अपन तन धयलक, जनम मरण नहि फेरि ॥[45]

3. **रावण तखन उठल खिसिआय, अपन भयंकर रूप देखाय ।**
   दशमुख विशभुज अति विस्तार, प्रलयकाल घनसन छविभार ॥[46]

4. **सुनइत सीता वचन कपि, पूर्वरूप बनि गेल ।**
   कनक शैल संकास तन, मन अति हर्षित भेल ॥[47]

8. तद्‌गुण

तद्‌गुण लोकन्यायमूलक अलंकार थिक, जकर उद्‌भावक छथि रुद्रट ।[48] हिनक परिभाषा स्पष्ट नहि रहने विश्वनाथ परिमार्जित परिभाषा देलनि । विश्वनाथक मतेँ अपन गुणकेँ छोड़ि अत्यन्त उत्कृष्ट गुणवला दोसर पदार्थक गुण ग्रहण तद्‌गुण अलंकार थिक ।[49] विश्वनाथ एहि अलंकारकेँ मीलितसँ पृथक् करैत कहलनि जे मीलितमे प्रकृत वस्तु दोसरे वस्तुसँ आच्छादित होइत छैक, किन्तु तद्‌गुणमे दोसर वस्तुक गुणसँ प्रकृतवस्तु आक्रान्त दृष्टिगोचर होइत अछि, वस्तुसँ नहि ।[50] मैथिलीक आलंकारिक लोकनि विश्वनाथक अनुगमन करैत छथि ।[51]

उदाहरण :

1. **व्योम भूमि वन गिरि नदी, आदि पदार्थ जतेक ।**
   देल छनहिमे तरुण तम, नीलरंग कए एक ॥[52]

2. **हरि-केहरि शैल-शिखर चढ़ि, संहारल वैरि-तिमिर-करि ।**
   तनि - रुधिर-धारसँ लोहित, जनि पूव दिशा छल छनभरि ॥[53]

10. अतद्‌गुण

अतद्‌गुण लोकन्यायमूलक अलंकार थिक, जकर उद्‌भावक छथि मम्मट । हिनका अनुसारेँ जतय उत्कृष्ट गुणवला वस्तुक लगमे रहियो कए न्यून गुणवला वस्तु ओकर गुणकेँ ग्रहण नहि करए तँ अतद्‌गुण अलंकार होइत अछि ।[54] रुय्यकक अनुसार कारण रहनहुँ उत्कृष्ट गुणकेँ ग्रहण नहि करब अतद्‌गुण थिक ।[55] मैथिलीक आलंकारिक लोकनि सेहो एहि अलंकारक विवेचन कयलनि अछि ।[56]

उदाहरण :

कीचक-कीच नीच मलपूरित नाली बहबा देल ।
गंगहुकेँ जनु अंग-मगध तट कलुषित करबा लेल ॥
किन्तु जाह्नवी जलधारा जनु होय न अशुचि कथंच ।
सैरन्ध्रीक पवित्र चरित्र ऊपर नहि खलक प्रपंच ॥[57]

11. मीलित

मीलित लोकन्यामूलक अलंकारक अन्तर्गत अबैत अछि । एकर उद्‌भावनाक श्रेय छनि रुद्रटकेँ ।[58] हिनके परिभाषासँ प्रभावित भए मम्मट कहैत छथि जे जाहिमे एक वस्तुक कोनो दोसर वस्तुक द्वारा स्वाभाविक वा आगन्तुक चिह्नक द्वारा निगूहन वर्णित होअए, ओतए मीलित अलंकार होइत अछि ।[59] विश्वनाथ एकरा आओर परिष्कृत करैत कहलनि जे कोनो अनुरूप वस्तुमे दोसर वस्तुकेँ मिलि जायब मीलित अलंकार थिक ।[60] आधुनिक आलंकारिक लोकनि विश्वनाथेक अनुगमन कयलनि अछि ।[61]

उदाहरण :

स्पर्श परस्पर पाबि दुहुक कर, जे अम्भोदेँ जड़ छल ।
जन, समाज लाजक-साम्राज्येँ, से चतुरो नहि बूझल ॥[62]

एतय एकवीर एवं एकावलीक कर स्पर्शक वर्णन अछि । लोक लज्जाक कारण दुहुक कर एकाकार भए गेल छल ।

12. उन्मीलित

उन्मीलित अलंकारक उद्‌भावक छथि जयदेव । हिनका अनुसारेँ अत्यन्त समान उपमेय एवं उपमानमे कोनो कारणसँ भेद प्रतीति भेलासँ उन्मीलित अलंकार होइत अछि ।[63] अप्पय दीक्षितक अनुसार मीलितक लक्षण भेलहुपर कोनो कारणेँ भेदज्ञान भेलासँ उन्मीलित अलंकार होइत अछि ।[64] पण्डितराज जगन्नाथ एकरा अनुमानेमे अन्तर्भूत मानैत छथि ।[65] आधुनिक आलंकारिक लोकनि एकरा स्वतन्त्र अलंकार माललनि अछि ।[66]

उदाहरण :

केश छटाकय मोछ कटाकय ड्रेस लगाकय एक समान ।
घूमथि बीच बाटपर धयने एक दोसरक बाहु-वितान ॥
हँसी ठहाका देथि सभक सङ नर-नारिक हो नहि किछु भान ।
किन्तु जाथि नजदीक आबि तए वक्षोजहिसँ समुचित ज्ञान ॥[67]

13. प्रत्यनीक

प्रत्यनीक लोकन्यायमूलक अलंकार थिक, जकर उद्‌भावक छथि रुद्रट । हिनक परिभाषा परवर्त्ती आचार्यकेँ मान्य नहि छनि ।[68] रुय्यकक अनुसार प्रतिकार करबामे समर्थ नहि भेलापर ओकर सम्बन्धीक तिरस्कार करब प्रत्यनीक अलंकार थिक ।[69] येह परिभाषा मैथिलीक अनेक आलंकारिक लोकनि स्वीकार कयलनि अछि ।[70]

एहि तरहेँ प्रत्यनीक अलंकारक दू भेद भए जाइत अछि—

1. जतय शत्रु पक्षक अहित कयल जाय, एवं
2. जतय मित्र पक्षक सम्मान कयल जाय ।

1. प्रथम प्रत्यनीक :

माया हेम हरिण बनि जाउ, चंचल संचरि रूप देखाउ ।
आश्रम बाहर लक्ष्मण राम, साधव अपन काज ओहि ठाम ॥[71]

एतय रामक सम्मुख लड़बामे अपनाकेँ असमर्थ बुझि रावण सीताकेँ चोरयबाक कार्य कयलक ।

2. द्वितीय प्रत्यनीक :

से सुनितहि माँगल रघुवीर, लयला अपनहि कपिपति चीर ।
प्रभु चिन्हितहि लेल हृदयमे राखि, हा हा जानकि-जानकि भाखि ॥[72]

एतय सीता तँ नहि भेटलथिन्ह, किन्तु हुनक वस्त्रेकेँ राम सम्मान देलथिन्ह अर्थात् ओकरे हृदयसँ लगओलन्हि ।

14. प्रतीप

प्रतीप लोकन्यायमूलक अलंकार थिक, जकर उद्‌भावक छथि रुद्रट । हिनका अनुसारेँ उपमेयक अतिस्तुति करबालेल ओकर तुलना उपमानसँ करैत ओकर दुरवस्थाक स्तुति वा निन्दा करबामे प्रतीप अलंकार होइत अछि ।[73] एकरा स्पष्ट करैत अप्पय दीक्षित कहलनि जे जतय प्रसि□ उपमानकेँ उपमेय बना देल जाइक ओतय प्रतीप अलंकार होइत

अछि ।[74] दीक्षितक अनुसार प्रतीपक पाँच भेद होइत अछि ।[75] हिनक परिभाषा ओ भेदकेँ स्वीकार कयनिहार अनेक परवर्त्ती आलंकारिक लोकनि छथि ।[76]

अप्पय दीक्षितक अनुसार प्रतीपक निम्नलिखित भेद अछि—

1. प्रसि□ उपमानकेँ जतय उपमेय बना देल जाय,
2. जतय प्रसि□ उपमानकेँ उपमेय बनाकए वास्तविक उपमेयक अनादर कयल जाय,
3. जतय उपमेयकेँ उपमान बनाकय प्रसि□ उपमानक अनादर कयल जाय,
4. जतय उपमानकेँ उपमेयक उपमाक हेतु अयोग्य कहल जाय,
5. जतय उपमेयक समक्ष उपमानकेँ व्यर्थ सि□ कयल जाय ।

आधुनिक मैथिली काव्यमे अनेकानेक प्रतीपालंकारक उदाहरण भेटैत अछि ।

1. प्रथम प्रतीप :

जतय जतय भय पड़इछ दृष्टि, ततय ततय सीतामयि सृष्टि ।
एहन न अछि एको प्रस्ताव, सीतास्मरण जतय नहि आब ।[77]

एतय पूर्वा□मे प्रथम प्रतीप अछि, कारण जे श्रीरामकेँ सृष्टिक प्रत्येक वस्तुमे सीते बुझाइत छथि ।

2. द्वितीय प्रतीप :

1. **पतिहीना दीना अबला कत, करय निराकुल अनल प्रवेश ।**
अथवा इन्द्रजाल विज्ञानी, काटय अंग दुःख नहि लेश ॥
शुनु रावण आब न मुख लज्जा, निजमुख निज गुण वर्णन कयल ।
अक्षय कुमार मारि पुर जारल, तनि कपिकाँ किय बाँधि न धयल ॥[78]

एतय उपमान प्रतिव्रता नारी एवं जादूगरकेँ उपमेय बनाकय वास्तविक उपमान रावणकेँ निरादर कयल गेल अछि ।

2. **जे उरोज थिक मांसक थैली तकरा कनक-कलश सम मानि ।**
लेर भरल मुख पाबय उपमा चानकला-अनुमानि ॥
चुबइत मूत रहै अछि जाँघहि कविवर-कर पर जानि ।
निन्द्यरूपकेँ एहन बनाओल कविवर गरुता आनि ॥[79]

3. तृतीय प्रतीप :

नरपालक नासा-सुन्दरता निरुपम कीर अकानल ।
लखि स्वचंचु कल-व्याज लाज-वश वन बसिकए जनु कानल ॥[80]

एतय नाकक प्रसि□ उपमान सुग्गाक लोलक अनादर कयल गेल अछि, तेँ तृतीय प्रतीप भेल ।

4. चतुर्थ प्रतीप :

लोचन-रुचि न कोकनद कुवलय इन्दीवर वा पाओल ।
जे शिल्पी विधि रक्त सितासित अद्‌भुत ताहि बनाओल ॥[81]

एतय एकवीरक लोचनक समक्ष-कोकनद, कुवलय एवं इन्दीवर—तीनू प्रकारक कमल, जे प्रसि□ उपमान थिक, अयोग्य सि□ अछि ।

5. पंचम प्रतीप :

1. **वक्षस्थल छल तनिकर उन्नत कठिन-विशाल-शिलासम ।**
लगने जतए विफल हो निश्चय इन्द्रायुधहुक विक्रम ॥[82]

एतय एकवीरक वक्षस्थलक समक्ष वज्रहुक विक्रमकेँ विफल कहल गेल अछि ।

2. **शस्त्र-क्षत-चिह्नहिसँ मण्डित भेल तनिक जेँ छाती ।**
अलंकार तत अलंकार छल तेँ मणिमुक्ता पाँती ॥[83]

3. **रैभ्य-सुता-सौन्दर्य अनिर्वचनीय निरखितहिँ,**
मदन धनुष रखबाक प्रयोजन मानल किछु नहि ।
फेँकल कए दुइ खण्ड विश्वकाँ जानि वशीकृत,
सएह भेल भ्रूयुग्म तनिक ध्रुव भाल-मूल-धृत ॥[84]

15. विकल्प

विकल्प अलंकारक उद्‌भावक छथि रुय्यक, जकरा प्राय: सभ प्रसि□ आलंकारिक लोकनि मानैत छथि ।[85] हिनका अनुसारेँ समान बलशालीक विरोध विकल्प थिक ।[86] विश्वनाथ एहि परिभाषामे 'चातुरीयुत:' जोड़िकय नव परिभाषा गढ़ि लैत छथि ।[87]

मैथिलीक आलंकारिक लोकनि रुय्यकेक परिभाषाकेँ शब्दान्तरेँ स्वीकार कयलनि अछि ।[88]

उदाहरण :

सुन्दरि हम्मर अन्तिम निर्णय
जोँ कहल करब,
तन-मन-धन अहिँक चरण पर सब-
सानन्द धरब,
अन्यथा बन्द अइ कारामे
आजन्म सड़ब ।[89]

16. समुच्चय

समुच्चय अलंकारक उद्‌भावनाक श्रेय छनि रुद्रटकेँ, किन्तु हिनक परिभाषा विद्वान् लोकनिकाँ मान्य नहि छनि ।[90] रुय्यकक अनुसार गुण एवं क्रिया केर कार्यसि□क हेतु एक साधककेँ रहितहु साधकान्तरक कथनमे समुच्चय अलंकार होइत अछि ।[91] विश्वनाथ एही शब्दमे किछु परिवर्त्तन करैत एवं क्रम बदलैत परिभाषा देने छथि ।[92] प० सीताराम झा एकहि व्यक्तिमे संगहि अनेको भावक वर्णन अथवा एक हेतुसँ साध्यकार्यमे अनेक साधक रहने समुच्चय अलंकार मानैत छथि ।[93] प० दामोदर झा विश्वनाथक अनुसरण करैत कहैत छथि जे जतय कार्यक साधक ककरो एकहुक भेने खलेकपोतन्यायसँ दोसरो ओही कार्यक साधक बनि जाय तथा दू गुण अथवा दू क्रिया वा गुण एवं क्रियाक एक संग वर्णित भेने समुच्चय अलंकार होइत अछि ।[94] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' एक अनेको पद क्रियाक गुम्फनकेँ समुच्चय कहि दैत छथि ।[95] हिनक परिभाषा पूर्ण स्पष्ट नहि बुझना जाइत अछि । उक्त परिभाषाक आधारपर समुच्चयकेँ प्रथमत: दू भागमे बाँटल जा सकैत अछि—

1. प्रथम समुच्चय एवं 2. द्वितीय समुच्चय ।

1. प्रथम समुच्चय : जखन एक कार्यक सि□क हेतु एक साधनक रहितहुँ अनेक साधनक वर्णन होअए । एकर पुन: तीन प्रकार अछि— (क) सद्योग, (ख) असद्योग एवं (ग) सदसद्योग ।

(क) सद्योग प्रथम समुच्चय— जतय उत्तमे साधनक वर्णन होइत अछि ।

भुज, जाँघ, नयन, पुनि-पुनि अवाम, राजाक फड़कि कह सफल काम ।
बाटहिँ भेटल घट भरल-वारि, पाकल फलसँ तरु नमल-डारि ॥[96]

एतय भुजा, जाँघ एवं दहिन आँखि आदिक फकड़बे कार्य सि□क संकेत थिक, पुन: भरल घैल, पाकल फलसँ डारि नमल इत्यादि सभ उत्तर साधकान्तर थिक ।

(ख) असद्योग प्रथम समुच्चय— जतय सभटा अनुत्तमे साधनक वर्णन हो ।

विरह आधि चलबाक श्रम, दुखद छले मगमाँझ ।
व्याकुल कएलक पथिककेँ, आबि रतौन्ही साँझ ॥[97]

एतय पथिककेँ व्याकुल करबालेल मात्र विरह पर्याप्त अछि, तथापि चलबाक श्रम, आधि, रतौन्ही इत्यादि वर्णनसँ समुच्चय भेल । एतय सभटा अनुत्तमे साधन अछि ।

(ग) सदसद्योग प्रथम समुच्चय— जयत उत्तम एवं अनुत्तम दुनू प्रकारक साधन रहैत अछि ।

बल्लभ-विदेश-यात्रा गुनि, तरुणी प्रभात लखि कानलि ।
छुटि हर्षित भेल नवोढ़ा, पति-बाहु-पाशसँ बान्हल ॥[98]

एतय एकहि समयमे (प्रभात लखि) तरुणी अपन स्वामीक विदेश यात्रा गुनिकए कनैत अछि आ नवोढ़ा जे भरि राति पतिक बाहुपाशसँ बान्हल रतिजन्य कष्ट सहैत छथि, हर्षित भेलि । एतय उत्तम एवं अनुत्तम दुनू प्रकारक साधनक वर्णन अछि ।

2. द्वितीय समुच्चय— जतय अनेक गुण वा क्रिया एक संग वर्णित रहय । द्वितीय समुच्चयक सेहो तीन भेद होइछ । (क) गुण समुच्चय, (ख) क्रिया समुच्चय एवं (ग) गुण-क्रिया समुच्चय ।

(क) गुण समुच्चय : जतय अनेक गुणक एकहि संग वर्णन होअए ।

1. **एक वृ□ता दोसर तनुज वियोग, तेसर छल जेँ शासन आधिक योग ।**[99]

एतय अनेक गुणक एकहि संग वर्णन भेल अछि । यद्यपि भूपतिक विचित्र दशा देखयबा लेल एकटा वृ□ता मात्र पर्याप्त छल, किन्तु एकहि संग अनेक गुणक वर्णनसँ समुच्चय अलंकार भेल ।

2. **एक तँ राति निविड़तम, दोसर विपिन घनघोर ।**
कहु तरुवर, मोर जीवन, पहु विलमल कोन ओर ॥[100]

(ख) क्रिया समुच्चय : जतय एकहि संग अनेक क्रियाक वर्णन होइछ ।

तखनहिँ नभ-दुन्दुभि उठल बाजि, ऊपर सँ बरिसल कुसुम-राजि ।
सुरललना मंगल गीत गाबि, नाचलि अपूर्व आमोद पाबि ॥[101]

एतय एकहि संग अनेक क्रियाक वर्णन भेल अछि ।

(ग) गुण-क्रिया समुच्चय : जतय अनेक गुण एवं क्रियाक एकहि ठाम वर्णन होअए ।

कुसुमाकर निर्माण धनुष शर सुहृद हाथमे छोड़ल ।
मन्मथ-मथित-चित्त पथिक ब्रज जीवन आशा तोड़ल ॥[102]

एतय फूलक धनुष बनयबामे क्रिया एवं मन्थनमथित-चित्तमे गुणक समुच्चय अछि तेँ एकरा गुण-क्रिया समुच्चय कहल जायत ।

17. समाधि

समाधि वाक्यन्यायमूलक अलंकार थिक । समाधि अलंकारकेँ, समाहितक रूपमे सर्वप्रथम उल्लेख दण्डी द्वारा कयल गेल । हिनका अनुसारेँ यदि कोनो आरम्भ कयल कार्यकेँ सम्पादनक हेतु देवयोगसँ साधन जुटि जाय तँ समाहित अलंकार होइत

अछि ।[103] एहि अलंकारकेँ समाधि नामसँ सर्वप्रथम उल्लेख भोजराज कयने छथि, किन्तु हिनक परिभाषा परवर्त्ती आचार्य द्वारा मान्य नहि छनि ।[104] रुय्यकक अनुसार कोनो कारण द्वारा आरम्भ भेल कार्य यदि दोसर कारणसँ सुगम भए जाय तँ समाधि थिक ।[105] आधुनिक आलंकारिक लोकनि हिनके अनुसरण कयलनि अछि ।[106]

उदाहरण :

बहल-बहल तत प्रलय विहाड़ि, जनु पर्वतकाँ देत उखाड़ि ।
कपिक पूँछमे धधकल आगि, विकल परायल सभ घर त्यागि ॥[107]

एतय हनुमानक नाङड़िमे लागल आगिये लंका जयरबालेल पर्याप्त छल, किन्तु प्रलय बिहाड़ि बहलापर आओर कार्यमे सुगमता भए गेलैक ।

18. प्रहर्षण

प्रहर्षण अलंकारक उद्भावनाक श्रेय छनि जयदेवकेँ । हिनका अनुसारेँ जतय बिना प्रयोजनकेर इच्छासँ अधिक लाभ भए जाय ओतय प्रहर्षण अलंकार होइत अछि ।[108] एकर समर्थन दीक्षित सेहो कयलनि आ एकर तीन भेदक उल्लेख कयलनि ।[109] मैथिलीक आलंकारिक लोकनि हिनके अनुसरण कयलनि अछि ।[110]

एहि तरहेँ प्रहर्षणक तीन प्रकार भेल—

1. जतय बिनु आयासहि ईप्सित वस्तु भेटि जाय,
2. जतय अभीष्टसँ अधिक भेटि जाय, तथा
3. जतय उपायसि□क यत्नहिसँ साक्षात् फल प्राप्त भए जाय ।

1. प्रथम प्रहर्षण—

संक्षेपहि कहलनि हनुमान, सानुज राम थिकथि भगवान ।
निर्भय चलू मित्रता करिय, बालिक गर्व सर्व अहँ हरिय ॥[111]

एतय सुग्रीवकेँ बिनु आयासहि रामक दर्शन आ बालिकेँ मारबा लेल राम सन वीर पुरुषक संग भए गेलनि ।

2. द्वितीय प्रहर्षण :

दर्शन हमर लाभ फल एक, सम्प्रति अहँक राज्य अभिषेक ।
लंकापति बनि भोगू राज्य, यावत गगन सूर्य्य द्विजराज ॥[112]

एतय विभीषणकेँ रामदर्शनेटा इष्ट छलनि, किन्तु दर्शनक फलस्वरूप लंकापति बनि गेलाह ।

3. तृतीय प्रहर्षण :

कहलनि विनत हाथ दुहु जोड़ि, चिन्ता भरत अहाँ दिय छोड़ि ।
त्यागु-त्यागु निज हृदय महाधि, राम वियोग अशोक समाधि ॥[113]

एतय भरत रामक आगमनक प्रतीक्षामे पल-पल विकल भए रहल छलाह आ कि एहन सुखद संवाद भेटि गेलनि ।

19. परिसंख्या

परिसंख्या वाक्यन्यायमूलक अलंकार थिक, जकर उद्‌भावक छथि रुद्रट ।[114] एहि अलंकारमे अन्यत्र सम्भव वस्तुक निषेध कए एकत्र स्थापित कयल जाइत अछि । रुय्यकक अनुसार जखन एक वस्तु अनेकत्र सम्भावित होअए तँ ओकर अन्यत्र निषेध कए एक स्थानमे नियमन परिसंख्या थिक ।[115] हिनका अनुसारेँ एकर चारि भेद अछि ।[116] रुय्यक[117] एवं विश्वनाथक[118] अनुसार परिसंख्यामे श्लेष-संग युक्ता रहलासँ चारुता आबि जाइत छैक ।

आधुनिक आलंकारिक लोकनि रुय्यकेक परिभाषासँ मिलैत-जुलैत परिभाषा देने छथि ।[119]

उदाहरण :

1. **जत निग्रह मानसमे यमीक, मालिन्य कलेवरमे तमीक ।**
व्याकरणहिँ विग्रह सन्धि-काज, कवितहिमे दुर्घट बन्धराज ॥[120]

एतय निग्रह, मालिन्य, विग्रह-सन्धि, दुर्घट-बन्ध इत्यादिक अन्य स्थानसँ निषेध कय एकत्र कयल गेल अछि क्रमशः यमीक, तमीक, व्याकरणहिँ एवं कवितहिमे ।

2. **विरहेँ व्याकुल जत चक्रवाक, जड़मात्र जीव सदिखन अवाक ।**
एकान्त अधोगति पानिहीक, द्विजराज विमुखता पद्‌मिनीक ॥[121]

20. यथासंख्य

यथासंख्य एक प्रमुख अलंकार थिक जकर चर्चा प्रायः सभ प्रसि□ आलंकारिक लोकनि कयलनि अछि । एकरा केओ संख्यान,[122] एवं केओ क्रम[123] सेहो कहैत छथि । भामहक अनुसार भिन्नधर्मवला अनेक निर्दिष्ट अर्थक अनुनिर्देश यथासंख्य कहबैत अछि ।[124] दण्डीक अनुसार पूर्वकथित पदार्थक ओही क्रममे आवृत्ति यथासंख्य थिक ।

रुय्यक[125] एवं विश्वनाथक[126] परिभाषा दण्डीक परिभाषासँ अभिन्न अछि ।

प० सीताराम झा यथाक्रम वस्तुक संग वस्तुक वर्णनकेँ यथासंख्य अलंकार कहैत छथि ।[127] प० दामोदर झाक अनुसार यदि उद्देश्यक क्रम जकाँ प्रतिनिर्देश हो तँ यथासंख्य अलंकार होइत अछि ।[128] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' यथासंख्य अलंकारकेँ परिभाषित करैत कहैत छथि जे वस्तु-विधान, विशेष्य वा विशेषण यथाक्रममे रहने यथासंख्य होइत अछि ।[129]

एहि अलंकारमे जाहि क्रमसँ किछु पदार्थ वर्णित रहैत अछि ओही क्रमसँ ओहिसँ सम्बन्ध रखनिहार दोसर पदार्थक वर्णन होइत अछि । किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

1. **अपनहि विधि, हरि, हर भए समस्त, जग सिरजिअ, पालिअ, करिअ अस्त ॥**[130]

एतय पूर्वा□मे वस्तुक्रम अछि— विधि, हरि एवं हर जकर सम्बन्ध अछि क्रमशः उत्तरा□क सिरजिअ, पालिअ, एवं अस्तसँ । एतय अर्थबोधक हेतु क्रमक निर्वाह भेल अछि तेँ यथासंख्य भेल ।

2. **प्रजा, युवति, याचक वैरी ओ खल भूपतिकाँ जानल ।**
पिता, मदन, कल्पद्रुम, अन्तक तथा प्रलयकालानल ॥[131]

एतय राजाकेँ प्रजा-पिता, युवती-कामदेव, याचक-कल्पद्रुम, वैरी-यमराज एवं खल-प्रलयकालक आगिक रूपमे देखलक ।

3. **सिंधु, शशी, ओ साप, सरोजक, संग नाभि मुँहकेश उरोजक ।**
तुलना-तुला तूलकै तइमे, दण्ड न आब बनाउ ॥
की कहु कवि, प्राण बचाउ ॥[132]

एतय सिन्धु-नाभि, शशी-मुँह, साप-केश एवं सरोज-उरोजसँ यथासंख्य भेल ।

यथासंख्य अलंकारमे जतय क्रम-निर्वाह नहि रहैत अछि ओतय अलंकारक तऽ गप्पे कोन जे काव्यमे दोष आबि जाइत अछि । ई दोष दू प्रकारक होइत अछि—

1. भग्नक्रम एवं 2. विपरीत क्रम ।

1. भग्नक्रम दोष : जतय क्रममे हेरफेर भए जाइत अछि ओतय भग्नक्रम दोष होइत अछि । एहि प्रकारक दोष मिथिलाभाषा रामायणमे कतहु-कतहु देखि पड़ैत अछि—

1. **जनक भ्रातृकन्या दुइ गोटि, जेठि श्रुतिकीर्त्ति माण्डवी छोटि ।**
भरत तथा शत्रुघ्न जमाय, यथासंख्य होमहि बुझु न्याय ॥[133]

एतय क्रमभग्न दोष अछि कारण जे जेठि माण्डवी छथि आ ओ भरतक पत्नी छलीह । प० राधेश्याम रामायणक निम्न पाँती द्रष्टव्य थिक—

माण्डवी भरतजी को समुचित, श्रुतिकीर्त्ति शत्रुहनजी को है ।
उर्मिला सिया की लघु भगिनी, अर्पण श्री लक्ष्मणजी को है ॥[134]

2. **माय-बहिन ओ बाबू-काका ।**
मम्मी-सिस्टर-अंकल-पापा ॥[135]

एतद भग्न-क्रम दोष द्रष्टव्य थिक ।

2. विपरीत क्रम— विपरीत क्रमक उदाहरण आधुनिक मैथिली काव्यमे नहि दृष्टिगोचर होइत अछि ।

21. परिवृत्ति

परिवृत्ति वाक्यन्यायमूलक अलंकार थिक, जकर उल्लेख भामहसँ लएकए पण्डितराज जगन्नाथ धरि सभ प्रसि□ आलंकारिक लोकनि कयलनि । भामहक अनुसार अन्य वस्तुक परित्यागसँ विशिष्ट वस्तुक प्राप्ति तथा यदि ओहिमे अर्थान्तरन्यास मिलल हो तँ परिवृत्ति अलंकार होइत अछि ।[136] विश्वनाथ एकर परिभाषाकेँ सरलीकृत करैत कहलनि जे समान, न्यून अथवा अधिकक संग विनिमय करबासँ परिवृत्ति अलंकार होइत अछि ।[137] पण्डितराज जगन्नाथ परिवृत्तिक दू भेद कयलनि ।[138] मैथिलीक आलंकारिक लोकनि पूर्णतः विश्वनाथेक अनुसरण कयलनि अछि ।[139]

परिवृत्ति अलंकारक चारि भेद कयल जाइत अछि—

1. जतय उत्कृष्ट वस्तुक संग उत्कृष्ट वस्तुक विनिमय होअए,
2. जतय न्यून वस्तुक न्यूने वस्तुक संग विनिमय होअए ।
3. जतय उत्कृष्ट दए निकृष्ट लेल जाय ।
4. जतय निकृष्ट दए उत्कृष्ट लेल जाय ।

1. प्रथम परिवृत्ति :

1. **छवि देखाय रविसन क्रेतासँ, दाम गछा कए भावि प्रकाश ।**
बेचि लेल, दूर्वादल-दोना-मे अलेल होइछ से भास ॥[140]

एतय प्रकृति मोदिआइनि अपन छवि देखाय सूर्यसँ भावि प्रकाश गछाए लेलनि । तेँ उत्तम वस्तुक विनिमय भेल ।

2. **गोपी-जनक चरण-रज-पावित-ब्रज सन तीर्थ न आन,**
तजि सम्बन्ध बन्ध ममतादिक, जे तोहि अरपल प्राण ॥
धन्य अहाँक पिरीति रीति, गोलोक सनक तजि लोक,
मुदित अनारि गोपनारिक छविमे दी निज आलोक ॥[141]

2. द्वितीय परिवृत्ति :

1. **कान कपार एक नहि बूझल, पातेँ पात नुकयलहुँ ।**
अपन स्वरूप धयल हम सबकाँ, कालक धाम पठयलहुँ ॥[142]

एतय मारि खयबाक बदलामे हनुमान राक्षसकेँ मारलनि ।

2. **पहिलय मारि बहुत हम खयलहुँ, पाछाँ अनुचित कयलहुँ ॥**[143]

3. तृतीय परिवृत्ति :

1. **फलक समय आनत होएब, अहँ देल जगतकेँ शिक्षा ।**
आश्रय गति यदि उच्छेदक हो, ततहु अदेय न भिक्षा ॥[144]

2. **निज अमूल्य मन दए प्रियवरकेँ, विरह वेदना पओलहुँ ।**
अधरासव प्रदान कए सखि हे, दन्तक्षत कत लेलहुँ ॥[145]

एतय मन एवं अधरासव सन उत्कृष्ट वस्तु प्रदान कए विरहवेदना एवं दन्तक्षत सन निकृष्ट वस्तु लेल जाइत अछि ।

4. चतुर्थ परिवृत्ति :

डरसँ सागर थरथर काँप, देखल रामक प्रबल प्रताप ।
दिव्य रूप धय मणि लय हाथ, गेला जतय राम रघुनाथ ॥
पद पंकज पर मणि देल राखि, त्राहि त्राहि पुन उठला भाखि ॥[146]

एतय राम समुद्रकेँ डर देखाकए प्रेम लैत छथि ।

22. अर्थापत्ति

अर्थापत्ति अलंकार उद्भावक छथि भोजराज, जकरा प्रायः सभ परवर्त्ती आचार्यगण मानैत छथि । विश्वनाथक अनुसार-दण्डापूपिका न्यायसँ अन्यार्थक बोध अर्थापत्ति अलंकार कहबैत अछि ।[147] रुय्यकोक परिभाषा एहने अछि ।[148] इषत् परिवर्त्तनक संग अप्पय दीक्षित एकरा परिभाषित करैत कहैत छथि जे जतय कैमुत्यन्यायक द्वारा कोनो अर्थ संसि□ होअए, ओतए काव्यार्थापत्ति अलंकार होइत अछि ।[149] एहि परिभाषाकेँ पण्डितराज जगन्नाथ खण्डित करैत छथि ।[150] किन्तु कुवलयानन्दक टीकाकार वैद्यनाथ एकर समर्थन कयलनि अछि ।[151]

प० सीताराम झा एकर परिभाषाकेँ सरलीकृत करैत कहलनि जे जतय पैघक परिभवसँ छोटक अनादर अथवा छोटक यशसँ पैघक यश सि□ हो ताहिठाम अर्थापत्ति अलंकार होइत अछि ।[152] प० दामोदर झा एहिसँ किछु भिन्न परिभाषा दैत एकर तीनि भेद मानैत छथि ।[153] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' दण्डपूपन्यायेँ अर्थापत्ति मानैत छथि ।[154]

पण्डितराज जगन्नाथ अर्थापत्तिक 24 भेद कयलनि अछि किन्तु एतेक भेदोपभेदक उदाहरण ताकब समय सापेक्ष अछि । अत: एकर प्रधान दू भेद मानब सयह उचित बुझना जाइत अछि ।

1. जतय पैघक अपमानसँ छोटक अपमान स्वयं सि□ रहय, एवं
2. जतय छोटक सम्मानसँ पैघक सम्मान अनायास सि□ रहैत अछि ।

1. प्रथम अर्थापत्ति :

सर्वंसहाक उर उठल कम्प, अहिपति शिर सिरजल मही-झम्प ।
कालहुक नयनसँ बहल पानि, के सकय दशा आनक बखानि ॥[155]

एतय कालक पराभवसँ सभक परिभव स्वयं सि□ अछि ।

2. द्वितीय अर्थापत्ति :

1. **किछु समय प्रतीक्षा तेँ अवश्य, करु अपनहि भए जड़तीह वश्य ।**
व्यवहार मधुर चुम्बक समान, खीचय यदि जड़, तँ कत सुजान ॥[156]

एतय जड़क सम्मानसँ सुजनक सम्मान स्वयं सि□ अछि ।

2. **पशु पक्षिहुकेँ परिचयेँ स्नेह, असुरेश, बढ़ए यदि असन्देह ।**
तँ मानव जातिक मन पवित्र, प्रेमक उद्भावन की विचित्र ॥[157]

23. पर्याय

पर्याय वाक्यन्यायमूलक अलंकार थिक, जकर उद्भावक छथि रुद्रट ।[158] हिनक परिभाषा परवर्त्ती विद्वान् लोकनिक द्वारा मान्य नहि भेलनि । विश्वनाथक अनुसार जतय एक वस्तु अनेकमे वा अनेक वस्तु एकमे वर्णित रहय ओतय पर्याय अलंकार होइत अछि ।[159] पर्यायक शाब्दिक अर्थ थिक– अनुक्रम जे कालभेद सूचक थिक । एहिमे आधार आधेय भाव वर्णित रहैत अछि । मम्मट एकरा **भवति** एवं **क्रियते** द्वारा व्यक्त कयलनि अछि ।[160] अत: एकर प्रधान दू भेद भेल–

1. एक वस्तुक अनेक वस्तुमे क्रमश: स्थिति, एवं
2. अनेक वस्तुक एक वस्तुमे क्रमश: स्थिति ।

मैथिलीक आलंकारिक लोकनि सेहो एकरा स्वीकार कए लेलनि ।[161]

1. प्रथम पर्याय :

वर्षा बुन्द खसल गिरिजा पर जे छलि तपमे लीन ।
किछु छन कय विश्राम पलक पर भेल अधोगति दीन ॥
से पुनि अधर ओष्ठकेँ चुमइत दुहु उरोज पर गेल ।
त्रिवली केर आलिंगन करइत नाभि परस कय लेल ॥[162]

एतय एकटा जलबुन्दक अनेक स्थानमे क्रमश: अवस्थिति देखाओल गेल अछि ।

2. द्वितीय पर्याय :

रचना पालन प्रलय स्वतन्त्र, विश्व चढ़ल भल माया यन्त्र ।
ब्रह्म अनामय हर्षक मूल, हमरा पर से प्रभु अनुकूल ॥
अहँक उदर पर बस संसार, हमर तनय बनलहुँ व्यवहार ॥[163]

एतय कौशल्या एकटा राममे अनेक वस्तुक अवस्थिति क्रमश: देखलनि अछि ।

24. तिरस्कार

तिरस्कार अलंकारक उद्भावक छथि पण्डितराज जगन्नाथ । हिनका अनुसारेँ कोनो दोषक सम्बन्धसँ गुणरूपसँ प्रसि□ वस्तुक द्वेष तिरस्कार थिक ।[164] मैथिल आलंकारिक लोकनि ईषत् परिवर्त्तनसँ एकर परिभाषा दैत कहैत छथि जे विशेष गुणयुक्त पदार्थहुमे किछु अवगुण देखि ओकर अपमान करब तिरस्कार अलंकार कहबैत अछि ।[165]

कवीश्वर चन्दा झा रामक विरोधीमे केहनो गुण रहने ओकर तिरस्कार करैत छथि–

हे प्रभु कहइत मन हो लाज, नहि विभूति वनिता सुख काज ।
कतय ज्ञान सुख कत सुखराज, सुत बित बन्धन सकल समाज ॥
कपिवर रघुवर प द अनुरागि, विषय वासना देलनि त्यागि ॥
मन विराग सुख दु:ख समान, कपिपति पायोल उत्तम ज्ञान ॥[166]

एतय वास्तविक सुख– राज–पाट, पत्नी इत्यादिकेँ सुग्रीव रामक समक्षमे तिरस्कार करैत छथि ।

संदर्भ :

1. हेतुश्च सूक्ष्मो लेशोऽथ नालंकारतया मत: । —काव्यालंकार, 2–26
2. हेतुश्च सूक्ष्मलेशौ च वाचामुत्तमभूषणम् । —काव्यादर्श, 2–235

3. अभेदेनाभिधा हेतुर्हेतोर्हेतुमता सह । —साहित्यदर्पण, 349

4. (क) काजक वर्णन संग हो, हेतु कथन जहिठाम ।
वा दुहूक हो ऐक्य तोँ, हेतु अलंकृति नाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 92

(ख) हेतुमान ओ हेतुमे, जँ अभेद भए जाए ।
हेतु अलंकृति जानु तँ, शोभा रुचिर बढ़ाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 73

(ग) प्रकृत प्रमेयक सि□ हित, विहित प्रमाणक योग ।।—अलंकार-मालिका, सूत्र- 1

5. प्रो० तन्त्रनाथ झा : नमस्या, पृ.- 43

6. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 2-32

7. वस्तु परोक्षं यस्मिन्साध्यमुपन्यस्य साधकं तस्य ।
पुनरन्यदुपन्यस्येद्विपरीतं चैतदनुमानम् ।। —काव्यालंकार, 7-56

8. अनुमानं तु विच्छित्या ज्ञानं साध्यस्य साधनात् ।। —साहित्यदर्पण, 10-63

9. देखि चिह्न अनुमान बल, वस्तु हेतु हो ज्ञान ।
तादृश वर्णनमे कहथि, कवि अनुमान प्रमान ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 94

10. चमत्कारयुत हेतुसँ, ओहने साध्यक भान ।
सहृदयगन तकरो कहथि, अलंकार अनुमान ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 76

11. हेतु लिंग केर ज्ञानसँ, अलंकार अनुमान ।
कमलिनि मुख मलिने बुझल, गेल अस्त दिनमान ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 181

12. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : अरण्यकाण्ड, पृ.- 119

13. श्रुतमेकं यदन्यत्र स्मृतेरनुभवस्य वा ।
हेतुतां प्रतिपद्येन काव्यलिंगं तदुच्यते ।। —काव्यालंकार-सार-संग्रह, 9-74

14. हेतोर्वाक्ये पदार्थत्वे काव्यलिंगं निगद्यते ।। —साहित्यदर्पण, 10-62

15. (क) अर्थ समर्थन होए कहि, जुक्ति हेतु जहिठाम ।
काव्यलिंग नामक ततै, अलंकार अभिराम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 69

(ख) कारण जतए पदार्थ वा, वाक्यक अर्थ बुझाए ।
चमत्कार सम्बलित से, काव्यलिंग कहि जाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 70

(ग) अर्थ समर्थन हेतु दय, काव्यलिंग पद-वाक्य ।
चित राजित यदि त्रिलोचन, मदनक जय न अशक्य ।।
—अलंकार-मालिका, सूत्र-122

16.-17. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 9-24, 5-24

18. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : बालकाण्ड, पृ.- 28

19. उत्तरवचनश्रवणादुन्नयनं यत्र पूर्ववचनानाम् ।
क्रियते तदुत्तरं स्यात्प्रश्नादत्युत्तरं यत् स्यात् ।। —काव्यालंकार, 7-93

20. उत्तर श्रुति मात्रतः
प्रश्नस्योन्नयनं यत्र क्रियते तत्र वा सति ।
असकृद्यदसम्भाव्यमुत्तरं स्यात्तदुत्तरम् ।। —काव्यप्रकाश, 12-101

21. प्रश्नोत्तरान्ताभिन्नमुत्तरं चित्रमुच्यते । —कुवलयानन्द, 150

22. साभिप्रायोत्तरहिसँ, प्रश्नक प्रत्यय होइछ । पुनि पुनि उत्तर सुन्दरे, करि करि प्रश्न लसैछ ।।
पुनि पुनि प्रश्नोत्तर दुहू साभिप्राय रहैछ । उत्तर नाम अलंकृतिक, तेसर भेद कहैछ ।।
एके प्रश्नोत्तर रहए, कइ प्रश्नक से एक । अलंकार उत्तरहुमे, बुध करु भेद विवेक ।।
—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 96

23. उत्तर प्रश्नक होअए जौं, उत्तर साभिप्राय ।
बिनु प्रश्नहु वा होए तौँ, तहु कहल से जाय ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 83

24. गूढ़ाशय लय यदि कहथि, उत्तर प्रश्नाधार ।
चित्रोत्तर प्रश्नोत्तरहु, चित्रित एक अनेक ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 159

25. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, लंकाकाण्ड, पृ.- 199

26-27. वैह, पृ.- 213 एवं 214

28. भर्तृहरि-त्रिशती-शृंगार-शतक, 7

29. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

30. ऐकात्म्यं बाध्यते योगात् तत्सामान्यमिति स्मृतम् ।। —काव्यप्रकाश, 10-134

31. प्रस्तुतस्यान्येन गुणसाम्यादैकात्म्यं सामान्यम् । —अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 72

32. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण । —किष्किन्धाकाण्ड, पृ.- 139

33. भेदवैशिष्ट्ययोः स्फूर्त्तावुन्मीलितविशेषकौ । —कुवलयानन्द, 142

34. (क) जौं मीलित दुइ वस्तुमे, होए पृथकता ज्ञान ।
किछु विशेषता सोँ ततै, सुकवि विशेषक मान ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 82

(ख) गुण योगहिँ कइ वस्तु जोँ, मिलि सामान्य बुझाए ।
किछु विशेषता बुझि पड़ए, विशेषकहु कहि जाए ।।
—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 83

(ग) सामान्यहु वैशिष्ट्य जोँ, होइछ लक्ष्य विशेष । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 156

36. प्राक्सि□स्य गुणोत्कर्षोऽनुगुणः परसन्निधेः । —चन्द्रालोक, 5-106

37. कुवलयानन्द, 145

38. (क) अनुगुन जदि परसंग सोँ, निजगुन अधिक विकास । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 81

(ख) अपन गुणक उत्कर्ष हो, प्रबल सदृश गुण संग ।
अलंकार अनुगुण कहथि, बुधजन सहित उमंग ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 96

(ग) अनुगुण आनक परस वश, पहिलुक गुण उत्कृष्ट ।—अलंकार-मालिका, सूत्र- 153

39. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 8-72

40. वैह, 3-17

41. चन्द्रालोक, 5-103-04

42. (क) पुनः स्वगुणसंप्राप्तिः पूर्वरूपमुदाहृतम् । —कुवलयानन्द

(ख) पूर्वावस्थानुवृत्तिश्च विकृते सति वस्तुनि । —कुवलयानन्द

43. (क) वस्तु जतय पररूप मे, अपन सरूप बनैछ ।
पूर्वरूप नामक ततै, अलंकार कहबैछ ॥
वस्तुक हटनहुँ सोँ जतै, पूर्वरूप छवि भास ॥ —अलंकार-दर्पण, पृ.- 80

(ख) अनका गुणसँ रङल जे, आनक गुण आभार ।
पुनि अपने गुण लाभ करु, पूर्वरूप के सार ॥
अथवा वस्तुक विकृतिअहु, पूर्व परिस्थिति मान ।
अलंकारविद् बुध ततहु, पूर्वरूप कहि जान ।।—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 95

(ग) पूर्वरूप जे गहय गुन-रूप पहिल अविशेष ।
पूर्वरूप पुनि दुरौनहु, वस्तु पहिलुके रूप ॥ —अलंकार-मालिका, सूत्र- 150-51

44. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : अरण्यकाण्ड, पृ.- 116

45. वैह, पृ.- 123

46. वैह, पृ.- 125

47. वैह, सुन्दरकाण्ड, पृ- 177

48. यस्मिन्नेकगुणानामर्थानां योगलक्ष्यरूपाणाम् ।
संसर्गे नानात्वं न लक्ष्यते तद्गुणः स इति ॥ —काव्यालंकार, 9-42

49. तद्गुणः स्वगुणत्यागादत्युत्कृष्टगुणग्रहः । —साहित्यदर्पण, 10-10

50. मीलिते प्रकृतस्य वस्तुनो वस्त्वन्तरेणाच्छादनम्,
इह तु वस्त्वन्तरगुणेनाक्रान्तता प्रतीयते इति भेदः । —साहित्यदर्पण, पृ.- 63

51. (क) तद्गुण निजगुण छोड़ि जदि, हो परगुण परिपूर । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 79

(ख) अति उत्कृष्टहि गुणहिसँ, त्यागि अपन गुण देथि ।
तकरे गुणमे रमि रहथि, तद्गुण संज्ञा लेथि ॥ —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 94

(ग) त्यागि अपन गुण आन गुण, ग्रहण तद्गुणक लेल । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 149

52. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 2-26

53. वैह, 3-27

54. तद्रूपाननुहारश्चेदस्य तत्स्यादतद्गुणः । —काव्यप्रकाश, 10-138

55. सति हेतौ तद्गुणानुहारो तद्गुणः । —अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 74

56. (क) ततय अतद्गुण अपन गुन, तजे न लहि परसंग । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 80

(ख) पैघो गुणकेँ नहि गहए, कारण व्यर्थ लखाए ।
अपने गुण रखने रहए, अतद्गुणे कहि जाए ॥ —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 94

(ग) संगत गुन आनक न पुनि, ग्रहण अतद्गुण ह्वैछ । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 159

57. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : उत्तरा, दोसर सर्ग, पृ.- 20

58. तन्मीलितमिति यस्मिन्समानचिह्नेन हर्षकोपादि अपरेण तिरष्क्रियते नित्येनागन्तुकेनापि ॥
—काव्यालंकार, 7-106

59. समेन लक्षणावस्तु वस्तुना यन्निगूहते ।
निजेनागन्तुना वापि तन्मीलितमिति स्मृतम् ॥ —काव्यप्रकाश, 10-130

60. मीलितं वस्तुनो गुप्तिः केनचित् तुल्यलक्ष्मणा । —साहित्यदर्पण, 10-86

61. (क) वस्तुक समगुन मेल सौँ, जतै भेद नहि भान ।
नाम अलंकारक ततै, मीलित कहल सुजान ॥ —अलंकार-दर्पण, पृ.- 81

(ख) अधिक प्रभावी गुणहिमे, छोट जतय मिलि जाय ।
जँ नहि पृथक् बुझाए तँ, मीलित नाम कहाए ।।—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 91

(ग) मीलित सादृश्येँ न जोँ, हो लक्षित किछु भेद । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 154

62. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली परिणय, 14-40

63. हेतोः कुतोऽपि वैशिष्ट्यात् स्फूर्त्तिरुन्मीलितं मतम् । —चन्द्रालोक, 5-35

64. भेदवैशिष्ट्ययो : स्फूर्त्तावुन्मीलित-विशेषकौ । —कुवलयानन्द, 148

65. हिन्दी रसगंगाधर : तेसर भाग, पृ.- 354

66. (क) जौँ मीलितमे होए पुनि, वस्तु पृथकता ज्ञान ।
किछु कारणवश तौँ कहथि, उन्मीलित मतिमान । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 82

(ख) जतय अधिक गुणमे मिलल, वस्तु न भिन्न बुझाए ।
कोनो हेतुसँ भिन्न बुझि, उन्मीलित कहि जाए ॥ —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 92

(ग) अन्मीलित यदि मीलितहुँ भेद पड़य किछु सूझि । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 157

67. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

68. वक्तुमुपमेयमुक्तमुपमानं तज्जिगीषया यत्र ।
तस्य विरोधीत्युक्त्या कथ्येत प्रत्यनीकं तत् ॥ —काव्यालंकार, 8-92

69. प्रतिपक्षप्रतीकाराशक्तौ तदीय तिरस्कारः प्रत्यनीकम् । —अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 69

70. (क) द्वेष प्रबल रिपु पक्षसोँ, हित पक्षक सम्मान ।
प्रत्यनीक दुइ विधि कहल, अलंकार मतिमान । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 67

(ख) रिपुसँ भिड़ब अशक्त भए, तत्सम्बन्धी हानि ।
उत्कर्षाधायक तकर, प्रत्यनीक से मानि ।। —अलंकार कमलाकर, पृ.- 88

(ग) प्रत्यनीक जे अबल हठि, प्रबलक पक्ष दुरैछ । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 120

71. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : अरण्यकाण्ड, पृ.- 120

72. वैह, किष्किन्धाकाण्ड, पृ.- 136

73. यत्रानुकम्प्यते सममुपमाने विद्यते वापि ।
उपमेयमतिस्तोतुं दुरवस्थमिति प्रतीतं स्यात् ।। —रुद्रट

74. प्रतीपमुपमानस्योपमेयत्वप्रकल्पनम् । —कुवलयानन्द- 12

75. कुवलयानन्द, 12-16

76. (क) अलंकार-दर्पण, पृ.- 78

(ख) अलंकार-कमलाकर, पृ.- 89-90

(ग) अलंकार-मालिका, सूत्र- 12-16

77. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायाण, बालकाण्ड, पृ.- 35

78. वैह, लंकाकाण्ड, पृ.- 219

79. भर्तृहरि-त्रिशती : वैराग्य शतक- 19

80. कविशेखर बदरीनाथ झा । एकावली-परिणय, 7-15

81. वैह, 7-13

82. वैह, 7-94

83. वैह, 7-33

84. वैह, 8-63

85. तस्मात्समुच्चयप्रतिपक्षमतो विकल्पाख्योऽलंकारः ।
पूर्वेत्तरकृतविवेकोऽत्र दर्शित इत्यवधातव्यम् ।। —अलंकार सर्वस्व, पृ.- 292

86. तुल्यबलविरोधो विकल्पः । —वैह

87. विकल्पस्य तुल्यबलयोर्विरोधश्चातुरीयुतः ।। —साहित्यदर्पण, 10-84

88. (क) देखि तुल्य बल काजमे, हो विकल्प जहिठाम ।
नाम अलंकारक कहल, कवि विकल्प तहिठाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 65

(ख) तुल्यबलक दुइ काज के, जे विरोध भए जाए ।
एके के सम्भव रहए, सएह विकल्प कहाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 84

(ग) यदि विरोध हो तुल्य बल बीच, विकल्प प्रमाण । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 115

89. प० काशीकान्त मिश्र 'मधुप' : द्वादशी, पृ.- 50

90. सोयं समुच्चयः स्याद्यत्रानेकोऽर्थ एकसामान्यः ।
अनिवादिर्द्रव्यादिः सत्युपमानोपमेयत्वे ।। —काव्यालंकार, 8-103

91. (क) गुणक्रियायौगपद्यं समुच्चयः —अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 66, 67

(ख) एकस्य सि□हेतुत्वेऽन्यस्य तत्करत्वं च ।

92. समुच्चयो यमेकस्मिन्सति कार्यस्य साधके
खले कपोतिकान्यायात्तत्करः स्यात्परोपि चेत् ।।
गुणौ क्रिये वा युगपत्स्यातां यद्वा गुणक्रिये ।। —साहित्यदर्पण, 10-84-85

93. संगहि वहुभावक कथन, ततय समुच्चय जान ।
अथवा एकक काजमे, साधक विविध बखान ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 65

94. काजक साधक एकके, रहितहुँ जेना कपोत ।
हेतु खसए तर उपर भए, एतए रहए जनु नोत ।।
जँ अनेक गुण वा क्रिया, गुण-क्रिया भए जाए ।
एक संग तँ समुच्चय, सबटा भेद कहाए ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 85

95. एकत्र बहुतो पद क्रिया गुम्फ समुच्चय नाम । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 116

96. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, -1-68

97. वैह, 2-15

98. वैह, 3-16

99. वैह, 5-1

100. स्व० जीवन झा : सुन्दर-संयोग

101. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-8

102. वैह, 7-86

103. किंचिदारभमाणस्य कार्यं देववशात् पुनः ।
तत्साधनसमापत्तिर्या तदाहुः समाहितम् ।। —काव्यादर्श, 2-298

104. समाधिमन्यधर्माणामन्यत्रारोपणं विदुः । —सरस्वतीकण्ठाभरण, 4-126

105. कारणान्तरयोगात्कार्यस्य सुकरत्वं समाधिः । —अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 168

106. (क) अपर हेतु-संयोग सोँ, काज सुगम जहिठाम ।
ताहि अलंकारक कहल, कवि समाधि शुभनाम । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 67

(ख) आकस्मिक पर हेतुसँ, काज सुकर भए जाए ।
भावुक मन प्रमुदित करए तखन समाधि कहाए ।।—अलंकार-कमलाकर, पृ.- 86

(ग) आन कारणहुक काज हो, सुकर समाधिक लच्छ ।—अलंकार-मालिका, सूत्र- 119

107. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : सुन्दरकाण्ड, पृ.- 185

108. वांछिताधिकप्राप्तिरयत्नेन प्रहर्षणम् । —चन्द्रालोक, 5-49

109. (क) उत्कण्ठितार्थसंसि□र्विना यत्नं प्रहर्षणम् ।

(ख) वांछिताधिकार्थस्य संसि□श्च प्रहर्षणम् ।

(ग) यत्नादुपायसि□्यर्थात् साक्षाल्लाभः फलस्य च । —कुवलयानन्द, 129-31

110. (क) अलंकार-दर्पण, पृ.- 74

(ख) अलंकार-कमलाकर, पृ.- 100-01

(ग) अलंकार-मालिका, सूत्र- 132 एवं 133

111. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : किष्किन्धाकाण्ड, पृ.- 135

112-113. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : लंकाकाण्ड, पृ.- 201, 275

114. पृष्टमपृष्टं वा सद्गुणादि यत्कथ्यते क्वचित्तुल्यम् ।
अन्यत्र तु तदभावः प्रतीयते सेति परिसंख्या । —काव्यालंकार, 7-79

115. एकस्यानेकत्र प्राप्तावेकत्र नियमनं परिसंख्या । —अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 63

116. सा यैषा प्रश्नपूर्विका तदन्यथा वेति प्रथमं द्विविधा प्रत्येकं च वर्जनीयत्वेऽस्य शब्दत्वार्थत्वाभ्यां द्वैविध्यमिति चैतत्प्रभेदा परिसंख्या । —अलंकार-सर्वस्व, 281

117. श्लेषसम्पृक्त्वमस्या अत्यन्तचारुत्वनिबन्धनम् । —अलंकार-सर्वस्व, 281

118. श्लेषर्मूलत्वे चास्य वैचित्र्यविशेषो यथा । —साहित्यदर्पण, पृ.- 258

119. (क) कय निषेध अन्यत्रसँ, राखी एकहि ठाम ।
वस्तु, जाति गुन धर्म वा, परिसंख्या तहिठाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 64

(ख) अलंकार-कमलाकर, पृ.- 73

(ग) कय निषेध एकक अपर, वस्तुक जत अभिधान ।
संख्या सौभन नियन्त्रण, परिसंख्याक निदान ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 112

120. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-16

121. वैह, 1-17

122. यथासंख्यमथोत्प्रेक्षामलंकारद्वयं विदुः ।
संख्यानमिति मेधाविनोत्प्रेक्षाभिहिता क्वचित् । —भामह : काव्यालंकार, 2-88

123. उपमेयोपमानानां क्रमसम्बन्धः क्रमः । —काव्यालंकारसूत्रवृत्ति, 4-3-17

124. भयसामुपदिष्टानामर्थानामसधर्मणाम् ।
क्रमेण योऽनुनिर्देशो यथासंख्यं तदुच्यते ।। —काव्यलंकार, 2-90

125. उद्दिष्टानामर्थानां क्रमेणानुनिर्देशो यथासंख्यम् । —अलंकार-सर्वस्व, 59

126. यथासंख्यमनूद्देश उद्दिष्टानां क्रमेण यत् । —साहित्य-दर्पण, 10-89

127. यथासंख्य वर्णन जतै, वस्तु यथाक्रम संग । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 62

128. उद्देश्यक क्रम हो जेना, तहिना प्रति निर्देश ।
अलंकारके शास्त्रमे, यथासंख्य से पेश ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 82

129. वस्तु विधान विशेष्य वा, विशेषणक संस्थान ।
यथाक्रमहि अन्वित करिअ, यथासंख्य अभिधान ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 108

130. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-43

131. वैह, 7-92

132. कविचूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप' : झांकार, पृ.- 10

133. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : बालकाण्ड, पृ.- 41

134. रामायण : प० राधेश्याम 'कथावाचक' : विवाह, पृ.- 14

135. प्रो० जगदीश मिश्र : जिजीविषा, पृ.- 51

136. विशिष्टस्य यदादानमन्यापोहेन वस्तुनः ।
अर्थान्तरन्यासवती परिवृत्तिरसौ यथा ।। —काव्यालंकार, 3-41

137. परिवृत्तिविनिमयः समन्यूनाधिकैर्भवेत् । —साहित्यदर्पण, पृ.- 357

138. सा च तावद् द्विविधा-समपरिवृत्तिविषमपरिवृत्तिश्चेति ।
समपरिवृत्तिरपि द्विविधा उत्तमैरुत्तमानां न्यूनैर्न्यूनानां चेति
विषमपरिवृत्तिरपि तथा उत्तमैर्न्यूनानां न्यूनैरुत्तमानां चेति । —रसगंगाधर, पृ.- 648

139. (क) सम वा थोड़ अधीकमे, बदला परिवृत्ति नाम । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 64

(ख) बदला बदली होअए अधिक न्यून सम संग ।
से परिवृत्ति कहाए जँ हो न रंगमे भंग ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 84

(ग) अदल-बदल कम अधिकमे, अलंकार परिवृत्ति । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 112

140. कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' : राधा-विरह, 1-9

141. वैह, 3-35

142. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड, पृ.- 10

143. वैह, पृ.- 182

144. प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' : प्रतिपदा, पृ.- 40

145. प्रो० रमण झा : मिथिला-मिहिर, 19-25 जून, 1983

146. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : लंकाकाण्ड, पृ.- 203

147. दण्डापूपिकयान्यार्थागमोऽर्थापत्तिरिष्यते । —साहित्यदर्पण, 10-83

148. दण्डापूपिकयार्थान्तरापतनमर्थापत्तिः —अलंकार-सर्वस्व, सूत्र- 64

149. कैमुत्येनार्थसंसि□ः काव्यार्थापत्तिरिष्यते । —कुवलयानन्द, 120

150. रसगंगाधर, तेसर भाग : पृ.- 200

151. कुवलयानन्द, पृ.– 193

152. पैघक परिभव कथन सोँ, लघुक जतै अपमान ।
अर्थापति वा लघुक गन, कहि पैघक जस मान ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.– 68

153. तुल्यन्यायक बलहिसँ, अन्य अर्थकेँ भान । अलंकार तकरा कहथि, अर्थापत्ति प्रमाण ।।
सम-न्यून-आधिक्यसँ, भेद तीन से जान । चमत्कार सम्बलित रह, सबठाँ कह मतिमान ।।
—अलंकार-कमलाकर, पृ.– 77

154. दण्डापूपन्यायेँ बुझिअ, अर्थापत्ति प्रसि□ । —अलंकार-मालिका, सूत्र– 121

155. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 9-67

156. वैह, 9-90

157. वैह, 9-88

158. वस्तु विविक्षितवस्तु प्रतिपादनशक्तम-सदृशं तस्य ।
यदि जनकमाजन्यं वा तत्कथनं यत्स पर्यायः ।। —काव्यांलकार, 5-42

159. क्वचिदेकमनेकस्मिन्ननेकं चैकगं क्रमात् ।
भवति क्रियते वा चेत्तदा पर्याय इष्यते ।। —साहित्यदर्पण, 10-80

160. एके वस्तु क्रमेणानेकस्मिन् भवति क्रियते वा स पर्यायः ।।—काव्यप्रकाश, पृ.– 518

161. (क) एकक आश्रय बहुत वा, बहुतक आश्रय एक ।
पर्यायालंकार कवि, मानथि सहित विवेक ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.– 63

(ख) जँ अनेक के एकमे, वा अनेकमे एक ।
क्रमहि करए वा हो स्वयं, से पर्याय विवेक ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.– 83

(ग) एकहु क्रमहि अनेक गत, हो पर्याय प्रवृत्त ।
एक आश्रयहु अनेकक, आश्रय पुनि पर्याय ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र– 110-11

162. प्रो० रमण झा : मिथिला मिहिर, 19-25 जून, 1983

163. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : बालकाण्ड, पृ.– 16

164. हिन्दी रसगंगाधर : तेसर भाग, पृ.– 336

165. (क) तिरस्कार अवगुन निरखि, गुनिक जते अपमान । —अलंकार-दर्पण, पृ.– 77

(ख) एहिना गुणयुत वस्तुमे, किछु अनिष्टकेँ जानि ।
करए अनादर ताहिकेँ, तिरस्कार ली मानि ।। —अलंकार-मालिका, पृ.– 106

166. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : किष्किन्धाकाण्ड, पृ.– 138

l

नवम अध्याय

अतिशयोक्तिमूलक अलंकार

1. अतिशयोक्ति

आचार्य विश्वनाथक अनुसार अध्यवसान सि□ भेलापर अतिशयोक्ति अलंकार होइत अछि ।[1] अध्यवसानक अर्थ थिक जे उपमेयकेँ गीड़िकय उपमानक संग अभेद स्थापन करब । तेँ एकरा अभेद प्रधान अध्यवसानमूलक अलंकार कहल जाइत अछि । उत्प्रेक्षामे अध्यवसान साध्य रहैत अछि आ एहिमे सि□ा अर्थात् उपमान पूर्णरूपेण उपमेयकेँ गीड़ि लैत अछि ।

आचार्य भामह एहि अलंकारक आविष्कर्त्ता छथि । हुनका अनुसारेँ अतिशयोक्तिक अर्थ लोकातिक्रान्तगोचर वचन थिक ।[2] दण्डी अतिशयोक्तिकेँ अलंकारक आधार[3], आनन्दव□न काव्योत्कर्ष विधायक[4] तथा मम्मट अलंकारत्वक प्राणतत्त्व[5] मानैत छथि ।

आचार्य मम्मट अतिशयोक्तिकेँ चारि भागमे बँटने छथि[6], विश्वनाथ पाँच भागमे[7] एवं अप्पय दीक्षित आठ भागमे ।[8] हिनका अनुसारेँ अतिशयोक्तिक निम्नलिखित भेद अछि—

1. रूपकातिशयोक्ति, 2. सापह्नवातिशयोक्ति, 3. भेदकातिशयोक्ति, 4. सम्बन्धातिशयोक्ति, 5. असम्बन्धातिशयोक्ति, 6. अक्रमातिशयोक्ति, 7. चपलातिशयोक्ति एवं 8. अत्यन्तातिशयोक्ति ।

प० सीताराम झा अतिशयोक्तिक सात भेद मानैत छथि ।[9] अप्पय दीक्षितक असम्बधातिशयोक्तिकेँ नहि मानैत छथि । प० दामोदर झा एकर आठ भेद मानैत छथि ।[10] प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' अप्पय दीक्षितेक मतकेँ मानि लेलनि अछि ।[11]

1. रूपकातिशयोक्ति— जतय अतिशयोक्तिक मूलमे रूपक अध्यवसान रहय[12] ।

तखनहि सिरजल सुत एकवीर, रुचिमे मनोज, बलमे समीर ।।[13]

2. भेदकातिशयोक्ति : जतय उपमेयमे उपमानसँ अभेद रहलहुपर भेद देखाओल जाय ओतय भेदकातिशयोक्ति होइत अछि ।[14]

1. **सुनु मुनि नारद बहुत कहब की श्रुति स्मृति सकल पुराणे ।**
रामायणक कथा तुलना नहि ई गति अछि किछु आने ॥[15]

एतय श्रुति, स्मृति, पुराण एवं रामायणमे सम्बन्ध रहितहुँ आन कहि कए भेद देखाओल गेल अछि, तेँ भेदकातिशयोक्ति भेल ।

2. **कार्य सि□ होइछ अनुमान । हर्षक सुख मुख शोभा आन ॥[16]**

3. सम्बन्धातिशयोक्ति : सम्बन्ध नहियो रहलापर सम्बन्धक वर्णनमे सम्बन्धातिशयोक्ति होइत अछि ।[17]

चन्द्रकला एकावलिक, पाबए उपमा युक्त ।
तत्कालहिँ होइछ जखन, राहु दशनसँ मुक्त ।[18]

एतय राहुदशनसँ मुक्त चन्द्रकला एवं एकावलीमे सम्बन्ध नहियो रहने सम्बन्ध जोड़बामे सम्बन्धातिशयोक्ति होइत अछि ।

4. असम्बन्धातिशयोक्ति : जतय सम्बन्धमे असम्बन्ध देखाओल जाय ।[19]

देबा लए ईप्सित वर अहीँक, आएल छी देखू संग श्रीक ।
विधिहुक कर-कल्पित-अचल सेतु, हम तोड़ल आइ अहाँक हेतु ॥[20]

एतय ब्रह्माक लेखकेँ मेटायब सम्बन्धमे असम्बन्ध देखायब थिक ।

5. अक्रमातिशयोक्ति : जतय कारण एवं कार्यक वर्णन एकहि संग होअए[21]—

मिलनक क्रन्दन कलकल विशेष । शतमुख वर्णनक ध्वनि अशेष ॥[22]

एतय गंगा यमुनाक मिलन एवं कलकल ध्वनि संगहि भए रहल अछि ।

6. चपलातिशयोक्ति : हेतुक स्मरणहुसँ काजक उत्पत्ति हो तँ चपलातिशयोक्ति कहबैत अछि ।[23]

ओ निज आदेशक जनु संगहिँ, उपवन-प्राकारक द्वारदेश ।
सेनापतिकेँ सन्न□ सैन्य, लए देखि उपस्थित दानवेश ॥[24]

एतय कारणक शीघ्र पश्चात् कार्य होइत अछि तेँ चपलातिशयोक्ति भेल ।

7. अत्यन्तातिशयोक्ति : जतय कारणसँ पूर्व कार्यक होयब वर्णित रहय[25]—

तनय समावर्त्तन कए मन्दिर आज । अबइत छथि ई सुनितहि तुर्वसुराज ॥

□ □ □ □

आनन्दाश्रु नयनकाँ देलक झाँपि । उठल समस्त शरीरो थरथर काँपि ॥[26]

एतय पुत्रक आगमनक समाचार सुनितहि राजाक आनन्दाश्रु बहरा गेलनि आ शरीर काँपि गेलनि । तेँ कारणसँ पूर्व कार्य भेलासँ अत्यन्तातिशयोक्ति भेल ।

8. सापह्नवातिशयोक्ति : यदि गर्भमे अपह्नव रहय तँ सापह्नवातिशयोक्ति होइत अछि ।[27]

ब्रह्म विष्णु रामक अवतार, के गुण कहत हुनक विस्तार ।
वेद न पाबथि कहियत पार, जनिकर सिरजल थिक संसार ॥[28]

2. अत्युक्ति

अत्युक्ति अलंकारक उद्भावक छथि आचार्य जयदेव । जतय शौर्य उदारता आदिक अद्भुत अतथ्यात्मक वर्णन हो, ओतय अत्युक्ति अलंकार होइत अछि ।[29] किछु आलंकारिक एहि अलंकारकेँ उदात्त अथवा अतिशयोक्तिमे अन्तर्भूत मानैत छथि ।[30] अप्पय दीक्षित उदात्त, अतिशयोक्ति एवं अत्युक्तिक भेद करैत कहलनि जे उदात्तमे सम्पत्तिक अत्युक्तिपूर्ण वर्णन रहैत अछि, किन्तु अत्युक्तिमे शौर्यादिक । अतिशयोक्तिक कथन किछु दूर धरि सम्भवो भए सकैत अछि, किन्तु अत्युक्तिमे पूर्णतः असम्भव ।[31] एहि तरहेँ अनेक आधुनिक आलंकारिक लोकनि अप्पय दीक्षितक अनुसरण करैत एकरा स्वतन्त्र अलंकार मानलनि ।[32]

शौर्य, सौन्दर्य, प्रेम, विरह इत्यादिक पृथक्-पृथक् अत्युक्ति द्रष्टव्य थिक ।

1. शौर्यात्युक्ति :

काल काल कराल शासन, धयल कर शर चाप ।
शैल कानन सहित वसुधा, वलय भय भर काप ॥[33]

2. सौन्दर्यात्युक्ति :

अद्वितीय-लावण्य-शालि विरचइत तनिक तनु,
कान्ति-कोष निश्शेष भेल धाताक अखिल जनु।
भए निरुपाय समेटि तिमिर समुदाय बनाओल,
चिकुरपाश, तेँ शशिप्रकाश निर्मल यश पाओल ॥[34]

3. प्रेमात्युक्ति :

आनन्दाश्रु नयनकाँ देलक झाँपि । उठल समस्त शरीरो थर-थर काँपि ॥
चित्त गेल उड़ि पहिनहि पाछाँ देह । पाबि महान सहायक तनय-सिनेह ॥[35]

4. औदार्यात्युक्ति :

भूपतिक दान-वैभवसँ, भए गेल याचको दाता ।
निज लेख देखि जनु निष्फल, पछताओल विकल विधाता ।।[36]

5. विरहात्युक्ति :

चर अचर अचर चर दुखेँ भेल, प्राकृतिक व्यवस्था बदलि गेल ।
धैरजक रहल जग नाममात्र, के बनल न करुण-प्रवाह-पात्र ।।[37]

अत्युक्ति अलंकारक उदाहरण आधुनिक मैथिली काव्यक अन्तर्गत एकावली-परिणय एवं मिथिलाभाषा रामायणमे सर्वाधिक भेटैत अछि ।

3. उदात्त

जतय लोकातिशयी सम्पत्तिक वर्णन होअए अथवा कोनो महापुरुषक चरित्र वर्णनीय वस्तुक अंग होअए, ओतय उदात्त अलंकार होइत अछि ।[38] एहि अलंकारकेँ माननिहार छथि भामह, दण्डी, भट्टी, मम्मट, रुय्यक, विश्वनाथ, दीक्षित आदि । मैथिलीक आलंकारिक लोकनि विश्वनाथेसँ मिलैत-जुलैत परिभाषा देलनि अछि ।[39]

आधुनिक मैथिली काव्यमे उदात्त अलंकारक पर्याप्त उदाहरण भेटैत अछि—

1. **गिरि त्रिकूट पर लंका केहनि, दोसर अमरपुरी हो जेहनि ।**
   सकल कनकमय दृढ़ आकार, मणिमय खम्भ सकल घर द्वार ।।[40]

2. **मण्डप अतिशय शोभित देश, मुक्ता पुष्प फलान्वित वेश ।**
   रत्नस्तम्भ बहुत बड़ गोट, वर वितान तोरण नहि छोट ।।
   रत्नखचित बर आसन कनक, बैसक देल रामकाँ जनक ।।[41]

3. **लक्ष्मी जतय लेल अवतार, तनिक विभव के वरनय पार ।**[42]

4. प्रौढ़ोक्ति

प्रौढ़ोक्तिक उद्‌भावक छथि आचार्य जयदेव । हिनका अनुसारेँ जे जाहि कार्यक हेतु असक्त अछि तकरा ओही कार्यक हेतु सशक्त बनायब प्रौढ़ोक्ति अलंकार थिक ।[43] अप्पय दीक्षितक अनुसार जे उत्कर्षक हेतु नहियो अछि तकरा ओकर हेतु कल्पित कए लेबामे प्रौढ़ोक्ति अलंकार होइत अछि ।[44] आधुनिक आलंकारिक लोकनि हिनके अनुसरण कयलनि अछि ।[45]

नाभि गर्त गम्भीर पाबि हित-सि□-सहायक ।
घन बिछाए रोमावलि-जाल व्याधा रति नायक ।।[46]

एतय एकावलीक सहज सुन्दर नाभिकेँ खत्ता ओ रोमावलीकेँ कामदेव द्वारा बिछाओल गेल जाल कहब अहेतुकेँ हेतु कल्पना करब थिक ।

5. सम्भावना

सम्भावनाक उद्‌भावक छथि आचार्य जयदेव । हिनका अनुसारेँ यदि कोनो दोसर कार्यक सि□क लेल 'जँ ई हो तँ ई हो'— एहि तरहक सम्भावना व्यक्त कयल जाय तँ सम्भावना अलंकार होइत अछि ।[47] अप्पय दीक्षित एकरा स्वीकार करैत छथि ।[48] किन्तु पण्डितराज जगन्नाथ खण्डन करैत छथि ।[49] ओ एकरा अतिशयोक्तिक तेसर भेदमे अन्तर्भूत मानैत छथि । मैथिलीक आचार्य लोकनि जयदेवक अनुसरण कयलनि अछि ।[50]

आधुनिक मैथिली काव्यमे सम्भावना अलंकारक पर्याप्त उदाहरण भेटैत अछि ।

1. **जँ नहि पूरब हम भक्त काम, तँ हमर सुयश की शशि ललाम ?**[51]

2. **जँ समरांगणमे असुर शौर्य-परिचय पाओत ई एक बेरि ।**
   तँ केओ दोसर नर कदापि, एहन साहस नहि करत फेरि ।।[52]

संदर्भ :

1. सि□त्वेध्यवसायस्यातिशयोक्तिर्निगद्यते । —साहित्यदर्पण, 10-46
2. निमित्ततो वचो यत्तु लोकातिक्रान्तिकगोचरम् ।
   मन्यन्तेतिशयोक्तिं तामलंकारतया यथा ।।—काव्यालंकार, 2-81
3. अलंकाराणामप्येकमाहुः परायणम् ।
   वागीशमहितामुक्तिमिमामतिशयाह्वयाम् ।। काव्यादर्श, 2-220
4. प्रथमं तावदतिशयोक्तिगर्भता सर्वालंकारेषु शक्यक्रिया । कृतैव च सा महाकविभिः कामपि काव्यच्छायां पुष्यतीति कथं ह्यतिशयोक्तिता स्वविषयौचित्येन क्रियमाणा सती काव्ये नोत्कर्षमावहेत् ।
   —ध्वन्यालोक, 259
5. सर्वत्र एवंविधविषयेऽतिशयोक्तिरेव प्राणप्रदावतिष्ठते तां विना प्रायेणाप्राणनत्वायोगात् ।
   —काव्यप्रकाश
6. काव्यप्रकाश, 10-100
7. साहित्यदर्पण, 10-47
8. कुवलयानन्द, 36-43
9. रूपक, सापह्नव, चपल, अक्रम ओ अत्यन्त ।
   अतिशयोक्ति सम्बन्ध पुनि, भेदक मानथि सन्त ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 23

10. अलंकार-कमलाकर, पृ.- 31 सँ 34 धरि

11. अलंकार-मालिका, सूत्र- 39 सँ 46 धरि

12. (क) रूपकातिशयोक्तिः स्यान्निगीर्याध्यवसानतः । —कुवलयानन्द, 36

(ख) जतय वस्तु उल्लेख हो, कहि केवल उपमान ।
अतिशयोक्ति रूपक ततै, भूषण कहथि सुजान ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 24

(ग) अतिशयोक्ति केर मूलमे, रूपक अध्यवसान ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 39

13. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-22

14. (क) भेदकातिशयोक्तिस्तु तस्यैवान्यत्ववर्णनम् । —कुवलयानन्द, 38

(ख) विषय वस्तुकेँ आन कहि, वर्णन भेदक मूल । अलंकार-मालिका, सूत्र- 41

(ग) आन और इत्यादि कहि, जदि हो भेद बखानि ।
अतिशयोक्ति भेदक ततै, भूषण भनथि सुजान ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 27

15-16. मिथिलाभाषा रामायण : बालकाण्ड, पृ.- 5 एवं सुन्दरकाण्ड, पृ.- 188

17. (क) सम्बन्धातिशयोक्तिः स्याद्योगेयोगप्रकल्पनम् । —कुवलयानन्द, 39

(ख) जदि अजोग ओ जोगमे, जोग अजोग बखान ।
सम्बन्धातिशयोक्ति ई, द्विविध कहल मतिमान ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 26

18. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 13-35

19. योगेप्ययोगो सम्बन्धातिशयोक्तिरितीर्यते । —कुवलयानन्द, 40

20. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-49

21. (क) अक्रमातिशयोक्तिः स्यात् सहत्वे हेतुकार्ययोः । —कुवलयानन्द, 41

(ख) अतिशयोक्ति अक्रम, क्रम न कारण काज विधान ।
वाणक संगहि अरिक शिर, कयल दिगंत उड़ान ।।—अलंकार-मालिका, सूत्र- 44

(ग) संगहि हो उत्पन्न पुनि, हेतु काज जहि ठाम ।
अतिशयोक्ति अक्रम ततै, कहल सुकवि गुणधाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 25

22. लक्ष्मण झा : गंगा : द्वितीय सर्ग, पृ.- 24

23. (क) चपलातिशयोक्तिस्तु कार्ये हेतुप्रसक्तिजे । —कुवलयानन्द, 42

(ख) काजक उत्पति होय जदि, सुनितहि हेतुक नाम ।
अलंकार जानू चपल, अतिशयोक्ति तहिठाम । —अलंकार-दर्पण, पृ.- 25

(ग) काजहिसँ कारण बुझी, से पुनि चपला भेल ।
जायब नहि जायब कहल, खसल वलय टुटि गेल ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 56

24. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 12-68

25. (क) अत्यन्तातिशयोक्तिस्तु पौर्वापर्यव्यतिक्रमे । —कुवलयानन्द, 43

(ख) अत्यन्तातिशयोक्ति कवि, कहल तकर पुनि नाम ।
होए व्यक्तिक्रम कथनमे, पूर्वपरक जहिठाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 26

(ग) पूर्व परक विपर्यये अत्यन्तातिशयोक्ति । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 46

26. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 5-1 एवं 7

27. (क) यद्यपह्नुतिगर्भत्वं सेवा सापह्नवा माता । —कुवलयानन्द, 37

(ख) यदि च अपह्नव गर्भमे, अपह्नवातिशयोक्ति ।
वृथा तकैछ शशंकमे, अमृत लसित कवि-सूक्ति ।।—अलंकार-मालिका, सूत्र- 40

28. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड, पृ.- 183

29. अत्युक्तिरद्भुता तथ्या शौर्योदार्यादिवर्णनम् । —चन्द्रालोक, 5-116

30. हिन्दी साहित्य कोष : प्रथम खण्ड- 16

31. कुवलयानन्द, 263

32. (क) शौर्यादिक वर्णन जतै, अद्भुत अधिक बढ़ाय ।
अलंकार अत्युक्ति से, कहथि सुकवि समुदाय ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 91

(ख) जँ शौर्योदार्यादिके परमातथ्य वखान ।
फल प्रकृतक सम्भावना, तँ अत्युक्ति वखान ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 125

(ग) अनहोनी अजगुतहुकेँ, यश गुन-गुनि अत्युक्ति । —अलंकार-मालिका, पृ.- 174

33. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : लंकाकाण्ड, पृ.- 203

34-37. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 8-54, 5-78, 3-77, 9-69

38. अलंकार मुक्तावली, पृ.- 248

लोकातिशयसम्पत्तिवर्णनोदात्तमुच्यते ।
यद्वापि प्रस्तुतस्यांगं महतां चरितं भेवत् ।। —साहित्य-दर्पण, 10-94

39. (क) पर उपलक्षण हो जतै, चरित सराहक जोग ।
तथ्य समृ□ बड़ाइ वा, ततय उदात्त प्रयोग ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 90

(ख) लोकातिग सम्पत्तिके, वर्णन होए उदात्त ।
यदि वा प्रकृतक अंगमे, पैघक चरित उपात्त ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 114

(ग) कथा समृ□ प्रसंगगत, वर्णन चरित उदात्त । —अलंकार मालिका, सूत्र- 173

40-42. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : लंकाकाण्ड, पृ.194, बालकाण्ड, पृ. -41 व 28

43. प्रोढ़ोक्तिस्तदशक्तस्य तच्छक्तत्वातकल्पनम् । —चन्द्रालोक, 47

44. प्रौढ़ोक्तिरुक्तर्षहेतौ त□तुत्वप्रकल्पनम् । —कुवलयानन्द, 125

45. (क) उत्कर्षक नहि हेतु जे, से कल्पित जहिठाम ।
अलंकार प्रौढ़ोक्ति से, ततै कहल गुन-धाम ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 71

(ख) जँ उत्कर्षक हेतुकेँ, हेतु रूपसँ मान ।
फल उत्कर्षाधिक कथन, तँ प्रौढ़ोक्ति वखान ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 98

(ग) उत्कर्षक कारण न पुनि, प्रौढ़-उक्ति करु सि□ ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 127

46. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 8-88

47. सम्भावनं यदीत्थं स्यादित्यूहोन्यप्रसि□ये । —चन्द्रालोक, 5-48

48. कुवलयानन्द, 126

49. रसगंगाधर

50. (क) 'जौं ह ेइत संयोग ई, तौं होइत ई बात ।'
एहि विधि वर्णन होए तौं, सम्भावन विख्यात् ।। —अलंकार-दर्पण, पृ.- 71

(ख) एना होइत जँ बात ई, होइत अन्य ई सि□ ।
एहि रूपेँ जे तर्क से, सम्भावना प्रसि□ ।। —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 75

(ग) होइत एना तँ फलित से, सम्भावना निदान ।। —अलंकार-मालिका, सूत्र- 128

51.-52. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-36, 12-28

दशम अध्याय

मैथिलीकाव्यमे उभयालंकार

उभयक अर्थ होइत अछि दू । अतः उभयालंकारसँ तात्पर्य अछि ओहन अलंकारसँ जे शब्द एवं अर्थ दुनूकेँ चमत्कृत करय । तेँ एकरा शब्दार्थालंकार सेहो कहल जाइत अछि । उभयालंकारमे दू वा दू सँ अधिक अलंकार एक संग मिलल रहैत अछि । ई मेल दू शब्दालंकारक भए सकैत अछि अथवा एकाधिक शब्दालंकारक एवं एकाधिक अर्थालंकारक । उभयालंकारमे उभय शब्द दू न्यूनतम सीमाक ज्ञापक थिक ।

उभयालंकारकेँ मिश्रालंकार सेहो कहल जाइत अछि ।[1] कतहु-कतहु तँ उभयालंकार एवं मिश्रालंकारकेँ पृथक्-पृथक् कहि देल गेल अछि, जे भ्रामक थिक । वस्तुतः अलंकारक तीनिएटा भेद स्पष्ट अछि— 1. शब्दालंकार, 2. अर्थालंकार एवं 3. उभयालंकार ।

उभयालंकार काव्यक शोभाकेँ ओही तरहेँ बढ़बैत अछि जेना दू विभिन्न प्रकारक आभूषणकेँ मिललासँ ओकर सौन्दर्यमे आओर अधिक वृ□ भए जाइत छैक । नर एवं सिंह दू पृथक् रहितहुँ नरसिंहक एकटा अपन वैशिष्ट्य अछि, तहिना दू वा दूसँ अधिक मिश्रित अलंकार नरसिंह न्यायसँ पृथक् कयल जाइत अछि ।[2] एहन मिश्रण सायास नहि, कविप्रतिभा प्रसूत रहैत अछि ।

मिश्रालंकारक दू भेद अछि— 1. संसृष्टि एवं 2. संकर ।[3]

1. संसृष्टि

संसृष्टिक अर्थ थिक मिझहर । एहिमे एहन दू वा दू सँ अधिक अलंकार मिलल रहैत अछि जे परस्पर निरपेक्ष रहैत अछि अर्थात् ओकरा पृथक् कयल जा सकैत अछि ।

मम्मटक अनुसार संसृष्टि ओ अलंकार थिक जाहिमे पूर्व प्रतिपादित अलंकारक

परस्पर निरपेक्ष रूपेँ मिश्रण भेल हो ।[4] विश्वनाथक अनुसार जतय अलंकारक परस्पर निरपेक्ष रूपसँ एकत्र देखल जाय, ओतय संसृष्टि अलंकार होइत अछि ।[5] अप्पय दीक्षितक परिभाषा आओर स्पष्ट बुझना जाइत अछि । हिनका अनुसारेँ तिलण्डुलन्यायसँ मिलल अलंकार संसृष्टि थिक ।[6] मैथिलीक आलंकारिक लोकनि दीक्षितेक अनुसरण कयलनि अछि ।[7]

एकर तीन भेद अछि– 1. शब्दालंकार संसृष्टि, 2. अर्थालंकार संसृष्टि एवं 3. शब्दार्थालंकार संसृष्टि ।

1. शब्दालंकार संसृष्टि– जतय केवल अनेक शब्दालंकार तिलतण्डुलवत् मिलल हो–

1. **सन्तत सन्तति-तति-सर्जन-हित, नगन रहैत मगन जे अम्ब ।**
पदपर पतित पतित धरि मुक्त, बनाय मुक्त तेँ कच अविलम्ब ॥[8]

एतय पद, पर, पतित, पतित इत्यादिसँ अनुप्रास एवं पतित-पतित, मुक्त-मुक्त सँ यमक दृष्टिगोचर होइत अछि जे परस्पर निरपेक्ष अछि, तेँ संसृष्टि अलंकार भेल ।

2. **रति-मर्दित-आङ न थिर तैयो, आङन घर क्यो रहलि बहारि ।**
ननदिक दिक करबासँ पहिनहिँ, वसन विभूषण सकल सम्हारि ॥[9]

एतय रति-मर्दित मे 'त' सँ अनुप्रास एवं आङ न-आङनसँ यमक भेल जे परस्पर निरपेक्ष अछि, तेँ संसृष्टि भेल ।

2. अर्थालंकार संसृष्टि– जतय निरपेक्ष रूपसँ अनेक अर्थालंकारक सम्मिश्रण होअए ।

1. **तहिखन सिरजल सुत एकवीर, रुचिमे मनोज, बलमे समीर ।**
त्रिभुवन-पालन-ओजस अमेय, जनि शम्भु-उमामे कार्त्तिकेय ॥[10]

एतय पूर्वा[?]मे अतिशयोक्ति एवं उत्तरा[?]मे उपमा अछि जे परस्पर निरपेक्ष अछि, तेँ अर्थालंकार संसृष्टि भेल ।

2. **तुहिन-शीतलो चन्द्र-रुचि, देल विरहिकेँ दाह ।**
दैव विमुख भेलेँ जनक, नीको कर अधलाह ॥[11]

एतय विभावना एवं अर्थान्तरन्यासक निरपेक्ष मिश्रणसँ अर्थालंकार संसृष्टि द्रष्टव्य थिक ।

3. शब्दार्थालंकार संसृष्टि– जतय शब्दालंकार एवं अर्थालंकारक निरपेक्ष मिश्रण हो ।

भेल हतप्रत्यास अनवरत-जोर-जोरसँ लैत निसास ।
श्रान्ति-श्वेद-जल-भीजल देह, सदेह कनक-लतिका जनु भास ॥[12]

एतय अनुप्रास, वीप्सा एवं उत्प्रेक्षाक निरपेक्ष भावसँ मिलल रहबाक कारण संसृष्टि अलंकार भेल ।

2. संकर

जतय दू वा अधिक अलंकार नीर-क्षीरवत् मिलल रहय ओतय संकर अलंकार होइत अछि ।[13] मैथिलीक आलंकारिक लोकनिक सेहो एहने मान्यता छनि ।[14]

अप्पय दीक्षितक अनुसार संकरक चारि भेद होइत अछि– 1. अंगांगिभाव संकर, 2. समप्राधान्य संकर, 3. सन्देह संकर एवं 4. एकवाचकानुप्रवेश संकर ।

1. अंगांगिभाव संकर : जतय अनेक अलंकार अन्योन्याश्रित रहैत अछि अर्थात् एकक सि[?] दोसरक द्वारा होइत अछि । एकरा बीजवृक्षन्यायसँ व्यक्त कयल जाइत अछि ।

1. **रहितहु नयनक तिमिर बढ़ि, जग आन्हर कए देल ।**
अहंकार ममकार ओ, इन्द्रजाल जनु खेल ॥[15]

एतय पूर्वा[?]मे क्रमशः विशेषोक्ति एवं विभावना अछि एवं अन्तमे उपमा, जे अन्योन्याश्रित अछि । अतः अंगांगिभाव संकर भेल ।

2. **स्मृति इतिहास पुराण नीति पुनि, अर्थशास्त्रकेँ मति आरोपि ।**
ब्रह्मचर्य सम्पन्न कएल ओ, गुरुकाँ पूर्ण दक्षिणा सोपि ॥[16]

2. समप्राधान्य संकर : जतय एक पद्यमे अनेक अलंकार समानरूपसँ प्रधान होअए ओतय समप्राधान्य-संकर होइत अछि । एकरा दिन-दिनकरन्यायसँ व्यक्त कयल जाइत अछि ।

जनि प्रतीचीक संगमसँ, लखि पतित सुधानिधि मण्डल ।
तावत प्रकाश-छलसँ छल, सम्मुख प्राचीमुख बिहुँसल ॥[17]

एतय प्रथम चरणमे उत्प्रेक्षा एवं द्वितीय चरणमे अपह्नुति अछि, तेँ दुनू समान रूपसँ प्रधान अछि ।

3. संदेह संकर : जतय अनेक अलंकारमे एक अलंकारक निर्णय नहि भए सकय ओतय सन्देह संकर होइत अछि । एकरा रात्रिन्दिनन्यायसँ व्यक्त कयल जाइत अछि ।

1. **तत्कालहि सौतिन-निकरक, पति अनुगतिसँ जनु लज्जित ।**
दुख-मलिन कुसुम-मुखकेँ झट, कए देल कुमुदनी मज्जित ॥[18]

एतय 'कुसुम-मुख'मे रूपक थिक वा उपमा तत्र संदेहः । अतः एतय रूपकोपमा संकर भेल ।

2. **वरुण-दिशा-मुखमे कएल, रजनी निकट विचारि ।**
नवल राग सिन्दूर जनि, सन्ध्या-सखी-सम्हारि ॥[19]

एतय 'वरुण-दिशा-मुख'मे रूपक थिक वा श्लेष से निर्णय लेब कठिन । तेँ सन्देह संकर भेल ।

3. **प्रजा, युवति, याचक, बैरी ओ खल भूपतिकाँ जानल ।**
पिता, मदन, कल्पद्रुम, अन्तक तथा प्रलयकालानल ॥[20]

एतय यथासंख्य एवं उल्लेखमे कोन प्रमुख अछि से कहब कठिन ।

4. **गिरि-उरज-पतित जनु धरणिहार, लखितहिँ निर्मल सुरसिन्धुधार ।**
निष्कलुष-हृदय भए कए प्रणाम, पैसलि अविरल-जलकेलि-काम ॥[21]

एतय रूपकोत्प्रेक्षा संकर थिक ।

4. एकावाचकानुप्रवेश संकर : एकहि पद वा स्थलमे अनेक अलंकारक स्थितिकेँ एकावाचकानुप्रवेश संकर कहल जाइत अछि । एकरा नृसिंहन्यायसँ व्यक्त कयल जाइत अछि ।

1. **गुन-गुन करइत जकर गूनि गुन, भावुक-मण्डल भाव-विभोर ।**
अर्थ न बूझि अनर्थक प्रतिमा-खल खलखल हँसि देत अथोड़ ॥[22]

एतय गुन, गुन एवं गुनमे वृत्त्यनुप्रास एवं यमक, भावुक एवं भावमे छेकानुप्रास एवं यमक तथा खल खलखलमे वृत्यनुप्रास एवं यमक भेल ।

2. **जगमग करइत जग-मगमे अछि, छीटि रहल कुंकुम कमनीय ।**
देखि मुदित चर अचर निसर्गक, नूतन तन सुषमा रमणीय ॥[23]

एतय जगमग एवं जग-मगमे यमक एवं वृत्त्यनुप्रास, चर, अचर तथा नूतन, तनमे यमक एवं छेकानुप्रास भेल ।

3. **वृक्षक हरिअर हरिअर दलसँ, मिलल दलक दल हरिअर आबि ।**
बूझि पत्र जकरा पतत्रकेँ, बैसय चाह आन खग दाबि ॥[24]

एतय हरिअर, हरिअर एवं हरिअरसँ वीप्सा एवं यमक भेल ।

संदर्भ :

1. अलंकार-पीयूष : डा० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', 180-81

2. अथैतेषामलंकाराणां यथासम्भवं क्वचिन्मेलने लौकिकालंकाराणां मेलन इव चारुत्वातिशयोपलम्भान्नरसिंहन्यायेन पृथगलंकारावस्थौ तन्निर्णयः क्रियते ।
—कुवलयानन्द, 284
3. अलंकार जँ ई कतहु, हो अनेक एक ठाम ।
तँ संसृष्टि कहाए से, अथवा संकर नाम ॥ —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 120
4. सेष्टा संसृष्टिरेतेषां भेदेन यदिह स्थितिः । —काव्यप्रकाश
5. मिथोऽनपेक्षमेतेषां स्थितिः संसृष्टिरुच्यते ॥ —साहित्य-दर्पण
6. तत्र तिलतण्डुलन्यायेन स्फुटावगम्यभेदालंकारमेलने संसृष्टिः । —कुवलयानन्द, 285
7. (क) अलंकार जँ कइ रहए, बिन आपस-सम्बन्ध ।
एक पद्य वा वाक्यमे, तँ संसृष्टिक बन्ध ॥ —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 120
(ख) तिल-तण्डुल जनु अनेकक योग जतय संसृष्टि । -अलंकार-मालिका, सूत्र-187
8. कविचूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप' : राधा-विरह, 1-1
9. वैह, 1-22
10. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-22
11. वैह, 2-37
12. कविचूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप' : राधा-विरह, 2-1
13. नीरक्षीरन्यायेनास्फुटभेदालंकारमेलने संकरः । —कुवलयानन्द, 285
14. (क) अलंकार जँ कए रहए, विनु आपस सम्बन्ध ।
एक पद्य वा वाक्यसँ, संसृष्टिक बन्ध ॥ —अलंकार-कमलाकर, पृ.- 120
(ख) संकर विविध अलंकृतिक, दूध-पानि जनु योग । —अलंकार-मालिका, सूत्र- 186
15. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 2-21
16. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 4-101
17. वैह, 3-3
18. वैह, 3-7
19. वैह, 2-22
20. वैह, 7-93
21. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 9-30
22. कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' : राधा-विरह, 1-7
23. वैह, 1-10
24. वैह, 1-17

l

परिशिष्ट

उपसंहार

1. अलंकार प्रयोगक उद्देश्य :

सृष्टिक अन्तर्गत जतेक पदार्थ अछि सभक किछु-ने-किछु उद्देश्य छैक । तेँ काव्यमे अलंकार-प्रयोगक सेहो किछु उद्देश्य होयब स्वाभाविके । अलंकार-प्रयोगक अध्ययन एवं अनुशीलनसँ एकर जे उद्देश्य हमरालोकनिक समक्ष अबैत अछि ओ थिक—

1. भावोत्कर्ष-ज्ञापन	2. रूप-प्रभाव निदर्शन
3. गुण-प्रभाव-निदर्शन	4. स्वभाव-चित्रण
5. क्रिया-चित्रण	6. परिस्थितिगत अनुकूलता-ज्ञापन
7. पात्र-मनःस्थिति-ज्ञापन	8. चरित्रक रूपरेखा निखारब
9. वस्तुक संक्षिप्त एवं चित्ताकर्षक वर्णन	10. दृश्यक चित्ताकर्षण
11. चलचित्रात्मक-त्वरण	12. विचारकेँ हृदयंगम बनायब ।

1. भावोत्कर्ष-ज्ञापन—

अलंकार मात्र शब्द एवं अर्थेटाक सौन्दर्यमे वृ□ नहि करैत अछि अपितु एकर माध्यमे भावक उत्कृष्टताक ज्ञापन सेहो होइत अछि । मिथिलाभाषा रामायण एवं एकावली-परिणयमे कतोक स्थलपर उपमा, उत्प्रेक्षा एवं कतोक अन्यान्य अलंकारक प्रयोगसँ जे भावक उत्कृष्टता दृष्टिगोचर होइत अछि से सहृदय पाठककेँ सहजहिँ मन्त्रमुग्ध बना दैत अछि ।

कविशेखर बदरीनाथ झा उपमाक माला द्वारा जे राजा तुर्वसुक आनन्दक वर्णन कयलनि अछि से देखितहि पाठक विमुग्ध भए जाइत छथि । भावक ई उत्कर्षता अन्यत्र

कतय भेटत ? वस्तुतः आर्त्त व्यक्तिकेँ जँ ईप्सितसँ अधिक भेटि जाइक तँ ओ भाव-विभोर भए नाचय लगैत अछि । **एकावली-परिणय**क निम्नलिखित पाँती अवलोकनीय थिक—

जन्मक अन्हार जनि अरजि आँखि, उत्सुकगन्ता जनि पाबि पाँखि ।
अति निर्धन जनि निधि-कुम्भ देखि, उन्मद मयूर जनि जलद पेखि ॥

तहिना-महिपति आनन्द बौड़ि, लेलन्हि उठाए शिशु अंक दौड़ि ।
विकसित-मुख पंकज चूमि-चूमि, नाचल चारू दिसि घूमि-घूमि ॥

बहि गेल नयन दुहु सलिल-धार, सन्तप्त हृदय कएलक तुषार ।
चतुरो जन के तहिकाल आन, तनि मनक उमंग-तरंग जान ?

जहिना कुसुमाकरसँ रसाल, इन्द्रायुधसँ अम्भोद-जाल ।
रवि-मण्डलसँ प्राची-विभाग, नव-यौवनसँ ललनानुराग ॥

नूतन-पयोद-धुनिसँ मयूर, जल-खग-कलरवसँ नदी-पूर ।
चन्द्रातपसँ कैरव-समूह, रण-धीर-अधिपसँ सैन्य-व्यूह ॥

पंचम स्वरसँ कोकिल-कदम्ब, पावस प्रवेशसँ तरु-कदम्ब ।
चन्दन-वनसँ गिरि-मलय राज, तहिना सुतसँ ओ महाराज ॥[1]

एहन-एहन कतोक स्थल अछि जतय भावक उत्कर्षता देखयबामे अलंकारक सफल प्रयोग भेल अछि ।

2. **रूप-प्रभाव-निदर्शन**—

रूप-प्रभाव-निदर्शनमे सेहो आधुनिक मैथिली-काव्यमे सफल अलंकारक प्रयोग देखबामे अबैत अछि । मिथिलाभाषा रामायणमे सीता एवं रामक रूप वर्णनमे कवि व्यतिरेक एवं प्रतीप अलंकारक माध्यमे अद्भुत चमत्कार देखओलनि अछि—

1. **कह रघुवर विधुबिम्ब निहारि, कत विधु कतय विदेह कुमारि ।**
तनि मुख समता शशि की पाब, प्रति तिथि व्यथित अतिथि बन आब ॥
तनि पद समता बारिज कहब, असमंजस अपयश जन सहब ।
रजनि विकास न हिमसोँ हानि, जानकि उपमा देव कि जानि ।
कन्यारत्न प्रकट महिफूल, उपमा विधि न रचल निधिमूल ॥[2]

एही तरहेँ कविशेखर बदरीनाथ झा एकावलीक नखसिख सौन्दर्यक वर्णनमे प्रतीप, रूपक, व्यतिरेक एवं अतिशयोक्तिक माध्यमे जे चित्र उपस्थित कयलनि अछि से सर्वथा श्लाघ्य अछि । एकावलीक अंगप्रत्यंगक वर्णन तँ एतय सम्भव नहि अछि, किन्तु

एकाध अंगक वर्णन देखल जाए सकैत अछि—

2. **स्नेह कालिमा विविध धूपमाला-परिमलवर,**
अतुल दीर्घता अचल पाब कथमपि यदि चामर ।
तँ एकावलि-अलक-पालि-तुलनाक कथंचित,
हो कदाच किछुमात्र ततए अवसर सम्भावित ॥

अद्वितीय-लावण्य-शालि विरचइत तनिक तनु,
कान्ति-कोष निश्शेष भेल धाताक अखिल जनु ।
भए निरुपाय समेटि तिमिर समुदाय बनाओल,
चिकुरपाश, तेँ शशिप्रकाश निर्मल यश पाओल ॥[3]

3. **गुण-प्रभाव-निदर्शन—**

कवीश्वर चन्दा झा श्रीरामक गुणक सम्यक् बोध करयबाक हेतु सेहो अलंकारक योजना कयलनि अछि । अनेक उपमान वाक्यक मालासँ हुनका सुशोभित कए देलनि अछि । रावण द्वारा रामकेँ एक साधारण मानव मानलापर अंगद रावणकेँ कुबुि□ कहैत अनेक उपमान वाक्यक द्वारा रामक महानताकेँ प्रदर्शित करैत छथि । ओ श्रीरामकेँ मानवसँ ओतबे श्रेष्ठ बुझैत छथि जतेक सामान्य नदीसँ गंगा, सामान्य वृक्षसँ हरिचन्दन (स्वर्गक एकटा वृक्षविशेष जे कल्पवृक्ष तुल्य अछि), सामान्य हाथीसँ ऐरावत (इन्द्रक हाथी), सामान्य घोड़ासँ उच्चैःश्रवा (इन्द्रक घोड़ा), सामान्य स्त्रीसँ रम्भा (स्वर्गक अप्सराविशेष), सामान्य युगसँ कृतयुग, सामान्य धनुर्धरसँ कामदेव एवं सामान्य वानरसँ हनुमान श्रेष्ठ छथि । पाँती द्रष्टव्य थिक—

रे रे कुमति कठोर, मनुष गणना रघुनन्दन ।
नदी कि गंगा होथि, वृक्ष की छथि हरिचन्दन ॥
की ऐरावत करटि, इन्द्रवाजी की छथि हय ।
स्त्री की रम्भा होथि, मूढ़मति सुन रे निर्भय ॥
की कृतयुग युगमे थिकथि, धन्वी मनसिज के गणत ।
जनि प्रताप त्रिभुवन प्रकट, हनूमान कपि के कहत ॥[4]

4. **स्वभाव-चित्रण—**

स्वभाव-चित्रणक हेतु तँ अलंकारक मदति अत्यन्त आवश्यक अछि । ककरो स्वभावक सम्यक् परिचय बिनु अलंकृत वाक्यसँ नहि भए सकैत अछि । श्री मधुपजी खलपर माछीक आरोप करैत ओकर यथार्थ स्वभावक सुन्दर चित्र उपस्थित कयलनि अछि । पाँती अवलोकनीय थिक—

तुच्छ पक्ष-रहितहुँ उड़इत-इतउत भनभन टा सतत करैत ।
गुणगण देखि गुम्हरि गुम, दोषक कण लखि रसना लपलपबैत ॥
भिन्न भेलकेँ छिन्नभिन्न कए शोषक बनि करइछ जे घात ।
घाव मात्र बढ़बक प्रभाव-वाला स्वभाव हो जकर न कात ॥
बिअनि डोलबितहुँ नहुँ-नहुँ घुरि-फिरि, आबि विकृत मन जे कए दैछ ।
तै खल माछी केर उपद्रव-सँ के मानव बाँचि सकैछ ॥[5]

5. **क्रिया-चित्रण—**

आधुनिक मैथिली काव्यमे अनेक स्थलपर क्रिया-चित्रण भेटैत अछि । कविलोकनि अलंकार-योजनाक माध्यमे क्रियाक चित्ताकर्षक वर्णन कयलनि अछि । अर्थापत्ति, तुल्ययोगिता, विभावना इत्यादि अलंकारक माध्यमे कविशेखर बदरीनाथ झा अनेक क्रियाक सुन्दर वर्णन कयलनि अछि । तपस्यासँ प्राप्त पुत्रक संग राजा तुर्वसुक आगमन सुनि लोकक जे भीड़ जमा भेल से द्रष्टव्य थिक—

जत आन्हर नाङर-सहित, चलल मार्ग अगुआए ।
तत आनक चलबाक पुनि, कथा कहल की जाए ॥

नेना दौड़ल कूदि कए, ठेङा धयने बूढ़ ।
केअओ रहल न घर युवा, भए उत्साह-विमूढ़ ॥

त्यागि चलल जप तप यती, बनियाँ सभ दोकान ।
बिथरल पोथी छात्रगण, गूढ़ मन्त्र मतिमान ॥

बटगमनी मल्लार मिलि, गबइत सुधि बिसरैत ।
चललि सकल कुलकामिनी, मानस मोद भरैत ॥

कुच-नितम्ब-भारेँ विकलि, रहितहुँ झटकारैत ।
वारवधूजन चललि मग, युवजन-हृदय हरैत ॥

विदा भेल सेना सकल, जे छल नृपपुर आन ।
सचिव-पुरोहित-गुरु-सहित, सेनापति परधान ॥

सखी संग दासी-सहित, गुरुजनकाँ अगुआए ।
चललि मनोरथ-रथ चढ़लि, रानी देव मनाए ॥[6]

6. **परिस्थितिगत अनुकूलता-ज्ञापन—**

कवीश्वर चन्दा झा परिस्थितिगत अनुकूलता देखयबा लेल अलंकारक सुन्दर प्रयोग कयलनि अछि । एकहिटा रामक हेतु परिस्थितिभिन्नताक कारण अलंकरण सामग्री

बदलि जाइत अछि । किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक–

1. **श्यामल गौर मनोहर देह, सूर्य चन्द्र सन निस्सन्देह ॥**
परिचय हिनकर अगम अपार, थिकथि दुहू जन विश्वाधार ॥[7]
2. **रामक छवि देखल भरि नयन, नील कमल निन्दक छवि अयन ॥**[8]
3. **सोच न करिअ धरिअ मन धीर, विष्णु अनादि थिकथि रघुवीर ॥**[9]
4. **अज अव्यय नारायण जैह, रामचन्द्रकाँ जानब सैह ॥**[10]
5. **थिकथि मनुष्य न राम, परमात्मा अव्यय अमल ।**
हमर विनाशक काम, विधि प्रार्थित नररूप धर ॥[11]

उपर्युक्त पद्य सभमे एकटा रामक हेतु अनेक उपमानक प्रयोग भेल अछि आ सभ उपमान परिस्थितिक अनुसार उपयुक्त अछि । उपमा, प्रतीत ओ अपह्नुतिक सहायतासँ कवि परिस्थितिक अनुकूल रामक चित्र उपस्थित कयलनि अछि ।

7. **पात्र-मनःस्थिति-ज्ञापन**–

पात्रक मनःस्थिति ज्ञापनक हेतु सेहो अलंकार अत्यन्त सहयोगी होइत अछि । तीव्र तपस्यासँ पुत्र प्राप्त कयलापर राजा तुर्वसुक मनःस्थितिक चित्रण बिनु अलंकारेँ सम्भव नहि छल । राजाक जे प्रसन्नता व्यक्त कयल गेल अछि से देखबायोग्य अछि–

तुर्वसुक मोद से कहए पार, जे नापि सकए जल जलधिधार ।
करबामे वा क्षम हो विशेष, जे तारागण-गणना अशेष ॥

जे पाँतर-पथिकक तरु विशाल, जे नाव महोदधि डुबक काल ।
जे मरु-मण्डलमे अमृत-वृष्टि, से ओहि नरेशक तनय-सृष्टि ॥[12]

8. **चरित्रक रूपरेखा निखारब**–

चरित्रकेँ प्रकाशित करबा लेल कविलोकनि अनेक अलंकारक सहायता लैत छथि । बिनु अलंकृत वाक्यसँ ककरो चरित्रकेँ निखारिकए चरमोत्कर्षपर पहुँचायब सम्भव नहि । पर्यायोक्ति अलंकारक सहायतासँ अंगद रामक चरित्र रावणक समक्ष प्रदर्शित करैत ओकरा कहि रहल छथिन जे शूर्पनखा आ खरदूषणक जे गति भेलैक से तोरो हेतौक–

1. **गेली सूर्पनखा नटी कपटिनी गोदातटी धर्क्कटी ।**
श्रीरामानुज तीक्ष्ण खड्ग लगलेँ जाता मही नक्कटी ॥
लै सेना खरदूषणादि लड़ला गेला कहाँ से कहू ।
सीतावल्लभ सोँ विरोध कयलेँ से ठाम जैबे अहूँ ॥[13]

तात्पर्य ई जे रामसँ जे विरोध करैत अछि तकर एहने गति होइत छैक ।

2. **होएत शम्भु सन ओ उदार, विद्याक प्रजापति सम अगार ।**
सुरगुरुकाँ बुि□क बलेँ जीति, शुक्रहुकेँ देत सिखाए नीति ॥[14]

पूर्णोपमा युक्त एहि उक्तिसँ एकवीरक चरित्र जगमगा उठैत अछि ।

9. **वस्तुक संक्षिप्त एवं चित्ताकर्षक वर्णन**–

आधुनिक युगमे समयक बड़ बेसी महत्त्व अछि, तेँ कविलोकनि सेहो संक्षिप्तीकरणक प्रयास करैत रहलाह अछि–

1. **वलि राज्य, मांस शिवि, कर्ण चाम, जीवन दधीचि, भूलोक राम ।**
तेजल जत पर-उपकार काज, तत हमरा की नहि स्वार्थ लाज ?[15]

एतय वलि, शिवि, दधीचि, राम इत्यादिक परिचय नहि दैत निदर्शना अलंकारक मदतिसँ भगवान विष्णुक महत्त्वकेँ प्रकाशित कयलनि अछि ।

2. **स्पर्श परस्पर पाबि दुहुक कर, जे आमोदेँ जड़ छल ।**
जन, समाज लाजक-साम्राज्येँ, से चतुरो नहि बूझल ॥[16]

एतय मीलितालंकारक योजनासँ कवि एकवीर ओ एकावलीक हस्तस्पर्शजन्य अभूतपूर्व आनन्दक संक्षिप्त ओ चित्ताकर्षक वर्णन कयलनि अछि ।

3. **प्रभु आज्ञा मारुत सुत जाय, आनल तनिका गमहि उठाय ॥**[17]

10. **दृश्यक चित्ताकर्षण**–

दृश्यक चित्ताकर्षक वर्णनमे कवीश्वर चन्दा झा पर्याप्त सफलता पओलनि अछि । प्रतीपालंकारक योजनासँ कवि जाहि प्रकारक सीताक सौन्दर्यक वर्णन कयलनि अछि से अवश्यमेव कोनो सहृदय पाठकक चित्तकेँ अपना दिस आकृष्ट कए लैत अछि । पाँती अवलोकनीय थिक–

कमल हरिण खंजन ओ मीन, तनि लोचन जित सोचहि दीन ।
मानस वासा कयल मरालि, उत्तम देखल जनि जनि चालि ॥

जनिक वाहु जित मंजु मृणाल, लज्जित लपटाएल जलयाल ।
तुल्य न कनक कदलि कह काँपि, जघनक हम छी हिनक कदापि ॥
अतिशय कटि करकश कुचभार, सुन्दरता सौँ जित संसार ।
कुटिल सुचिक्कन केश विशाल, अंक अलंकृत शोभित माल ॥
जनिकर सुनल पिकी निक गान, गानमानहत अंग मसान ॥
सुनि नूपुर हंसक धुनि सार, उपवन राम नयन संचार ॥[18]

एहि चित्ताकर्षक दृश्यकेँ देखि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामक मोनमे सेहो रागक संचार भए उठलनि ।

11. **चलचित्रात्मक-त्वरण–**

कवीश्वर चन्दा झा अपन मिथिलाभाषा रामायणमे चलचित्रात्मक-त्वरण उपस्थित करबा लेल अक्रमातिशयोक्तिक मदति लेलनि अछि । एहिमे कार्य एवं कारण संगहिँ वर्णित होइत अछि–

1. **पटकल महि भुजदण्ड चण्ड, धुनि दशदिश व्यापल ।**
   खसल दशानन मुकुट मही, ओ महिधर कापल ।।[19]

2. **प्रभु कर परस धनुष टुटि गेल, शब्द प्रचण्ड भुवन भरि भेल ।।**[20]

3. **रामचन्द्र कर धनुष मुक्त शर, परवश खल मारीच ।**
   शत योजन घुमि मृतक सदृश जुमि खसला जलनिधि बीच ।।
   ठामहि वीर सुबाहु भस्म भेल रघुवर मख रखवार ।
   अति अद्‌भुत नरवर रणलीला अविकल सकल निहार ।।[21]

12. **विचारकेँ हृदयंगम बनायब–**

कवीश्वर चन्दा झाक मिथिलाभाषा रामायणमे मात्र भावेपक्षटाक उत्कर्षता प्रदान करयबा लेल अलंकारक प्रयोग भेल अछि, से बात नहि, अपितु विचारक विशदीकरणमे सेहो पूर्ण सहायक भेल अछि । हिनक काव्य ने कला प्रदर्शनक हेतु लिखल गेल अछि आ ने सि□ान्तक प्रतिपादनक हेतु, अपितु सर्वसाधारण पाठकक रुचि ओ कल्याणार्थ लिखल गेल अछि । एकर अन्तर्गत नीति, दर्शन, अध्यात्म इत्यादि अपनहि समाविष्ट भए गेल अछि । एकर अध्ययनसँ लोककेँ दिव्यज्ञान भए जाइत छैक । रामक एकहि वाणसँ मारीचकेँ आकाश-पाताल सभ सूझि गेलैक आ ओ रावणकेँ उपदेश दैत छनि–

मुनिगण संग वसू वन जाय, संयम नियम करू समुदाय ।
मायामय जानू संसार, सभ जनलै अछि ज्ञान विचार ।।
हम उपदेश कहै छी गूढ़, काल विवश ज्ञानी हो मूढ़ ।
ताकब गय की देश-विदेश, लोचन पथ निज पुर परमेश ।।[22]

मारीचक उपदेश कतेक गूढ़ अछि जकरा प्राप्त करबा लेल मुनि महात्मा सेहो लालायित रहैत छथि । एहन-एहन वर्णन सुनि लोककेँ आनन्द तँ भेटितहि छैक, संगहि ओकर अज्ञानरूपी अन्हारकेँ सेहो नाश कए दैत छैक ।

उपर्युक्त तथ्य सभकेँ ध्यानमे रखैत ई स्पष्टत: प्रतीत होइत अछि जे अलंकारक

प्रयोग कुण्डल-केयूरवत् मात्र सौन्दर्यहिटाक वृ□क हेतु ऊपरसँ नहि लटकाओल जाइत अछि अपितु एहिसँ अर्थज्ञापनमे सेहो सुगमता होइत अछि । अलंकारक प्रयोगसँ अर्थ सुन्दर, सुस्पष्ट एवं प्रभावकारी भए जाइत अछि ।

यदि काव्यमे अलंकारक प्रयोग नहि कयल जाइत तँ कविलोकनि वास्तविक तथ्यसँ हमरालोकनिकेँ अवगत नहि करा सकितथि । दानव कालकेतु जे एकावलीकेँ आबि कए पकड़ि लेलकनि तकरा कवि ताहि प्रकारेँ अलंकारक मालासँ सजाकए प्रस्तुत कयलनि अछि जे साधारणो पाठककेँ ओकर क्रूर स्वभावक परिचय भेटि जयतैक । पाँती अवलोकनीय अछि–

झपटए झट दूरहिसँ असि□-मांसक जनु खण्ड परेखि गि□ ।
तहिना वेगेँ ओ दौड़ि दृप्त, हरि नृप तनयाकाँ भेल तृप्त ।।
असहाय-सखी-निकरक कलोल-हाहाकारेँ उठि गेल घोल ।
पड़ितहिँ जे सैनिक भटक कान, मन कए देलक रण-एकतान ।।
जहिना गिरिमे करका प्रहार, सागरधारामे घनासार ।
उपदेश-वाक्य खलमे सुधीक, रोपब थलमे अम्भोजनीक ।।
नहि होए फलोत्पादन समर्थ, तहिना सबटा भए गेल व्यर्थ ।
अस्त्रप्रहार जितकाशनीक, दानवमे नृपति-पताकिनीक ।।
एकावलीक रक्षा नियुक्त, प्राणत्यागे भट बूझि युक्त ।
साहसेँ चढल रणवलिक वेदि, चल गेल त्रिदिव रविबिम्ब भेदि ।।
जनु गरुड़-लोलमे फँसि भुजंग, पावक मण्डलमे खसि पतंग ।
निर्जीव पड़ल सब धरणि-सेज, वगितहिँ रक्षक राक्षसक तेज ।।
देवी घटना अवलोकि गूढ़, सहचरी निकर कर्त्तव्यमूढ़ ।
जलमे निश्चल पुतरी समान, कुररीस्वरसँ असहाय कान ।।
जहिना बटेरिकेँ तरुण बाज, नलिनीकेँ उन्मद द्विरदराज ।
करिणीकेँ हरि विकट प्रतीक, हरिणीकेँ पकड़ए पुण्डरीक ।।
धएलक तहिना ओ केलि हेतु, नरपति-तनयाकेँ कालकेतु ।।
चलि सकल न किछु ककरो उपाय, विधि विमुख रहथि तँ के सहाय ?[23]

संदर्भ :

1. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 1-77 सँ 82
2. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ.- 34
3. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली-परिणय, 8-53-54

4. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण, लंकाकाण्ड, पृ.– 217
5. कविचूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप' : राधा–विरह, 1–6
6. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली–परिणय, 2–42–48
7. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : बालकाण्ड, पृ.– 26
8. वैह, अयोध्याकाण्ड, पृ.– 68
9. वैह, पृ.– 74
10. वैह, पृ.– 101
11. वैह, अरण्यकाण्ड, पृ.– 119
12. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली–परिणय, 1–55,56
13. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : लंकाकाण्ड, पृ.– 218
14. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली–परिणय, 1–51
15.–16. वैह, 1–33 एवं 14–40
17. कवीश्वर चन्दा झा : मिथिलाभाषा रामायण : लंकाकाण्ड, पृ.– 227
18. वैह, बालकाण्ड, पृ.– 29
19. वैह, लंकाकाण्ड, पृ.– 219
20. वैह, बालकाण्ड, पृ.– 38
21. वैह, पृ.– 20
22. कविशेखर बदरीनाथ झा : एकावली–परिणय, 9–51 सँ 59 धरि ।
23. तत्रैव ।

अधीत–ग्रन्थ सूची

संस्कृत

1. ऋग्वेद
2. अग्निपुराण
3. नाट्यशास्त्र – भरतमुनि
4. अष्टाध्यायी – पाणिनि
5. काव्यालंकार – भामह
6. काव्यादर्श – दण्डी
7. वक्रोक्तिजीवितम् – कुन्तक
8. काव्यालंकार–सूत्रवृत्ति – वामन
9. काव्यालंकार–सार संग्रह – उद्भट
10. काव्यालंकार – रुद्रट
11. ध्वन्यालोक – आनन्दवर्द्धन
12. सरस्वती–कण्ठाभरण – भोजराज
13. काव्यप्रकाश – मम्मट
14. अलंकार–सर्वस्व – रुय्यक
15. चन्द्रालोक – जयदेव
16. अलंकार रत्नाकर – शोभाकर मिश्र
17. एकावली – विद्याधर
18. प्रतापरुद्रीय – विद्यानाथ
19. साहित्यदर्पण – विश्वनाथ

20. अलंकार–शेखर – केशव मिश्र
21. वाग्भटालंकार – वाग्भट
22. चित्रमीमांसा – अप्पय दीक्षित
23. कुवलयानन्द – अप्पय दीक्षित
24. रसगंगाधर – जगन्नाथ
25. काव्यप्रदीप – गोविन्द
26. अलंकार–कौस्तुभ – कवि कर्णपूर
27. अलंकार–महोदधि – नरेन्द्रप्रभसूरि
28. काव्यानुशासन – हेमचन्द्र
29. शिवलीलार्णव – नीलकण्ठ
30. श्रृंगार प्रकाश – भोजराज
31. अभिनव भारती – अभिनव गुप्त
32. औचित्यविचारचर्चा – क्षेमेन्द्र
33. अभिज्ञान शकुन्तलम् – कालिदास
34. रघुवंश – कालिदास
35. हर्षचरितम् – वाणभट्ट

मैथिली

1. वर्णरत्नाकर – कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर
2. कृष्णजन्म – महाकवि मनबोध
3. मिथिलाभाषा रामायण – कवीश्वर चन्दा झा
4. नीति–पद्यावली – प० जनार्दन झा 'जनसीदन'
5. सुन्दर संयोग – प० जीवन झा
6. सुभद्रा–हरण – मुन्शी रघुनन्दन दास
7. अम्बचरित – प० सीताराम झा
8. अलंकार–दर्पण – प० सीताराम झा
9. एकावली–परिणय – कविशेखर बदरीनाथ झा

10. अलंकार–सागर – महावैयाकरण दीनबन्धु झा
11. शकुन्तला नाटक – सरसकवि ईशनाथ झा
12. माला – सरसकवि ईशनाथ झा
13. भुवन–भारती – बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'
14. मुद्राराक्षस – डा० सुधाकर झा 'शास्त्री'
15. एकादशी – प्रो० हरिमोहन झा
16. चन्द्राभरण – प० रामचन्द्र मिश्र
17. अलंकार–कमलाकर – प० दामोदर झा
18. प्राचीन गीत – प्रो० रमानाथ झा
19. राधा–विरह – कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'
20. झांकार – कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'
21. द्वादशी – कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'
22. कीचक–वध – प्रो० तन्त्रनाथ झा
23. रावण–वध – प० जीवनाथ झा
24. प्रतिपदा – प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'
25. अर्चना – प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'
26. उत्तरा – प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'
27. कथा–यूथिका – प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'
28. अलंकार–मालिका – प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'
29. आशा–दिशा – प० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'
30. चित्रा – वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'
31. बाजि उठल मुरली – उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'
32. चाणक्य – दीनानाथ पाठक 'बन्धु'
33. नमस्या – प्रो० तन्त्रनाथ झा
34. मेरुप्रभा – डा० श्रीकृष्ण मिश्र
35. काव्यमीमांसा (प्रथम भाग) – डा० जयधारी सिंह 'प्रभाकर'
36. मैथिली महाकाव्यक उद्भव ओ विकास – डा० शिवशंकर झा 'कान्त'

37. गंगा – लक्ष्मण झा
38. मैथिली–काव्यशास्त्र – डा० दिनेश कुमार झा
39. कविता–संग्रह – मैथिली अकादमी
40. जिजीविषा – प्रो० जगदीश मिश्र
41. हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर – डा० जयकान्त मिश्र
42. अलङ्कार–भास्कर – डा० रमण झा

हिन्दी

1. अलंकार–मुक्तावली – आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा
2. अलंकार–मंजरी – सेठ कन्हैयालाल पोद्दार
3. अलंकार–पीयूष – प० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'
4. अलंकार–मीमांसा – डा० राजवंश सहाय 'हीरा'
5. काव्यदर्पण – प० रामदहिन मिश्र
6. भामह विरचित काव्यालंकार – प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्मा
7. अलंकारधारणा : विकास और विश्लेषण – डा० शोभाकान्त मिश्र
8. हिन्दी अलंकार साहित्य – डा० ओम प्रकाश
9. रामचरितमानस में अलंकार योजना – डा० वचनदेव कुमार
10. काव्यकल्पद्रुम – कन्हैयालाल पोद्दार
11. हिन्दी में शब्दालंकार–विवेचन – डा० देवराज सिंह 'भाटी'
12. रीतिकालीन अलंकार साहित्य का शास्त्रीय विवेचन – डा० ओमप्रकाश शर्मा
13. रुद्रट–प्रणीत काव्यालंकार की भूमिका – डा० सत्यदेव चौधरी
14. संस्कृत साहित्य में सादृश्यमूलक अलंकारों का विकास– केशव मिश्र

अंग्रेजी

1. Some Concepts of Alankar Shastra - V. Raghvan
2. English Grammar - J.C. Nesfield

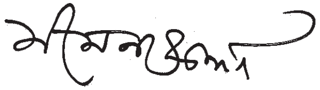
3. History of Sanskrit Poetics - P.V. Kane
4. Dictionary of World Literature - Joseph T. Shipley

अन्य

1. कर्पूरमंजरी (प्राकृत) राजशेखर
2. मिथिला–मिहिर (मैथिली पत्रिका, साप्ताहिक)

मैथिलीक अध्येताकेँ, उच्च वर्गक छात्रकेँ, अलंकार बड़ कठिन बुझि पड़ैत छैक । संस्कृतमे जे आकार ग्रन्थसभ छैक, ताहिमे अवगाहनक ओकरा सामर्थ्य नहि । मैथिलीमे जे सभ छैक, से की तँ आब उपलब्ध नहि छैक, अथवा जे छैको, ताहिमे तेहन संक्षेपमे, सूत्रब□, कहल गेल छैक जे सामान्य जनक हृदयमे खचित नहि होइत छैक । ओकरा भाष्य चाहिऐक । नवका गुरुओ लोकनि भरिसक रस-अलंकार-गुण-ध्वनि-रीतिसँ प्रीति नहिए रखैत छथि, किछु तँ तेहन भयभीत भऽ जाइत छथि जे सात लग्गा दूरे रहऽ चाहैत छथि । एहना स्थितिमे ई शास्त्र आगाँ बढ़त कोना ? नवीन पीढ़ी अलंकारक झंकारकेँ अंगीकार नहि करत तँ काव्यशास्त्रक अगिला सीढ़ीपर चढ़त कोना ?....

साहित्यक वर्तमान लहरिमे भासल जाइत समाजमे, जाहिमे परम्पराकेँ डुबा देबे इष्ट छैक, नवीन पीढ़ीमे, शु□ मैथिलीक अध्येता ओ प्राध्यापक, डॉ० रमण झाकेँ छोड़ि, क्यो हठात् नजरिपर नहि अबैत छथि जनिका काव्यशास्त्र, विशेषत: अलंकारशास्त्र, एतेक भीजल होइनि । हर्ष अछि जे रमणजी अपन एहि विषयक ज्ञानकेँ लिपिब□ कऽ लेलनि आ आइ तकरा ग्रन्थरूपमे प्रस्तुत कऽ मैथिली साहित्यक उपकार कयलनि अछि, मैथिली भण्डारक काव्यशास्त्रवला खानाकेँ, जे कने खलिआयल अछि, यथासाध्य भरलनि अछि । एहि हेतु ई अवश्य धन्यवादक पात्र थिकाह । **(अलङ्कार-भास्करसँ)**





डा० रमण झा

l **जन्म-** 14 अगस्त 1957 ई०
हटाढ़-रुपौली, मधुबनी (बिहार)

l **शिक्षा-** **बी०ए० प्रतिष्ठा** (मैथिली)-1976, प्रथम वर्गमे प्रथम, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गा ।
एम०ए० (मैथिली)-1978, प्रथम वर्गमे द्वितीय, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गा ।
पी-एच०डी०-1986, आधुनिक मैथिली काव्यमे अलङ्कार-विधान, ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गा ।
डी०लिट्०-2009, मैथिली काव्यपर ज्यौतिषक प्रभाव, ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गा ।

l **वृत्ति-** 2 नवम्बर '82 सँ 5 फरवरी '96 धरि रास नारायण महाविद्यालय, पण्डौलमे व्याख्याता एवं उपाचार्य; 6 फरवरी '96 सँ विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गामे उपाचार्य एवं प्रोफेसर ।
व्याख्याता- 2.11.82 सँ 1.11.90 धरि
उपाचार्य- 2.11.90 सँ 1.11.98 धरि
प्रोफेसर- 2.11.98 सँ...

l **रचना-**

पश्चात्ताप (कथा-संग्रह)	- 1995
काव्य-वाटिका (कविता-संग्रह)	- 1999
अलङ्कार-भास्कर (पूर्व-खण्ड)	- 2002
अलङ्कार-भास्कर (अलङ्कार शास्त्र)	- 2003
भिन्न-अभिन्न (समीक्षा)	- 2008
मैथिली काव्यमे ज्योतिष (समीक्षा)	- 2009
मैथिली काव्यमे अलङ्कार	- 2012

l **संग सम्पादन-** मैथिली (विश्वविद्यालय मैथिली विभागक शोध-पत्रिका) - 1996, 2009, 2010, 2011

l **सम्पादन-** मैथिली (विश्वविद्यालय मैथिली विभागक शोध -पत्रिका) - 2007, 2008

मैथिली काव्यमे अलङ्कार

डॉ० रमण झा

मैथिली काव्यमे अलङ्कार

डॉ० रमण झा

मैथिली काव्यमे अलङ्कार

डॉ० रमण झा